अनवर आलिमजानोव

नयी मंज़िल नयी राहें

Әнуар Әлімжанов

Отырар теңгесі

अनवर आलिमजानोव

नयी मंज़िल नयी राहें

Әнуар Әлімжанов

Отырар теңгесы

प्रगति प्रकाशन, ताशक़न्द – १९८०

अनुवादक: सुधीर कुमार माथुर,
राय गणेश चन्द्र
डिज़ाइन: शेफ़ेर ये. व.

Ануар Алимджанов

СУВЕНИР ИЗ ОТРАРА

(на языке хинди)

А $\frac{70303 - 012}{014 (01) - 80}$ 621 — 80 4702230200

एक सच्चे किसान की कहानी

अनुवादक : सुधीर कुमार माथुर
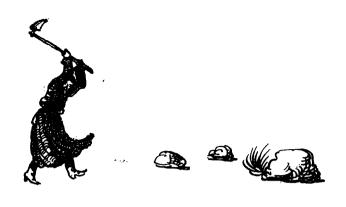
उसे कभी स्ताख़ानोव* का शिष्य, अग्रणीय कर्मी, प्रवर्तक, पथप्रदर्शक आदि कहा जाता था...

लेकिन इसका उसपर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उसमें और अराल तट-प्रदेश के उसके चरवाहे दोस्तों में कोई फ़र्क़ नहीं था। धूप और खुली हवा में तपे सुगठित शरीर और नाटे क़दवाला यह आदमी अन्य चरवाहों की तरह ही मितभाषी था, प्रशंसा और समय-समय पर उसके नाम को लेकर मच उठनेवाले शोर के प्रति उन्हीं की तरह उदासीन रहता था। उसे अपने संभाषियों की बातें सुनने और उनके हर शब्द को तौलने में बड़ा आनन्द आता था। लेकिन बकवादी लोग उसे बचपन से ही पसन्द नहीं थे। ख़ास तौर से ऐसे लोग जिनकी कथनी और करनी में अन्तर होता था। इसी-लिए वह दौरे पर आनेवाले कमिश्नरों के दुराग्रह और सच कहूँ तो उसके प्रयोगों का अध्ययन करने के बहाने उसके खेतों पर हमला बोलनेवाले और उसके नाम की धूम मचा देनेवाले मेरे साथी लेखकों और पत्रकारों से भी अकसर ऊब उठता था। वे लोग उन्हीं दिनों आते, जब खेतीबारी का काम ज़ोरों पर होता और वह अपनी पतलून के पायंचे ऊंचे किये घुटने-घुटने पानी और कीचड़ में भटकता, छू-छूकर धरती के तापक्रम का अनुमान

---

* अ॰ स्ताख़ानोव – सुप्रसिद्ध सोवियत खनिक जिसने ३१ अगस्त सन् १९३५ को एक पाली में कोटे में निर्धारित ७ टन के बजाय १०२ टन को-यला निकाला था। सं॰

लगाता, सफ़ेद बीजों के अंकुरण का बड़े ध्यान से निरीक्षण करता होता।

उससे किन्हीं रहस्यों का उद्घाटन करने को कहा जाता, जिनके कारण वह अभूतपूर्व फ़सलें पैदा कर रहा था। लेकिन ईमानदारी से डटकर की गयी मेहनत के अलावा उसका कोई रहस्य नहीं था।

उसे पहली बार खुली हवा में सांस लिये और मिट्टी की गंध सूंघे बहुत वर्ष बीत चुके हैं। सन् १९१७ में जब क्रांति हुई थी, तब वह सत्ताईस वर्ष का हो चुका था। वह देश का सर्वोत्तम धान-उत्पादक और अराल तट-प्रदेश का पुश्तैनी किसान है। उसका जन्म महान सिर-दरिया के तट पर, उसके मुहाने के पास हुआ था। वह कभी लम्बे समय के लिए अपने गांव से बाहर नहीं गया। गृह-युद्ध के वर्षों में वह अपने गांव की रक्षा करता रहा। उसने अपनी जन्म-भूमि अपने जीवन में केवल एक बार छः महीनों के लिए छोड़ी थी।

बड़े मुसीबत भरे दिन थे वे! अराल तट-प्रदेश में अकाल पड़ा था। सन् १९३० चल रहा था। आस-पास के सारे गांवों के मर्दों की बैठक हुई। सदियों से अपनी समृद्धि के लिए प्रसिद्ध क़ज़ाख़ स्तेपी सरी-अर्क़ा* के लिए पाँच सौ ऊँटों का कारवां रवाना हुआ। लेकिन वहाँ भी न दूध था, न रोटी। गांवों में चूल्हे ठंडे पड़े थे। धूलभरे रास्तों और सरकंडे की सूखी झाड़ियों में कारवां ने अनाथ और अकेले भटक रहे बच्चों को उठाया और अपने क़बीले के भूखे लोगों के गांवों में अपना एक-एक ऊंट छोड़ दिया।

मर्द लोग पैदल घर वापस लौटे। ऊंटों के भूख के मारे बैठे कूबड़ों (ऊंट दो-एक ही बचे थे) पर मृत गांवों के बच्चे सवार थे।

सूखकर कांटा हुआ और धूल में सना वह भीतर को धंसी आंखों से कसूरवार-सा बुज़ुर्गों को देखता रहा। उसने उन्हें इस बारे में कुछ भी नहीं बताया कि उसके चोग़े की जेब में कुछ मुट्ठी सफ़ेद दाने पड़े हैं। वह ये दाने भूखी आँखों से उसी तरह छिपाता रहा, जिस तरह लोग अपने जीवन के सबसे अन्धकारपूर्ण क्षणों में भी भलाई की आशा लगाये रहते हैं। वह सारी सर्दी उन्हें संभालकर रखे रहा और वसन्त आते ही उसने उन्हें ज़मीन को सौंप दिया।

---

* सरी-अर्क़ा – सुनहरी स्तेपी। – सं.

दरिया के कीच-कादे से भरी धूप व पानी से मुलायम हुई मिट्टी ने काश्त-कार का रहस्य स्वीकार कर लिया। इस रहस्य के साथ-साथ उसने उस-की आशा, आकांक्षा और मौन सौगन्ध को भी मंजूर कर लिया कि आज से उसके जीते जी इस गांव में कोई बच्चा भूखा नहीं रहेगा। बच्चों को हमेशा मुट्ठी-भर चावल और दूध से भरा प्याला मिलता रहेगा।

जब गांव में सामूहिक फ़ार्म की स्थापना हुई, तो धान की सर्वश्रेष्ठ खेती करनेवाले के नाते उसे लकड़ी का हल दिया गया। उस समय से गांव के बच्चों को युद्ध व शान्ति और सूखे व वर्षा के दिनों में भी हमेशा चा-वल मिलता रहा है।

फिर कभी उसने अपना गांव और अपने खेत ज़्यादा समय के लिए नहीं छोड़े। लेकिन उसे धान की जन्म-भूमि बर्मा और कोरिया, चीन और भा-रत में सब जानते हैं। उसके शिष्य अपने गुरु के अनुभवों को नवजात क्यू-बा के प्रतिनिधियों तक पहुंचाते हुए उन्हें पूरे एक वर्ष तक धान की खेती के तरीक़े सिखाते रहे। उसके तरीक़ों के बारे में अख़बारों में पैंतीस वर्षों के दौरान अनेक बार लिखा गया। लेकिन उसके मुँह से "मेरा तरीक़ा", "मेरी पद्धति" जैसे शब्द कभी नहीं निकले। वह केवल धरती से ही सलाह-मशविरा करता था, उसकी सांसों की आवाज़ें सुनता और अपने कठिन कार्य में केवल उन्हीं खोजों का उपयोग करता था, जो दसियों बार व्यवहार की कसौटी पर खरी उतर चुकी थीं।

उसका अपना ही चिन्तन और खोजें होती थीं, अपनी ही निराशाएं और ख़ुशियां होती थीं, अपनी ही शंकाएं और उद्वेग होते थे। लेकिन ऊपर से वह हमेशा शान्त रहता था। इसीलिए लोगों को कभी लगता कि वह एक ऐसा सनकी और दुराग्रही आदमी है, जिसके लिए दुनिया में धूप में सूखी मिट्टी के नीरस रंगों और लगातार कड़ी मेहनत करने के अलावा और कोई ख़ुशी न थी, हरे पौधों और पकी हुई बालियों की चांदी-सी आभा की ख़ूबसूरती के अलावा और कोई ख़ूबसूरती न थी।

उसके चारों ओर अकसर हल्ला-गुल्ला मच उठता था—कृषिविज्ञ और चयन-कर्त्ता बीजों की क़िस्मों और खेती के तरीक़ों के बारे में बहस छेड़ते रहते और फिर पत्रकार और शोध-कर्ता उस पर हमला बोलने लगते, शां-ति उसे केवल अपने खेत में अपने साथ मेहनत करनेवाले दोस्तों के बीच में ही मिलती थी।

एक दिन गांव में कमिश्नर आया। आस-पास के खेतों में घने हरे पौधे देखने के बाद वह उसके खेत में पहुँचा। वहाँ उसने दूर-दूर उगे, बड़ी कठिनाई से ज़मीन में से फूटकर निकले धान की पीली पत्तियां देखीं।

"उसकी तारीफ़ के पुल बांधे गये हैं। उसके सारे रिकार्ड धोखा हैं। ऐसे खेत में फ़सल नहीं हो सकती," मेहमान ने सोच लिया। वह सरपट घोड़ा दौड़ाता ज़िला मुख्यालय जा पहुँचा, वहाँ उसने शोर मचा डाला, रिपोर्टें लिखीं। ज़िले, प्रांत और अलमा-अता तक से एक के बाद एक जांच-समितियां बूढ़े के खेत में पहुँचने लगीं।

"धान कहाँ है?!" उससे पूछा जाता।

"होगा!" वह जवाब देता।

"वह उग क्यों नहीं रहा है?"

"क्योंकि मिट्टी को अभी अतिरिक्त खाद और पानी नहीं दिया गया है।"

"पानी क्यों नहीं देते?"

"हर काम का अपना समय होता है," बूढ़ा शान्ति से जवाब देता।

"समय निकल गया!" कमिश्नर चिल्लाया और उसने खेत में पानी देने का हुक्म दिया।

ग़ुस्से से आग-बबूला हुआ किसान अपनी कुदाल उठाकर जलविभाजक नहर के पास जा खड़ा हुआ। अपनी चुप्पी में वह बड़ा भयंकर लग रहा था। चावल की खेती करनेवाले उसके दोस्त उसके पास आ खड़े हुए। कमिश्नर हक्का-बक्का रह गया। वह बूढ़े पर बहुत गम्भीर आरोप लगाकर पीछे हट गया,

"तुमने बीज बिगाड़ दिये। और अब डरते हो कि पानी देने से तुम्हारा झूट सबको दिख जायेगा!"

ये शब्द दिल में तीर की तरह चुभ गये। बूढ़े को घेरे खड़े दोस्तों के सिर शर्म और ग़ुस्से से झुक गये। लेकिन वह स्वयं मौन खड़ा इस अजनबी की आंखों में शांतिपूर्वक देखता रहा। उसने अपना धान उसके लिए नहीं बोया था, उसने इन खेतों में दिन रात कड़ी मेहनत उसके लिए नहीं की थी। यह आदमी कभी न समझ सकेगा कि वह इस काम में क्यों कोई क़सर नहीं छोड़ रहा है। लड़ाई चल रही है, उसका बेटा अक़ीलबेक कहीं गोलियों की बौछार झेल रहा है। बेटे को अपने पिता के साथ हरे-

भरे खेत में घूमना अच्छा लगता था। और कौन जाने, अगर आज वह उसके साथ होता, तो इस आदमी को कैसा जवाब देता।

लेकिन कमिश्नर था कि चुप ही नहीं हो रहा था:

"इससे खेत छीनकर धान की खेती करनेवाले दूसरे लोगों को दे देने चाहिए!"

किसी ने उसका हुक्म नहीं माना। कभी इन खेतों की जगह खर-पतवार ही था। बूढ़े ने अपनी कुदाल से ज़मीन साफ़ की, टेकरियां समतल कीं, गड्ढे भरे, नालियां और नहर बनायीं। इस ज़मीन का हर चप्पा उसके पसीने से तर है। यह उसका खेत है, उसकी ज़मीन है। भला काश्तकार को यहां से निकालने की हिम्मत कौन कर सकता है?!

कमिश्नर "अंतर्ध्वंसक बुड्ढे" को कड़ी सज़ा देने की धमकी दे, सरपट घोड़ा दौड़ाता प्रांत के मुख्यालय लौट गया।

गांव में सन्नाटा छा गया। सारा गांव बूढ़े की रक्षा के लिए हर क्षण तैयार था। वह दिन-रात खेत में अथक परिश्रम करता रहा। उसे यह महसूस हो रहा था कि आज खेतों में पानी छोड़ना जल्दबाज़ी होगी। वह तभी कुछ करेगा, जब उसे पक्का विश्वास हो जायेगा कि लू अंकुरों को नष्ट नहीं कर सकेगी। फ़सल पक्की होनी चाहिए, नहीं तो मुसीबत खड़ी हो जायेगी।

सारे ग्राम निवासियों – स्त्री-पुरुषों और बच्चों को उसपर विश्वास था। विश्वास तो था, लेकिन... खेतों को देखकर दिल पहले की तरह ही उदास हो उठता था। वह अपने खेतों में बड़ी कंजूसी से पानी छोड़ रहा था। ज़मीन पर केवल पानी की एक पतली तह बिछी हुई थी, जो किसी भी समय सूख सकती थी।

एक बार रात में उसे हवा में कुछ गरमी महसूस हुई। हल्की गरम हवा के मन्द-मन्द झोंके चेहरे को बड़े सुखकर प्रतीत हो रहे थे। लेकिन हवा के ऐसे ही झोंके ज़मीन और फ़सल के लिए विनाशकारी होते हैं। बूढ़े ने कुदाल से जलविभाजक नहर और खेत के बीच की दीवार गिरा दी।

खेत में ठंडा स्वच्छ पानी भर गया और उसने फ़सल को लू की लपटों से बचा लिया। खेत के हर वर्ग-मीटर में पानी एक-समान सतह में फैला हुआ था। एक-दो दिन बाद लू ठंडी पड़ गयी और इसके दो-तीन

दिन बाद खेत लहलहा उठा। पौधे इतने घने थे कि ज़मीन खोजेन्त* के रोयेंदार क़ालीनों-सी लग रही थी। अब कोई भी हवा इन सरसराते लचकदार पौधों को झुका नहीं सकती थी।

गांववालों का हौसला बढ़ गया। काश्तकार अपने खेतों पर शान्तिपूर्वक नज़र दौड़ा पड़ोसियों की फ़सल बचाने चल दिया, जो हालांकि बूढ़े की आशंकाओं से सहमत थे, लेकिन कमिश्नर की आज्ञा का पालन करते हुए अपने खेतों में समय से पहले पानी छोड़ चुके थे, जिसके फलस्वरूप हरे पौधों को लू से काफ़ी नुक़सान पहुँचा था।

जब उसका पुराना दोस्त, इलाक़ाई सोवियत की कार्यकारिणी समिति का अध्यक्ष जुसूपोव, जिसे बूढ़े काश्तकार की आलोचना करने में सहयोग न देने और कमिश्नर से झगड़ा करने के कारण अनुशासनात्मक दण्ड दिया गया था, उसके पास घोड़ा दौड़ाता पहुँचा, तो वह पीले पड़े पौधे हाथ में पकड़े घुटने-घुटने भर पानी में खड़ा था। उसके पीछे-पीछे गांव का प्रतिष्ठित कम्युनिस्ट, पार्टी का स्थायी संगठनकर्त्ता सिज़दीक़ घोड़ा दौड़ाता आया जिसने कमिश्नर को नम्रतापूर्वक गांव छोड़कर जाने के लिए कहा। उन्होंने घोड़े से उतर, हर्ष के आंसू पोंछ मौन बूढ़े को बारी-बारी से गले लगाया।

"हमने तुम्हारा खेत देखा। हम सब तुम्हारे शुक्रगुज़ार हैं," जुसूपोव ने कहा।

"हम हमेशा से तुम पर भरोसा करते आये हैं," सिज़दीक ने कहा।

"किस बात का शुक्रिया?" सोच में डूबे-डूबे उसने अपने दोस्तों को जवाब दिया और अपनी बात पूरी किये बिना ही ज़मीन से मिट्टी का लोंदा उठा उसे मसलते हुए मन्द-मन्द मुस्कराता रहा।

...उस वर्ष उसके सामूहिक फ़ार्म ने धान की रिकार्ड फ़सल पैदा की और हमेशा की तरह वह सबसे आगे रहा।

क़ज़ाख़स्तान में जहां धान की खेती कई सदियों से होती आयी है, उसने अच्छी फ़सल देनेवाली नयी किस्मों का विकास किया, जिन पर सूखे और ठंडी हवाओं का कोई प्रभाव नहीं होता। जहां मध्य एशिया और क़ज़ाख़स्तान के किसान आज धान की तीस-पैंतीस क्विंटल की प्रति हैक्टर पैदावार पर ही गर्व करते हैं, वहां उसके लिए अस्सी-नव्वे क्विंटल पैदा

---

* खोजेन्त – ताजिक सोवियत समाजवादी जनतंत्र का एक शहर जो अब लेनिनाबाद कहा जाता है। सं॰

कर लेना बहुत कम लगता है। एक समय ऐसा भी था जब उसे व्याख्याता और प्रचारक बनाने की कोशिश की गयी। लेकिन वह व्याख्यान देने के बजाय लोगों को खेतों में ले जाता और उन्हें सुबह से शाम तक अपने साथ काम करने के लिए मजबूर करता। उसके साथ केवल वही आदमी रह पाता था, जो मेहनत से जी नहीं चुराता था। "प्रातःकालीन शीतलता के देश" कोरिया के किसानों के निमंत्रण पर जब वह वहां पहुँचा, तो उसने वहां भी ऐसा ही किया। क़ज़ाख़ संसद-सदस्य की हैसियत से अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठियों में बोलते हुए वह हमेशा संक्षिप्त भाषण देता था। अपने बारे में नहीं, ज़मीन और आदमी की मेहनत के बारे में।

"ज़मीन ख़ज़ाना है और मेहनत उसकी कुँजी है। प्रतिष्ठा बनाने में बहुत समय लगता है, लेकिन जाते देर नहीं लगती, उसके पीछे भागने की ज़रूरत नहीं। एक घोड़े से झुण्ड नहीं बनता, अकेला आदमी खेत में ज़्यादा बोवाई नहीं कर सकता" – उसके मुँह से निकलनेवाली हर बात सूक्ति-सी लगती थी।

"हवा चलते-चलते आकाश को साफ़ करती रहे, लेकिन धूल की आंधी न उड़ाये। सूरज धरती पर अपनी किरणें बिखेरता रहे, लेकिन घास न सुखाये। पौधों को भी मनुष्य की तरह साफ़ हवा, साफ़ पानी और स्वादिष्ट भोजन चाहिए" – उसके ये शब्द उपदेश नहीं बल्कि दर्शन-से लगते थे। अगर हमेशा अपनी बुद्धि और विचारों से जीनेवाले आदमी को बुद्धिमान कहा जा सकता है, तो वह भी बुद्धिमान और महान था। अपनी आयु के कारण नहीं, बल्कि अपने कार्यों, अपनी सहृदयता के कारण।

अगर छोटे-बड़े मंचों से दिये गये उसके भाषणों और अराल तट-प्रदेश के युवा धान-उत्पादकों के साथ हुई उसकी अंतरंगी बातचीतों का संग्रह किया जाये तो एक अच्छा-ख़ासा ज्ञान-कोश बन जाये। अराल तट-प्रदेश में उसके सैंकड़ों अनुयायी हैं। वे उसे हमेशा अपना शिक्षक, गुरू और अपना अकदमीशियन मानते रहे हैं और अपने को जाख़ाएव का यानी उसका शिष्य। लेकिन जब कभी युवा लोग उससे मिलते, तो स्तेपी की परम्परा के अनुसार उसके नाम के साथ आदरसूचक अगा जोड़कर सामान्य ढंग से सम्बोधित करते।

किज़ीलतू गांव के इब्राइ-अग़ा के बारे में स्तेपी में बहुत-से गीत गाये जाते हैं। उसके बारे में कई पुस्तकें और छोटे-बड़े लेख लिखे गये हैं। लो-

गों ने बिना उसकी स्वीकृति लिये लिखा। उसे अपने बारे में औरों का बोलना और लिखना अच्छा नहीं लगता था। मैंने भी कई बार उसके बारे में लिखने का इरादा किया। मैं उससे काराताऊ के काले और धूप में चमचमाते पहाड़ों की तलहटी में चरवाहों के त्योहार में मिला, उसे युवा धान-उत्पादकों, राज-नेताओं के बीच देखा, लेखकों के साथ हुई उसकी भेंटों में संक्षेप में कही गयी विद्वतापूर्ण बातें सुनीं और जब कभी मैं उससे कुछ पूछना चाहता, तो इससे पहले वह स्वयं पूछ बैठता,

"लिखना चाहते हो? तो अपने समवयस्कों, युवाओं के बारे में लिखो। या फिर इस चरवाहे के बारे में लिखो। मेरे बारे में तो बहुत लिखा जा चुका है..."

ज्यों-ज्यों मुझे उसके पहली नज़र में नीरस लगनेवाले जीवन के बारे में ज़्यादा जानकारी प्राप्त होती गयी, त्यों-त्यों उसके बारे में लिख सकने में मेरा आत्म-विश्वास कम होता गया।

आज भी मुझे यही महसूस हो रहा है कि मैं वह नहीं लिख रहा हूँ, जो लिखना चाहिए। क्योंकि उसके बारे में लिखे जानेवाले शब्द वैसे ही वज़नी होने चाहिएं, जैसे कि धान के वे दाने जिन्हें वह मेहनत और धूप से काली पड़ गयी अपनी हथेलियों में बड़े प्यार से उठाता है।—(कृषिविज्ञों का दावा है कि इब्राइ-अग़ा ने अनुपजाऊ कल्लर ज़मीन में बढ़िया फ़सलें पैदा की हैं, जबकि कड़ी गर्मी, मिट्टी में ऑक्सीजन की कमी के कारण बीज हर वर्ष नष्ट हो जाने चाहिए थे।) मुझे उपयुक्त शब्द नहीं मिल पा रहे हैं। लेकिन इन पंक्तियों को समाप्त करने से पहले इब्रागाय अग़ा के जीवन की दो और घटनाओं के बारे में बताना चाहता हूँ।

गहाई का तीसरा दिन था। गहाने की पुरानी मशीन खड़-खड़ करती, ऊपर से नीचे तक धूजती चल रही थी, लगता था किसी भी क्षण इसके अंजर-पंजर बिखर जायेंगे, लेकिन वह पूलियां निगलती जा रही थी और भूसा एवं धूल चावल से अलग करती जा रही थी। धूल के अनगिनत कण नन्ही-नन्ही भिड़ों की तरह चेहरे पर डंक मार रहे थे, कानों और गले में घुस रहे थे। ट्रैक्टर की घरघर, मशीन चलानेवाले बेल्ट की सूखी सनसन, ज़ंग लगे चेनों की खड़खड़, बिना तेल दिये दांतदार पहियों की खटखट, हेंगे में जुती गायों की रंभाने की आवाज़ें, हांकनेवालों की टिटकारियां दुर्बल हो गये लोगों को बहरा और संवेदनशून्य बना रही थीं।

खलिहान के एक कोने में, जहां मशीन से निकलनेवाला चावल तोला जा रहा था, खंभे पर लगे एक बहुत बड़े फट्टे पर गाढ़े चूने से लिखा था— "सब मोर्चे के लिए!"

औरतों और बच्चों के थकान के मारे पांव रह गये।

यहां चावल की गहाई हो रही थी। सदियों पुराने तरीक़े से। चाबुक की मार से बेपरवाह घोड़े पत्थर के दो भारी पाटों को खींचते चक्कर लगा रहे थे। इब्राइ अग़ा हाथों में कांटा पकड़े यह देख रहा था कि गहाई सफ़ाई से हो रही है या नहीं। केवल शाम को चावल के बोरे तोलकर स्टेशन रवाना कर देने के बाद ही उसने अपने घर जाने की सोची।

कंधे दुख रहे थे, कमर में दर्द हो रहा था, आंखें थकान के मारे मुंदी जा रही थीं। वह यह मालूम करने घर जा रहा था कि आज कहीं उसके बेटे की कोई ख़बर तो नहीं आयी। उसने बहुत दिनों से चिट्ठी नहीं लिखी है। शायद पत्र रास्ते में गुम हो गये हों।

अचानक उसे एक गीत सुनाई दिया। शोक-गीत। मां गा-गाकर अपने बेटे की मृत्यु पर विलाप कर रही थी। उसका मुंह सूख गया, पांवों में दम न रहा। अपने ही घर के खुले दरवाज़े में से निकलते प्रकाश से डरता-सा वह एक ओर हट गया। एक आदमी अंधेरे में उसे देखे बिना पास से गुज़र रहा था। वह कुछ बड़बड़ाता हुआ दरवाज़े तक पहुंचकर एक क्षण के लिए रुका और सिर उठा ज़ोर से दहाड़ मार रोता-चिल्लाता घर की दहलीज़ लांघ गया।

"मेरा उक़ाब मर गया, मैं क्यों न शोक मनाऊँ?" उसकी पत्नी रो रही थी।

वह मौन खड़ा था। ऊपर से हमेशा की तरह शान्त। इस क्षण उससे मिलनेवाला कोई भी आदमी नहीं जान पाता कि उसे कितना दुख हो रहा है, उसके दिल पर कितना गहरा शोक छाया हुआ है।

लोग अकसर ममता की उदारता के बारे में बातें करते हैं, लेकिन पिता का प्यार भी कम नहीं होता। कवि अपनी सन्तान को खो बैठनेवाली माताओं के दारुण दुख के बारे में अकसर लिखते रहते हैं, लेकिन पिता का दुख भी कम नहीं होता। न जाने कैसे वह उस शाम को गांव पार के बीहड़ में आ पहुंचा। उसके हाथों में कुदाल था। वह इसीलिए चला आया था, क्योंकि वह दुखभरा गीत नहीं सुनना चाहता था, बेटे की मृत्यु पर

विश्वास नहीं करना चाहता था। वह लोगों की संवेदना नहीं सुनना चाहता था। इस रात वह किसी की भी सूरत नहीं देखना चाहता था।

वह अपने बेटे के बारे में सोच रहा था। कंटीली झाड़ियों में से रास्ता बनाते हुए अपने बेटे से बात कर रहा था। नुकीली डालों की मार उसके चेहरे पर पड़ रही थी, लेकिन दर्द उसे महसूस नहीं हो रहा था। वह ढूहों और पत्थरों पर ठोकर खाता चलता चला जा रहा था। अगर उस अंधेरी रात में सरकंडों और काले सक्साऊल* की झाड़ियों में उसे कोई आदमी मिलता और पूछता कि वह कहां जा रहा है, तो वह शायद ही जवाब दे पाता। वह इसलिए चला जा रहा था, क्योंकि उसे काली ज़मीन से मिलना था, जिसे दुनिया के और किसानों की तरह उसने भी बहुत पहले ही अपनी अनुभूतियां, अपनी चिन्ताएं, अपनी ख़ुशियां और अपने ग़म सौंप रखे थे।

आकाश में शीतल बिल्लौर-से चमकते तारे तैर रहे थे। उसने चारों ओर नज़र दौड़ाई और उस मैदान को पहचान लिया, जहां वह एक बार अपने बेटे के साथ आया था। वह दिन अब उसे बहुत दूर चला गया मालूम होता था, लेकिन उसे यह भी महसूस हो रहा था, मानो यह आज दोपहर की ही बात हो—उसने और उसके बेटे ने इस मैदान को साफ़ करके जोतने, इसमें बीज बोने और फिर फ़सल काटने के सपने देखे थे।

उसके बेटे ने ट्रैक्टर-चालक बनने की सोची थी, जिससे कि अपने ट्रैक्टर से झाड़ियां उखाड़ मैदान को समतल बना सके, नहर खोदकर अपनी पहली फ़सल पैदा कर सके...

इब्राइ ने कुदाल उठाकर सफ़ेद सक्साऊल की झाड़ी की मोटी जड़ पर चलाया। रात की नीरवता में धप-धप की आवाज़ें गूंज उठीं। कहीं उल्लू ज़ोर से पंख फड़फड़ाता उड़ा, कहीं चुहिया डर के मारे चूं-चूं कर उठी। धरती के अंधकारपूर्ण क्षितिज में से धीरे-धीरे रेंगकर निकलते चाँद का मंद प्रकाश कुदाल की धार पर झिलमिलाया और मैदान चोट की आवाज़ों से फिर गूंज उठा। बबूल की सूखी टहनियां पैरों तले चरचराईं और रूबार्ब की पत्तियां तांबे के पत्तरों की तरह झनझनायीं।

---

* सक्साऊल – मध्य एशिया के रेगिस्तान में उगनेवाली झाड़ी; जिसकी जड़ें गहरी और मज़बूत होती हैं।

चांद कुदाल की धार पर लयबद्ध गति से झिलमिलाने लगा और झाड़ियां निःशब्द कट-कटकर गिरने लगीं।

खट... खट... चोट पर चोट पड़ रही थी। कभी-कभी कुदाल के पत्थर पर पड़ने से चिनगारियां छूट जाती थीं और धातु का सुखद कम्पन सारे शरीर में दौड़ जाता था। पत्थर कम थे। उसे इसका पता था। अपने बेटे के मोर्चे पर रवाना होने के बाद भी वह यहां कई बार आ चुका था। जिस ज़मीन पर वह पिछले कई वर्षों से धान की खेती करता आ रहा था, वह अब थक चुकी थी। उसके ऊपर भूमिगत जल के नमक की सफ़ेद तह अकसर जमने लगी थी। उसे आराम और परिवर्तन की आवश्यकता थी।

खट... खट... चोट पर चोट पड़ रही थी। ज़मीन बड़ी हठीली थी। कुदाल उससे टकराकर इस तरह ऊपर को उछट रहा था मानो चोट इस्पात की लचकीली स्प्रिंग पर पड़ रही हो। इस झाड़ी की जड़ें बड़ी मज़बूत होती हैं। ऐसे ही उखाड़ी नहीं जा सकतीं। वे रबड़ की सी मुलायम और इस्पात की तरह मज़बूत होती हैं।

काश, उसका बेटा साथ होता! उसने एक ही चोट में इस झाड़ी को उखाड़ डाला होता। पिता ने ख़ुद उसे स्तेपी के किसानों की पुरानी कला सिखाई थी। हां, बेशक आयेगा, जल्दी ही आयेगा उसका बेटा। फिर वे साथ-साथ काम करेंगे। बुढ़िया बेकार ही रो रही है। युद्ध में ग़लतफ़हमियां तो अकसर होती ही रहती हैं। आज भी ऐसी ही ग़लतफ़हमी हुई है। क्या दुनिया में जाख़ायेव कुल-नाम के लोगों की कमी है? और हो सकता है, बेटे का कुल-नाम ग़लत लिख दिया गया हो और मरनेवाला जाख़ायेव हो ही नहीं... वह ज़िन्दा है। वरना... वरना ज़िन्दगी बेकार होती। फिर आदमी जीता ही क्यों और किसके लिए है? क्योंकि एक न एक दिन हर आदमी को मरना होता है। उसने माथे पर से पसीना पोंछा और झुककर एक मुट्ठी मिट्टी उठा ली।

मिट्टी गरम और मुलायम थी। कितनी सौंधी सुगंध है! किसान सिपाही बन जाने पर इस मिट्टी की याद में तड़पता है। सिपाही परदेस में मर जाता है। पिता अपने सिपाही बेटे की क़ब्र को अपने वतन की मुट्ठी भर मिट्टी देने के सपने देखता रहता है। काश, उसे मालूम होता कि उसका बेटा कहां दफ़नाया हुआ है?..

लेकिन उसे मौत का विचार अचानक क्यों आया? हटाओ, दूर भगा-

ओ इस मनहूस शब्द को! कुदाल बड़ी तेज़ी से ज़मीन में धंसने लगा। धूप और धूल से बर्बाद हुआ कोट एक ओर फेंक दिया गया। पैरों के आगे कटी हुई झाड़ियों का ढेर लगने लगा! मैदान पर कुदाल की ठंडी चमक तेज़ी से उछल रही है। एक सूखी कंटीली टहनी किसान के पसीने से तर कुरते में फंस गयी, मानो वह उसे रोक देना चाहती हो।

कटी हुई झाड़ियों के बीच चलता हुआ बूढ़ा कुपित हो झाड़ियों की दीवारें ढहाने लगा...

युद्ध का तीसरा वर्ष चल रहा था। लोगों को एक दूसरे को मारते-काटते तीन वर्ष हो चुके थे। आख़िर एक आदमी दूसरे को क्यों मार रहा है? फ़ासिस्टों को क्या चाहिए? ज़मीन? लेकिन ज़मीन तो हर जगह किसान की है। और किसान सैनिक तभी बनता है, जब उसकी फ़सल पैरों तले रौंदी जाती है, जब उसके खेतों और गाँवों में ख़ून बहने लगता है...

बड़े बेतुके विचार हैं। कुदाल ठीक से नहीं चल पा रहा है। बूढ़ा कमज़ोर हो गया है। काश, उसका बेटा ज़िन्दा होता!...

इसी रात की तरह वह एक बार बंजर तोड़ रहा था। वही खेत जो अब पुराना हो चुका है। तब उसका बेटा साथ था। उस समय वह छोटा था। वह पिता के लिए क़िमीज़* लाया था। पिता जब जल्दी-जल्दी क़ि-मीज़ पीने लगा, तो उसकी बूंदें उसकी दाढ़ी पर गिरने लगीं। यह देख-कर बेटा हंस पड़ा। कैसी हंसी थी वह! उन्मुक्त, प्रमुदित खिलखिला-हट। बेटे की आंखें ख़ुशी से चमक रही थीं, उनमें से उसके दिल तक को देखा जा सकता था! और काम तब कितनी आसानी से हो जाता था! उफ़! कितनी तेज़ प्यास लगी है! कम-से-कम एक बार तो यह हंसी और सुन ले!

और जब उसका बेटा तेज़ घोड़े पर बैठ घुड़दौड़ में हिस्सा लेने जाता, तब वह ख़ुशी से फूला नहीं समाता! पिता को अब तक उसकी मुस्कान याद है। पिताओं की स्मृति में बच्चे सदा जीते-जागते रहते हैं...

उसे अपने बेटे का नाक-नक़्शा याद है, उसे उसकी सांसों की आवाज़ सुनाई दे रही है। जब बेटा छोटा था, तो वह उसके साथ ही सोता था। बच्चे की सांसें उसको लोरी देकर सुलाती थीं। सोते हुए बालक की शान्त मुस्कान से बढ़कर दुनिया में ऐसा कोई गीत या संगीत नहीं जो दिल को

---

* क़िमीज़—घोड़ी के दूध से बना एक प्रकार का पेय। सं०

इतनी राहत दे सके और जीवन की ख़ूबसूरती व्यक्त कर सके। और बेटे की इसी शान्त मुस्कान और उसके दोस्तों की चैन की नीन्द के लिए वह सन् तीस के अकाल में मौत से जूझा था। कज़ाख़स्तान की धरती पर तब कितने लोग मर गये थे? तभी वह दूसरी बार अकाल से जूझा था।

पहली बार जब वह कारवां के साथ गया था, तब वह एक युवक था। और सन् तीस में वह पिता बन चुका था, पर अल्लाह गवाह है, उसने कभी अपने बेटे और गांव के बच्चों में फ़र्क़ नहीं किया। चावल का हर कटोरा बराबर-बराबर बांटा गया। तब उन्होंने अपने इलाक़े में मृत्यु पर विजय पायी। और आज क़ज़ाख़स्तान और रूस को सारे देश, सारे बच्चों और सैनिकों को रोटी खिलानी है, क्योंकि उक्रइन और बेलोरूस के खेत टैंकों तले रौंदे जा रहे हैं।

काश! आज वह अपने बेटे के पास लड़ाई के मैदान में होता और उसे अपने बदन से ढक हर चोट से बचा लेता! हाय बुढ़ापा! यह उम्र आदमी के हाथ-पैरों की बेड़ियां बन जाती है।

एक झाड़ी गिरती और आगे दूसरी दिखाई देने लगती। इसका अन्त कब होगा? कितनी लम्बी है यह रात! प्यास लग रही है। हाय बुढ़ा-पा! हथेलियां कुदाल के दस्ते से चिपक गयी हैं, कंधे ऐसे दर्द कर रहे हैं, मानो अपने न हों। चान्द आकाश में ठीक सिर के ऊपर क़िज़ील-अर्दा के पके सरदे की तरह चमक रहा है। कुछ क़िमरान* पिया जाये! उसके बेटे को भी क़िमरान अच्छा लगता था और वह उसके साथ हमेशा बहस किया करता था—क़िमरान अच्छा है या क़िमीज़? उसके बेटे की निर्भीक चरवाहों से दोस्ती थी, उसे घोड़े और ऊंटों के बच्चों को सधाना और पड़ोसी गाँव की लड़की का गाना सुनना अच्छा लगता था। काश! उस-का गाना अब सुनने को मिल जाये! लेकिन लड़की के गीत के बजाय मां का विलाप उसके कानों में गूंज रहा है। लगता है स्तेपी भी कराह रही है।

कहते हैं, इस शोक-गीत की रचना स्तेपी में कई सदियों पहले भारी विपत्ति के दिनों—"अकताबान शुबीरिन्दा" में हुई थी, जब क़ज़ाख़ों के देश को शत्रुओं ने चारों ओर से घेर लिया था और भयानक अकाल पड़ गया था। कवियों ने तब सैंकड़ों शोक-गीत लिखे थे। सारी कज़ाख़ स्ते-

---

* क़िमरान—ऊंटनी के दूध से बना एक प्रकार का पेय। सं॰

पी में मशहूर ग्राशु-कवि, उसके दोस्त नरताय ने उसे इस बारे में बताया था। नरताय को बहुत-सी रिवायतें ग्रौर क़िस्से याद हैं, धरती के इतिहास के बारे में उससे ज़्यादा कोई नहीं जानता। वह बिलकुल ठीक कहता है कि यह क़िपचाक़ क़बीले के महान किसानों की जन्म-भूमि है ग्रौर किसी ज़माने में इन मैदानों में से होकर ग्रराल से लेकर ग्राऊलीग्रता तक हज़ारों नहरों में नीला-नीला पानी बहता था। ग्राशु-कवि नरताय बिलकुल ठीक कहता है। जिस मैदान को वह इस समय साफ़ कर रहा है, कभी उस पर फ़सलें लहलहाती थीं। उसे यह सहज-ज्ञान से महसूस होता है। ज़मीन के ग्राकार से, उस पर उगे पौधों से, उसकी परतों के रंग से, नहरों के निशानों से। ग्राज भी काम में ग्रानेवाली चीइली नहर मिराब* नूरताज़ा ग्रौर बहादुर बायसीन ने कई सौ साल पहले चालू की थी...

उसका ग्रपमान करनेवाला कमिश्नर कितनी ग़लती पर है! वह पूरा बेवक़ूफ़ है। इब्राइ को नहीं जानता। वह इतिहास के बारे में नहीं जानता, बहुत पुराने ज़माने में हुई लड़ाइयों में नष्ट हुए खेतों ग्रौर नहरों के बारे में उसने कभी नहीं सुना। उसे यहां तक मालूम नहीं कि इन खेतों में हमेशा किसान रहते ग्राये थे। वह नहीं जानता कि ग्रराल से लेकर तुर्किस्तान तक जेतिसू की घाटी में हमारे क़िपचाक़ ग्रौर नायमान पूर्वजों के शहर टेकरियों के नीचे दबे पड़े हैं। किपचाक़ों ग्रौर नायमानों में भी दुनिया के सभी लोगों की तरह पहले भी ग्रपने किसान, चरवाहे, बाग़बान, शिकारी, मछुए ग्रौर दस्तकार थे। दुनिया में ऐसी कोई जाति नहीं है, जो ग्रपने खेतों को प्यार न करती हो। यानी ऐसा कोई ग्रादमी नहीं है जो "किसान" शब्द से परिचित न हो। लोग ग्रपने खेतों की रक्षा करते हैं। उन्हें ग्राग ग्रौर लूट-मार से बचाते हैं! मातृभूमि की रक्षा करनेवालों में उसका बेटा भी है। वह बेटा जो शिगानक बेरसीएव बनने के सपने देखता है।

भूरे बालोंवाला उसका बेटा जानता था कि शिगानक जैसे लोग बिरले ही जन्म लेते हैं। प्रति हैक्टर से १९७ क्विंटल मोटा ग्रनाज पैदा करनेवाले इस क़ज़ाख़ किसान के सामने तो ग्रक़िलबेक का पिता इब्राइ भी पानी भरता था। वह भी शिगानक से सीखने के सपमे देखता था। क्योंकि ग्रगर मोटे ग्रनाज की ऐसी फ़सल उगाई जा सकती है, तो फिर ऐसी ही

---

* मिराब – मीर-ग्राब, सिंचाई-नहर का निरीक्षक। सं.

धान की फ़सल क्यों न उगाई जाये? लेकिन शिगानक के पास जाने का अब समय नहीं है। उसका बेटा लड़ाई में गया हुआ है।

सपने, सपने!.. पिता और पुत्र, जिसको मां इस समय रो रही है, के सपने एक समान हैं। ओ, बीबी-अजर, मेरी जीवन-संगिनी, तुम्हारे रोने की आवाज़ से आज मेरा दिल टूट रहा है!..

दम घुटने लगा। कुरते का गरेबान फट गया, पसीने की बूंदें ज़मीन को जलाने लगीं। लेकिन वह लगातार काटे ही जा रहा है। घुटनों में कमज़ोरी महसूस होने लगी। लेकिन वह दांत पीसकर चोट पर चोट मा-रते हुए ज़मीन को पुराने, सड़े हुए खर-पतवार से साफ़ करता रहा।

उसे वहां से अनेक किलोमीटर दूर बहते सिर-दरिया का कलकल सुनाई दे रहा था, क़िमरान और पानी की गन्ध आ रही थी, रस छिटकाते चांद को चीरते कुदाल की धार दिखाई दे रही थी। चांद सरदे की तरह रसदार है। धूल में सने सूखे होंठों पर ज़बान फेरते हुए वह फिर झाड़ियों से जूझने लगा।

आकाश हिल उठा। चांदी-से झिलमिलाते तारे छिपने लगे।

मां के विलाप का स्थान धीरे-धीरे चश्मे के कलकल, नदी के शोर, सूरज की गरमी और चिड़ियों के कल-रव ने ले लिया। और उसे सारी स्तेपी में गूंजती ज़ोरदार, नटखट, विनोदी और चश्मे के पानी-सी निर्मल हंसी सुनाई दी – उसके बेटे की हंसी।

बच्चे की इस खिलखिलाहट में धरती की हर सुन्दर चीज़ – हिम की सुगन्ध, बसंत, सूरज और फूलों की ख़ुशबू विलीन हो गयी। इससे उस-पर उनका नशा छाने लगा। बेटा पिता को पुकार रहा था...

कुदाल हाथ से छूट गया। वह लड़खड़ाता हुआ आगे बढ़ा और फिर उसने धीरे-धीरे पीछे गर्दन घुमायी।

हंसी बन्द हो चुकी थी। सिर दुख रहा था। चारों तरफ़ गहरा सन्ना-टा छाया हुआ था। तारे बुझ गये। चांद छिप गया। सूर्योदय होनेवाला था।

ठंड और कड़ी थकान के कारण इब्राइ के कंधे और सिर झुक गये, वह फटी हुई क़मीज़ में विशाल मैदान के बीचोंबीच खड़ा था, जहां ढेर सारे निकाले गये ठूंठ, कटी झाड़ियां और खोदी हुई मिट्टी ही दिखाई दे रही थी। लगता था जैसे कोई विशालकाय मशीन या नौजवानों की फ़ौज सारी रात यहाँ काम करती रही थी। इब्राइ के पैरों के पास कुदाल पड़ा

था, जिसका फल मुड़ गया था। धूल और पसीने में सना, सूखी टहनियों की मार खाया आदमी किसी पुराने ज़माने के मूर्तिकार के हाथों बनी मूर्ति-सा लग रहा था। किन्तु वह अचानक हिला और धीरे-धीरे घुटनों के बल बैठ गया, फिर उसने अपने लहूलुहान हाथ गरम-गरम ज़मीन में धंसा दिये। उसने अपने होंठों पर सूखी ज़बान फेरी और आंखें बन्द कर लीं।

दिन निकलने पर लोगों ने उसे ढूंढ़ लिया। वह वैसे ही आंखें बन्द किये बैठा था। उस रात उसके बहुत सारे बाल पक गये, कंधे कमज़ोर होकर झुक गये, आंखों में दर्द झलकने लगा।

मौन किसी ने भंग नहीं किया। बिना कुछ बोले उसे एक प्याली लस्सी लाकर दी गयी। उसके प्याली ख़ाली करने तक लोग इन्तज़ार करते रहे। फिर उन्होंने बड़ी सावधानी से उसे घोड़े पर बिठाया और ख़ुद वहीं जड़-वत खड़े रह गये।

उस रात इस जंगल में प्रकृति और मनुष्य में द्वन्द्व-युद्ध हुआ था। मनु-ष्य विजयी रहा। लोगों को अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। लेकिन किसी को भी इस बात का ख़्याल नहीं आया कि इस लड़ाई में बू-ढ़ा किसान अकेला नहीं था। उसका बेटा उसके साथ था। पुत्रों को शक्ति प्रदान करनेवाला पिता का प्रेम उसके साथ था। उस दिन से उसे इब्राइ-अग़ा के बजाय इब्राइ-अता* के नाम से पुकारा जाने लगा...

आगामी पतझड़ में जब युद्ध का अन्तिम वर्ष चल रहा था, उसने नौतोड़ खेत में धान की अपूर्व फ़सल पैदा की – एक हैक्टर से १७२ क्विं-टल, जो सारी दुनिया में एक रिकार्ड था।

कुछ वर्ष बाद उसे इसी खेत में अपनी ज़िन्दगी का सबसे ज़्यादा बेकार और सबसे ज़्यादा उजला दिन भी बिताना पड़ा।

वह सुबह से सामूहिक फ़ार्म के दफ़्तर में बैठा प्रांत से आये मेहमानों के सवालों का जवाब देता रहा, फिर एक ट्रैक्टर-चालक से मिला, इसके बाद जल्दी-जल्दी घर पहुंचा था कि नाश्ता कर एक प्याली चाय पी सके। तभी उसे मालूम हुआ कि आज सुबह से ही उसके खेतों में स्कूली बच्चे जल्दी से जल्दी फ़सल उठाने में सहायता करने आये हुए हैं। वह अधपियी चाय छोड़ जल्दी से अपने खेत की ओर भागा।

---

* अता – बूढ़ा, बुज़ुर्ग।

दक्षिण की कड़ी धूप पड़ रही थी। तपे आकाश में स्तेपी का उक़ाब पंख फैलाये अपना शिकार ढूंढ़ता उड़ रहा था। चारों ओर टिड्डे अपना बेसुरा राग अलाप रहे थे।

जब घोड़े ने बूढ़े को कटाईवाली जगह तक पहुंचाया, तो उसका ध्यान एक दूसरे से आगे निकलने की कोशिश में भागते स्कूली बच्चों पर गया। वे एक मोटे बटेर को, जिसके पंख टूट गये थे, किसी प्रकार पकड़ ही नहीं पा रहे थे। बाक़ी बच्चे दोपहिया गाड़ियों में पूलियां लाद-लादकर खलिहान में ले जा रहे थे। लगभग एक तिहाई खेत साफ़ हो चुका था। फ़सल काटनेवाले और पूलियां बनानेवाले बहुत आगे निकल गये थे। और क्षितिज पर ऊंटों की पंक्ति पोखर की ओर चली जा रही थी। दायीं ओर धूल के गुबार उड़ाता घोड़ियों का झुण्ड चला जा रहा था। बछेड़े खेलते-कूदते अपनी-अपनी मांओं के आगे भाग रहे थे। पुराने शहर के खंडहरों को ढकनेवाली दूर की टेकरी पर एक अकेला चरवाहा खड़ा दिखाई दे रहा था।

"भेड़ों और घोड़ों को जाड़े के पड़ावगाह की ओर ले जाया जा रहा है," उसने सोचा। बटेर का पीछा करनेवाले बच्चे बूढ़े किसान को देखते ही शर्माकर धान काटनेवालों की तरफ़ भागे। एक पूलियों से लादी दोपहिया गाड़ी बूढ़े के पास से निकल गयी। गाड़ीवान ने उसका आदरपूर्वक अभिवादन किया,

"सलाम-अलैकुम, अता!"

"वालैकुम सलाम, बेटे!" उसने कसकर बांधी हुई भारी-भारी पूलियों को गर्व से देखते हुए जवाब दिया। अचानक उसकी मुस्कान ग़ायब हो गयी। उसने खेत के उस पार देखा। सारी फ़सल उठायी जा चुकी थी। अपनी घबराहट पर क़ाबू करके वह उस तरफ़ चल पड़ा, जहां पूलियों की चांदी-सी झिलमिलाती निशानियां ही रह गयी थीं। उसकी पैनी नज़र ने हज़ारों पौधों में से वह पौधा ढूंढ़ निकाला, जिसकी वह विशेष रूप से निगरानी करता रहा था।

वह एक मिनट सोच में डूबा खड़ा रहा।

नहीं, वह पौधा इतनी आसानी से ग़ायब नहीं हो सकता था। बूढ़ा भागा-भागा खलिहान में पहुंचा और पूलियों में उसे ढूंढ़ने लगा। पहले सरसरी तौर पर देखता रहा। शायद वह लाल फ़ीता ही दिख जाये। क्यों-

कि इस बालीवाले पौधे पर फ़ीता बंधा था। शुरू में पीला फ़ीता बांधा था, फिर सफ़ेद और परसों कटाई से पहले उसने उस पौधे पर लाल फ़ीता बांधा था। बूढ़े किसान को अपने खेत में सौ-दो सौ-ढाई सौ दानेवाली बालियां अकसर मिलती रहती थीं। लेकिन तीन सौ चालीस दाने। ऐसा उसने पहली बार ही देखा था।

...वह यह पता लगाने की कोशिश कर रहा था कि इतनी भरी हुई बालियां कैसे पैदा होती हैं और उन्हें मिलते ही इकट्ठा करता रहता था। ये चुने हुए बीज वह वसन्त में एक अलग टुकड़े में बो देता था, जिससे कि हर प्रकार की परिस्थितियों में उनकी निगरानी करने में आसानी हो।

वह जानना चाहता था कि क्यारियों में रात के समय या दिन में सूर्योदय के समय, जब उसकी किरणें कोमल होती हैं, पानी भरने का क्या प्रभाव होता है। वह समय पर बालियों का परागण करने, उन्हें ख़ुराक देने या भूखा रहने के लिए मजबूर करने, क्यारियों से जानबूझकर पानी उलीच देने या कृत्रिम वर्षा करने आदि के लिए उनकी दिन रात निगरानी करता था। वह बालियों के इर्द-गिर्द घूमता कभी उनकी सरसराहट सुनता, कभी सांस रोक उनके पास उकड़ूं बैठ सावधानी से दाने गिनता। सभी दाने ठीक से बढ़ रहे हैं या नहीं?

वह हर्षोल्लास के साथ लाल फ़ीतेवाले पौधे को बढते और मज़बूत होते देखता रहता।

उसने इस पौधे का नाम युद्ध से लौटकर न आये बेटे के नाम पर रखा। वह सारे खेत में इसके बीज बोकर देखना चाहता था। खलिहान को वह इन सफ़ेद दानों से भरने के सपने देखता था।

वह फ़सल काटनेवालों और स्कूली बच्चों की ओर ध्यान दिये बिना अपना लाल फ़ीतेवाला पौधा ढूंढ़े जा रहा था। उसने एक-एक करके सारी पूलियां, सारे गट्ठर, सारी गाडियां, सारा खेत, सारा खलिहान न जाने कितनी बार छान मारे।

लोग बूढ़े को हैरत भरी नज़रों से देख रहे थे, लेकिन कोई उसे परेशान नहीं करना चाहता था। वह बहुत थक गया था। होश आने पर उसने चारों ओर नज़र दौड़ायी, तो देखा–सारा खेत कट चुका है, पूलियां बांधी जा चुकी हैं और सूरज अस्त होने जा रहा है। लोग कटाई के बाद घर लौट रहे हैं। चरवाहा भेड़ों को बाड़े की तरफ़ हांक रहा है।

चिड़ियां दरिया की ओर अपने घोंसलों में पहुंचने की जल्दी में हैं। किसी ने स्तेपी का मधुर परन्तु दर्दभरा गीत छेड़ दिया।

आगे-आगे कभी मेमनों की तरह उछलती-कूदती, कभी खिलखिलाकर हंसती स्कूली छात्राएं चली जा रही थीं। बूढ़ा किसान अपने घोड़े पर सवार धीरे-धीरे उनके पीछे चलते और गीत सुनते हुए संध्याकालीन स्तेपी की ख़ुशबू का आनन्द ले रहा था। वह शान्त था, लेकिन जब उसे संयोगवश वही लाल फ़ीता दिखाई दे गया, तो वह कुछ आगे को झुका। लाल फ़ीता कसकर गूंथी हुई चोटियों के ऊपर बंधा हुआ था। बूढ़े किसान की नज़र को महसूस किये बिना लड़की अपनी सहेली के पहलू में टहोका देती हुई ठहाका मारकर हंस रही थी। यह हंसी इतनी ज़िन्दादिल और शोख़ थी कि बूढ़ा उसे टोकने का साहस न कर सका... एकाएक लड़कियां एक दूसरे के पीछे दौड़ पड़ीं!

मैं उस महान व्यक्ति के बारे में अपनी पंक्तियां यहीं समाप्त करता हूँ, जिसने मुझे हमारी प्रथम भेंट के दिन से बहुत प्रभावित किया, जिसे कृपण और ईर्ष्यालु धरती ने लगातार पचास वर्षों तक अपने फल बड़ी उदारता से चखने को दिये।

वह एक किसान था, कम्युनिस्ट था। वह बन गया क्रान्तिकारी और अपने खेतों पर शान्तिपूर्वक राज करते हुए हरित क्रान्ति लाया।

वृद्धावस्था में जब उसके हाथों में शक्ति न रही, आंखें कमज़ोर हो गयीं, तो उसने अपना कुदाल और हंसिया श्रम और जीवन के पुराने प्रतीक के रूप में युवा किसानों को सौंप दिये। और उन्होंने उन्हें संग्रहालय को भेंट कर दिया।

ज़िन्दगी इसी का नाम है।

युवा किसानों के पास आज मशीनें हैं।

बुढ़ापे में वह पहले की ही तरह बसन्त में दरिया के किनारे पर चुपचाप घूमने जाता था। लेकिन बिना कुदाल लिये। वह सूर्योदय और सूर्यास्त का आनन्द लेते हुए, युवाओं को मेहनत करते और नये पौधों को बढ़ते देखकर कभी मुस्कराता, कभी उदास होता।

वह बिना ज़मीन और दरिया के नहीं रह सकता था। कभी-कभी वह जब घुटनों के बल बैठ क्यारियों में भरे पानी में अपना हाथ डुबाता और धान के कोमल पौधों को हौले से सहलाता, तो पानी की चिकनी सतह

पर उसके पुराने कोट में लगे दो सोने के तारों* की दो किरणें झिलमिलाने लगतीं और लगता जैसे बूढ़ा पानी में गिरे सूरज के टुकड़े पकड़ रहा है।

उसका मज़ाक करते हुए लोग कहते थे कि उसे अन्तेय** की तरह कभी ज़मीन से अलग नहीं किया जा सकता, उसे कभी हराया नहीं जा सकता। मैंने अपनी मातृभूमि के हर कोने से और समुद्र पार के देशों से मेहमानों को उससे मिलने आते अनेक बार देखा, अन्तरिक्ष यात्री भी उससे मिलने आये थे। वे बड़े ध्यान से उसकी बातें सुनते थे। वह हमेशा की तरह कम ही बोलता था।

"वीरता जीवन से प्राप्त होती है," उसने कहा था। "यश–श्रम और प्रतिभा से।"

उसने एक ही पुस्तक लिखी। अपने बारे में नहीं, अपने श्रम और अपने दोस्तों के बारे में। वह अतिविनीत रहा, यश किसान की ज़िन्दगी न बदल सका। मुझे शीलर की ये पंक्तियां याद हो आयीं,

यश और सुन्दरता की दौलत
जो सदियों बाक़ी रहती है
इनसान को मिलती रहती है
क्योंकि उसे होता है ज्ञान
उसकी मेहनत सबसे महान ।

उसकी सज्जनता और भलाई के नाम किये गये उसके महान श्रम के लिए लोग उसे प्यार करने लगे। मैं भी आदि-धरा का पुत्र होने के नाते उस के आगे नत-मस्तक हो उठता हूँ।

---

* सोने का तारा सोवियत संघ के श्रमवीरों को दिया जाता है। यह देश के उच्चतम पुरस्कारों में से एक है।

** अन्तेय – यूनानी पौराणिक कथाओं का एक वीर जिसे जब तक उसके पैर पृथ्वी पर टिके रहते पराजित नहीं किया जा सकता था।

नयी मंज़िल नयी राहें

अनुवादक : सुधीर कुमार माथुर

कैसा त्योहार था यह! अस्कार के जीवन का वास्तव में पहला बड़ा त्योहार। हरी पहाड़ी की तलहटी में पोस्त के सुर्ख़ फूलों से ढकी नीली घाटी में आस-पास के सारे गांवों के लोग जमा हुए थे। विजय की ख़बर सुनते ही लोग जमा होने लगे – कोई पैदल आया, कोई घोड़े पर सवार हो, कोई ऊंट पर, कोई बैल पर और कोई गाय पर भी। अपने किसी पुराने रिवाज को याद कर लोग इस ख़ुशी के मौक़े पर एक दूसरे पर पानी डालने लगे।

सूरज पहाड़ियों के पीछे से निकल रहा था। पतझड़ में बोये गये अनाज के एकसार, नाज़ुक, नीलाभ-से पौधों के ऊपर भाप की लहरें उठ रही थीं।

सारी घाटी में जल्दबाज़ी में तम्बू लगाये जा रहे थे। प्रधान की मेज़ से उठायी गयी स्याही के धब्बोंवाला लाल झण्डा हवा में फहराता हुआ लचीले ध्वजदण्ड को झुका रहा था। त्योहार के इस शोरगुल में ऊंटों की बलबलाहट, ओस से भीगी घास में कलाबाज़ियां खाते बच्चों की किलकारियाँ, लड़कियों के गीत, दोम्ब्रा* की आवाज़ें, जोश में आकर पागल-से हुए कुत्तों के भौंकने की आवाज़ें – सब कुछ मिलकर एक हो गया था। अस्कार ओस में भीगे नमदे के ऊंचे जूते पहने टेकरी पर लगे झण्डे के पास खड़ा था। वह कभी एक पैर पर, तो कभी दूसरे पर खड़ा हो लोगों की

* दोम्ब्रा – कज़ाख़ लोगों का राष्ट्रीय वाद्य यंत्र। सं.

इस भनभनाती विशाल भीड़ को देख रहा था। चरवाहे घोड़ों को तम्बुओं के पास हांकते हुए बड़ी फुर्ती से कमंद फेंककर उन्हें पकड़ रहे थे।

छोटे-छोटे मैदानों में लड़कियों की रंग-बिरंगी पोशाकें झिलमिलाती दिखाई दे रही थीं। वे अपने रूमाल उतार, कसकर गूथी हुई चोटियां खोल, मानो अपनी सुन्दरता को निहार रही थीं, बड़ों के आगे बिलकुल भी लज्जा का अनुभव न करते हुए लड़कों के पीछे भाग रही थीं। पास के मैदान में पहलवानों के दंगल हो रहे थे। दो पड़ोसी गांवों के नौजवान अपनी-अपनी ताक़त आज़मा रहे थे। अन्तिम जोड़ी की कुश्ती समाप्त हुई। मुक़ाबला बराबर रहा—दोनों पक्षों ने दो-दो कुश्तियाँ जीतीं। उत्साही दर्शक शोर मचाने लगे—उन्हें दंगल बिना हार-जीत के ख़त्म होना पसन्द नहीं आया। उसी समय लड़कों को धक्का दे-देकर अक्तूमा गांव का बूढ़ा चरवाहा कुरेके अखाड़े में उतर आया।

"ए, तून्कूरूसवालो, अपने पहलवान को अखाड़े में उतारो!" अपना पुराना कोट एक ओर फेंकते हुए उसने आवाज़ लगायी। फिर जूते खोल, टोपी उतार, सीना तान अखाड़े के बीचोंबीच आ खड़ा हुआ।

"अगर मेरे कमरबंद बांधने तक तुम में से कोई भी अखाड़े में न उतरा, तो जीत हमारे गांव की होगी!" उसने लम्बा सफ़ेद तौलिया क़मर के इर्द-गिर्द लपेटते हुए आवाज़ लगायी।

पड़ोस के गांव के नौजवान घबराकर अपने बुज़ुर्गों की ओर देखने लगे।

"वाह रे कुरेके, तू क्या सोचता है, हमारे यहां पहलवानों की कोई कमी है? तुझे कुछ देर तक नम मिट्टी में रगड़ना पड़ेगा, बुड्ढे बकरे!" यह कहकर अक्शाल अखाड़े में उतर आया।

"जल्दी से अपना कोट उतार। तू ज़बान का तो बड़ा तेज़ है, देखता हूं, जब चारों खाने चित पड़ेगा, तो तेरी ज़बान से क्या निकलता है।"

"लगता है, तू अपनी जवानी के दिन भूल गया। क्या उन बातों को दोहराऊं?" अक्शाल हंसा।

अस्कार ने सुना था कि अपनी जवानी में ये दोनों चरवाहे इन पहाड़ियों और घाटियों के भूतपूर्व स्वामी—ज़मींदार तोरेगेल्दी के हुक्म पर पहलवानों के दंगल में उतरे थे। उस समय कुरेके हार गया था।

"डर के मारे पुराने वक़्त की याद दिलाने लगा। मेरी हार तेरी जीत से ज़्यादा शानदार थी," कुरेके ने ताना मारा। "ज़मींदार ने अपनी मेज़

से उठाकर एक हड्डी तेरे आगे ऐसे फेंक दी थी, जैसे तू उसका पालतू कुत्ता हो।"

"अच्छा! बातूनी बुड्ढे! .." अक्शाल ने कुरेके के कमरबंद में हाथ डाल दिया।

दोनों बुजुर्ग इस तरह एक दूसरे को झटके दे-देकर खींचने लगे कि हंसी आने लगी। उत्साही दर्शक पहले तो शिष्टाचार के नाते अपनी हंसी रोके रहे, लेकिन फिर सारा शिष्टाचार भूल जोश में आकर बूढ़ों का हौसला बढ़ाने लगे।

"अता, और आगे बढ़िये, और!"

"कसकर पकड़िये!"

"टंगड़ी लगाइये!"

"वाह रे बुड्ढो!" चारों ओर से आवाजें आने लगीं।

दोनों बूढ़े घास पर लुढ़के, पर फिर उठ खड़े हुए। कुरेके ने अक्शाल को मज़बूती से पकड़ पूरी ताक़त से चित करने की कोशिश करने लगा। अक्शाल पलटा और मौक़ा मिलते ही उसने कुरेके को उठा लिया।

"साला बुढ़ापा!" अक्शाल ने गिरते-गिरते गाली दी।

"हाय अल्लाह, ये बुड्ढे कहीं पागल तो नहीं हो गये! बिलकुल भी शर्म नहीं रही इन्हें!- छी! छी!" कोई बुढ़िया चिल्लायी।

कुरेके ने मौक़ा पाकर चक्कर में पड़े अपने प्रतिद्वंद्वी को उठा लिया। लेकिन उसी वक़्त उसका कमरबंद खुल गया, नाड़ा टूट गया और पाजामा नीचे खिसक गया।

"अक्तूमावालो, अपनी आंखें मीच लो!" कुरेके ने अपने गांववालों से चिल्लाकर कहा और हुंकार भरके अपने प्रतिद्वंद्वी को चित कर दिया।

स्त्रियाँ रूमालों से अपने अपने मुँह ढांप चीखती हुई इधर-उधर भाग गयीं, पुरुषों के हंसते-हंसते पेट में बल पड़ गये।

"हंसो, हंसो, बेशर्मो, हंसी जीत में चार चान्द लगा देती है," खिलखिलाती हंसी के बीच कुरेके अपने कपड़े पहनते हुए बड़बड़ाया।

"दोनों बुज़ुर्गों को सम्मानित किया जाये। इन्हें सफ़ेद तम्बू में सबसे ऊंची जगह पर बिठाया जाये!" सपार अग़ा चिल्लाया।

अस्क़ार अपनी नवीनता के कारण अलग ही नज़र आ रहे सजे-धजे तम्बू के और पास आ खड़ा हुआ। वह आंखें फाड़-फाड़कर दोनों बुज़ुर्ग विजेता-

ओं को सम्मान के साथ सफेद नमदे पर बिठाये जाने का नज़ारा देखता रहा। औरों के साथ-साथ वह भी उनके मज़ाकों पर ठहाके लगा-लगाकर हंसता रहा। उसे पता ही नहीं चला कि सपार-अग़ा कब उसके पास पहुंच गया। अचानक उसकी आवाज़ सुनाई पड़ी, तभी अस्कार ने मुड़कर देखा।

"देखा, हमारे कुरेके ने अपने प्रतिद्वंद्वी को कैसा चित किया?" सपार-अग़ा ने पूछा। वह अपने बेटे कयसार के साथ खड़ा था। "आज जीत हमारे गांववालों की हुई। समझे अस्कारजान?" सपार ने ख़ुशी से आंख मिचकायी। "कहने का मतलब यह है कि आज विजय-दिवस है। तुझे भी जीतना चाहिए।"

"कैसे?" अस्कार को आश्चर्य हुआ।]

"ए कलताय!" सपार ने आवाज़ दी। "धौले माथेवाले को यहाँ लाना। देखा, इनाम के लिए कौन मुक़ाबला करेगा," सपार ने हौले से अस्कार का कंधा थपथपाया।

"अभी लाया, सपार-अग़ा। क्यों नहीं, क्यों नहीं? मैं जानता हूं, अस्कार हमें निराश नहीं करेगा," कलताय लंगड़ाता-लगड़ाता उनके पास पहुंचा। वह अधीरता के कारण नाचते-से धौले माथेवाले की लगाम पकड़े आ रहा था। "देखो, अपने शानदार घोड़े को!"

"अब्बा, आपने तो कहा था कि मैं... "कयसार ने रूठते हुए कहा।

"तुम धौले माथेवाले पर फिर कभी सवारी कर लेना... हमें निराश तो नहीं करोगे न, अस्कार? देखो, तुम्हें साबित करके दिखा देना है कि तुम एक बांके घुड़सवार हो।"

"हाँ," ख़ुशी से किंकर्तव्यविमूढ़ हुआ अस्कार इतना ही बोल सका। लेकिन उसके कान तुरन्त खड़े हो गये – रूठा हुआ कयसार उसे कहीं फिर अनाथ या आवारा न कहने लगे।

लेकिन कयसार चुप था। शायद वह अपना इरादा भूल गया था और उसकी आंखों में ईर्ष्या नहीं झलक रही थी। अस्कार के सीने पर से बोझ-सा उतर गया।

गांव के सारे लड़के तीन साल के पतली-पतली टांगोंवाले, माथे पर सफ़ेद धारीवाले कुम्मैत घोड़े को सरपट दौड़ाने के सपने देखते थे। धौले माथेवाला इतना चंचल और चिकना था कि उसपर मक्खी भी फिसल जा-

थे। उसकी हल्की नीची कज़ाख़ी काठी और चमड़े पर नक्क़ाशी के काम-वाली लगाम गांव के सबसे अच्छे कारीगरों ने बनाई थीं।

"अब तू मुँह बाये क्यों खड़ा है? भाग जल्दी से, कुछ खा आ और घोड़े पर सवार हो जा। घोड़े को थोड़ा दौड़ा ले। देख, दूसरे तो अपने-अपने घोड़ों पर सवार होकर जाने भी लगे... ए देग के पास कौन खड़ा है, दमेश तुम हो क्या? अस्कार के लिए भेड़ की टांग और क़िमीज़ का प्याला यहाँ भिजवा दो।"

"ज़उरेश अभी लायी!" दमेश-आपा ने चिल्लाकर कहा।

ज़उरेश गांव की सबसे सुन्दर लड़कियों में से थी। अस्कार उसके सामने हमेशा सकुचाने लगता था। अब वह वहाँ आ ही पहुंची थी। उसने लकड़ी की एक चौड़ी ट्रे पर गोश्त और किमीज़ उसे दिया। कितना मज़ा आता, अगर दूसरे लड़के यह सब देख लेते!..

"तेरा मुक़ाबला उसके साथ होगा," सपार ने लम्बी सफ़ेद अयाल-वाले सुनहरे घोड़े पर तनकर बैठे हुए लड़के की ओर इशारा किया। "धौले माथेवाला गुस्सैल है, उसके साथ जल्दबाज़ी मत करना, शुरू से ही ताक़त ख़र्च मत करने लगना। हवा के रुख़ की तरफ़ रहना, जिससे कि धूल से परेशान न होना पड़े। सफ़ेद अयालवाले पर कड़ी नज़र रखना और आधा रास्ता पार कर लेने पर दायीं ओर से आगे निकलने की कोशिश करना, सिर्फ़ दायीं ओर से। क्योंकि आधा रास्ता लाल पहाड़ी की चढ़ाई पर पूरा होगा। वहाँ दायीं ओर का रास्ता समतल है, झाड़ियाँ नहीं हैं। वहाँ से उतरते समय घोड़े को रोकना नहीं। यह रास्ते का आख़िरी टुकड़ा होगा और धौले माथेवाले को उसे तीर की तरह उड़कर पार करना चाहिए। सब लोगों की नज़रें तुझ पर होंगी। हमारी आशाओं पर पानी मत फेरना!"

धौले माथेवाला दो साल पहले सर्दियों में अकाल के समय सामूहिक फ़ार्म के घोड़ों के झुण्ड को भूखे भेड़ियों से बचानेवाले "काले जिन" का बेटा था, जो इस हमले में ख़ुद घायल होकर मर गया था। धौले माथेवाले की मां सुडौल बदन, भूरी आंखों और काली अयालवाली घोड़ी तारा थी।

धौले माथेवाला सामूहिक फ़ार्म के अस्तबल में पल रहा था। गांव के बच्चे उसके लिए हमेशा ताज़ा सूखी घास ढूँढ़कर लाने की कोशिश में रहते

थे, हालांकि केवल काम में आनेवाले घोड़ों को ही सूखी घास दी जाती थी। वह भी निश्चित मात्रा में। कयसार ने अस्कार को बताया था कि एक बार जब गांव के लड़कों को मालूम पड़ा कि खड़िया से बछेड़ों की हड्डियां मज़बूत होती हैं, तो वे रात को पड़ोस के गांव में स्कूल के शिक्षकों के कमरे में घुसकर वहाँ से अपने प्यारे घोड़े के लिए सारी खड़िया उठा लाये थे।

बछेड़ा बड़ी तेज़ी से बड़ा हो रहा था, उसे बच्चों से बहुत लगाव हो गया था। वह तब तक उनके पीछे-पीछे पालतू कुत्ते की तरह घूमता रहा, जब तक कि उसे घोड़ों के झुण्ड में न भेज दिया गया।

अप्रैल में जब सामूहिक फ़ार्म का घोड़ों का झुण्ड रेतीले इलाक़े से पहाड़ी इलाक़े में भेजा जा रहा था, तो धौले माथेवाले को घुड़दौड़ की तैयारी कराने के लिए गांव में ही रख लिया गया। प्रारम्भिक घुड़दौड़ों के दौरान उसने अपने अच्छे गुणों का प्रदर्शन किया।

अस्कार उसकी बहुत अच्छी तरह संभाल कर रहा था। जब भी उसे समय मिलता, वह घोड़े को बेंत, बन-संजली, फूलों और पहाड़ी प्याज़ से ढकी घाटी में ले जाता, घंटों उसका खरहरा करता, पहाड़ी नाले के बर्फ़-से ठंडे पानी में नहलाता-धुलाता और उसके आगे ओस पड़ी ताज़ा घास का ढेर लगा देता। शायद इसीलिए सपार ने धौले माथेवाले को आज अस्कार को सौंपने का निश्चय किया। लेकिन कई वर्षों तक दर-दर की ठोकरें खानेवाला लड़का बड़ों से काफ़ी चौकस रहना सीख गया था, क्योंकि अक्सर यह उन्हीं पर निर्भर करता था कि वह भूखा रहे या पेट भर खाये, रोये या हंसे। उसे इस बात का अस्पष्ट आभास हो रहा था कि सपार यह उसे केवल ख़ुश करने, प्यार करने, गांव के अन्य लड़कों से उसे अलग दिखाने और अपने दोस्त के बेटे के प्रति अपना प्रेम प्रकट करने के उद्देश्य से ही नहीं कर रहा है, बल्कि वह अस्कार की एक बांके घुड़सवार की तरह परीक्षा लेना चाहता है, उसकी बुद्धि, उसके साहस और आत्म-बल की परीक्षा लेना चाहता है।

अस्कार अपने बारे में घबरा रहा था। घोड़े के बारे में भी घबरा रहा था। अपने गांव से लम्बी जुदाई के कारण और इस दौरान घुड़सवारी बहुत ही कम करने के कारण। यह सच है कि गांव के अपने समवयस्कों में रेल देखने, मोटरगाड़ियों में सवारी करने, फ़ैक्टरी के प्रशिक्षण केन्द्र

।से भागने के बाद सैनिकों के बीच रहनेवाला वह पहला लड़का था। वह सुनसान घरों और पुलों के नीचे रातें गुज़ार चुका था, इसीलिए तो गांव के लड़कों और बुज़ुर्गों ने उसका नाम 'शहरी अस्क़ार' रख दिया था। लेकिन उसको घोड़ों की आदत नहीं रही थी, जो गांव के बच्चों को बहुत छोटी आयु से ही हो जाती है। क्या वह इस परीक्षा में सफल हो सकेगा? क्या वह मैदान में डटा रह सकेगा?

धौले माथेवाले के बारे में गांव के बुज़ुर्गों का कहना था कि वह हवा से बातें करनेवाला घोड़ा है। इस समय भी जब सब प्रस्थानस्थल की ओर शान्तिपूर्वक दुलकी चाल से जा रहे थे, वह अपनी कनौतियाँ उठाये सबसे आगे निकलने को मचल रहा था।

अस्क़ार को घोड़े के नुकीले कानों के अलावा और कुछ नहीं दीख रहा था। धौले माथेवाले के अतिसंवेदनशील कानों के हिलने-डुलने से वह इस बात का अन्दाज़ लगाने की कोशिश कर रहा था कि दौड़ के समय वह कैसा व्यवहार करेगा। घोड़ा हल्के से लगाम खींचते हुए कलमला रहा था, मानो घुड़सवार के हाथों की ताक़त जांच रहा हो। अस्कार की हर हरकत का वह तुरन्त जवाब दे रहा था। सवार के एड़ लगाते ही घोड़ा पूरी रफ़्तार से दौड़ने लगता, बदन के थोड़ा बायीं ओर झुकते ही बायीं ओर मुड़ने लगता, दायीं ओर झुकते ही – दायीं ओर मुड़ने लगता, लगाम खींचते ही – कलमलाने लगता, लेकिन रफ़्तार धीमी कर देता। कहने का मतलब यह है कि घोड़ा और सवार दोनों ही एक दूसरे को अच्छी तरह समझ गये थे, अस्कार कुछ शान्त हुआ।

"यहाँ सब एक क़तार में खड़े होंगे," सबसे आगे चल रहे घुड़दौड़ का प्रारम्भ करनेवाले ने कहा।

घुड़सवार रुके और अपने-अपने घोड़ों को पीछे मोड़कर एक पंक्ति में खड़े होने लगे।

अस्क़ार ने चारों ओर नज़र दौड़ाई। प्रतियोगियों में सबसे बड़ा वही था। आठ-आठ, नौ-नौ साल के लड़के अपने-अपने घोड़ों की काठियों से चिपककर शान से बैठे थे। पुरानी परम्परा के अनुसार लम्बी घुड़दौड़ों में केवल बच्चे ही भाग ले सकते थे। इसमें कोई शक नहीं कि वज़न में चालीस वर्ष का घुड़सवार सोलह वर्ष के घुड़सवार से कम भी हो सकता था, लेकिन इस बात का कोई महत्व न रहा था। सबसे अहम बात थी – आ-

दमी की उम्र। लोगों का कहना था कि आदमी की उम्र का तेज़ घोड़े पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

गांव के लड़के साहसी घुड़सवार थे। घुड़दौड़ में वे घोड़े की अयाल से मकड़ी की तरह चिपककर बैठते थे, जिससे कि सामने से बहनेवाली हवा उनके सीने से टकराकर घोड़े की गति कम न कर दे। अस्कार का हमउम्र केवल एक काले बालोंवाला लड़का था। और लगता था उसका सफ़ेद अयालवाला घोड़ा भी धौले माथेवाले से किसी बात में उन्नीस नहीं था।

"सब तैयार हैं?" अधेड़ उम्र के दौड़ प्रारम्भ करनेवाले ने सब घोड़ों के तंग, काठियां और लगामें जांचते हुए पूछा।

"सब ठीक है।"

"अच्छा तो सुनिये! एक दूसरे की रक़ाबों से मत टकराइये। झुण्ड बनाकर मत चलिये। जगह सब के लिए काफ़ी होगी। हर डेढ़-दो किलो-मीटर पर निरीक्षक खड़े हैं। चढ़ाई और ढलाव पर सावधान रहिये। रा-स्ते के ढलवाँ किनारों, नालों और बिलों के पास से गुज़रते समय सावधान रहिये। नियम भंग मत करिये। अगर किसी का घोड़ा हांफने लगे, तो वह दौड़ में से निकल सकता है।"

"सावधान!"

अस्कार ने सांस रोकी और लगाम कसकर पकड़ ली। धौले माथेवाले की कनौतियां खड़ी हो गयीं।

"शुरू!"

हवा के तेज़ झोंके का कोड़ा-सा लगा, घोड़े एक दूसरे पर धूल के गुबार उड़ाते सरपट आगे भागे।

दौड़ शुरू होते समय अस्कार कुछ क्षण के लिए पीछे रह गया था, अन्य घोड़ों की दुमें उसको हिलती-डोलती दिखाई दे रही थीं, सुमों से धूल उड़कर धौले माथेवाले पर गिर रही थी। वह पूरी छूट मिलने के लिए मचल रहा था। वह अपने आगे चमकते घोड़ों के पुट्ठों के बीच से निकलने का रास्ता ढूंढ़ रहा था। धीरे-धीरे घुड़सवार बिखर गये और एक दूसरे से दूर होते गये। सब एक-सी चाल से सरपट दौड़े जा रहे थे। अस्कार को अपने पीछे किसी घोड़े की सांसों की ज़ोरदार आवाज़ें सुनाई दे रही थीं, सबसे आगे एक छोटा लड़का मुश्की घोड़े पर सरपट भागा जा रहा था और उसके पीछे चार और घुड़सवार थे। यानी धौले माथेवाला

छठे नम्बर पर भाग रहा था। कुल कितने लोग हैं—पन्द्रह या बीस? अस्कार ने मन-ही-मन गिना। अभी ख़ुशी मनाने की कोई बात है ही नहीं। दौड़ का अन्त अभी दूर है, अपनी ताक़त संभालकर ख़र्च करनी चाहिए!

वह घोड़े की अयाल से चिपककर लगाम पकड़े हुआ था, ताकि घोड़े की सांसों की गति महसूस करता रहे। धौले माथेवाला ज़ोर-ज़ोर से सांस लेता और छोड़ता भागा जा रहा था। हवा की सरसराहट से अस्कार को पता चल रहा था कि घोड़ा अपनी रफ़्तार बढ़ाता जा रहा है। धौले माथेवाले का जोश भी बढ़ता जा रहा था, वह लगाम ढीली छोड़ देने के लिए मचल रहा था और प्रचण्ड गति से भागता हुआ मुश्की घोड़े के करीब पहुंचता जा रहा था। घुड़सवार को घोड़े का रोष, नटखटापन और हठ महसूस कर पाने में कोई कठिनाई नहीं हो रही थी। अस्कार ने लगाम ढीली छोड़ दी। उसके दिमाग़ में यह विचार कौंधा, कि घोड़े में अन्त तक इसी रफ़्तार से दौड़ने की शक्ति रहेगी या नहीं। सपार अगा ने निर्णायक चरण तक के लिए घोड़े की शक्ति बचाये रखने की जो सलाह उसे दी थी, उसे न मानकर वह ठीक कर रहा है या ग़लत।

धौले माथेवाला कान दबाये बौखलायी नज़रों से आगे देखता हुआ ज़मीन पर उड़ता-सा भागा जा रहा था। रास्ता तेज़ी से घूमती पट्टी की तरह पैरों के नीचे से पीछे भागता जा रहा था। हवा चेहरे से टकरा रही थी। लेकिन उसे ठंड नहीं महसूस हो रही थी, प्रचण्ड गति ने उसे अवाक् कर दिया था...

धौले माथेवाला उसे लिये आगे दौड़ा चला जा रहा था। लड़के को ऐसा महसूस हो रहा था, जैसे उसके तेज़ और मज़बूत पंख निकल आये हों। उसे अपनी ख़ुशी के बारे में ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर सबको बताने की तीव्र इच्छा हो रही थी।

घोड़े के सीने पर गिर रहे झाग और रुक-रुककर धौंकनी-सी चल रही उसकी सांस से अस्कार समझ गया कि चढ़ाई शुरू हो गयी है। अपने आगे उसे केवल सफ़ेद अयालवाला घोड़ा दौड़ता नज़र आ रहा था। धौले माथेवाला पागलों की तरह उसका पीछा कर रहा था। वह उसके पास पहुचंने लगा, एक दो बार और ज़ोर लगाया और धौले माथेवाले का सिर प्रतिद्वंद्वी की काठी तक पहुंच गया। थोड़ी ही देर में चढ़ाई का शीर्ष-स्थान आ जायेगा और फिर लोगों से खचाखच भरी घाटी की ढलान शुरू

हो जायेगी – सपार-अग़ा वहाँ होगा, ज़उरेश होगी, जिसने दौड़ शुरू होने से पहले फुसफुसाकर कहा था, "प्रथम आना"। वे उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं, उन्हें अस्कार पर विश्वास है।

"मदद कर, प्यारे! मदद कर धौले माथेवाले!"

शीर्ष-स्थान पास आ गया था। धौले माथेवाला सरपट दौड़ता सफ़ेद अयालवाले घोड़े से आगे निकल गया। अस्कार हो-हो कर उठा और ख़ुशी के मारे अपने प्रतिद्वंद्वी पर चिल्लाया,

"ए-ए! ज़रा संभलके मेरे दोस्त! अपने टट्टू को ज़रा ज़ोर से हांको! तुम्हारा नाम क्या है?"

"जोमार्त! यह याद रखना, बेघर आवारा!"

धौले माथेवाला पहाड़ी रास्ते के शीर्ष-स्थान पर पहुंच गया। आगे घाटी में लोगों की भीड़ में उत्साह की लहर दौड़ गयी। तम्बुओं के पास से घुड़सवार ख़ुशियां मनाते अस्क़ार की तरफ़ दौड़ने लगे।

धौले माथेवाला बड़ी आसानी से सबसे आगे सरपट दौड़ता हुआ नीचे उतरता जा रहा था। लेकिन अस्कार अब सब कुछ भूल चुका था, उसके कानों में बस एक ही शब्द "...आवारा!" गूंज रहा था। ग़ुस्से से पागल हो उसने लगाम खींच ली और उस लड़के को चाबुक मारने के लिए काठी से उठा।

इस झटके से धौले माथेवाला रास्ते से उतर गया। उसने पहले एक दरार से ठोकर खायी फिर एक झाड़ी से और मंद आवाज़ में कराहता हुआ नीचे गिरकर लुढ़कने लगा।

अस्कार हाथ उठाये-उठाये घोड़े के सिर के ऊपर से उछटकर नीचे ढलान पर गिरा और मुलायम घास व कंटीली झाड़ियों को रौंदता हुआ नीचे लुढ़कने लगा।

* * *

उसने आंखें खोलीं, तो देखा उसके ऊपर आकाश है और उसकी नीली बुलंदियों में एक चिड़िया उड़ रही है। "उक़ाब हमेशा ऊंचाई पर उड़ते हैं," उसे सपार का तकिया-कलाम याद हो आया। अचानक उसे दो उक़ाब दिखे और लुप्त हो गये, अस्क़ार का सिर चकराने लगा। उल्टी आ-

ती महसूस होने पर उसने खड़े होने की कोशिश की, लेकिन कंधों में हो रही पीड़ा के कारण उसकी चीख़ निकल गयी और वह फिर ज़मीन पर बैठ गया।

"क्या हुआ बेटा?" कहीं दूर से सपार की आवाज़ सुनाई दी।

"कुछ नहीं, सपार-अग़ा, घोड़े से गिरे बग़ैर यह बांका घुड़सवार कैसे बन सकता है? हम अभी इसे होश में लाते हैं," अस्कार ने अपने ऊपर झुके कलताय को देखा।

"लो, होश में आ गया," कलताय ने कराहते हुए अस्कार को साव-धानी से खड़ा कर दिया। "अरे, तुम्हारे हाथ की हड्डी उतर गयी। कोई बात नहीं, थोड़ी देर सहन करो, हड्डी टूटी नहीं है।"

"अरे, यह तो बिल्ली-सा दीर्घजीवी है। रेलवे-इंजन देख चुका है, पिता के चरण-चिन्हों पर चलकर साइबेरिया हो आया है, लेकिन इसका कुछ नहीं बिगड़ा..." किसीने व्यंग्य किया।

अस्कार ने दर्द से दांत भींचे और बात कहनेवाले को ढूंढ़ने के लिए नज़र दौड़ाई। उसके दिल में एक टीस उठी, वह ख़ुद ही बिना सपार और कलताय का सहारा लिये उठ खड़ा हुआ। उसका बायां हाथ चाबुक की तरह झूल रहा था। धूल और दर्द से काले पड़े चेहरे पर से पसीने की गंदली बूंदें बह रही थीं।

"शाबाश, शाबाश, ख़ुद उठ खड़ा हुआ," उत्तेजित हुआ कलताय बार-बार कह रहा था, वह लंगड़ाता हुआ लड़के के चारों ओर घूम गया। उसने ध्यानपूर्वक उसका हाथ देखा, फिर बड़ी सावधानी से कंधा छुआ। "अस्कारजान, तुम थोड़ी देर सहन करो, सब ठीक हो जायेगा। फिर बांके घुड़सवार बन जाओगे और कहीं भी जा सकोगे..."

लड़का गिरते-गिरते खड़ा हुआ, दर्द को सहते हुए चौकन्ना होकर कल-ताय की ओर देख रहा था। वह कुछ दिन पहले मोर्चे से लौटे इस लंगड़े आदमी के बारे में बहुत कम जानता था, इसीलिए उससे डरता था। कल-ताय ज़्यादातर मौन और उदास रहता था, अकेला रहता था। वह गांव के रास्तों में बहुत ही कम दिखाई देता था, हमेशा कुछ-न-कुछ करता रह-ता था, बेकार नहीं बैठ सकता था, हरफ़न मौला था। बेकार बैठने पर वह उदास और एकान्तप्रिय हो उठता था। अस्कार ने देखा था कि गांव की जवान विधवाएं और लड़कियाँ कलताय की ओर बड़े प्यार से देखती हैं। लेकिन लगता था, कलताय इसकी ओर कोई ध्यान नहीं देता था।

"सपार-अग़ा, मेरी मदद कीजिये। इसे कसकर पकड़े रहिए, छोड़िये नहीं," कलताय ने कहा।

"बेटा, थोड़ी देर सब्र कर वरना अपंग बन जायेगा," सपार ने अस्कार को कसकर बांहों में जकड़ लिया।

लड़के ने चारों तरफ़ नज़र दौड़ाई। उसे घेरे लोगों में उसने ज़उरेश को देखा, वह उसकी ओर देखकर मुस्कराना चाहता था, मगर मुस्करा न सका।

"आ-आ!" कलताय ने उसके दुखते हाथ को ज़ोर से खींचा।

अस्क़ार की हृदयविदारक चीख निकल गयी। सपार का चेहरा विकृत हो उठा, उसने बेहोश हुए लड़के को सावधानी से किसी के ओवरकोट पर लिटा दिया और पानी लाने के लिए कहा।

"इसे घुड़सवारी की आदत नहीं है। लड़के को बेकार ही धौले माथे-वाले पर सवार करा दिया," किसी बूढ़े ने एक ठंडी सांस ली।

"सब ठीक है, हाथ की हड्डी बिठा दी है, एक-दो दिन में वह घोड़े पर क्या चाहे तो जिन पर भी सवारी कर उसे सरपट दौड़ाने लायक़ हो जायेगा" कलताय आस्तीन से अपना पसीने से तर चेहरा पोंछते हुए मुस्कराया।

"ग़लती मेरी थी, यह मेरी वजह से गिरा," जोमार्त ने लोगों से आंखें चुराते हुए कहा।

किसीने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। केवल सपार उसके नज़दीक पहुंचकर बोला,

"ख़ैर, अगर यही बात है, तो तुम और ज़उरेश इसे घोड़ागाड़ी में लिटाकर गांव ले जाओ। घास ज़रा ज़्यादा बिछा देना। घोड़े को धीरे-धीरे हांकना, जिससे हचकोले कम लगें।"

* * *

जोमार्त ने आगे बैठकर सावधानी से लगाम खींची। अपने को दोषी मानते हुए वह अस्कार की ओर न देखने की कोशिश कर रहा था। ज़उ-रेश पास ही बैठी थी।

"बहुत ज़्यादा दर्द हो रहा है क्या?" उसने धीरे से पूछा।

"थोड़ा बहुत," अस्कार ने जवाब दिया।

ताज़ा काटी हुई मुलायम व नम घास और ज़उरेश का सामीप्य उसपर जादू का-सा असर कर रहे थे। वह अपनी पीड़ा के बारे में बिलकुल भूल गया।

सब चुपचाप सफ़र करते रहे। अस्कार ज़उरेश की ओर से अपनी नज़र हटाने की कोशिश कर रहा था, वह हरी-भरी पहाड़ियों की ओर देख रहा था, जिनके सहारे-सहारे गांव का रास्ता जाता था। कभी-कभी हचकोले लग रहे थे, लेकिन इससे अस्कार को तकलीफ़ नहीं हो रही थी। पहाड़ियों की हरियाली देखते-देखते वह स्वतः सोच में डूब गया।

सपार-अग़ा ने आज उसे फिर उसके पिता की याद दिलाई थी।

"तू बहुत अच्छा आदमी है, बिलकुल अपने पिता पर गया है," उसने कहा था।

पिता के बारे में उसकी यादें आंशिक और अस्पष्ट थीं। उसे केवल इतना याद था कि वह अपरिचित लोगों के साथ घर से गये थे और फिर कभी वापस नहीं आये। और मां की तो उसे बिलकुल भी याद नहीं थी। उनकी मृत्यु अस्कार के दो साल का होने के पहले ही हो गयी थी।

पिता सन् १९४० में वापस आये थे। बीमार थे और सूखकर कांटा हो रहे थे। अस्कार उस समय स्कूल नहीं जाता था, सपार के पास रह रहा था।

अपने दोस्त से मिलते समय सपार के आंसू निकल आये, वह बार-बार यही कह रहा था,

"मैंने कहा था न कि यह ग़लत है। यह सारी करतूत अमीरबेक की है। उसका परदाफ़ाश कैसे करूं? मैं भी तुम जैसा कम पढ़ा-लिखा हूं... ख़ैर, चलो सब ठीक हो गया। सत्य की सदा विजय होती है। तुम अपराधी कैसे हुए? आख़िर हम अपनी लाल सेना के जवानों के घोड़े चराते थे, लुटेरों के सरदार आन्निनकोव की गाड़ियों में से बारूद चुराते थे, श्वेत सैनिकों को मारते थे। हमने तोरेगेल्दी को भगाया, सामूहिक फ़ार्म बनाया। हमने खुद ही बनाया... आख़िर तुम अपराधी कैसे हुए? ख़ैर, ख़ुदा का शुक्र है, यह ग़लती सुधार ली गयी। और जहाँ तक बाग़ का सवाल है, तो हम ऐसा बाग़ लगायेंगे कि गांव के सारे बच्चे साल भर सेब खाते रहें, तो भी कम न पड़ें..."

पिता उदासी से मुस्कराये। अस्कार के पिता मितभाषी थे। अपने बेटे को बहुत प्यार करते थे। अपने छोटे-से घर में उन्होंने मोची की दुकान खोल ली थी और फ़ार्म के कर्मियों के जूतों की मरम्मत करते थे। इस काम के लिए उनका एक दिन आधे श्रम-दिन के बराबर गिना जाता था।

"मैं थोड़ा ठीक हो लूं, फिर सब के साथ काम करने जाऊंगा। हम अभी और लड़ेंगे," उसके पिता कहते थे।

रोज़ाना शाम को घर में लोग जमा होते थे, पिता से अपनी-अपनी समस्याओं के बारे में सलाह किया करते थे, लेकिन किसी ने उनसे कभी नहीं पूछा कि वे कहां रहे। तब अस्कार ने ही पूछ लिया,

"आपको कहां ले गये थे, अब्बा?"

"बहुत दूर," उन्होंने जवाब दिया।

यह उसी दिन की बात है, जिस दिन अमीरबेक उनके यहां आया था।

"मुझे तुम्हारे लौट आने से बड़ी ख़ुशी हुई," उसने पिता से कहा।

"नीच कहीं का!" पिता ने जवाब में कहा। अस्कार ने अपने पिता को इतने ग़ुस्से में पहली बार देखा था। "मैं अपने को पूरी तरह बेगुनाह साबित करने तक चैन से नहीं बैठूंगा।"

"बहुत देर में ख़याल आया तुम्हें इस बात का, तुरूसबेक," अमीरबेक घिनौने और कुटिल ढंग से हंस रहा था। "मैंने तुम्हारे काग़ज़ात फिर ज़िले की अदालत में भेज दिये हैं। फिर से जांच होगी। अदायगी के काग़ज़ातों पर तुम्हारे दस्तख़त हैं। तुम बाग़ लगाना चाहते थे, पेड़ ख़रीदना चाहते थे, सड़कें बनवाना चाहते थे। लेकिन इजाज़त किसने दी थी? पैसा तो सरकार का था। तुमने क़ानून की ख़िलाफ़वर्ज़ी की। और पैसा अपनी जब में डाल लिया।"

"नीच! पैसे तुमने लिये थे, मेरे जाली दस्तख़त बनाकर।"

"क्या कहते हो तुरूसबेक? दस्तख़त तो तुम्हारे ही थे..."

"निकल जा यहाँ से, निकल!" पिता पीले पड़ गये... उन्होंने अपना दिल थाम लिया था।

वह काफ़ी देर तक मौन बैठे रहे। सन्नाटे में चिराग़ चरचर करता और धुआं छोड़ता हुआ जल रहा था। इसके बाद पिता शायद शान्त हो गये थे। उन्होंने बेटे को सीने से लगा लिया।

"बेटा, तुम यह जान लो कि तुम्हारा अब्बा हमेशा ईमानदार रहा है।" उनकी गरम-गरम खुरदुरी उंगलियां काफ़ी देर तक अस्कार का सिर सहलाती रहीं। "मगर मुझे फंसा दिया गया। ज़िन्दगी में बड़ी उलझनें होती हैं। पर कोई बात नहीं... तुम्हारा कुछ नहीं बिगड़ेगा। अब मुझे और कोई तंग नहीं करेगा... तुम यह याद रखो कि मैं लोगों की और अपनी नज़रों में बेगुनाह हूं," उन्होंने दोहराया। फिर कुछ सोचकर आगे बोले, "और तुम्हारी नज़रों में भी। मैं अपने गांव को ख़ूबसूरत बनाना चाहता था, मेरी इच्छा थी कि उसका अपना बड़ा बाग़ हो, बड़ा स्कूल हो..."

बाद में जब वे बिस्तर में लेटे, तो पिता ने उसे परियों के शहर और ख़ूबसूरत बाग़ की कहानी सुनाई थी।

सुबह पिता की नीन्द नहीं खुली। अस्कार को अपने पिता का इतनी देर तक सोना अजीब लगा। वह बिस्तर के पास पहुंचा, तो स्तम्भित रह गया। पिता का चेहरा मोम की तरह पीला पड़ गया था।

अस्कार पागलों की तरह चीख़ता घर से बाहर भागा। जब लोगों की भीड़ जमा हो गयी, तो एक बुज़ुर्ग ने उसके पिता को ध्यान से देखकर कहा,

"ज़हर..." और उसी क्षण ज़बान काट ली।

सपार उन्हें टकटकी बांधे देखता रहा। उसने धीरे से सिर हिलाया, जैसे बुज़ुर्ग को चुप करने का इशारा किया हो। अमीरबेक उस दिन दिखाई नहीं दिया। अस्कार को सपार के घर ले जाया गया और वह कयसार के साथ रहने लगा।

"अब तू अकेला रह गया, यानी तू अनाथ है?" कयसार ने पूछा और ख़ुद ही विश्वासपूर्वक जवाब दिया, "हाँ, तू अनाथ है!"

यह शब्द अस्कार ने शाम को सुना, जब लोग उसके पिता को दफ़ना चुके थे।

अनाथ!" उसने कपड़े उठाये और सपार का घर व गांव छोड़कर दूर भाग गया। उसे किसी की दया नहीं चाहिए थी। ठंड की परवाह किये बिना वह भागता-भागता तुयुकुरूस पहुंच गया और वहाँ के स्कूल के परिचित चौकीदार को ढूंढ़कर उससे उसके घर में आश्रय देने की विनती की। पीछे-पीछे सपार घोड़ा दौड़ाता आया।

तीनों सुबह तक चुप बैठे रहे। सुबह सपार उसे करलीगाश से बारह किलोमीटर दूर बड़े गांव ले गया और बोर्डिंग-स्कूल में भरती करा दिया। तब से ही यह ज़िन्दगी शुरू हो गयी...

गर्मियों में युद्ध छिड़ गया। बोर्डिंग-स्कूल बन्द कर दिया गया। अस्कार को अनाथालय भेज दिया गया। पहले दिन ही नये लड़के को सबक़ मिल गया – लड़कों ने उसका खाना छीन लिया, पीटा और रात में उसका कम्बल छीन ले गये। अस्क़ार ने अपनी रक्षा की, अत्याचारी के हाथों पर काट लिया, उसका मुँह नोच लिया और खिड़की का शीशा तोड़कर बाहर कूद गया...

वह अपना थैला उठाये जेतिसू के पतझड़ के कीचड़भरे रास्तों पर भटकता रहा। ख़ाली कैंपों और सूखी घास के ढेरों में रात काटता हुआ वह एक गांव से दूसरे गांव तक चलता रहा। बर्फ़ीले दिनों में उसने अनजान आदमियों के दरवाज़े खटखटाये, भीख मांगकर और आलू के छिलके चुनकर पेट भरा, फ़ौजी भरती दफ़्तरों जहाँ से मर्द मोर्चे पर जाते थे और ग्रामसोवियतों के दरवाज़ों के बाहर पड़े सिगरेटों के टोटे उठाये। वह हमेशा भूखा रहने का आदी हो गया, इस बात का भी आदी हो गया कि लोग उसके लिए हर बार अपने घर के दरवाज़े नहीं खोलेंगे। कभी-कभी उसे दुतकार दिया जाता, कभी उस पर कुत्ते छोड़ दिये जाते। इन सालों में जितने तमाचे उसे खाने पड़े, उनकी तो कोई गिनती ही नहीं। फिर भी भले आदमी ज़्यादा ही मिले। शायद वे ज़्यादा याद रहे होंगे? एक बार स्टेशन पर उसने एक घायल सैनिक की मदद की, जिसकी दाढ़ी बढ़ी हुई थी। उसे सुबह और शाम गरम पानी लाकर देता रहा। सैनिक भी अस्कार की ही तरह अकेला था, उसका परिवार उक्रइन में मारा गया था। जब लड़का उसे अपनी राम-कहानी सुना रहा था, तो सैनिक स्वस्थ हाथ से अपने आंसू पोंछने लगा। फिर उसने अपने राशन-कार्ड अस्कार को दे दिये।

"ले, ये रख ले। डर मत, अब मुझे तो इनकी ज़रूरत ही क्या है?..." उसने कहा।

छोटे-छोटे आवारा लड़कों से दोस्ती करके अस्कार शहर पहुंच गया, जहाँ पुलिस ने उन्हें पकड़ मालगाड़ी के डिब्बों में बिठा साइबेरिया में नोवाकुज़नेत्स्क के फ़ैक्टरी के प्रशिक्षण केंद्र भेज दिया, जो सन् १९४३ में

फटे-पुराने कपड़े पहने भूखे बच्चों से खचाखच भरा था। तीन महीने बाद अस्कार वहाँ से फिर भाग निकला – उसे अपनी जन्म-भूमि लौटने की तीव्र इच्छा हुई।

तब से वह अपने गांव में रह रहा है। सपार-अगा ने बड़े प्यार से उसका स्वागत किया। उसे पढ़ने के लिए मजबूर किया, यहाँ तक कि दो साल की परीक्षाएं पास करवाईं। अस्क़ार दमेश चाची के घर में रह रहा है। वह अकेली थी। अस्कार को बेटा कहकर पुकारती है।

अस्कार को जब याद आया कि दमेश-आपा उसका उतरा हुआ हाथ देखकर कितनी घबरा गयी थी, तो वह मुस्करा पड़ा।

"किस बारे में सोच रहे हो तुम? तुम तो चुप्पे हो," ज़उरेश ने उसका विचार-क्रम भंग कर दिया।

"मुझे याद हो आया था कि आज दमेश-आपा मेरी वजह से कितनी डर गयी थीं," अस्कार ने दिल खोला।

"तुमने उनका गुस्सा तब देखा होता, जब अमीरबेक ने सपार से कहा कि उसे तुम्हें धौले माथेवाला नहीं देना चाहिए था और घुड़दौड़ में नहीं भेजना चाहिए था।"

"वह चाहता है कि यहाँ सब कुछ उसकी इच्छानुसार हो। आख़िर सामूहिक फ़ार्म का लेखाकार जो है। सबसे बड़ा आदमी। सामूहिक फ़ार्म की सारी सम्पत्ति उसके हाथों में है..."

* * *

अस्क़ार ने कोई जवाब नहीं दिया। वह केवल यही सोचता रहा – ऐसा आख़िर क्यों होता है – प्रधान को तो मतदान करके चुना जाता है और हमेशा भले आदमी को ही चुना जाता है, लेकिन लेखाकार को क्यों नहीं चुनते? फिर उसे हटाया भी नहीं जा सकता, क्योंकि सामूहिक फार्म के सारे काग़ज़ात और मामले उसके पास होते हैं। लोगों का वेतन भी उसी पर निर्भर करता है। उसे सारे क़ानूनों का जानकार समझा जाता है और लोग भी उससे डरते हैं। क्या इसीलिए कि गांव में पढ़े-लिखे वयस्क लोग अभी कम हैं? .. जो पढ़े-लिखे भले लोग थे, सब के सब मोर्चे पर मारे गये। उसे तीव्र इच्छा हुई कि वह जल्दी से बड़ा होकर पढ़ना-लिखना सीख

जाय और अमीरबेक से लेखाकार का पद छीन ले, सारे काम ईमानदारी से करे, गांव में वैसा ही बाग़ लगाये, जैसा उसके पिता लगाने के सपने देखते थे....

* * *

लोग त्योहार को काफ़ी दिनों तक याद करते रहे। वैसे उसके बाद न काम कम हुआ और न खाद्य-सामग्री बढ़ी – सामूहिक फ़ार्म के भण्डार में न एक मुट्ठी आटा बचा, न मांस का एक टुकड़ा। लेकिन, लगता था, अक्तूमावालों को इसकी अधिक चिन्ता न थी।

स्त्रियां चूक, पहाड़ी प्याज़ और मजीठ के कन्दमूल इकट्ठा करने लगीं। चूक का सूप बनाया जाता और कन्दमूल को राख में आलू की तरह पकाया जाता। औरतें फटे हाथों से खलिहानों में पिछले वर्ष का बचा भूसा बीनतीं, नमी से फूले और अंकुर फूटे अनाज के दानों से घास काटनेवालों के लिए शोरबा बनातीं, स्कूली बच्चों को भी एक-एक मुट्ठी भूना हुआ गेहूं दिया जाता। बच्चे और बड़े सभी दिन भर ज़िले से आनेवाली सड़क को ताकते रहते। एक एक करके मोर्चे पर लड़नेवाले लौट रहे थे, एक परिवार की ख़ुशी सारे गांव की ख़ुशी हो जाती थी। जिन परिवारों को मृत्यु-सूचना मिल चुकी थी, उन्होंने भी आशा नहीं छोड़ी।

लोग जैसे लम्बी व गहरी नीन्द से जाग उठे, उन्होंने पहाड़ियों व घास के मैदानों के सौन्दर्य को अनुभव किया, देखा कि उनके देहाती घरों की लिपाई-पुताई नहीं हुई है, छतें टूट रही हैं, जानवर सूख रहे हैं और गाड़ियां न जाने कैसे टिकी हुई हैं।

युद्ध के चार वर्षों के दौरान अर्थ-व्यवस्था इतनी बिगड़ चुकी थी कि फिर सब नये सिरे से शुरू करना पड़ रहा था।

"सन् तैंतीस जैसा हाल हो रहा है। सब ख़ाली पड़ा है – भण्डार भी ख़ाली हैं, देगचियां भी और पेट भी," सर्वज्ञ दमेश चाची ज़िला-मुख्यालय के बाज़ार में ऊन के बदले में मिली चोकर की बोरियां टटोलते हुए कहती।

"मुझे तो सन् तैंतीस जैसा हाल बिलकुल नहीं दिखता। तब कम-से-कम गांव में नौजवान लोग तो कुछ ज़्यादा थे, और अब? बच्चे और औरतें। घास काटने का काम मुझ जैसे बुड्ढे कर रहे हैं," सपार ने ठंडी

सांस ली। "ख़ैर, कोई बात नहीं – हमारे नौजवान लौट आयें, फिर अर्थ-व्यवस्था सुधार लेंगे। सबसे बड़ी बात तो यह है कि युद्ध समाप्त हो गया। दमेश, अब तुम कुड़कुड़ाना बन्द करो। चोकर लो, थोड़ा बहुत जौ का आटा हम दे देंगे, दोनों को मिलाकर घास काटनेवालों के लिए रोटियां सेंक लो। तुम इस काम में बड़ी उस्ताद हो।"

"ज़िन्दगी उस्ताद बना देती है," दमेश ने गहरे सोच में डूबे हुए कहा। "कोई उस्ताद हो या न हो, लेकिन चोकर से कोई बढ़िया चीज़ बन ही नहीं सकती।"

"मेरी समझ में नहीं आता कि मुझे गांव में क्या चीज़ खींच लायी? शहर में ही कहीं रह जाता, कोई काम ढूंढ़ लेता और चैन की बंसी बजाता। बंधी हुई तनख़्वाह बड़ी भरोसेमंद चीज़ होती है। यहाँ तो मज़दूरी सिर्फ़ शरत ऋतु में मिलेगी, वह भी तब जब फ़सल अच्छी होगी। साल भर मुफ़्त काम करना पड़ सकता है," चोकर की बोरियां तराज़ू पर डालते हुए कलताय एकाएक कह उठा।

उसने यह बिना किसी दुर्भावना के ऐसे ही सोचते-सोचते कह दिया था। लेकिन अस्कार ने देखा कि सपार-अगा का चेहरा गुस्से से तमतमा उठा।

"क्या बकता है! हर जवान आदमी केवल अपना ही पेट भरने लगा, तो बच्चों, बूढ़ों, मांओं और विधवाओं का पेट कौन भरेगा? भागना चाहता है, तो जा, हम रोक नहीं रहे। आज ही चला जा!" वह कलताय पर बरस पड़ा।

"सपार-अगा, क्या मैं ख़ुद नहीं समझता। आख़िर मेरा यह मतलब तो नहीं था..." कलताय ने ठंडी सांस ली। "तुम बताओ, घास कहां से काटना शुरू करूं। चलो, सारे बच्चों और अपाहिजों को लेकर चलता हूं। बैठे रहने का वक़्त नहीं रहा, मात्र बूढ़ों से काम नहीं हो सकेगा – घास सूख जाएगी।"

"दुधार गायों को मैंने गांव के नज़दीक हांक लाने को कह दिया है। दमेश दूध दुहनेवालियों के साथ काम करेगी। दूध घास काटनेवालों को देंगे। फ़सल की कटाई तक किसी तरह काम चला लेंगे," सपार ने अब कुछ शान्त स्वर में कहा।

"हां, अस्कार, तुम्हारी छुट्टियां हैं, तुम गायों के बाड़े में हिसाब-

किताब का काम करोगे। दूध दुहनेवालियों की मदद करो। तुम अब बड़े हो गये हो, बहुत भाग लिये अपने गांव से। तुम्हें दो पहियों की गाड़ी दे देंगे, तुम दूध तुन्कुरूस में डेयरी ले जाया करना और वहां साफ़ किये जाने के बाद उसे हर टोली में बांटते आया करना। हर चीज़ का हिसाब रखना . . . "

सामूहिक फार्म का बाड़ा गांव से डेढ़ किलोमीटर दूर गहरी पहाड़ी घाटी के मुँह के पास था। वहां दूध दुहनेवालियों के लिए दो झोंपड़ियां और बछड़ों के लिए एक बाड़ा बना दिये गये थे। चरवाहे ममीरबाय और लोहार केनेख़ान ने मिलकर दरवाज़े और अस्कार के लिए दो पहियों की गाड़ी तैयार कर दिये। लोहार-ख़ाने के आंगन में पड़े बड़े लट्ठे में से पहिये बना लिये गये और उन्हें लोहे के घेरों में जकड़ दिया गया।

"लो, तुम्हारा टैंक तैयार हो गया। दूध के डिब्बे रखो और रवाना हो जाओ। धीरे-धीरे गाड़ी हांकोगे, तो पहिये ज़्यादा दिन चलेंगे, वक्त पर इनमें तेल देते रहे, तो दुनिया के दूसरे कोने तक जा सकोगे," केनेख़ान ने कहा।

मक्खन निकलवाने के लिए दूध को तुनकुरूस ले जाने का काम अस्क़ार को ज़्यादा मुश्किल नहीं लगा, वह शीघ्र ही इसका अभ्यस्त हो गया। वह निकाले गये कुल दूध की मात्रा नाप-नापकर अपनी बनायी कॉपी में लिखने लगा। मक्खन निकला हुआ दूध वह टोलियों के कैंपों में बड़े-बड़े बर्तनों में भर देता और बावरचिनों से अपनी कॉपी में दस्तख़त करवा लेता। लेकिन उसका मुख्य काम और था। सप्ताहांत में वह लेखाकार अमीरबेक को हिसाब दिया करता था। अमीरबेक से मिलना उसे बड़ा बुरा लगता था। अमीरबेक को अस्कार पसन्द न था और वह इस बात को छिपाता भी नहीं था। वह बाल की खाल निकालते हुए हर इन्दराज की जांच किया करता था।

लेकिन धीरे-धीरे अस्कार उसका आदी हो गया—वह चुपचाप अपनी कॉपी जांच के लिए अमीरबेक को दे देता और चुपचाप वापस ले लेता और उसकी बातों और घूरती नज़रों की ओर ध्यान दिये बग़ैर वहाँ से चला आता।

ज़उरेश अक्सर बाड़े में दूध दुहनेवाली आयसलू के पास आया करती थी। वह एक बड़े पत्थर पर बैठकर अस्कार को काम करते देखती रहती

थी। अस्कार सहम उठता, उसे बाड़े में बछड़े को ढूंढ़ने और गाय के पास लाने में काफ़ी मुश्किल होती।

"अस्कारजान, क्या तुम ज़उरेश से डरते हो? उसे देखते ही तुम्हारी हालत ख़राब हो जाती है और तुम बछड़ों को संभाल नहीं पाते," दूध दुहनेवालियां उसे छेड़तीं। "ख़ैर, कोई बात नहीं, कुछ दिनों में ही हमारा फ़ार्म अमीर हो जाएगा, हमें रस्सियां मिल जायेंगी, फिर तुम इस इल्लत से छुटकारा पा जाओगे। लेकिन तब तक तो पसीना बहाना ही पड़ेगा।"

...कुम्मैत बछड़ा किसी भी तरह अपनी मां के थन छोड़ने को तैयार नहीं था। अस्क़ार ने उसके कान पकड़कर खींचे, लेकिन उसने उसके ऐसी टक्कर मारी कि वह ज़मीन पर गिर पड़ा। ज़उरेश खिलखिलाकर हंस पड़ी।

"ए, नौजवान! लाओ मैं तुम्हारी मदद करती हूं," उसने बड़ी फुरती से एक झटके में बछड़े को थनों से अलग कर दिया और एक पतली-सी टहनी से उसे हांकती हुई बाड़े में ले गयी।

बाड़े के फाटक के पास पहुंचते-पहुंचते बछड़ा उछलने-कूदने लगा और रंभाता हुआ अपनी मां की तरफ़ भागा।

"अरे, कुम्मैत, कहां भागा जा रहा है तू?" ज़उरेश और अस्कार उसके पीछे लपके।

बछड़ा अचानक पलटकर बाड़े की ओर भागा। अस्क़ार और ज़उरेश एक दूसरे से टकरा गये।

"अस्क़ार, क्या तुम मेरी ज़उरेश का आलिंगन कर रहे हो? क़लीन* लाओ?" आयसलू विनोदी स्वर में चिल्लायी।

"उन्हें परेशान मत कर, नटखट औरत!" दमेश-आपा मुस्करायी।

"वाह, क्या ज़बान मिली है तुम्हें। भाई होता, तो तुम्हें बताता नटखटापन क्या होता है," आयसलू की ओर एक चंचल दृष्टि डालते हुए ज़उरेश ने शर्माकर कहा।

इस घटना के दोषी का नाम कुम्मैत दिया गया। दूसरे बछड़ों और गायों के लिए भी नाम रखे जाने लगे। अस्कार शुरू में उनके नाम प्रसिद्ध

---

* क़लीन – वह संपत्ति जो वर की ओर से वधू के मां-बाप को विवाह से पहले दी जाती है। सं०

व्यक्तियों के नाम पर चंगेज़, बती, नेपोलियन, तैमूर आदि रखता रहा...स्वभाव और आदतों को ध्यान में रखकर दूध दुहनेवालियां जानवरों के नाम गांव की औरतों के नाम पर रखने लगीं। इससे प्रेरित होकर अस्कार ने सबसे ज़्यादा अड़ियल बछड़े का नाम अमीरबेक रख दिया।

गांव के बच्चे बाड़े में सधे हुए बछड़ों को देखने भाग-भागकर आने लगे।

"अरे, देखो, यह गाय तो बिलकुल सरूआर से मिलती-जुलती है, वैसी ही सुस्त है। और यह बछड़ा तो सांचे में ढला अमीरबेक लगता है, इसका भी थोबड़ा लोमड़ी का सा है," बच्चे हंसते रहते।

एक बार अस्कार से मक्खन निकले दूध का बर्तन उलट गया। तुनकुरूस से लौटते समय बैल को गोमक्खी ने काट लिया और वह लातें मारता हुआ अक्तूमा की ओर भाग चला। दो पहियोंवाली गाड़ी पत्थर पर चढ़ गयी, पहिया टूट गया और अड़तीस लीटरवाला दूध का बर्तन नाली में उलट गया। अमीरबेक ने अस्कार को अपने पास बुलवा भेजा।

"दूध कहाँ दे आया? किस को बेच दिया?!" बिगड़े हुए को पालने-पोसने का नतीजा यही तो होता है। सांप का बच्चा संपोलिया! मैंने सुना है तू मुझे चिढ़ाने की हिम्मत भी करता है?" अमीरबेक का बना-संवरा चिकना चेहरा ग़ुस्से के मारे लाल हो उठा, उसकी काली-काली मूंछें तन गयीं।

"यह बछड़े से ज़्यादा तो छककर खाये हुए बिल्ले-सा लगता है," अस्कार ने सोचा।

"लेकिन आप बछड़ा थोड़े हैं," उसने प्रकटतः कहा।

अमीरबेक लड़के पर टूट पड़ा और उसने कसकर एक चपत उसके चेहरे पर जड़ दिया।

"ठहरो!"

सपार लेखाकार के दफ़्तर में आ घुसा।

"आ गया मुखिया, हिमायती। इस बिगड़ैल को पालने-पोसनेवाला..."

सपार ने उसे अपनी बात पूरी न कहने दी। उसके बड़े व मज़बूत हाथों ने अमीरबेक का गला पकड़ लिया।

"बिगड़ैल कौन हुआ?" सपार की आवाज़ कांप रही थी। "तू तो उसकी चिट्टी उंगली के बराबर भी नहीं है, समझा? यह तेरी करतूत

है, तेरी, तूने ही किया था, न कि इसके पिता..." सपार ने अपने पर बड़ी मुश्किल से क़ाबू किया और पीले पड़े अमीरबेक को छोड़ थककर तिपाई पर बैठ गया।

"सपार, तू ऐसी हरकतें छोड़ दे। मैं कम्युनिस्ट हूं, मैं तेरी शिकायत करूंगा..."

"कर शिकायत, मैं भी कम्यूनिस्ट हूं। मैं तो जानता हूं कि तेरी वजह से सामूहिक फ़ार्म को इतना ज़्यादा नुक़सान पहुंच रहा है जितना किसी और से नहीं पहुंचता। इसका पिता भी कम्युनिस्ट था, सच्चा कम्युनिस्ट तुझ जैसा नहीं," सपार ने अस्कार की ओर इशारा करते हुए कहा। "मेरे जीते जी कोई इसे परेशान करने की हिम्मत नहीं कर सकता!.. अच्छा, बेटा, जाओ तुम काम करो। कलताय को भेज देना। उससे कह देना कि कार्यालय की बैठक होगी।"

रास्ते में अस्क़ार को कयसार मिला।

"तूने मुँह क्यों लटका रखा है? अमीरबेक से डर गया क्या? कोई बात नहीं, उसकी हम ख़ूब मरम्मत करेंगे," कयसार ने शरारती ढंग से आंख मारी।

* * *

सपार शाम को कार्यालय की बैठक के बाद बाड़े में पहुंचा। दूध दुहनेवालियों का काम देखते समय उसके चेहरे पर फ़ीकी मुस्कान थी। फिर जब उसने बछड़ों के नाम सुने, तो दिल खोलकर हंसा।

"शाबाश! क्या तरकीब निकाली है! अब तुम लोगों को रस्सियों की कोई ज़रूरत नहीं रही। हमें रस्सी के बहुत कम लच्छे मिल सके हैं। उनकी गहाई की मशीन के लिए सख़्त ज़रूरत है। और पैसा मिल जाये, तब तुम्हारे लिए सिर्फ़ कमन्द ही नहीं ख़रीदेंगे, घर भी बना देंगे।"

सपार रात देर गये तक बाड़े में रहा। वह अलाव के पास बैठकर बोलने लगा:

"अस्क़ारजान, लोगों की करतूतें न समझ पानेवाले तुम ही अकेले नहीं हो। अगर मैं कुछ पढ़ा-लिखा होता," वह सोच में डूबे-डूबे जली हुई लकड़ी से आग कुरेदते हुए कह रहा था, "तो मुझे पता लग जाता

कि अमीरबेक में कैसी ख़ासियतें हैं... देखो तवोल्गा* की जड़ें कितनी अच्छी तरह जलती हैं। बिलकुल कोयले की तरह। धुआं कम निकलता है और आग इतनी तेज़ होती है कि लोहा भी तपा दे... ऐसी आग के पास बैठने में आनन्द आता है। जब धुआं निकलता है, तो आंखें आंसुओं से धुंधला जाती हैं। लेकिन हर चीज़ का साफ़ होना ज़रूरी है। तुम्हारे पिता का दिल साफ़ था। मेरी समझ में नहीं आता, उस पर यह कलंक लगा कैसे। युद्ध में भी सारी बात स्पष्ट थी। लेकिन... इस मामले में समझ में नहीं आता कि सचाई क्या है।"

सपार अपने विचारों में मग्न काफ़ी देर तक मौन रहा। अस्कार भी चुप्पी साधे बैठा था।

"अरे, मैं भी क्या..." अचानक सपार को ध्यान आया। "मैं कुछ और ही कहना चाहता था। तुम्हें कल से दूसरा काम करना होगा। कार्यालय की बैठक में फ़ैसला हुआ है कि चूना तैयार किया जाये, उसके बदले में हम लोग आटा, आलू और लुनेरों व स्वचालित ट्रेलरों के लिए पुरज़े लिया करेंगे। हमारी पहाड़ियों में चूना-पत्थर बहुत है। कल कलताय अपनी टोली चुनेगा, तुम उसके साथ चले जाना। तुम टोली के श्रमदिनों का हिसाब रखना और दुभाषिये का काम करना। इन पहाड़ियों में रूसियों के गांव हैं। कलताय के साथ उनमें जाना। अगर किसी को चूने की ज़रूरत हो, तो वह पहले से बता दे। देखो, बुज़ुर्गों से चूना-पत्थर ढूंढ़ना और उससे चूना बनाना सीखना है। नौजवान को बहुत से काम आने चाहिएं। उसके लिए सौ विद्याएं जानना भी कम है। कहने का मतलब यह है कि काम काफ़ी होगा। हमें अपने पैरों पर जमकर खड़ा होना है। अगर इस साल फ़सल अच्छी हुई, तो सामूहिक फ़ार्म के पास थोड़ा बहुत पैसा जुड़ जाएगा और अगले वसन्त में हम ख़ुद ईंटें बनाने लगेंगे और घरों की मरम्मत कर लेंगे..."

अस्क़ार को नीन्द नहीं आ रही थी। उसकी आंखों के आगे सपार-अग़ा का लम्बा-चौड़ा शरीर व असाधारण रूप से झुके कंधे डोल रहे थे। उसकी दाढ़ी-मूंछें बढ़ी हुई थीं, गाल पिचक गये थे। आग की फड़फड़ाती लपटों की चमक में उसका चेहरा कांसे का बना लग रहा था। उसके

* तवोल्गा – एक प्रकार की झाड़ी। सं०

शरीर, उसके हाथों की हरकतों, उसकी बातों में अब पहले जैसी ताक़त, रोब और शान्तचित्तता नहीं रही थी। वह खोया-खोया-सा दिखाई देता था, उसकी बातें और मुख-मुद्रा दयनीय थीं। लगता था, जैसे उसे किसीके संरक्षण और सहानुभूति की तलाश है।

बहादुर, निडर, विनोदी चरवाहा, रोबीला, समझदार मुखिया, सारे गांव का नेता एकाएक निस्सहाय बूढ़ा हो गया था। वह बाड़े में बैठक के तुरन्त बाद आया था। वहाँ उन लोगों में क्या बातें हुईं? अस्कार के बारे में ही हुई होंगी। शायद अमीरबेक ने अस्कार के पिता के बारे में कुछ ऐसी बातें कही होंगी, जो सपार लड़के को नहीं बता सकता। इसमें सन्देह नहीं कि सपार-अग़ा को अमीरबेक पर विश्वास नहीं है, लेकिन वह अपनी सचाई साबित नहीं कर सकता। वह अमीरबेक को निकाल नहीं सकता, क्योंकि उसके ज़िला मुख्यालय में बहुत-से दोस्त हैं और सामूहिक फ़ार्म के सारे काग़ज़ात और दस्तावेज़ भी उसी के पास रहते हैं। और सपार-अग़ा बहुत कम लिखना-पढ़ना जानता है, अमीरबेक के तैयार किये हिसाब-किताब पर वह बड़ी मुश्किल से दस्तख़त कर पाता है और वह भी अरबी लिपि में। और ऐसे अवसर पर अमीरबेक काग़ज़ पर बेढंगे तरीक़े से घूमते सपार-अग़ा के बड़े-बड़े हाथों को तिरछी नजर से देखते हुए व्यंग्यपूर्वक मुस्कराता और अपनी छोटी-छोटी मूंछों पर हाथ फेरते हुए दूर कोने में ज़ोर से थूकता।

अस्क़ार के पिता के बारे में वह आख़िर और क्या कह सकता था?

"लेकिन वह चाहे कुछ भी क्यों न कहे, सपार-अग़ा किसी हालत में इन बातों पर विश्वास नहीं करेगा। दमेश-आपा भी, और कलताय भी, सभी गांववाले भी इन बातों पर विश्वास नहीं करेंगे," अस्कार कच्चे घर के नम फ़र्श पर करवटें बदलते हुए बोल उठा।

नीन्द नहीं आ रही थी। खिड़की पर लटके टाट के परदे के पीछे कुत्ता मंद आवाज़ में गुर्राया, उनींदा बछड़ा रंभाने लगा। फिर कुत्ता ज़ोर-ज़ोर से भौंकने लगा। ज़रूर गांव के आवारा कुत्ते आये होंगे। धीरे-धीरे फिर सब कुछ शान्त हो गया। केवल जुन्गार के पहाड़ी जंगलों में रात को हमेशा जागते रहनेवाले उल्लू की आवाज़ें कहीं दूर से सुनाई दे रही थीं।

अस्कार को याद आया कि जबड़े की उभरी हड्डी, कुछ लम्बे क़द और सांवले रंग के जोमार्त ने, जिससे उसका परिचय घुड़दौड़ में हुआ

था, एक बार उसे इस चिड़िया के बारे में एक दंत-कथा सुनाई थी। उसने बताया था कि एक बार पूर्व की पहाड़ियों में रात को आये ज़ोरदार तूफ़ान में इस चिड़िया की मादा मर गयी और तब से नर अकेला रह गया। रोज़ रात में वह आवाज़ दे-देकर अपनी जीवनसंगिनी को ढूंढ़ता है, उसकी याद में तड़पता और रोता है। दिन में वह चुप रहता है, क्योंकि उस समय दूसरी चिड़ियां गाती हैं और इस शोरगुल में अगर उसकी खोयी हुई मादा उसकी पुकार का जवाब दे, तो उसे सुनाई ही नहीं पड़े...

जोमार्त हर तरह की कहानियां सुनाने में उस्ताद है। जब वह सुनाता है, तो लड़के मुँह बाये सुनते रहते हैं। केवल कयसार हमेशा उसका मज़ाक़ उड़ाता रहता है, उसे झूठा कहता है। वैसे जोमार्त और कयसार दोनों ही अच्छे लड़के हैं। अस्कार कभी उन पर-बेकार ही नाराज़ हुआ था। यह सब बेकार की बातें हैं, बचपना है।

"सपार-अग़ा ही ऐसे हैं, जिनके लिए हर बात अस्क़ार से ज़्यादा मुश्किल और पेचीदा है," इसी सोच में डूबे अस्क़ार को पौ फटे ही नीन्द आयी।

* * *

सुबह कयसार एक रहस्यमयी मुस्कान लिये आया और उसने अस्कार की पुरानी कॉपी उठाकर दूध के तीन ख़ाली बर्तन लिये। उसके पीछे-पीछे आयसलू आ पहुंची।

"रात को किसी ने अमीरबेक को बुरी तरह डरा दिया। वह जब पोखर से लौट रहा था, तब कोई उल्टा ओवरकोट पहने घास में से एक झपट्टा मार उसके घोड़े के पैरों के आगे आ गिरा। घोड़ा चमककर एक ओर हट गया। अमीरबेक डरकर नाली में गिर गया," आयसलू ने बताया। "शायद बच्चों ने मज़ाक़ किया था।"

अस्कार ने कयसार की ओर देखा।

"क्या यह तुमने किया?"

कयसार जवाब में केवल मुस्करा दिया।

"काम करते वक़्त तंग मत करो। देखते नहीं हो, मैं दूध नाप रहा हूं।"

"अस्कार, तुम भी कलताय के साथ जा रहे हो? कितने अफ़सोस की बात है कि मैं तुम लोगों के साथ नहीं हूंगी," आयसलू ने जाते-जाते कहा।

वह बाल्टी खंगालकर गायों को दुहने चली गयी।

...सारा दिन ख़ाली पड़ा था। गांव जाने की इच्छा न हुई, तो अस्कार पहाड़ियों में चला गया। धूपवाली ढलानों पर ख़ूब जंगली स्ट्राबेरी, पहाड़ी लहसुन और बेरी उगे हुए थे। उसे छोटी-सी चट्टान की समतल चोटी पर कुछ देर आराम करने की इच्छा हुई। बच्चों ने इस चट्टान का नाम 'करावशी' यानी पहरेदार रखा था।

इसकी चोटी पर लेटे-लेटे दूसरों की नज़रें बचाकर सारी घाटी का नज़ारा देखा जा सकता है।

नीचे जिस चश्मे में अस्कार धौले माथेवाले को अकसर दौड़ के पहले नहलाता-धुलाता था, उसकी दूसरी ओर घास से ढकी पगडंडी पर दो लोग जा रहे थे। अस्कार ने मुश्किल से पहचान में आनेवाले लक्षणों से अन्दाज़ लगा लिया कि सफ़ेद रूमाल बांधे चल रही आकृति आयसलू की है। उसके पीछे-पीछे कलताय चल रहा था।

वे दोनों तश्तरी जैसे गोल, छोटे-से, हरे-भरे मैदान में पहुंचे, वहाँ उनमें किसी बात पर बहस छिड़ गयी। शायद कलताय की कोई बात आयसलू को बुरी लगी। वह रूमाल की किनारी मुँह में दबाकर वापस भागी। वह उसके पीछे भागा और उसको पकड़कर गर्मजोशी से कुछ कहने लगा। अस्कार व्याकुल हो उठा, वह यही चाह रहा था कि उन दोनों में मेल हो जाये। उसे डर था कि कोई और इस बात को देख सकता है, उसने यंत्रवत चारों ओर नज़र दौड़ाई।

कलताय ने आयसलू का प्रेमपूर्ण आलिंगन किया और वे दोनों पगडंडी से उतरकर घास में चलते हुए सेब के पुराने जंगली पेड़ की ओर बढ़ गये। अस्कार को केवल उनके सिर और कंधे दिखाई दे रहे थे। वे एक दूसरे को कुछ सुना रहे थे। फिर वे बैठ गये। आयसलू ने धीरे से अपना सफ़ेद रूमाल उतार लिया, उसके काले बाल उसके कंधों पर बिखर गये, कलताय ने उसे अपनी ओर खींचा...

अस्कार उठ खड़ा हुआ और मन-ही-मन अबाय का प्रेम-गीत गुनगुनाता हुआ पगडंडी पर दौड़ता हुआ नीचे भागा। उसके हृदय में एक नयी भावना जाग उठी। वह अपने आपको उस रहस्य का स्वामी महसूस कर रहा था, जिसे प्रकृति ने स्वयं उस पर विश्वास कर उसे बताया हो।

पहाड़ी से उतरते समय अस्कार ने दूर से ही अउरेश को देख लिया

था। उसने नया कुरता पहना हुआ था और सलीके से गुथी काली चोटियाँ उसके सीने पर पड़ी थीं।

"तुम कहाँ थे?" उसने बिना दुआ-सलाम किये पूछा।

"ये लो," अस्कार ने कहा और उसकी ओर बेरी का एक गुच्छा बढ़ा दिया। "मैं पहाड़ पर था।"

"तुमने आयसलू को देखा?"

"नहीं," अस्कार ने आंखें चुराते हुए कहा।

उसे अपना चेहरा लाल महसूस हो रहा था, इसीलिए उससे आंख मिलाकर बात नहीं कर पा रहा था।

"क्या पहाड़ पर अकेले गये थे? ठीक है। चलो, पानी ले आयें। नहीं तो तुम्हारे यहाँ पानी भी ख़त्म हो चुका है।"

ज़उरेश ग़ुस्से से तमतमा उठी और खाली बाल्टी उठाकर चश्मे की ओर भागी। अस्कार उसके पीछे-पीछे चलने लगा।

अपनी जूतियां एक ओर फेंक, कुरते के छोर उठा वह ठंडे पानी में घुस गयी और ठीक चश्मे के मुख में से बाल्टी भरकर अस्कार को दी।

"लो!"

"शाम को हम लोग आक़-सुएक* खेलेंगे। आओगे?" कच्चे घर में लौट आने के बाद उसने पूछा।

"नहीं, मैं कल सुबह जल्दी ही चला जाऊंगा।"

"मैंने तुमसे यह तो नहीं पूछा। नहीं चाहते, तो कोई ज़रूरत नहीं!" ज़उरेश ने चिल्लाकर कहा और गांव की ओर जानेवाली पगडंडी पर भाग चली।

अस्क़ार उसे जाते हुए देखता रहा। सूरज काफ़ी तेज़ी से चमक रहा था। कहीं कोई चिड़िया कूक रही थी और ज़उरेश लम्बे-चौड़े हरे-भरे मैदान में बकरी के छौने की तरह तेज़ी से भागी चली जा रही थी।

गांव और बाड़े के बीच पहाड़ी की तलहटी में स्थित हरे मैदान में शाम को गांव के सारे किशोर-किशोरियां इकट्ठे हो गये। बड़ी उम्र के लोग भी एक दूसरे से बातचीत करने, खेल देखने और दिन भर की मेहनत के बाद एक दूसरे से ख़बरें सुनने-सुनाने आये। आने का एक और कारण

---

* आक़-सुएक – क़ज़ाख़ किशोरों का एक राष्ट्रीय खेल।

भी था—गांव के बच्चों ने काफ़ी समय से ग्राक़-सूएक नहीं खेला था।

उनमें ग्रापस में यही बातें होती रहीं कि बच्चे कितने बड़े हो गये। जब युद्ध शुरू हुग्रा था, तो वे सात-ग्राठ वर्ष के थे, कुछ दस के थे, ग्रौर ग्रब कितने लम्बे ग्रौर बड़े हो गये हैं।

सूरज पहाड़ियों के पीछे ग्रोझल हो गया, पहाड़ियों के ऊपर तांबे की एक विशाल परात-सा चांद टंग गया। गांव में घरों के ग्रागे ग्रलाव जल उठे, जिन पर रूखा-सूखा भोजन पकाया जा रहा था। हवा में कुछ ठंडक थी, लेकिन बीच-बीच में गरम हवा का झोंका उसे बहा ले जाता था। न कुत्तों के भौंकने की ग्रावाज़ें ग्रा रही थीं, न भेड़ों के मिमियाने की। मैदान को घेरे ग्रर्द्धचन्द्राकार ढलान की चोटी पर ऊंट की काली ग्राकृति चमक रही थी।

"मैंने यह हड्डी ख़ास तौर से तैयार की है। इसी से खेलेंगे ग्रौर दूस-री हड्डियों को नहीं मानेंगे। ग्रगर किसीने खेल के दौरान इसे बदलने की कोशिश की, तो उसे दण्ड देंगे," कयसार ने सबको चमकायी हुई सफ़ेद हड्डी दिखाई जिसकी शिराग्रों में सीसा भरा था।

ग्राक़-सुएक व्यक्तिगत खेल है। इसमें जीत उसी की होती है, जो हड्डी गिरने की ग्रावाज़ सुनते ही गिरने की जगह का ग्रन्दाज़ लगा लेता है ग्रौर घास में से उसे ढूंढ़कर रेफ़री को लाकर दे देता है।

लेकिन जोमार्त ने इस बार दो टोलियां बनाने का सुझाव दिया—जिस टोली के खिलाड़ियों को पहले दस ग्रंक मिल जायें, वही जीती मानी जाये।

एक टोली का नाम ग्रक्तूमा (सफ़ेद चश्मा) रखा गया ग्रौर दूसरी का—"कार्लीगाश" (ग्रबाबील)—ये एक ही गांव के दो नाम थे।

कार्लीगाश टोली में ग्रस्क़ार, जोमार्त, कयसार, ज़उरेश ग्रौर पानी देनेवाला बाउकेन शामिल हुए।

खेल की पहली फेंक रेफ़री की होती है। यह काम कलताय को सौंपा गया। दोनों टोलियां घास के मैदान की ग्रोर पीठ करके खड़ी हो गयीं ग्रौर कान लगाकर सुनने लगीं। कलताय लंगड़ाता-लंगड़ाता रेफ़री की रेखा पर ग्रा खड़ा हुग्रा ग्रौर दर्शकों की उत्साहवर्द्धक ग्रावाज़ों के बीच उसने हाथ घुमाकर हड्डी को ज़ोर से ग्राकाश में फेंका। हड्डी चांदनी में चमककर लुप्त

हो गयी और हल्की आवाज़ के साथ मैदान के दूसरे छोर पर जा गिरी।

शोरगुल के बावजूद लड़के-लड़कियों ने हड्डी गिरने की जगह का अन्दाज़ लगा ही लिया। और जैसे ही रेफ़री ने "ढूंढ़ो" कहा, सब उसी स्थान की ओर दौड़ पड़े।

चारों ओर से चरचर-सरसर की आवाज़ें आने लगीं। बच्चे चुपचाप एकाग्रचित्त हो और एक दूसरे पर नज़र रखते हुए हर झाड़ी छानने लगे। लेकिन तभी झुककर घास को हटा-हटाकर ढूंढ़ती हुई ज़उरेश अपने प्रतिद्वं-द्वियों से दूर जाने लगी और फिर एक झपट्टा मारकर रेफ़री की रेखा की ओर लपकी।

"पकड़ो, पकड़ो! उसके पास है!" पूरी अक्तूमा टोली उसके पीछे दौड़ पड़ी।

कार्लीगाश टोलीवाले उसे बचाने दौड़े। अक्तूमा के दो खिलाड़ियों ने उसे घेर लिया, लेकिन उसने हड्डी नहीं छोड़ी। उनके घेरे से निकलने की कोशिश में वह ठोकर खाकर गिर पड़ी। अस्कार भीड़ को चीरता हुआ उसके पास आ पहुंचा। फिर वह ख़ाली मुट्ठी कसे यह दिखावा करते हुए आगे लपका जैसे कि हड्डी उसके पास हो। लेकिन प्रतिद्वंद्वी उसके पीछे नहीं भागे। वे ज़उरेश को दबोचे रहे। अस्कार उनकी ओर लपका और अपने कंधों से उन्हें ठेलता हुआ हाथों में हड्डी को कसकर दबाये बैठी लड़-की के पास जा पहुंचा। किसीने पीछे से अस्कार को धक्का दिया और उसने गिरते-गिरते यंत्रवत ज़उरेश का आलिंगन कर लिया।

ज़उरेश ने हड्डी फेंककर उसी वक़्त उसके गाल पर एक ज़ोरदार थप्पड़ रसीद कर दिया। लेकिन क़िस्मत से किसीने इस पर ध्यान नहीं दिया।

अक्तूमा टोलीवाले हड्डी पकड़कर आगे लपके।

लगता था पहली मुठभेड़ में कार्लीगाशवाले हार गये थे। लेकिन नहीं, जोमार्त अक्तूमावालों का रास्ता रोककर खड़ा हो गया। बाउकेन और कय-सार भी उसकी मदद को आ पहुंचे।

अस्क़ार थप्पड़ खाने के बाद वहीं खड़ा का खड़ा रह गया, उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह अब खेल में आगे भाग ले या नहीं। अचानक उसे ज़उरेश की खिलखिलाहट भरी "बचाओ! बचाओ!" की आवाज़ सुनाई पड़ी, और वह पूरे ज़ोर से अपने साथियों को बचाने दौड़

पड़ा, हालांकि उस समय तक जोमार्त को किसीकी सहायता की आवश्यकता न रही थी। बाउकेन और कयसार की रखवाली में वह रेफ़री की ओर दौड़ा जा रहा था।

"अबाबीलों की टोली जीत गयी, पहला अंक उन्हें मिल गया!" उत्साही दर्शक चिल्लाने लगे।

फिर दोनों टोलियां मैदान की ओर पीठ करके खड़ी हो गयीं। हड्डी जोमार्त ने फेंकी। अगले दो अंक अक्तूमा टोली को मिले। लेकिन पहले दस अंक कार्लीगाश टोली ने लिये और सब लोगों के ठहाकों के बीच वे अक्तूमावालों की पीठ पर बैठकर हड्डी ढूंढ़कर रेफ़री की रेखा तक चले आये।

विजेताओं के सम्मान में अलाव सुलगाया गया। रात के अंधेरे में से एक घुड़सवार निकलकर आया। यह चरवाहा था। उसे पता चल गया था कि गांव के बच्चे पहली बार आक-सुएक खेलने निकले हैं, इसलिए वह पहाड़ से नीचे उतर आया। उसने विजेताओं के आगे ताज़ा बेरी की अंकवार-भर डाल दी। उत्साही दर्शकों के लिए एक मशक में किमीज़ लाया गया।

मादक सुगंधवाले पेय से भरा लकड़ी का कटोरा हाथों हाथ ख़त्म हो गया।

कई वर्षों के बाद युवक-युवतियां रात को पहली बार बुज़ुर्गों की देखादेखी घास के मैदानों में घूम रहे थे। वे अलाव के पास नहीं फटक रहे थे, उनकी हंसी की आवाज़ें दूर दूर से—कभी घाटी में से, कभी कराक्शी चट्टान पर से, कभी मैदान के दूसरे छोर से आती सुनाई पड़ रही थीं।

विजेता लोग उत्साही दर्शकों के साथ बैठ गये। पराजित टोली अलाव के पास अपनी अगली "सज़ा" सुनने के लिए खड़ी प्रतीक्षा कर रही थी। अब उनमें से हर एक को विजेताओं और दर्शकों की इच्छानुसार गीत गाना होगा, या कोई दंत-कथा, पहेली या छोटी-सी कहानी सुनानी होगी, या दोम्ब्रा बजाना होगा। जो इनमें कमज़ोर निकलता, सब बैठे हुए लोग उसकी मदद करते, लेकिन जब गायनी की बारी आयी, तो सब चुप हो गये, केवल ज़उरेश ने उससे धीरे से कहा,

"गायनी, ज़रा एक गीत सुना दो..."

"सुना दो, बेटी, हमने तुम्हारा गीत बहुत दिनों से नहीं सुना," किसी बुज़ुर्ग ने कहा।

अस्कार ने गायनी से बहुत ही कम बातचीत की थी, वह उसे कम जानता था। वह अपने माता-पिता के साथ रेगिस्तानी इलाक़े में सर्दियों के पड़ावगाह में रहती थी। उसके पिता को मोर्चे पर भेजे जाने के बाद मां गांव में रहने आ गयी थी, फिर सुना कि वह काफ़ी लम्बे समय तक बीमार रही और ठीक उसी दिन मर गयी, जिस दिन उसके पति के मरने का समाचार आया।

गायनी अकेली रह गयी, पड़ोसियों ने उसकी मदद की। वह एकान्तप्रिय लड़की थी।

अपने ख़ाली समय में वह या तो घर में बैठी रहती थी या पहाड़ों में चली जाती थी। अकेली ही। वहाँ फूल चुनती, लकड़ी इकट्ठी करती और शाम हुए घर लौट आती थी।

उसे गाने का शौक़ था। लेकिन केवल अकेले में। वह पहाड़ों में गाया करती थी। उसके गीतों की प्रतिध्वनि गांव तक पहुंचती रहती थी। घास और फ़सल काटनेवाले, घोड़ों और भेड़ों के चरवाहे, बूढ़े लोग अपना-अपना काम छोड़ उसको देखे बिना ही उसके गीत सुनने लगते थे। उसकी आवाज़ असाधारण रूप से सुन्दर और बहुत दर्द भरी थी। लोग उसे बहुत प्यार करते थे। वे बड़े गर्व से कहते – "हमारी गायनी गा रही है।" लेकिन उसके सामने यह प्रेम प्रकट करने में वे डरते थे, क्योंकि वह बड़ी स्वाभिमानी थी और उसे सहानुभूति बर्दाश्त नहीं होती थी।

वह बचपन से ही अपनी हमउम्र सहेलियों के बीच आने में शर्माती थी। नासपीटी चेचक ने उसका चेहरा विकृत कर दिया था। फिर तपेदिक़ ने उसे सताया। अस्कार को इस बात पर आश्चर्य हो रहा था कि आज उसने आक़-सुएक खेलने और फुरतीले बच्चों के साथ दौड़ने का साहस कर लिया।

वह अपने बड़े-बडे नंगे पैरों से मुलायम घास को रौंदती हुई अलाव से कुछ दूर खड़ी [illegible] चेचक से बिगड़ा उसका चेहरा अलाव के प्रकाश में भी कांतिहीन लग रहा था। अंधेरे में एकटक ताकती उसकी बड़ी-बड़ी पूरी खुली आंखों में तनाव था। वह कुछ और पीछे हटकर गाने लगी।

कलकल करते बहते चश्मे के निर्मल जल के समान उसके गीत से मैदान और पहाड़ गूंज उठे। उल्लू भी चुप हो गया। स्त्रियां चुपचाप अपने आंसू पोंछने लगीं। कार्लीगाशवाले निश्चल बैठे रहे। गांव की ओर से

मशालें आती दिखाई देने लगीं। लोग सोना भूलकर गीत सुनने आ रहे थे। गीत प्राचीन भी था और नया भी, उसमें तड़प, पीड़ा, प्रेम, पिता के सपने और पुत्री की आशाएं व्यक्त किये गये थे, भाग्य की क्रूरता के बारे में बताया गया था...

* * *

बैल पहाड़ों में बड़ी मुश्किल से घिसटते चल रहे थे। कलताय और अकशाल, वही अकशाल जो त्योहार के दिन कुरेके से कुश्ती लड़ा था, आगे-आगे घोड़ों पर बैठे जा रहे थे। कलताय टोली के लिए दी गयी गाय और बछड़ा ले जा रहा था। विनोदी और मृदुल स्वभाववाला अकशाल भूगर्भस्थ भण्डारों का विशेषज्ञ माना जाता था। वह केवल उसी को ज्ञात लक्षणों से पहाड़ों में चूने के भण्डारों का और रेगिस्तान में पानी का पता लगा लेता था।

कलताय अकशाल को आदर से "इंजीनियर" कहता था।

"इंजीनियर नहीं भूगर्भशास्त्रवेत्ता" अस्कार कलताय को समझाने की कोशिश करता, लेकिन इतने क्लिष्ट शब्द का उच्चारण कोई भी ठीक से नहीं कर पाता।

उन्होंने चौड़ी पहाड़ी घाटी पार की और दिन डूबते-डूबते तेज़ पहाड़ी नदी कुगालिन्की की ओर जानेवाली खड़ी चट्टान पर रुके।

"इंजीनियर" छोटा-सा कुदाल और लोहे की एक छड़ लिये काफ़ी देर तक इधर-उधर भटकता रहा। वह ज़मीन को खोद-खोदकर कुछ पत्थर निकालता और काफ़ी देर तक उनका निरीक्षण करता रहता। फिर उसे ज़मीन में गड़ा हुआ एक नीले से रंग में सफ़ेद धारियोंवाला पत्थर मिल गया। उसने उसके चारों ओर घूमकर देखा और टुकड़ा तोड़कर ख़ुशी से चिल्लाया,

"यहीं है!"

एक सुविधाजनक स्थान चुनकर वे लोग झोंपड़ियां बनाने लगे। रात में सब अलाव के चारों ओर बैठ गये और जई के आटे में गोश्त के टुकड़े पड़ा स्वादिष्ट शोरबा खाने लगे।

"यह ज़मीन औरों की है। कहीं कुछ गड़बड़ न हो जाये," जेकेन-कोसे चिन्तित स्वर में बोला।

उसे सुबह अवतूमा लौटकर सब कुछ सपार को बताना था।

"औरों की ज़मीन यहाँ है ही नहीं। सब हमारा है। समझे? अगर यहाँ के सामूहिक फ़ार्म के लोग आये, तो उन्हें समझा देंगे। हम हमेशा तो यहाँ रहेंगे नहीं। एक-दो सप्ताह में काम ख़त्म करके चले जायेंगे।"

...लोग दिन में तीन बार जई के आटे में दूध पड़ा शोरबा, बेरियां खाते रहे, चाय पीते रहे और काम करते रहे। इस दौरान इन्होंने यह नहीं जाना कि आराम क्या चीज़ होती है। उन्होंने खड़ी ढलान पर एक बड़ा सारा भट्टा खोदा और उसमें चूना-पत्थर भरने लगे। बड़े-बड़े टुकड़ों को हथौड़ों और सब्बलों से तोड़ उन्हें बड़ी मुश्किल से गाड़ियों में लादकर भट्ठे पर ले जाते रहे। "इंजीनियर" की देख-रेख में सबसे बड़े पत्थर भट्ठे के पेंदे में जमाये गये और एक चौड़ा धनुषाकार मोखा बनाया गया। ऊपर से छोटे-छोटे पत्थर भरे गये। इसके साथ-साथ स्प्रूस, ऐस्प के सूखे पेड़ और जंगली जवा व तवोल्गा की झाड़ियां काटी गयीं। लकड़ी का पहाड़ लग गया, लेकिन अकशाल कहे जा रहा था—"कम है, कम है।"

जब खाने-पीने का सामान ख़त्म हो गया, तो जोमार्त आ पहुंचा। वह एक बाल्टी भरके गेहूं, एक दुबली-पतली भेड़ और एक किलो वनस्पति-तेल लाया था।

"सपार-अग़ा ने कहलवाया है कि इसके अलावा और कुछ नहीं है।"

उसी दिन दो रूसी कलताय के पास आये।

"यह 'ज़र्या' (सूर्योदय) सामूहिक-फ़ार्म की ज़मीन है। आप हमारा जंगल काट रहे हैं," उनमें एक कज़ाख़ भाषा में बोला।

"आप हमारी झोंपड़ी में चलिये, बुज़ुर्गो," कलताय ने जवाब दिया। "सारे गांववालों को हमीं से आशा है। इसीलिए हम ज़्यादा से ज़्यादा चूना तैयार करना चाहते हैं, उसके बदले में खाने-पीने का सामान लेंगे," जब मेहमान बैठ गये तो कलताय ने कहा। "और जहाँ तक जंगल का सवाल है, तो वह फिर उग आयेगा, आपकी ज़मीन बड़ी उपजाऊ है। आप हमें निराश मत कीजिये। हम सिर्फ़ सूखे पेड़ और झाड़ियां काट रहे हैं... ए, साथियो, जल्दी से भेड़ काटो! मेहमान इन्तज़ार कर रहे हैं। इन्हें भुनी हुई कलेजी चखानी चाहिए।"

मेहमान लोग सोच में डूबे इन दुबले-पतले फटेहाल लोगों को देखते

रहे। खाना खाने के बाद वे उनकी सफलता की कामना करके विदा लेने लगे।

"कल यहां हमारे सामूहिक फ़ार्म की टोली आनेवाली है। हम इस ज़मीन की परती तोड़ना चाहते हैं, नहीं तो हमारी घाटी की सारी अच्छी ज़मीन में सिर्फ़ घास और तिपतिया की ही खेती हो रही है।"

...वे कुछ दूरी पर ठहर गये। एक छोटे-से हल को चार घोड़े खींच रहे थे। जंगली कबूतर जुती हुई भूमि में रेंग रहे कीड़े खा रहे थे।

जोमार्त और अस्कार समय निकालकर किसानों के पास गये। हलरेखा के पास लगे तम्बू के बाहर एक बूढ़ा बैठा था।

"अहा, मेहमान आये हैं। आइये, तशरीफ़ लाइये!"

बूढ़ा दोपहर का खाना बना रहा था।

उसने उन दोनों को पेट भर ख़मीरे आटे के टुकड़ों से बना शोरबा खिलाया।

"जब भी ख़ाली समय मिले, यहाँ आ जाना। शिकार करने चलेंगे," बूढ़े ने ख़ुशदिली से उन्हें आंख मारी।

अगले दिन चकोरों की खोज में वे कुर्गालिन्की के किनारों पर गये। बेंत और सरकंडों के बीच उन्हें अचानक एक मज़ार मिल गया, जिसके गुम्बज़ पर अरबी लिपि में लेख उत्कीर्ण किये हुए थे, विचित्र चित्र बने हुए थे।

जोमार्त उसके भीतर चला गया और मंत्रमुग्ध-सा लेखों को और दीवारों को छू-छूकर देखने लगा। वह यह जानने के लिए आतुर हो उठा था कि यह मज़ार किसका है और कब बनाया गया था।

शाम को जोमार्त ने इस बारे में अकशाल से पूछा, लेकिन उसे कुछ मालूम नहीं था। जोमार्त काग़ज़ लेकर फिर मज़ार पर जा पहुंचा और उस ने अपने अध्यापक को दिखाने के लिए मनपसन्द लेखों और चित्रों की नक़ल उतार ली...

"शाम के खाने के बाद अपना भट्ठा जलायेंगे!" अकशाल ने बड़ी शान से कहा। उसने अपने हाथों में एक असाधारण रूप से लम्बा कांटा पकड़ रखा था। "देखो, आग कम मत होने देना, नहीं तो चूना बेकार हो जायेगा।"

आग चार दिनों तक दहकती रही, लोग भट्ठे के पास ही जमे रहे।

देखते-देखते लकड़ियों का पहाड़ ख़त्म होने लगा। कलताय को डर लगा कि लकड़ी कम पड़ जायेगी और उसने लगभग तीन वर्ष पहले किसीकी छोड़ी हुई सड़ी सूखी घास लाने को कहा।

धीरे-धीरे रोड़ी की ऊपरी तह लाल हो उठी। हर कंकर दहकते अंगारे-सा लग रहा था। अकशाल ने मिट्टी सानने को कहा।

उसमें ख़ूब सारा भूसा मिलाकर गाढ़ा साना गया और ऊपर से रोड़ी डाली गयी। जब भट्ठा बन्द कर दिया गया तो उसने हुक्म दिया,

"अब सब आग से दूर हट जाओ! भट्ठे का दरवाज़ा तैयार करो! पेंदे को जल्दी से लीपना होगा!"

अपना काम समाप्त करने के बाद थककर निढाल हुए किन्तु ख़ुशी से फूले न समाते लोग झोंपड़ी में जमा हुए।

"तीन दिन बाद भट्ठा खोलकर उसमें से चूना निकाला जा सकता है," अकशाल ने अपनी छोटी-सी दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए कहा।

"हम ऊपरी कुगालिन्की की तरफ़ लकड़ी का कोयला बनाने जायेंगे। और तुम अस्कार, बाक़ी लोगों के साथ गांव लौट जाओ। सपार से कहना कि वह बक्सों समेत दो पहियों की गाड़ियां भिजवा दे। हम चूने से लदी एक गाड़ी गांव रवाना कर देंगे और घरवालियों में बांट देंगे। बाक़ी चूना सीधे बाज़ार ले जायेंगे! हम यहां दो दिन बाद लौट आयेंगे। कोयला बनाने में ज़्यादा वक़्त नहीं लगेगा।"

रवाना होने से पहले कलताय ने अस्कार को एक ओर बुला लिया और एक कपड़े में बड़े सलीके से लपेटा हुआ लकड़ी का चम्मच दिया।

"आयसलू को दे देना। अकेले में। समझे?" वह मुस्कराया।

* * *

अस्कार ने जब कलताय की पोटली आयसलू को दी, तो उसके गाल लाल हो गये और उसने चोरी से चारों ओर देखकर अस्कार के होंठों का चटखारे के साथ चुम्बन ले लिया।

"बिगाड़ डालोगी लड़के को! उसे बिलकुल जवान आदमी की तरह चूम रही हो। देखो, उसकी ज़बान मत काट लेना, गूंगा हो जायेगा," पीछे से खिलखिलाकर हंसने की आवाज़ आयी।

अस्कार ने आयसलू को धक्का दिया, तो ज़उरेश को खड़ा पाया। उसे पता ही नहीं चला कि वह कब वहां आ पहुंची। लड़की की आंखें कुछ अजीब ढंग से चमक रही थीं। अस्कार समझ न सका कि यह ताना है, तिरस्कार है या मज़ाक़। उसने यंत्रवत अपने होंट भींचकर कहा,

"सलाम!"

ज़उरेश ने कोई जवाब नहीं दिया। अस्कार कच्चे घर की ओर चल दिया।

"क्या हुआ है तुम्हें लड़की, डाह कर रही हो क्या? मैं तो तुम्हें अभी तक बच्ची ही समझती रही थी," अस्क़ार को आयसलू की आवाज़ सुनाई पड़ी। "मुंह मत फुलाओ। वक़्त आने पर सब मालूम पड़ जायेगा। छिपाने की क्या बात है, मैं अभी ही बता सकती हूं। यह कलताय ने भेजी है। मैं ईमानदारी से तुम्हारे भाई का इन्तज़ार कर रही थी। लेकिन वक़्त तो निकलता जा रहा है! झुर्रियां पड़ने लगीं।"

अस्क़ार ने इसके अलावा और कुछ न सुना। कच्चे घर में अकेली आयसलू अपने हाथों में कलताय का चम्मच उलटती-पलटती आयी, मानो उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि यह किस काम आ सकता है।

"ज़उरेश गांव चली गयी। मैंने उसे सब कुछ बता दिया। बता तो बहुत पहले ही देना चाहिए था। लेकिन शर्म आती थी। बहुत अच्छा हुआ कि यह काम इतनी आसानी से हो गया," उसने एक ठंडी सांस ली। "क्या यह सब बेवक़ूफ़ी है? समझ में नहीं आता।"

आयसलू काफ़ी देर तक अपने दुखद विचारों में डूबी बैठी रही। इन क्षणों में वह बहुत सुन्दर लग रही थी। घनी काली भौंहों, आंखों को ढक रही लम्बी बरौनियों और चेहरे के गेहुएं रंग के कारण वह क़ज़ाख़ी परी-कथाओं की सुन्दरी-सी लग रही थी। अस्क़ार उसकी ओर देखते हुए ज़उरेश के बारे में सोचने लगा। उसके मन में चिन्ता-सी जाग उठी।

"हम लोग भी क्या अनाथों की तरह बैठे हुए हैं। काम शुरू करना चाहिए," आयसलू ने खड़ी हो रूमाल सिर पर डाल लिया। "अस्कार-जान, चश्मे में छिपाया हुआ डिब्बा उठा लो। उसमें दूध है। उसे गांव में कातिपे चाची को दे देना। तुम तो जानते ही हो, उनके छः बच्चे हैं। दो बीमार हैं। उनके यहाँ तो खरसैली बकरी तक नहीं है। लेकिन बच्चों को तो दूध चाहिए ही। मैं कल उनके घर गयी थी। सब नंगे फ़र्श

पर सोते हैं। बच्चे छोटे हैं, पति मारा गया। सपार ने बचा गोश्त उन्हें दे दिया। दूध दुहते वक़्त मैंने यह दूध छिपाकर रख लिया था। मेहरबानी करके, उन्हें ले जाकर दे दो।"

दोपहर के खाने के बाद गांव जाते समय अचानक अस्कार को अमीर-बेक मिल गया।

"ऐ, ज़रा रुकना। कहां से आ रहा है? क्या पहाड़ियों में काम ख़त्म हो गया?"

"बुझा चूना तैयार हो गया। अब बस उसे ढोकर लाना है।"

"बहुत अच्छी बात है। और तेरे इस डिब्बे में क्या है? ज़रूर दूध या मलाई चुराकर ला रहा होगा?!" अमीरबेक के घोड़े से टकराकर अस्क़ार गिरते-गिरते बचा।

"मैं चोर नहीं हूं।"

"अच्छा, चल ढक्कन खोल!"

"लो!" अस्कार ने घोड़े के मुँह के आगे अंगूठा दिखाया।

"क्या? तू मुझे अंगूठा दिखा रहा है?" अमीरबेक चिचियाया और घोड़े से कूदकर अस्कार के चाबुक मार डिब्बा पकड़ लिया।

अस्कार ने उसके सीने में ज़ोर से हाथ मारा और डिब्बा उससे वापस छीन लिया। दूध ढुल गया।

"गीदड़ कहीं का! यह तेरे गले में फंस जाये," लड़के ने ख़ाली बर्तन अमीरबेक के आगे पटक दिया।

"शैतान के बच्चे!" अमीरबेक ने अस्कार की गर्दन अपनी उंगलियों के फ़ौलादी शिकंजे में जकड़ ली और घुटनों से टक्करें मारता हुआ उसे दफ़्तर में घसीटने लगा।

लड़का चारों ओर देखता रहा कि शायद कोई उसे बचा ले, लेकिन सारे रास्ते सुनसान पड़े थे। केवल एक छोटा बच्चा लोहारख़ाने को भागा जा रहा था।

अमीरबेक ने घोड़ा बाहर छोड़ दिया, अस्कार को दफ़्तर में धकेल कुंडी चढ़ा दी और उसे ज़ोर से लात मारी। लेकिन लड़के का आत्म-समर्पण करने का कोई इरादा नहीं था—उसने उछलकर उसके सीने और ठोड़ी में सिर से चोट मारी। अमीरबेक कराह उठा, उसने अस्कार को गिरा दिया और ज़ोर-ज़ोर से पैरों तले रौंदने लगा।

अस्कार के मुँह से एक शब्द भी नहीं निकला, उसे दर्द महसूस नहीं हो रहा था, लेकिन उसके दिल को कड़ुवाहट, रोष और घोर अपमान कचोटे डाल रहे थे। अमीरबेक बिना मार के निशान छोड़े और हड्डियां तोड़े उसे कुशलतापूर्वक पीट रहा था। फिर वह आराम से सीधा खड़ा हो गया और अपने कपड़े ठीक कर उसने अपने हाथ पोंछ लिये।

"अब तू बच्चा-सा तो नहीं दिखता। चुप क्यों है? मैं तुझसे और बदला लूंगा। तेरा बाप अपनी क़ब्र में करवटें बदलने लगेगा। मैंने उससे कहा था कि अमीरबेक से छेड़छाड़ करना अच्छा नहीं होगा। आज से तेरे लिए स्कूल का दरवाज़ा बंद हो गया। मुझे पता है, तेरा हिमायती कौन है। अब सब ख़त्म हो गया। तुझे रेगिस्तान में भेज दूंगा। तू ही तो उस रात मेरे घोड़े को डराकर मुझे अपाहिज कर देना चाहता था न? क्यों? बता कितना दूध चुराया, किसने तुझे दूध दिया और तू उसे कहाँ ले जा रहा था?"

अस्क़ार चुप रहा।

"मैं तुझसे उगलवाकर ही रहूंगा," वह फिर अस्कार पर लपका।

किसीने ज़बरदस्ती दरवाज़ा खोल डाला। अमीरबेक मेज़ की तरफ़ हट गया। दहलीज़ में केनेख़ान लोहार दिखाई दिया। वह आस्तीनें ऊपर चढ़ाये और घूंसा ताने खड़ा था। आग से धुँधली पड़ी आंखें घनी भौंहों के नीचे से अमीरबेक के चेहरे को घूर रही थीं। अमीरबेक पीला पड़ गया, उसने मेज़ का किनारा पकड़ लिया। अस्क़ार को कमर में बड़ा तेज़ दर्द महसूस हो रहा था, लेकिन वह उठ खड़ा हुआ।

"यह छोकरा सामूहिक फ़ार्म का माल चुराता है। मैं इससे पूछ रहा हूं और यह जवाब देने के बजाय मुझे घूंसे मार रहा है। मैं इसके बाप के बराबर हूं। सोवियत सरकार इसे स्कूल में शिक्षा देती है, हालांकि इसका बाप... लेकिन यह चुराता है। हम इसे सब चीज़ें देते तो हैं..."

"हुकूमत तो हमारे यहाँ सोवियतों की है, न कि तेरी। तू कौन होता है हर वक़्त इसके बाप को गाली देनेवाला?" केनेख़ान ने कठोर आवाज़ में कहा। "चल बेटा," उसने अस्कार को सम्बोधित किया। उसकी आवाज़ कुछ नरम हो गयी थी। "तू दुखी मत होना, अस्कारजान। लोग कहते हैं 'बहादुर और ईमानदार आदमी जनता के लिए ही पैदा होता है और जनता के लिए अपनी जान दे देता है, भलाई को याद हमेशा

बनी रहती है।' अमीरबेक ने जो कुछ तेरे बाप के बारे में कहा, उस पर विश्वास मत करना। जब आदमी मरता है, तो सिर्फ़ गीदड़ ही ख़ुश होकर चिल्लाता है। लगता है, कुछ ग़लती तेरी भी है। बड़ों से बदतमीज़ी से बोलना बुरी बात है।"

अस्क़ार ने सपार को कुछ नहीं बताया। कुछ दिनों के बाद उसे मालूम पड़ा कि सामूहिक फ़ार्म के कार्यालय की बैठक में कातिपे चाची को एक दुधार गाय देने का फ़ैसला लिया गया। अमीरबेक ने धमकी दी कि वह पार्टी की ज़िला समिति में शिकायत करेगा कि अध्यक्ष की ग़लतियों के कारण सामूहिक फ़ार्म सरकार को दिये जानेवाले दूध और मक्खन का कोटा पूरा नहीं कर पा रहा है।

सपार इससे नहीं घबराया, उन दिनों वह बहुत प्रसन्न था। चूने की बिक्री से मिली रक़म से उन्हें आटा और गेहूं मिल गये थे। औरतें घरों में सफ़ेदी करने लगीं। गांव उजला हो उठा। फ़सल की कटाई शुरू होने में कुछ ही दिन बाक़ी रह गये थे। सपार रोज़ाना देखने जाता था कि जौ की फ़सल कैसे पक रही है...

* * *

युद्ध के बाद हो रही पहली कटाई पर सारा गांव निकल आया। सब लोगों में पहली दस पूलियां बनाकर उन पर रंग-बिरंगे फ़ीते बांधने की होड़ लगी हुई थी। सब अपने-अपने काम में व्यस्त थे, इसीलिए जेकेन-कोसे हांफ़ता हुआ कब आया, यह किसीको पता नहीं चला।

"सपार-अग़ा कहाँ है, सपार-अग़ा कहाँ है?" वह घबराया हुआ कभी एक से पूछता था, कभी दूसरे से।

"भागने-दौड़ने से तो अच्छा होता कि हंसिया लेकर कुछ काम करता!" एक औरत चिल्लायी।

"अरे, मुसीबत आ गयी, औरतो! पुलिस आयी है और उनके साथ कोई ग़ुस्सैल आया है। सपार-अग़ा को पूछ रहे हैं..."

"हाय अल्लाह! क्या कह रहा है, जेकेन?!" दमेश-आपा अचंभे में पड़ गयी।

"शायद जांच-पड़ताल के लिए आये होंगे," सपार ने कहा और धौले माथेवाले पर सवार हो गांव की ओर चल दिया।

हंसी-मज़ाक़ बंद हो गया। लोग चुपचाप एकाग्र मन से अपना काम करते रहे। केवल जौ के सूखे डंठलों पर हंसियों के चलने की तेज़ आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। कटाई करनेवाले रह-रहकर रास्ते पर चिन्तापूर्ण दृष्टि डाल रहे थे। कुछ देर बाद जेकेन-कोसे की झुकी आकृति फिर दिखाई दी। लोग काम छोड़, अपनी कमर सीधी कर चुप खड़े उसकी प्रतीक्षा करने लगे।

जेकेन में हमेशा की सहजता और फुरती नहीं रही थी, वह धीरे-धीरे चल रहा था। उसके पीछे-पीछे धौले माथेवाले पर सपार की जगह अमीरबेक बैठा हुआ आ रहा था। लोगों को लगा कि कोई बुरी बात हुई है।

"जल्दी बताओ, क्या हुआ!" औरतें चिल्लायीं।

"उसे पकड़कर ले गये," जेकेन की आवाज़ कांप उठी और उसके झुर्रीदार गालों पर आंसू ढुलकने लगे...

"हाय, यह क्या हो गया, लोगो!.." सपार की पत्नी चिल्लायी।

कलताय हंसिया एक ओर फेंक अमीरबेक की ओर लपका।

"यह तेरी ही करतूत है!"

वह अमीरबेक को नीचे घसीट स्वयं धौले माथेवाले पर सवार होकर सीधा ज़िला मुख्यालय दौड़ा। उसका सफ़ेद कुरता हवा में फड़फड़ा रहा था...

* * *

"जो जिस थाली में खाये, उसी में छेद करने लगे, तो वह किसी काम का नहीं हो सकता," दमेश-आपा को जब अमीरबेक के सामूहिक फ़ार्म के अध्यक्ष बनने की ख़बर मिली, तो उसने कहा। "उसने सिर्फ़ अपनी प्रतिष्ठा धूल में नहीं मिलायी है, बल्कि सपार की शिकायत करके उसने हम पर भी थूक दिया है।"

"तुम्हारी बात ठीक है, बहन," केनेख़ान ने कहा, "लेकिन हम क्या कर सकते हैं? किसके पास जायें, किसे बतायें यह बात? हमारी

बात कौन समझेगा? घोड़े को जब अपने झुण्ड की याद आती है, तो वह मिट्टी खोदने लगता है, और आदमी को जब अपने दोस्तों की याद आती है, तो वह घोड़े पर काठी कस, लगाम खींच उनसे मिलने चल पड़ता है। मेरा भी उस टेकरी पर अपने दोस्तों के पास पहुंचने को जी चाह रहा है..." केनेख़ान ने कब्रिस्तान की ओर इशारा किया।

"छी, छी, अपनी ज़बान पर ऐसी बातें न लाओ। क्या कह रहे हो? किससे इतना डर गये कि क़ब्र में जाने को तैयार हो गये?"

"मैं डरता नहीं हूं, बहन, मेरा दिल दुखता है, सपार के लिए दुख होता है। वह अपने लिए थोड़े ही काम कर रहा था। लेकिन देखो, क्या हो गया। कहते हैं, उसने क़ानून तोड़ा। कृषि सहकारी संघ के नियमों, सरकार के निर्णयों के ख़िलाफ़ चला। ज़िला समिति के अधिकारी ने कहा कि सपार सामूहिक फ़ार्म के उत्पादन के विकास में अड़चनें डाल रहा था। कहता है, वह चूना निकालने लगा, ईंटें बनाना चाहता था, दूध का अपव्यय कर रहा था। इसीलिए उसे दूसरे सामूहिक फ़ार्म पर भेज दिया गया, जिससे कि वह सुधर जाये!"

"लेकिन वह यह सब कर किसके लिए रहा था? क्या अपने लिए? वह दूध भूखों को देता था, खाने-पीने की चीज़ें सामूहिक फ़ार्म के कर्मियों को ही तो देता था। वह चाहता था कि हम लोग दुनिया देखें, गांव अपने पैरों पर खड़ा हो जाये। इसीलिए उसे लिखित चेतावनी दी गयी, दूसरे गांव भेज दिया गया..."

"आख़िर किसकी बात सही है? क्या अमीरबेक की?"

"उसी ने सपार की शिकायत की थी न? सच सच बताओ!" केनेख़ान ने कलताय का हाथ कसकर पकड़ लिया। "अगर यह सच है, तो अमीरबेक से बात मैं करूंगा," केनेख़ान ने अपना ज़ोरदार घूंसा तानकर दिखाया।

"नहीं, रहने दो, केनेख़ान, इसका कुछ नतीजा नहीं निकलनेवाला," कलताय ने कहा। "वह बड़ा ख़तरनाक आदमी है। मैं कुछ नहीं कर पाया। अमीरबेक को ज़िला मुख्यालय में बहुत पहले से जानते हैं, उस पर भरोसा करते हैं। फिर क़ानून के मुताबिक़ हम ग़लती पर थे। कोई धारा ऐसी नहीं है, जो हमें चूना और ईंटें पकाने की इजाज़त देती हो।"

"तुम फिर 'क़ानून' की बात करने लगे। यह क़ानून किसकी तरफ़

है? कभी चरवाहे एक दूसरे से कहते थे–'जितनी चादर देखो, उतने ही पैर पसारो। हमारी चादर का काम तो भेड़ की खाल का फटा हुआ कोट ही देता था। इससे ज़्यादा का सपना देखने की तो हम हिम्मत भी नहीं कर सकते थे," केनेख़ान ने टाल लगानेवाले को गेहूं की एक बड़ी-सी पूली देते हुए कहा।

अस्कार खलिहान में काम कर रहा था। वह गधे पर पानी लादकर घास से साफ़ किये हुए खेत पर छिड़क रहा था। फिर इसे समतल करने लगा ताकि यहां अनाज इकट्ठा किया जा सके। जब गधा थक जाता, तो वह उसे खोल देता और पूलियां देनेवालों की मदद करने लगता।

वह पहले से अधिक गुमसुम और उदास हो गया और जो कोई काम उसे सौंपा जाता बिना ना-नुकर किये कर देता था। उसके चारों ओर जो कुछ हो रहा था, उसे समझ पाना उसके लिए कठिन था। सपार-अग़ा को सभी प्यार करते थे, सभी उसकी इज़्ज़त करते थे। लेकिन कोई भी बीच-बचाव न कर सका, कलताय भी असमर्थ रहा। अमीरबेक को न कोई प्यार करता था, न उसका आदर, लेकिन उससे सब डरते थे। अस्कार भी डरता था।

पिछले कुछ दिनों से अस्कार गाँव नहीं जा रहा था, उसे जहाँ जगह मिल जाती, वहीं सो लेता–कभी सूखी घास की टाल में, कभी अस्तबल की छत पर। आज उसे दमेश चाची ने अपने पास बुलाया था। वह भी इन दिनों खलिहान में ही पूलियाँ बांधनेवाले की मदद कर रही थी।

काम रात काफ़ी देर गये ही ख़त्म हो पाया। थकी हुई दमेश-आपा ने चिराग़ की रोशनी में अस्कार के कपड़ों को रफ़ू करने की सोची। तभी जोमार्त आ गया।

"तुम्हें नीन्द नहीं आ रही है क्या?" दमेश-आपा ने पूछा।

"मैं अस्कार के पास आया हूं।"

"अच्छा, भीतर चले जाओ। लेकिन उसे नीन्द की ज़रूरत है।"

जोमार्त बैठ गया और अपने नाख़ून कुतरने लगा।

"कहो," अस्कार ने धीरे से अपने दोस्त की बग़ल में टहोका मारा।

"मैं तुनकुरूस गया था, स्कूल में।"

"यानी तुमने अपनी खोज दिखा दी। फिर क्या हुआ, किसका मज़ार था? क्या हमने किसी नये तथ्य का पता लगाया है?" अस्कार मुस्कराया।

"नहीं। मैं कुछ और कह रहा था... तुम उस भेंगे मुख्याध्यपक को जानते हो जो भौतिक विज्ञान पढ़ाता है।"

"हाँ, एक बार उसे देखा था।"

"उसने कहा कि तुम्हें स्कूल से निकाल दिया गया है।"

"किस लिए निकाल दिया?" दमेश-आपा ने गुस्से में पूछा।

"वह कहता है कि तुम्हारा वहां पढ़ना अनुचित है..."

"मैं उनके स्कूल पर थूकता हूं! मैं आगे पढ़ना नहीं चाहता, मुझे और कुछ नहीं चाहिए।" लड़के का चेहरा उतर गया और उसने दीवार की ओर मुँह फेर लिया।

जोमार्त ने देखा उसके कंधे कांप रहे हैं....

"शांत हो जाओ, बेटा!" दमेश ने कठोर स्वर में कहा। "तुम छोटे बच्चे नहीं हो, रोने की कोई बात नहीं है। आंसू बहाना तो मांओं का काम है। ख़ुदा के शुक्र से अब तुम बड़े हो गये हो और किसी को अपनी बेइज़्ज़ती नहीं करने दोगे।" दमेश-आपा सोच में डूबी हुई धीमे स्वर में बोल रही थी। "तुम बहुत घूम चुके हो, हर जगह अपना रास्ता ढूंढ़ लोगे। तुम्हें वहाँ से कोई नहीं निकाल रहा है, तुम काम करते रहो। पतझड़ में देखा जायेगा। सही रास्ता ढूंढ़ पाना मुश्किल होता है, अस्कार-जान। मां बचपन से ही अपने बच्चों से रोटी के छोटे टुकड़े उठाने को इसलिए नहीं कहती कि वह कंजूस होती है, बल्कि इसलिए कि अनाज के हर दाने में आदमी की मेहनत लगी होती है। जो अच्छी तरह मेहनत करना सीख लेता है, वह ईमानदारी से जी सकता है... यह सच है कि ज़िन्दगी का सफ़र अकेले करना आसान नहीं होता। लेकिन भले आदमी रास्ते में हमेशा मिलते रहते हैं।"

दमेश-आपा काफ़ी देर तक बोलती रही, वह न केवल अस्कार को तसल्ली दिला रही थी, बल्कि अपने आप को भी। कभी-कभी लड़ाई में मारे गये बेटे की और पति की, जिसे वह जवानी में ही खो बैठी थी, याद आती, तो दिल बैठने लगता, इस बातचीत से वह अपना दिल बह-ला रही थी।

चिराग़ टिमटिमा रहा था। जोमार्त को गये काफ़ी देर हो चुकी थी, अस्कार सो चुका था। वह अस्कार की फटी क़मीज़ को सीती हुई अपनी ज़िन्दगी के बारे में सोचने लगी। वह कभी बेकार नहीं बैठ सकती थी।

अक़्तूमावालों को इस औरत की सहनशीलता और शांत प्रकृति पर आश्चर्य होता था और वे उसका आदर करते थे। युद्ध के दिनों में उसके कमरे में हर अनाथ को शरण मिल जाती थी। खेत में और घर में वह एक समान एकाग्रचित्तता से काम करती थी। बच्चों व सहेलियों के लिए उसके होंठों पर सदा मुस्कराहट खेलती थी और दिल में प्यार। केवल आंखों के आस-पास की शोकसूचक कालिमा और बालों की सफ़ेदी ही मां के दुख के बारे में बताती थीं।

सपार उसका समवयस्क था और उसके स्वर्गीय पति का मित्र था, इसीलिए दमेश-आपा उसे अपना सहारा मानकर उससे सलाह लेने जाती। सपार के परिवार के साथ उसके सगों जैसे सम्बन्ध थे। अब सपार भी नहीं है, उसे दूसरे गांव में भेज दिया गया... अब क्या होगा?

अस्कार कलताय के साथ-साथ रहने और अमीरबेक की नज़रें बचाकर चलने की कोशिश कर रहा था। उसे डर था कि वह उसे रेतीले इलाक़े में भेज देगा। वह चिन्ताग्रस्त और शंकाशील हो गया। उसे दूसरों से बुरे कपड़े पहनने पर शर्म आती थी।

"तुम मुँह लटकाये क्यों चलते हो?" एक बार ज़उरेश ने उससे खेत में मिलने पर पूछा।

अस्कार को उसकी आंखों में दया की झलक दिखाई दी और इससे उसका दिल और भी ज़्यादा कुढ़ गया। अस्कार ने पहली बार महसूस किया कि इस सुन्दर लड़की के पास खड़ा होने पर वह कितना बेतुका, तुच्छ और फटेहाल लगता है। एक बार अस्कार उससे खलिहान में मिला। वह परेशान और डर के मारे पीली पड़ी हुई खड़ी थी।

"तुम्हें क्या हो गया है, ज़उरेश?" उसके मुँह से निकल गया।

"क्या तुमने नहीं सुना? फिर युद्ध छिड़ गया।"

"युद्ध नहीं, ब्रममारी," उसके पास पहुंचे जोमार्त ने उसकी बात ठीक की," जापान के शहर पर अणु-बम गिराया गया है। लाखों आदमी पलक झपकते मारे गये।"

"हाय अल्लाह, लोगों को किस बात की सज़ा मिल रही है?" दमेश-आपा फुसफुसायी। ऐसा लगा जैसे हिरोशिमा की मांओं की पीड़ा वह ख़ुद अनुभव कर रही हो। "क्या इस शहर में मरों को दफ़नाने लायक़ लोग ज़िन्दा बचे हैं?"

किसी ने उसे जवाब नहीं दिया।

"यह हुजूम कैसा लगा हुआ है? तुम लोग ठंडी सांसें क्यों भर रहे हो? युद्ध तो युद्ध ही होता है। और जहाँ तक जापानियों का सवाल है, तो वे भी जर्मनों जैसे ही हैं। चलो सब अपनी-अपनी जगह पर जाओ, काम क्यों बन्द कर रखा है?" नया अध्यक्ष धौले माथेवाले पर सवार हो आ पहुंचा।

"ए, अमीरबेक, सभी लोग एक से होते हैं। हर मां अपने बच्चों को प्यार करती है। लोगों के दुख के बारे में ऐसी बातें नहीं कहनी चाहिए। लगता है तुमने ख़ुद कभी कोई दुख नहीं उठाया है," दमेश-आपा ने रूखे स्वर में कहा।

"बौखला मत, बुढ़िया, कांव-कांव मत कर!"

"मेरा दिमाग़ ठीक है, अमीरबेक। हर आदमी कोड़े और बदज़बान से नहीं डरता है। अपनी करतूतों पर ध्यान दे, तो बेहतर रहेगा।"

"तुम लाल-पीली क्यों हो रही हो? क्या मैंने तुम्हें कुछ बुरा कहा? इसलिए कह रहा हूं क्योंकि काम रुका पड़ा है," अमीरबेक जाते हुए बड़बड़ाया। अस्कार को देखकर वह उसकी ओर गया। "तू तैयार रहना। रेगिस्तानी इलाक़े में भेड़ों के फ़ार्म पर जाना होगा, वहीं काम करेगा।"

"यह वहां रह चुका है। बहुत हो चुका! जल्दी ही इसे स्कूल जाना होगा," कलताय बीच में टोका।

"कौन-सा स्कूल? इसे निकाल दिया गया है..."

कलताय लंगड़ाता हुआ अस्कार के पास पहुंचा,

"सुना?"

अस्कार ने स्वीकृति में सिर हिलाया।

"तो अब काम छोड़ दो। मेरे घर जाकर मेरा फ़ौजी ओवरकोट ले लो। लो, यह भी तुम्हारे लिए है," उसने बिरजिस की जेब में से मुड़े-तुड़े नोट निकाले। "यह तुम्हारे काम आयेंगे। अमीरबेक ही सब कुछ नहीं है। यहां से निकाल दिया गया तो क्या हुआ दूसरी जगह भरती कर लेंगे। तुम्हारी पढ़ाई छुड़वाने का हमें बहुत पाप लगेगा। तुम्हारे पिता की आत्मा के प्रति हम यह अन्याय कभी नहीं कर सकते, भइया," कलताय की आवाज़ कांप उठी। "दमेश!" उसने आवाज़ दी। "भण्डारी से आटा लेकर लड़के को रास्ते के लिए कुछ पका देना। मैं अभी तुम्हें काग़ज़

लिखे देता हूं। कल इसे रवाना कर देना। कितनी बुरी बात है, लड़का हमारे पास ऐसे लौट आया था, जैसे अपने घर आया हो, और हमने उसकी टांगें पकड़कर उसे बाहर निकाल दिया। ख़ुद ही धकेल रहे हैं... उसके होंठों पर कड़वी मुस्कराहट खेल गयी। "ख़ैर, कोई बात नहीं, अस्कार। मैंने जैसा कहा, वैसा ही करो।"

कलताय तेज़ क़दमों से कोठरी की ओर चल दिया। फिर उसने मुड़कर अस्कार को आवाज़ दी,

"देखो, बिगड़ना मत। अपनी और दूसरे लोगों की बदनामी मत करना। अगर तुम्हारे पिता के बारे में पूछें, तो कह देना कि मारे गये। कम्युनिस्ट थे। बाक़ी बातों से तुम्हें कोई मतलब नहीं, पढ़ते रहना!"

कलताय ने कोठरी में जाकर दरवाज़ा ज़ोर से बन्द कर दिया।

अस्कार चुपचाप टाल पर जा पहुंचा और काफ़ी देर तक घास में छिपा लेटा रहा। वह नहीं जानता था कि एक दिन बाद वह कहां जायेगा। अकेले निर्णय करना काफ़ी कठिन होता है। उसने कभी आनेवाले कल के बारे में नहीं सोचा था। और अब यही सोचकर कि आगे क्या होगा, वह चिन्तित हो उठता था।

शाम को जोमार्त फिर आया।

"मैंने अफ़वाह सुनी है कि आज कल लेनिन्स्क में शिक्षण-विद्यालय खुलनेवाला है। क्या वहां जाओगे? मैं भी स्कूल से अपने काग़ज़ात निकलवाये लेता हूं। भौतिक विज्ञान पढ़ानेवाला भेंगा अध्यापक कहता है कि विद्यालय में पढ़ने के इच्छुक छात्रों की संख्या कम होगी और हम आसानी से भरती हो जायेंगे।"

कहीं दूर से गायनी का दर्दभरा गीत सुनाई दे रहा था। लगता था जैसे वह पहाड़ से लौटते समय रो रही थी। गांव में हमेशा की तरह सन्नाटा छाया हुआ था।

* * *

विद्यालय में पढ़ने के इच्छुक नौजवानों की संख्या वास्तव में कम रही। अस्कार बिना किसी कठिनाई के प्रवेश-परीक्षा में उत्तीर्ण हो गया। छोटे-से तंग छात्रावास में उसे जोमार्त के साथ रहने की जगह मिल गयी।

जोमार्त ने मज़ार के बारे में लिखा अपना विवरण इतिहास के अध्यापक को दिखाया, पुराने ज़माने के बारे में उनकी कहानियां सुनकर वह बहुत प्रभावित हुआ, उसे स्मारकों का शौक़ लग गया। वह पत्थर की मूर्तियों, मज़ारों आदि की खोज में दिन भर पहाड़ों में भटकता रहता, किताबें उलटता-पुलटता रहता। क्योंकि यह पुराना गांव किसी ज़माने में ज़िले का बड़ा शहर था, इसलिए इसके पुस्तकालय में काफ़ी फटी-पुरानी और पीली पड़ी पुस्तकें और पत्रिकाएं बची थीं। इन्हीं के बीच उसे चूहों के कुतरे काग़ज़ों में गांव के केन्द्र में बनी जामा-मसजिद का विवरण मिल गया। मालूम पड़ा कि यह बहुत पुरानी इमारत है। इसकी दीवारों पर कभी पक्की मिट्टी की पट्टियां लगी थीं। मुसलमान उसकी ख़ूबसूरती से आकर्षित होकर आते थे। यहां चीन और मंगोलिया से आनेवाले सौदागर ठहरते थे। जोमार्त अपने चित्रों में मसजिद को उसका मौलिक रूप देने की कोशिश करता था, यहीं, क़जाख़स्तान और रूस की सीमा पर स्थित गांव में उसके बनाये जाने के कारणों का पता लगाने में लगा था।

अस्कार मसजिद के बारे में किये जानेवाले तर्क-वितर्कों और जोमार्त की दुराग्रहता से परेशान हो चुका था, जब वह अक्तूमा चला जाता, तो उसे बड़ी ख़ुशी होती। जोमार्त गांव से वापस लौटते समय दमेश की भेजी हुई चीज़ें लाता, उसे वहां के समाचार सुनाता। अस्कार ने उसी से सुना कि कलताय ने आयसलू से विवाह कर लिया है और शहर चला गया है। "वह अमीरबेक की वजह से ही छोड़कर चला गया होगा," अस्कार सोचा करता। वह जोमार्त से, जो कुछ वह दमेश-आपा, बाउकेन और सपार के बारे में जानता था, उगलवा लेता था। केवल ज़उरेश के बारे में वह उससे कभी नहीं पूछता था। वह चाहता था कि जोमार्त स्वयं उसके बारे में बताये। लेकिन वह उसके बारे में कुछ नहीं बताता था, केवल संयोगवश एक बार उसके मुँह से निकल गया कि अगले वर्ष ज़उरेश का भी लेनिन्स्क आने का इरादा है। अस्कार ने नहीं पूछा कि वह कब और किस लिए आयेगी। लेकिन उसी क्षण से वह उसकी प्रतीक्षा करने लगा। एक बार उसने उसे सपने में देखा। वे दोनों साथ-साथ उसी हरे-भरे मैदान में चल रहे थे, जहां उन्होंने आक़-सुएक खेला था और गायनी के गीत सुने थे। अस्कार को उसके हाथों का स्पर्श और उसके बालों की सुगंध भी महसूस हुई। लेकिन वह उसका चेहरा न देख सका, क्योंकि ज़उ-

रेश सदा इस तरह आगे की ओर अपना सिर झुकाकर चलती थी, मानो स्वयं ही अपनी सुन्दरता पर लजा रही हो।

ज़उरेश के बारे में सोचते-सोचते अस्कार भूल गया कि वह कक्षा में बैठा है। उसने यह भी नहीं सुना कि अध्यापक ने उसे ब्लेक-बोर्ड के पास आने को कहा।

"यह सो रहा है या सपने देख रहा है," एक विद्यार्थी ने आवाज़ कसी।

"तब फिर उसे एक बार और फ़ेल करना पड़ेगा," अध्यापक ने कहा। "बहुत बुरी बात है, सेम्बिन। तुम पाठ तैयार नहीं करते और कक्षा में जंभाइयां लेते हो।"

अस्कार शर्म से पानी पानी हो गया।

"इसके लिए बड़ी मुश्किल होती है। यह काम भी करता है और पढ़ता भी है। कल इसने लकड़ी चीरने की मज़दूरी की थी। आपको तो मालूम ही है कि इसकी मदद कोई नहीं करता," कक्षा की मानीटर ल्यूदा ने उसका पक्ष लिया।

"क्या आप इसकी संरक्षिका हैं? मुझे मालूम है कि यह काम करता है, इसीलिए तो इससे अच्छी पढ़ाई की आशा करता हूं," अध्यापक के स्वर में लेशमात्र भी कटुता न थी।

"क्षमा कीजिये, मैंने यह आपको नहीं, इन हंसी उड़ानेवालों को कहा है। इन्हें हंसते हुए शर्म आनी चाहिए," ल्यूदा ने उन विद्यार्थियों की ओर मुड़कर देखा।

अस्कार ने उसे खा जानेवाली नज़रों से देखा। लड़की भौंहें सिकोड़ और गाल फुलाकर अपनी कापी के ऊपर झुक गयी। वह उसके चेहरे की बारीक रेखाओं को रुचिपूर्वक देखते हुए उसमें ज़उरेश से मिलते-जुलते लक्षणों को खोजने लगा।

अपने परिचित लड़कों को अस्कार जब विद्यालय की इमारत के पास के पुराने चर्चवाले बाग़ में लड़कियों के साथ एकान्त में देखता, तो वह ज़उरेश को याद कर उदास हो उठता। धीरे-धीरे उसकी कल्पना में सजी-संवरी लड़की की आकृति सजीव हो उठी और मन में सर्वथा नयी और अपरिचित भावनाएं जागृत हुईं।

उसका हृदय उज्ज्वल और उत्तम विचारों से ओत-प्रोत था।

उसके मन में अपनी प्रियतमा के प्रति सच्चा प्यार जाग उठा। उसके बारे सोचते-सोचते अस्कार जीवन की कठिनाइयों का आसानी से सामना करता था। युवक का स्वभाव बदलने लगा, वह शान्त और गम्भीर हो गया।

न जाने कब वह चित्रकला और संगीत में रुचि लेने लगा। और आश्चर्य की बात थी कि वह दोनों कलाएं आसानी से सीखने लगा। शायद युवावस्था में ऐसा ही होता है। युवावस्था में सदा वही भावना प्रभावित और आकर्षित करती हैं, जिसका ज्ञान पहली बार होता है—चाहे वह मनुष्य के प्रति प्रेम हो या कला के प्रति।

ज़उरेश शरद ऋतु में आ पहुंची। मालूम हुआ कि लेनिन्स्क में उसका चाचा रहता है। रविवार को वह अचानक विद्यालय के प्रांगण में आ पहुं-ची। उसको देखते ही अस्कार पीला पड़ गया, लेकिन वह इस पर ध्यान दिये बिना ख़ुशी ख़ुशी उससे दुआ-सलाम करके पढ़ाई के बारे में पूछने लगी। उसने यह भी बताया कि उसके चाचा ने उसे विद्यालय में प्रवेश लेने की बिलकुल मनाही कर दी है। "मुझे शिक्षकों की ज़रूरत नहीं है। मैं स्वयं शिक्षक हूं। तुम दसवर्षीय स्कूल पास कर लो तो बेहतर रहेगा," उसके चाचा ने उससे कहा था और उसे माध्यमिक स्कूल में भरती करवा दिया था।

एक बार शाम को ज़उरेश को अस्कार एक छोटी-सी कक्षा में मिल गया, जहाँ अकसर संगीत मण्डली अभ्यास करती थी। दुआ-सलाम के बाद ज़उरेश पुराने टूटे-फूटे पियानो के पास जा खड़ी हुई और धीरे-धीरे उसके कुँजी-फलक पर उंगलियां चलाती हुई किसी गीत की धुन बजाने की कोशिश करने लगी।

"यह कौनसा गीत है?" अस्कार ने मौन भंग करते हुए पूछा और उसके पास आ खड़ा हुआ।

सूरज काफ़ी समय पहले अस्त हो चुका था। कमरे में धुँधला प्रकाश था।

"गीत बजाना तो दूर की बात मैंने पियानो ही पहली बार देखा है।"

"तुम सीख जाओगी," कुंजी-फलक पर धीरे-धीरे चलती हुई उसकी उंगलियों को अनजाने में छूते हुए उसने कहा।

वह मौन रही। वह भी मौन था, हालांकि इस समय उसे बहुत कुछ कहने की इच्छा हो रही थी। वह कहना चाहता था कि उसने उसकी कि-

तनी प्रतीक्षा की, वह उसे कितना प्यार करता है, लेकिन उसे शब्द नहीं सूझ रहे थे। ज़उरेश ने कुँजी-फलक को ज़ोर से दबाकर सावधानी से अपनी उंगलियां उसके हाथ के नीचे से निकाल लीं और उठ खड़ी हुई।

"तुम बहुत अच्छी हो, ज़उरेश..." उसे अपनी ओर धीरे से खींचते हुए उसके मुँह से एकदम निकल गया।

"क्या करते हो, छोड़ो..." उसने धीरे से कहा और अस्कार को धकेल दिया।

वह जैसे नीन्द से जाग उठा। वह बचपन से ही अपने हृदय में उमड़ते किशोरावस्था सुलभ भावुकतापूर्ण उद्वेगों को दबा देने का आदी हो चुका था। लगता था बचपन से ही अनुभव होनेवाली कठिनाइयां, ममता के बिना बीता जीवन, इन सब बातों ने उसमें सबसे महत्वपूर्ण गुण—आत्मविश्वास की हत्या कर दी थी। वह अपना पहला प्यार गंवाने से डरता था, उसे डर था कि किसी बात से वह उसे नापसन्द कर देगी। हालांकि ज़उरेश के "क्या करते हो" में प्रेम की झलक थी, किसी प्रकार की नाराज़गी नहीं थी, लेकिन वह पीछे हट गया। हिलने-डुलने और कोई असुधार्य ग़लती कर बैठने से डरता हुआ वह स्तम्भित खड़ा रह गया।

ज़उरेश खिड़की की ओर मुड़कर उसकी प्रतीक्षा करने लगी। चांद की फीकी किरणें उसके चेहरे को हल्का रोशन कर रही थीं। वह सारी दुनिया को भूलकर उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। लेकिन उसे उसके पास जाने का साहस नहीं हो रहा था। तब उसी ने लड़के को धीरे से आवाज़ दी।

युवक ने झिझकते हुए उसकी ओर क़दम बढ़ाये। ज़उरेश ने सिर उठाया। वह उसकी मर्मभेदी दृष्टि और होंठों के सामीप्य से कांप उठा।

"कुछ कहो तो," ज़उरेश अधीरता से फुसफुसायी।

उसने उसे अपनी ओर खींच लिया और अपना चेहरा उसके बालों में छिपा लिया।

"मैं कब से तुम्हें बताना चाहता हूं," अस्कार ने उसे चूमते हुए सुख की अनुभुति से रुंधे गले से कहा।

उसने नहीं सुना कि कब किसी ने कमरे का दरवाज़ा खोलकर बिजली का बटन दबाया और कमरे में प्रकाश हो गया।

"अच्छा, तुम लोग हो? लगता है, मैंने तुम्हें परेशान कर दिया!" एक जानी-पहचानी आवाज़ सुनाई दी।

ज़उरेश अस्कार को धक्का देकर कमरे से बाहर भागी।

दरवाज़े में जोमार्त खड़ा था। वह मुस्करा रहा था। अस्कार को यह मुस्कान बुरी लगी। उसे अपने दोस्त से नफ़रत हो गयी। यह आदमी उससे एक बार घुड़दौड़ में जीत की ख़ुशी छीन चुका है। अब उसने अपनी उपस्थिति से अस्कार के जीवन की सब से प्रिय वस्तु को अपवित्र कर दिया। उसने वह देख लिया, जो हमेशा के लिए केवल दो व्यक्तियों की स्मृति में ही रहना चाहिए था।

"तुमने उसे बहुत अच्छी तरह जकड़ रखा था। क्या तुम में प्यार चल रहा है? मुझे तो मालूम ही नहीं था," जोमार्त पियानो के पास आ खड़ा हुआ। "तुम खड़े क्यों हो? यहाँ हमारी इतिहास मण्डली अभ्यास करेगी और तुम उसके पीछे भागो। कसकर जकड़ लेना," उसने शरारती ढंग से आंख मिचकायी।

अस्कार ने तैश में आकर उसके गाल पर एक ज़ोरदार तमाचा जड़ दिया।

"तुम ऐसी हरकतें छोड़ दो!" जोमार्त पीछे हट गया। "मैं कहता हूं, छोड़ दो! तुम सोचते हो, मैं छेद में से झांक रहा था। क्या तुम सोचते हो, मैंने यह जान-बूझकर किया? सिर्फ़ संयोगवश ऐसा हो गया... दुखी मत होओ, वह दयालु है, इनकार नहीं करेगी...."

अस्कार ने उसका गरेबान पकड़ लिया।

"पागल हो गये हो क्या? किसी लड़की की वजह से दोस्त से लड़ रहे हो," जोमार्त अपने को छुड़ाते हुए चिल्लाया।

"यह लो संयोगवश आने के लिए और यह उसे दयालु कहने के लिए," अस्कार ने उसके गालों पर कई तमाचे जड़ दिये।

जोमार्त ने चिल्लाकर अचानक सिर झुका लिया और अस्कार की ठोड़ी में टक्कर मारी। वे फ़र्श पर गुत्थम-गुत्था हो गये। इतिहास मंडली की बैठक में आये लड़कों ने उन्हें बड़ी मुश्किल से अलग किया।

अगले दिन सारे विद्यार्थियों को उनके झगड़े और ज़उरेश के बारे में मालूम हो गया।

"ग़लती तुम्हारी ही है। तुम पागल हो। मैंने तुम्हारे साथ कुछ भी तो बुरा नहीं किया था," जोमार्त सूजे होंठ लिये घूम रहे ग्रस्कार से बड़बड़ाता हुग्रा कह रहा था।

लेकिन ग्रस्कार जोमार्त की बातों ग्रौर नाराज़गी से इतना परेशान नहीं हो रहा था, जितना ज़उरेश की नाराज़गी से। ज़उरेश के ताने उसके दिल में तीर जैसे चुभ गये।

"तुमने ऐसा क्यों किया, बताग्रो क्यों किया? क्या मुझे बदनाम करना चाहते थे... मार-पीट शुरू कर दी। यह जंगलीपन है। ग्रब यह बात स्कूल में भी ग्रौर घर में भी सब को मालूम हो गयी। तुम क्यों इतने निकम्मे हो गये हो?"

वे पुराने बाग़ में रसभरी ग्रौर चिरयोमुख़ा* के झुरमुट में एक जर्जर भोजवृक्ष की डालों के नीचे खड़े थे। ज़उरेश की ग्रांखें डबडबा रही थीं। ग्रौर वह उसे तसल्ली नहीं दिला पाया था। छात्रावास लौटकर वह कम्बल में लिपटकर रात देर गये तक ग्रपने प्रथम चुम्बन ग्रौर ग्रभी ग्रभी किये गये ग्रपमान को याद करके रोता रहा...

* * *

युवक ने ज़उरेश के ग्रागे ग्रपने को हमेशा के लिए दोषी मान लिया। ग्रब वह लोगों के सामने उससे नहीं मिल सकता था, उसे डर था कि लड़के उस पर हंसेंगे, लेकिन वह उसके बिना जी भी नहीं सकता था। वह किताबें उठाकर पढ़ने का बहाना करते हुए चिरयोमुख़ा के तले उस पगडंडी के पास कहीं बैठ जाता था, जिस पर से ज़उरेश ग्रकसर गुज़रा करती थी। जब वह हल्के क़दमों से जल्दी-जल्दी चलती हुई वहां से गुज़रती, तो ग्रस्कार ग्रपनी सांस रोके घनी घास में लेटा रहता। उसे मालूम नहीं था कि ज़उरेश उस घटना को लगभग भूल ही गयी है। उसके नये परिचितों, स्कूल के छात्रों ग्रौर विद्यार्थियों द्वारा उसमें प्रकट दिलचस्पी ने उसे ग्राकर्षित कर लिया था। वह बहुत ग्रच्छा नाचना जानती थी ग्रौर विद्यालय में ग्रायोजित किये जानेवाले कंसर्टों ग्रौर सान्ध्य-गोष्ठियों में निय-

---

* चिरयोमुख़ा—एक प्रकार की काली चेरी जो स्वाद में खट्टी होती है।

मिल रूप से जाती थी। उसे लड़कों की दिलचस्पी अच्छी लगती थी और उसे जोमार्त की कहानियां भी रोचक लगती थीं।

पहले गांव में अस्कार उसे निराला और विशिष्ट लगता था। दूर-दूर के स्थानों की यात्रा करने, कई शहर देखने और रूसी भाषा जाननेवाला वह गांव का पहला लड़का था। और अब तो वह उसे केवल एक कष्ट-भोगी और उसकी दूसरों के तानों तक से रक्षा करने में असमर्थ लड़का समझती थी। केवल अस्कार के प्रति उसका काफ़ी पुराना लगाव और उसका रोमांटिक-सा दिखनेवाला भाग्य ही उसको भूलने से रोके हुए थे। दिल ही दिल में वह जानती थी कि वह उसे प्यार करता है, इतना प्यार करता है, जितना और कोई नहीं कर सकता, इसी कारण से वह उसके बारे में सोचे बिना नहीं रह सकती थी।

वे जब कभी मिलते, तो उन दोनों को वह मूर्खतापूर्ण ढंग से समाप्त हुई शाम, अधूरी बातें और झगड़ा याद हो आते थे। इसी कारण से उनके आपसी सम्बन्धों में स्वाभाविकता और सहजता का अभाव रहता था और बातचीत हो ही नहीं पाती थी। ज़उरेश सकपका जाती। अस्कार किंकर्तव्य-विमूढ़ हुआ चुप रह जाता था, हालांकि वह बहुत कुछ कहना चाहता था या कम-से-कम कुछ देर उसके साथ खड़ा ही रहना चाहता था।

अस्कार समझता था कि इस तरह की मुलाकातें ज़उरेश के लिए काफ़ी कष्टदायी होती हैं, लेकिन वह उसे दोष नहीं देता था। वह अपने को बेवकूफ़ समझने लगा था और उसकी नज़रों में दूसरों से कुछ बेहतर दिखाई देने की पुरज़ोर कोशिश कर रहा था। वह स्कीइंग के लिए पहाड़ों के सबसे दुर्गम स्थानों में जाने लगा, चर्च की छत पर हवा से हिलते-डोलते जर्जर प्याज़नुमा गुम्बज़ पर से क्रास उतारने के लिए चढ़ा, तूर्यवृंद में शामिल हो गया, दीवारी-समाचार पत्र का चित्रकार बन गया। लेकिन ज़उरेश के सामने वह पहले की ही तरह किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाता और कुछ कह नहीं पाता।

"तुम इस पर मर मिटे क्या? अरे, तुम्हें उसमें ऐसा क्या मिल गया है? उससे अच्छी-अच्छी भी हैं। उनसे बातचीत भी की जा सकती है," एक बार जोमार्त ने मज़ाक़ में कहा लेकिन अस्कार की तनी भौंहें देख चुप हो गया।

हर रविवार को जब अस्कार उदासी से हॉल में देखता हुआ तूर्यवृंद में अपने बेरीटोन पर "डेन्यूब की लहरें" या "बिरयोज़का" की धुनें निकालता रहता, ज़उरेश जोमार्त या किसी और के साथ नृत्य करती रहती। वह न उसकी ओर ध्यान देती, न देखती।

"जब से ज़उरेश नाच में आने लगी है, तुम बहुत अच्छे एकल वादक हो गये हो। वैसे कभी-कभी बेसुरा बजाते हो, लेकिन यह इतनी बुरी बात नहीं है," लड़के उसे छेड़ा करते।

अस्कार इस तरह के मज़ाक़ों से तंग आ चुका था। उसने तूर्यवृंद में बजाना छोड़ दिया। इस तरह उसका एक और शौक़ ख़त्म हो गया। उसे बचपन से ही गाने गा सकनेवालों और बाजे बजा सकनेवालों से ईर्ष्या होती रही थी, उसका विश्वास था कि जिन लोगों में ऐसी प्रतिभा होती है, वे सदा सुखी रहते हैं। वैसे उनके गांव में सबसे अच्छी आवाज़ गायनी की थी, लेकिन गीतों से इस बेचारी, अभागी लड़की को कभी ख़ुशी हासिल नहीं हो सकी।

सपने... सपने... कितने सुन्दर और सुखद होते हैं! बचपन में परियों की कहानियों जैसे मनमोहक लगते हैं। शायद इसलिए तो वे इतने भंगुर होते हैं और जीवन के प्रथम संस्पर्श से ही चकनाचूर हो जाते हैं।

जब से अस्कार ने संगीत का शौक़ छोड़ा, उसका ज़उरेश से मिलना और भी कम हो गया। वह गुमसुम रहने लगा और दिन भर विद्यालय में पागल की तरह इधर-उधर भागता रहता, कभी पानी ढोकर लानेवाले की मदद करता, कभी भण्डारी की, कभी कमरा बन्द करके दीवारी समाचार-पत्र के लिए चित्र बनाता, कविताएं लिखता। केवल उसकी कक्षा की मानीटर, दुबली-पतली और सुनहरे बालोंवाली ल्यूदा हमेशा उसके साथ होती थी।

अपनी बेढंगी उजड्ड हरकतों के कारण वह लड़कों जैसी ज़्यादा लगती थी। उसकी बातें सीधी सादी होती थीं, उनका कोई विशेष अर्थ नहीं होता था, और किसी ऐसी चीज़ से सम्बन्धित नहीं होती थी, जो अस्कार को चुभ जाये या उसे आपे से बाहर कर दे। वह उसके साथ बड़ा रूखा व्यवहार करता था, लेकिन वह बिना कोई शिकायत किये उसकी सब ग़लतियां माफ़ कर देती थी।

एक बार अस्कार ने निराशाजनित बदले की दुरूह भावना से बेक़सूर ल्यूदा को बुरी तरह डांट-डपट दिया और उसे अपने पास बैठने के लिए मना कर दिया। ल्यूदा चुपचाप कमरे से बाहर चली गयी।

वह अकेला रह गया। मेज़ पर ल्यूदा की पत्रिकाओं में से काटी तस्वीरें पड़ी थीं। वह उन्हें दीवारी समाचार-पत्र पर चिपका रही थी। इस तरह समाचार-पत्र ज़्यादा सुन्दर लगता था। पेंसिलें बड़ी बेतरतीबी से बिखरी पड़ी थीं। खिड़की के दासे पर गोंद की शीशी और उसके पास ल्यूदा की किताबें रखी थीं। वह उन्हें भूल गयी थी।

खिड़की पूरी खुली थी और अस्कार देख रहा था कि लड़की नाराज़ होकर बाग़ से निकलनेवाली पगडंडी पर चली जा रही है। बर्च की अधनंगी डालें सरसरा रही थीं, पत्तियां चक्कर खाती हुई पगडंडी पर गिर रही थीं। पतझड़ ज़ोरों पर थी।

अस्कार समझता था कि ल्यूदा उसे प्यार करती है। अब वह जान गया था कि किसी को प्यार करना और बदले में प्यार न पाना क्या होता है। यह अनुभव उसे बड़ी कठिनाई से प्राप्त हुआ था। वह समझ गया था कि निरन्तर कष्ट सहते रहने से मनुष्य दूसरों के साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार करने लगता है।

अस्कार सिर पकड़कर बैठ गया, वह अपनी निष्ठुरता के लिए अपने आप को सज़ा देने के लिए तैयार था। उसने तटस्थ दृष्टि से आत्म-विश्लेषण किया, तो अपने को एक तुच्छ व दुष्ट गंवार पाया। " भला ऐसे को कोई प्यार कर सकती है ? " वह अपने बारे में सोचने लगा। कभी-कभी आदमी के मन में कौंधी एक चिनगारी ही उसे अपने चारों ओर दिखनेवाली दुनिया और अपना भूतकाल ही नहीं बल्कि स्वयं को समझ पाने के लिए भी काफ़ी होती है।

अस्कार खिड़की में से बाग़ में कूद गया और सूखी पत्तियों के मुलायम बिछावन पर क़दम बढ़ाता, निर्दयतापूर्वक टहनियां तोड़ता आगे चल दिया।

वह फिर ज़उरेश के बारे में सोचने लगा। वह उसे प्यार नहीं करती और अब इस मामले को हमेशा के लिए ख़त्म कर देना चाहिए। अभागे से अभागे और भीरू से भीरू आदमी का भी अपना आत्म-सम्मान होता है।

* * *

जोमार्त के लिए हर चीज़ स्पष्ट और सरल थी। वह प्रेम के बारे में कभी गम्भीरता से बात नहीं कर सकता था।

"यह प्रकृति का नियम है। स्त्री जितनी ज़्यादा सुन्दर होगी, उसके प्रति आकर्षण उतना ही ज़्यादा होगा। यही नियम चित्रकला, साहित्य और वास्तुकला पर भी लागू होता है – कृति जितनी ज़्यादा सुन्दर होगी, उस पर ध्यान भी उतना ही ज़्यादा दिया जायेगा।"

अस्कार को इस प्रकार की तुलनाओं से घृणा होने लगती, मन-ही-मन वह इनका विरोध करता। लेकिन वह मौन रहता, जोमार्त के शब्दों में अपने किये का औचित्य ढूंढ़ने की आशा में उसकी हां में हां भी मिलाता।

लड़कों के हर मज़ाक़ से आहत होते हुए भी अस्कार जोमार्त की हर बात को माफ़ कर देता। वह उसके स्वभाव का आदी हो गया और कभी-कभी उसके दबाव में भी आ जाता था। अब वे दोनों अकसर साथ दिखाई देते थे। सर्दियों में दोनों दोस्त पहाड़ों में स्कीइंग करते, पैदल सैर करने चले जाते।

ज़उरेश देख और समझ रही थी कि अस्कार को इस अनबन से कितना भारी दुख हो रहा है। कभी-कभी उसकी इच्छा होती कि वह स्वयं उसके पास जाये। लेकिन उसे डर था कि लड़कों को फिर संगीत के कमरेवाली घटना की याद आ जायेगी और वे फिर उन दोनों की हंसी उड़ाने लगेंगे।

पर समय बीता जा रहा था। अस्कार तृतीय वर्ष समाप्त कर रहा था और उसका इरादा जोमार्त के साथ अलमा-अता में पढ़ाई जारी रखने का था। वह पहले की ही तरह मौन और ज़उरेश से दूर-दूर रहता था। उसने उसे दीक्षान्त-समारोह में भी नहीं बुलाया। लेकिन जिस दिन अस्कार अलमा-अता जा रहा था, ज़उरेश से न रहा गया, वह भागी-भागी विद्यालय आ पहुंची।

वह बर्च के तले, औरों से दूर खड़ी उसको देखती रही। वह चाहती थी कि वह उसे देख ले और उसके पास आ जाये। लेकिन बहुत देर हो चुकी थी। लड़के अस्कार को बग्गी में बिठाकर ले जा चुके थे।

* * *

विद्यार्थी छुट्टियों में अपने-अपने घर चले गये, ज़उरेश भी अस्कार और जोमार्त के चले जाने के बाद कुछ दिन के लिए अक्तूमा हो आयी थी। लेकिन गांव में वह बहुत जल्दी ऊब गयी। लेनिन्स्क लौटने के बाद वह अकेली सुनसान पुराने बाग़ में घूमती रहती। कभी-कभी वह अपनी सहेलियों के यहां जाती, उनके साथ सिनेमा देखने जाती, लेकिन ज़्यादातर अकेली ही रहती। छुट्टियों में लेनिन्स्क में भी वैसे ही मन नहीं लगता था जैसे कि अक्तूमा में। शहर में रौनक विद्यार्थियों की वापसी के बाद ही आती थी।

ज़उरेश के चाचा के पास रेडियो था और वह संगीत सुनती रहती थी। जब उससे मन भर जाता, तो वह बाग़ में काफ़ी देर तक लेटी-लेटी कोई न कोई पुस्तक उलटती-पुलटती रहती, नीले आसमान को ताकती, अपने ही किसी सपने में खो जाती, अपने गांव को याद किया करती।

उसे बचपन में अस्कार के साथ चश्मे के आस-पास नंगे पैर दौड़ना, साथ साथ फूल चुनना, अस्कार के दोपहिया "टैंक" में सैर करना याद हो आता। कुम्मैत बछड़े के पीछे दौड़ते हुए वह उसे कितना मज़ाकिया लगा था! ज़उरेश को ख़याल आया कि अस्कार में हमेशा कुछ ऐसी बात थी, जो वह समझ नहीं पाती थी। मालूम नहीं क्यों वह उससे डरता था, शायद उससे शरमाता था। वह उसकी दूसरे लड़कों में तुलना करती, लेकिन उसकी समझ में नहीं आता कि जोमार्त बेहतर है या अस्कार। उसे याद हो आया कि एक बार किस तरह जोमार्त ने ज़बरदस्ती उसको चूम लिया था। ज़उरेश इसे धृष्टता मानती थी, लेकिन वह उस पर नाराज़ नहीं हुई।

अस्कार क्यों दूसरों जैसा नहीं है, क्यों इतना गम्भीर है? शायद इसलिए कि वह अकेला है। अस्कार को हर समय काम करना पड़ता है। काम तो वह पहले भी करता रहा था, लेकिन तब ज़रा सीधा-सादा था।

उसके दिल में सोयी अस्कार के प्रति सहानुभूति की भावना फिर से जाग उठी। उसने अस्कार को पत्र लिखा, जिसमें इस बात का उलाहना दिया कि वह बिना उससे विदा लिये ही चला गया। अपनी एकमात्र चिट्ठी में उसने लिखा कि वह कैसे अक्तूमा गयी थी, कि लेनिन्स्क में मौ-

सम अच्छा है, कि उसे यानी ज़उरेश को उच्च-शिक्षालयों के विद्यार्थियों से ईर्ष्या होती है और वह शिक्षा के क्षेत्र में उनकी सफलता की कामना करती है। अगले वर्ष वह भी संस्थान में पढ़ने आयेगी।

अस्कार के लिए ज़उरेश का पत्र अप्रत्याशित था। उसने उसी वक़्त उसे उत्तर देने का निश्चय किया, कई बार पत्र लिखा और फाड़ दिया। उसे उपयुक्त शब्द नहीं सूझ रहे थे। कविताएं भी उसे अशक्त लगीं। फिर उसने बिलकुल न लिखने का फ़ैसला किया। किसी तरह लिखा ही नहीं जा रहा है। लेनिनस्क जाकर ज़उरेश से मिलना बेहतर होगा। जल्दी ही छुट्टियां होनेवाली हैं।

अस्कार को जाने की जल्दी लगी थी, वह अपने कमाये पैसे बचाने लगा — सफ़र की तैयारी करने लगा। वह भाषाविज्ञान संकाय का विद्यार्थी था और जोमार्त ने, जैसे कि वह सपने देखा करता था, इतिहास संकाय में प्रवेश लिया था।

वे दोनों एक ही छात्रावास और एक ही कमरे में रह रहे थे।

लड़कों ने जब देखा कि अस्कार केवल सूखी रोटी और पानी पर गुज़र कर रहा है, तो उन्होंने नववर्ष की पूर्ववेला में चुपचाप पैसे इकट्ठे करके एक लिफ़ाफ़े में रख उसके ऊपर "भावी महान भाषाविद को हिम-बाबा की ओर से" लिखा और उसके तकिये के नीचे रख दिया।

"यह किसकी करतूत है?" लिफ़ाफ़ा खोल उसमें पैसे देखते ही अस्कार के चेहरे का रंग उड़ गया।

"लिफ़ाफ़े पर लिखा तो है," उसके पड़ोसी ने ऐसे जवाब दिया, जैसे कुछ हुआ ही न हो।

"मैं भिखारी नहीं हूं!" अस्कार ने लिफ़ाफ़ा मेज़ पर फेंक दिया।

उसकी आंखें जल रही थीं, हाथ ग़ुस्से के मारे कांप रहे थे, कोई एक शब्द भी ज़बान से निकालता, तो वह उसका गला पकड़ लेता।

"बुद्धू," उसके पड़ोसी ने बड़े शान्त स्वर में धीरे से कहा, "हमने तो ऐसा सोचा भी नहीं था। तुम बेकार ही इस तरह की बातें कर रहे हो।"

लड़के बिना कुछ बोले अपने-अपने पलंगों पर पढ़ने का बहाना किये हुए लेटे रहे। दोस्तों की चुप्पी ने अस्कार को निरस्त्र कर दिया। वह शान्त हो गया और निढाल होकर पलंग पर पड़ गया।

"ऐसा मत करो, दोस्तो... क्षमा चाहता हूं। मैं नहीं ले सकता," उसने एक ठंडी सांस ली। "मैं औरों से गया-गुज़रा नहीं हूं, मैं फैशनेबुल कपड़े इसलिए नहीं पहनता, क्योंकि वे मेरे पास हैं ही नहीं। कुछ पैसा कमा लूंगा – तो नये ख़रीद लूंगा। मैं पहले दर-दर भटकता और भीख मांगता था। लेकिन अब... इसलिए अपनी सहानुभूति अपने पास ही रखिये। मैं इन बातों से तंग आ चुका हूं..."

अस्कार उठ खड़ा हुआ और अपनी किताबें ले विश्वविद्यालय के छापाख़ाने जाने की तैयारी करने लगा – वह वहां विद्यार्थियों के समाचार पत्र के कम्पोज़िटर का काम करता था।

नुकीली बारीक बर्फ गिर रही थी, जैसी कि अल्मा-अता में सर्दियों में हमेशा गिरती है। खड़खड़ करती चल रही आधी ख़ाली ट्राम में ठंड थी। कुछ शान्त होकर वह सोचने लगा। शक्कीपन और बेसब्री के लिए अपने को कोसने लगा।

वह अपना हर ख़ाली क्षण पढ़ने में लगा रहा था। शहरी लड़कों की तुलना में उसका ज्ञान कम था। उन लोगों ने बहुत कुछ पढ़ रखा था और उनके आगे अस्कार पानी भरता था। उसे पूरे दिन पुस्तकालय में बितानेवाले जोमार्त से ईर्ष्या होती थी।

* * *

सत्र की अन्तिम परीक्षा देने के बाद अस्कार बिना समय गंवाये लेनिन्स्क के लिए रवाना हो गया। स्टेशन पर वह रेलगाड़ी से उतरकर पेट्रोलवाहक ट्रक में बैठ गया। ज़िला मुख्यालय जानेवाली सड़क रेतीले इलाक़े में से गुज़रती थी। तेज़ हवा चालक के कैबिन की खिड़की से टकराकर बर्फ़ और मिट्टी उछाल रही थी। चालक रेत के टीलों में गाड़ी के फंसने के डर से उसे पूरी रफ़्तार से दौड़ा रहा था, इसलिए वे ज़िला मुख्यालय बहुत जल्दी पहुंच गये। अस्कार ने आगे अक्तूमा होकर जाने का फ़ैसला किया, क्योंकि अक्तूमा के आगे शृंग-पथ शुरू होता था, जिसे स्कीइंग करते हुए एक दिन में ही तय किया जा सकता था।

शाम देर गये वह अपने गांव पहुंच गया। दमेश-आपा घर पर नहीं थी: वह एक मीटिंग में गयी हुई थी।

वह अपने बर्फ़ से जमे पैवन्द लगे नमदे के जूतों और भीगे कोट में ठि-ठुरता, भूखा, लोगों से और सिगरेट के धुएं से भरे नीची छतवाले लम्बे कमरे में पहुंचा। अन्दरवाले कोने में एक तिपाई रखी थी। तिपाई पर चिराग़ टिमटिमा रहा था। लोग एक दूसरे से सटे मिट्टी के फ़र्श पर बैठे थे।

मेज़ के पीछे अख़बार हिलाता हुआ एक आदमी लोमड़ी की खाल की नयी क़ज़ाख़ कनटोपी आंखों के ऊपर तक खींचकर पहने खड़ा था। धुएं के कारण अस्कार अमीरबेक को कठिनाई से पहचान पाया और वह कान लगाकर सुनने लगा।

"... आपने देख लिया, मेरी ही बात सही निकली, उन्नीसवीं कांग्रेस में क्या कहा गया," अस्कार अमीरबेक की बातों का कुछ अंश सुन पाया। "आप सब लोग सपार को ही याद किया करते थे। उसे उसकी निरंकुशता के लिए सज़ा यों ही तो नहीं दी गयी थी। उसने नयी जगह में भी इमारती सामान का उत्पादन शुरू करने की कोशिश की। और इसमें साफ़-साफ़ लिखा है कि सामूहिक फ़ार्म को यह काम नहीं करना है।" अमीरबेक ने फिर अख़बार उठाकर दिखाया। "सपार मामूली पढ़ा-लिखा था। इसीलिए यह बात उसकी समझ में नहीं आ सकी।"

"सारा दोष सपार पर थोपना बन्द करो, कितने साल हो चुके हैं इन बातों को हुए!" कोने में से कोई चिल्लाया।

"किसकी बात करते हो?" अमीरबेक ने खा जानेवाली दृष्टि से अंधेरे कोने में घूरा।

"तुम्हारी बात नहीं हो रही है। तुम्हें तो निर्माण की फ़िक्र ही क्यों होगी। तुम अपना घर बना ही चुके हो, भेड़ें हांक लाये हो।"

अस्कार केनेख़ान लोहार की आवाज़ पहचान गया, लेकिन अंधेरे में उसका चेहरा वह नहीं देख सका। उसी समय दमेश-आपा उठकर अस्कार के पास आ पहुंची।

"अच्छा हुआ तुम वापस आ गये," उसने फुसफुसाकर कहा, उसकी आंखें डबडबा आयीं। वह अस्कार को खींचकर दरवाज़े की ओर ले गयी। "चलो, यहां से चलें। तुम ठिठुर गये और भूखे होगे।"

कोई पीछे से भागकर आया और अस्कार से लिपट गया। अस्कार ने

मुड़कर देखा – बाउकेन था। उन्होंने ख़ुशी के मारे एक दूसरे की बगल में टहोके मारे और बर्फ़ में लोटने-पोटने लगे।

"अभी तक बिलकुल बच्चे ही हो, बिलकुल मेमनों की तरह," दमेश-आपा ख़ुश हुई।

"कब आये, कितने दिन रहोगे?" बाउकेन ने अपने दोस्त को झंझोड़ दिया।

"सुबह चला जाऊंगा। स्की दिलाओगे?"

"हाय अल्लाह, तुम्हें फिर कहां जाने की जल्दी लगी हुई है, अस्कार-जान?" दमेश ने कहा। "कम-से-कम लोगों को अपनी सूरत तो दिखा दो। कुछ देर बातचीत तो कर लो। कल सारा गांव तुमसे मिलने आ-येगा।"

वे लोग पहले की ही तरह रात देर गये तक दमेश आपा के छोटे-से, गरम व आरामदेह कमरे में बैठे पुरानी बातें याद करते रहे, एक दूसरे का हाल सुनते-सुनाते रहे। बाउकेन अपने दोस्त को कम-से-कम एक दिन और ठहरने के लिए मनाने लगा। लेकिन छुट्टी के इने-गिने दिन ही बाक़ी रह गये थे।

अस्कार तड़के ही पैरों में स्की बांध उस रास्ते पर चल पड़ा, जिस पर वह चूना-पत्थर खोजते समय चलता रहा था और शृंग-पथ की ओर रवाना हो गया।

बर्फ से ढकी घाटी की सफ़ेद चमक, नीला आकाश, कहीं-कहीं बिखरे हुए पारदर्शक बादल, सफेद संगमरमर को तराशकर बनायी हुई-सी पहाड़ों की सीधी चोटियां – इस स्थान की हर वस्तु आश्चर्यजनक थी। अस्कार युवती ज़उरेश के बारे में एक पुराना गीत गुनगुनाता हुआ आसानी से चला जा रहा था।

यह एक बहुत दुखभरा गीत था। इसमें एक पिता के अपनी इकलौती बेटी को ढूंढ़ने की कहानी कही गयी थी। बर्च की पत्तियां उसके कान में बेटी के बारे में बताती हैं, रेत के टीलों के कण उसका नाम गुनगुनाते हैं। वह मादा भेड़िया को अपने बच्चों को प्यार करते देखता है, पवन का तृण को गाकर सुनाया जा रहा प्रेम गीत सुनता है। वह भागा-भागा अपनी पुत्री के पास पहुंचता है, लेकिन उसे फूलों से ढकी क़ब्र में सोती हुई पाता है। युद्ध में सोलह पुत्रों के मारे जाने के बाद बची वह अपने

पिता की एकमात्र पुत्री थी। पिता अपनी ज़उरेश को जीवित न देख पा-या। वह उसको याद कर रोता रहा, पर्वतों, वनों, पुष्पों और सूरज से पुत्री लौटाने की विनती करता रहा।

अस्कार इस गीत के शब्दों में अपनी इच्छानुसार फेर-बदल करता रहा और परी की तरह सुन्दर ज़उरेश के प्रति अपनी प्रसन्नता और प्रेम व्यक्त करता रहा। बीच-बीच में बर्फ़ पर कोई लोमड़ी आग की लपट की तरह अपनी झलक दिखा जाती या कोई ख़रगोश उसका रास्ता काटता निकल जाता। अस्कार बड़े उत्साह से उन्हें आवाज़ें देता।

अस्कार शृंग-पथ के शीर्ष-स्थान पर पहुंचकर वहां काफ़ी देर तक खड़ा गहरी घाटी के तल में छाये धूसर कोहरे को देखता रहा। वहां चिरयो-मुख़ा के पुराने बाग़ के किनारे पर लकड़ी का छोटा-सा घर था, जिसमें ज़उरेश रहती थी। ढाल पर दूर अस्कार से डरकर भागा हुआ सफ़ेद पूंछ-वाला कांटाचूहा फुदकता हुआ भागा जा रहा था और उसे भागते देखकर हंसी आ रही थी। वह झाड़ियों में से बर्फ़ उड़ाता भाग रहा था और फिर एक छोटी-सी चट्टान के पीछे जा छिपा।

अस्कार अपने को पहाड़ों का बादशाह महसूस कर रहा था। बचपन में वह यहां ओस पर नंगे पैर घूमा करता था। इस समय घाटी के तल में छाया कोहरा गर्मियों में कुछ ऊपर उठता है। और ऊंचाई पर तैर रहे बादल कुछ नीचे आ जाते हैं।

"चल भई चल!" अस्कार ने अपने आपको आदेश दिया, स्की की छड़ियों पर ज़ोर लगाया और बड़ी तेज़ रफ़्तार से नीचे फिसलने लगा।

वह उसी तरह सरपट फिसलता भागा जा रहा था जैसे कभी धौले मा-थेवाले पर सवार होकर भागता था। उसे बर्फ़ में दबे पत्थरों से टकराने से बचने और अपनी रफ़्तार कुछ कम करने के लिए इधर-उधर मुड़ते और चक्कर लगाते हुए नीचे उतरना पड़ रहा था।

* * *

अस्कार अपने परिचित, शिक्षण-विद्यालय के प्रबंधक के यहां ठहरा। अस्कार ने तुरन्त उसके बच्चे को ज़उरेश के घर भिजवाया।

"उसके चाचा और चाची किसी दावत में गये हैं। वह घर पर अके-ली है," लड़के ने बताया।

...अस्कार हांफता हुआ पहुँचा, एक झटके में अपने सिर से टोपी उतार उसने भड़ाक से दरवाज़ा खोला और अपने साथ साथ बर्फ़ीली हवा का एक झोंका भीतर ले आया। उसका चेहरा ठंड के कारण लाल हो रहा था, कोट पूरा खुला था और नमदे के जूतों पर बर्फ़ पड़ी हुई थी।

"ओहो! कितनी ठंड साथ ले आये!" ज़उरेश की आवाज़ सुनाई दी।

वह फ़ौरन उसकी ओर लपका और भालू की तरह उसे अपनी बांहों में जकड़ लिया।

"ऊ, ऊ, कितने ठंडे हो तुम!" वह उसके चुम्बन से अपने को बचाती रही, फिर उसने स्वयं ही उसके जलते गालों का अपने होंटों से स्पर्श कर लिया और फुर्ती से चुपचाप अपने हाथ निकाल लिये। "देखो, तुम्हारे जूतों पर कितनी बर्फ़ पड़ी है," ज़उरेश ने उसे झिड़की दी।

अस्कार बड़े बेढब तरीक़े से झाड़ू ढूंढ़ने लगा। क़ालीन पर बर्फ़ का कीचड़ जमा हो गया था। बड़ा बुरा महसूस हो रहा था।

"कोई बात नहीं, मैं इसे साफ़ किये देती हूं।" ज़उरेश ने झाड़न उठाया। "वे लोग आने ही वाले हैं," उसने 'वे' पर ज़ोर देते हुए कहा और घड़ी पर नज़र डाली।

"मैं थोड़ी देर के लिए ऐसे ही चला आया था। वे लोग मुझे देख नहीं पायेंगे। तुमसे मिलना चाहता था। कुछ कहना..."

"मेरे पत्र का उत्तर देने का वक़्त तो तुम्हें मिला ही नहीं होगा," ज़उरेश मुस्करायी। "सच-सच बताओ, क्या किसी शहरी लड़की से दोस्ती हो गयी है? वैसे तो शहरी तुम लगते ही नहीं हो।"

उसने टकटकी बांधे उसे ऊपर से नीचे तक देखा। उनकी नज़रें टकरा गयीं।

"क्या कह रही हो, ज़उरेश?" उसने स्वतः कोट के बटन लगा लिये।

ज़उरेश के पास आते समय अस्कार ने अपनी सूरत-शक्ल के बारे में सोचा भी न था। इस समय अपनी प्रियतमा की सरसरी नज़र उसे चुभ गयी। क़िस्मत की ठोकरें खाये लोगों को हर बात जल्दी बुरी लग जाती है। उनका प्यार अन्धा होता है। इसी धर्मोन्माद के कारण उन्हें कष्ट और दुख झेलने पड़ते हैं। वह ज़उरेश के हर शब्द और उसकी हर नज़र का अपने ही ढंग से अर्थ लगा रहा था।

"बूग्रों, कैसे हो तुम लोग वहां? सुनाग्रो। इतने में चाय का पानी चढ़ा आती हूँ। अभी आयी," ज़उरेश यह कहकर रसोईघर में चली गयी।

अस्कार ने यंत्रवत खिड़की के दासे पर रखी किताब उठा ली और उसे खोलकर देखने लगा। पहले पृष्ठ पर ही लिखा था—'प्रिय ज़उरेश को। भुलाना नहीं, जोमार्त'। अस्कार ने किताब उसी जगह पटक दी, फिर उसने किताबों की खुली अलमारी में रखा फोटो देखा। उसने यंत्रवत उसे भी उठा लिया।

"अरे, तुम चुप क्यों बैठे हो..." ज़उरेश रसोई-घर से बाहर आयी।

अस्कार ने तुरन्त वह फोटो अपनी कांख में छिपा लिया। ज़उरेश ने यह नहीं देखा, उसने फिर घड़ी पर नज़र डाली, वह नहीं चाहती थी कि चाचा उसे अस्कार के साथ देख ले। अस्कार ने सोचा कि वह उसके कारण शर्मिंदगी महसूस कर रही है। उसका ख़ून उबल उठा। वह दरवाज़े की ओर लपका।

"तुम कहां जा रहे हो?" ज़उरेश भागी और उसके सीने से लग गयी। लेकिन अस्कार की उत्तेजित कल्पना में तो वही विचार बार-बार कौंध रहा था। उसने झटककर उससे हाथ छुड़ा लिये।

"तुम बर्दाश्त से बाहर हो गये हो, अस्कार! कब जा रहे हो?" ज़उरेश पीछे से चिल्लायी।

"कल," उसने बर्फ़ के ढेर पर क़दम रखते हुए जवाब दिया।

* * *

अस्कार जब भी अपनी यात्रा याद करता, उसकी आंखों के आगे ज़उरेश के गोरे-गोरे गर्म हाथ, क़ालीन पर जमा बर्फ़ का कीचड़, सिगरेट के धुएं और पसीने की बू से भरा वह छोटा-सा कमरा, जिसमें अक्तूमावालों की बैठक हो रही थी और अमीरबेक अख़बार हिला हिलाकर सपार को गालियां दे रहा था, घूम जाते।

अमीरबेक के शब्द अस्कार को रह रहकर याद आ रहे थे। "आख़िर सपार की ग़लती क्या है?" अपने गांव की याद आते ही उसे ज़उरेश का ख़याल भी हो आता। उस लड़की पर उसका क्रोध धीरे-धीरे ठंडा होने

लगा। लेकिन गाँव में उसने जो कुछ देखा, वह अकसर याद आने लगा। उसका जी चाह रहा था कि वह किसी को ये सारी बातें और अपने विचार बताये। लेकिन जोमार्त के अलावा अक्तूमा के बारे में और कौन जानता था। उससे दिल खोलकर बातें की जायें, लेकिन वह हमेशा व्यस्त रहता था। वह पूरी तरह से अपने रंग में रंग गया है। अस्कार के लौटने के बाद उसने केवल ज़उरेश के बारे में ही पूछा, गांव का तो उसने नाम तक भी नहीं लिया। रोम और ख़िवा के वर्णन में ही खोया रहा। उसे अक्तूमा के भविष्य की इतनी चिन्ता नहीं थी, जितनी कि वेनिस के डोजों के महलों, लेनिनग्राद के शीत-प्रासाद के आकार-प्रकार की।

वह लेनिनग्राद और रीगा की यात्रा की तैयारी कर रहा था। लेनिनग्राद के पुलों की मेहराबों का स्केच वह अपने ही ढंग से बनाता था, मोन्फेरान, रोच्ची और वोरोनिख़िन की वास्तुकला की प्रशंसा करता था। अस्कार को बुख़ारा में बने इस्माईल समानी के मक़बरे की सुन्दरता के बारे में, बार-बार सुनाता था। वह कलयान, सेराहसे, सन्जार और शाहे-ज़िन्दा के बेलबूटों का अध्ययन कर रहा था, रेगिस्तान चौक और अहमद यसावी के मक़बरे का काग़ज़ पर स्केच उतार रहा था। आज के अलमा-अता के स्थान पर कभी जो सुन्दर पुराना शहर रहा था और जिसे अत्यन्त तेज़ भूकम्प व बाढ़ से नष्ट हो गया बताते हैं, उसकी वास्तुकला के बारे में कुछ सामग्री खोज निकालने के लिए वह पुरानी पुस्तकों और पत्रिकाओं को निरन्तर उलट-पुलट रहा था।

"शहर का नाम ही बिगड़ गया है। इसे अल्मा-अता नहीं, अलमा-ताऊ (सेबोंवाला पहाड़) कहते थे। सुनो, चोकान इसके बारे में क्या लिखता है"—वह कहता और अस्कार के आगे अपनी प्रिय पुस्तक खोलकर रख देता, "पढ़ो! अलमालीक... अलमा-ताऊ (जहां अब वेरनोये किला स्थित है। व्यापार के प्रसिद्ध केन्द्र थे और चीन जानेवाले महत्वपूर्ण व्यापार-मार्ग पर जेनोआ के व्यापारियों और महान ख़ान के पास जानेवाले किपचाक के दूतों के लिए पड़ाव का काम देते थे..."

अस्कार को जोमार्त के उत्कट उत्साह और अपनी धरती के इतिहास के बारे में ज़्यादा से ज़्यादा जान लेने की इच्छा देखकर बड़ा आश्चर्य होता। जोमार्त अस्कार की तरह अपने दिल के घावों को नहीं कुरेदता। वह किसी चीज़ को गम्भीरता से नहीं लेता। केवल जब कभी

बातचीत उसके प्रिय विषय पर होती, तभी वह किसी प्रकार का विरोध न सह पानेवाला उत्कट विवादी हो उठता।

"हमारी स्तेपी में रहनेवाले लोग प्राचीन काल से ही अत्यन्त उच्च स्तर के भवन-निर्माण में दक्ष रहे हैं," वह बड़े उत्साह से कहता, "उन्होंने भव्य नहरों, नगरों, किलों और महलों का निर्माण किया था। हमारी धरती पर महान नगर थे। प्राचीन कज़ाख़ी शहर ओतरार का पुस्तकालय एशिया के सबसे बड़े पुस्तकालयों में से एक था, इसी नगर में हमारा महान पूर्वज अबूनासुर मुहम्मद अल-फ़राबी रहता था और वैज्ञानिक खोजें करता था। उनका जन्म ओतरार में सन् ८७० में हुआ था। अरब लोगों ने इस शहर का नाम फ़राबा रख दिया था। फ़राबा का पुस्तकालय सिकंदरिया के पुस्तकालय से किसी बात में कम नहीं था। मुहम्मद अल फ़राबी हमारे देश का महान दार्शनिक, कवि और खगोलज्ञ था। उन्हें 'विश्व का दूसरा अरस्तू' कहा जाता था। पूर्व के विद्वान इस बारे में जानते हैं। वे उसके बारे में लिखते रहते हैं और हमारे इतिहासकार भूल गये..."

अलंकृत चित्रकला, चीनी-मिट्टी पर नक़्क़ाशी की कला आदि जैसी कलाओं के लिए मध्य एशिया और कज़ाख़स्तान के शहर विख्यात थे। हमलों और युद्धों ने ओतरार को तबाह कर दिया, हमारी प्राचीन कला को नष्ट कर दिया। शायद इस महान नगर को चंगेज़खां ने उसी तरह नष्ट कर दिया, जिस तरह तुर्कों ने अक्रोपोलिस को।

मध्य एशिया के पुराने शहरों के बारे में अपनी कहानी सुनाते समय जोमार्त सब कुछ भूल जाता, उत्तेजित हो उठता, अपनी जगह से उछलकर उठ खड़ा होता, कमरे के एक कोने से दूसरे कोने के चक्कर लगाने लगता। वह हाथ हिला हिलाकर, बीच-बीच में अपनी पूरी खुली उज्ज्वल, किंचित गम्भीर आंखों के ऊपर आ पड़नेवाले घने काले बालों को झटके से पीछे करते हुए बोलता रहता।

"ऐसे लोगों पर विश्वास मत करो, जो लिखते हैं कि हमारे यहां भवन-निर्माण होता ही नहीं था, वास्तुकार नहीं थे, महान शहर नहीं थे और हम लोग हमेशा ख़ानाबदोश रहे थे। तुम क़िज़ील कूम में, पश्चिमी और दक्षिणी कज़ाख़स्तान में टेकरियों के नीचे दबे प्राचीन शहरों के खंडहरों का वर्णन ध्यान से पढ़ो, तो तुम समझ जाओगे। यह देखो, यह

तुर्किस्तान में अहमद यसावी के मक़बरे का वर्णन है। यह हमारी राष्ट्रीय संस्कृति और हमारी वास्तुकला के सर्वोत्तम स्मारकों में से एक है। इसकी अपनी विशेषता, अपना सौन्दर्य और अपनी ही भव्यता है। इसके निर्माण में परिशुद्ध गणितीय परिकलन और अद्वितीय वास्तुकला का तालमेल बिठाया गया था। मक़बरा पांच वर्ष में बनकर तैयार हुआ था और छः शताब्दियों से खड़ा है," वह अपनी धुन में और अधिक जोश में आता हुआ आगे बोलता रहता। "कज़ाख़स्तान के दक्षिण में स्थित जम्बूल शहर के पूर्व में, जो पहले आउलिये-अता के नाम से जाना जाता था, एक विशाल भवन के अवशेष हैं—यह सामन्त युग का एक क़िला था। वहां किपचाकी लोग रहते थे और उन्होंने इसका निर्माण पत्थरों को जोड़कर किया था। यह क़िला प्राचीन यूनान और मिस्र के भवनों से किसी बात में कम नहीं है। उसके भीतर ऐसे महल और कक्ष हैं, जिनकी भव्यता देखकर आदमी दंग रह जाता है। क्या हम अपने उन कुशल कारीगरों, अपने पूर्वजों के नाम जानते हैं? नहीं!" वह स्वयं ही अपने सवाल का जवाब देता। "हम को तो सिर्फ़ इस मक़बरे के निर्माण का आदेश देनेवाले तैमूर का ही नाम मालूम है, तैमूर लंग का झण्डा आज तक मक़बरे की दीवार के पास लगा हुआ है। और उन निर्माणकर्त्ताओं के नाम कोई नहीं जानता। उनके समकालीन लोग तक उन्हें नहीं जानते थे।"

"तो क्या हुआ? पुरानी इमारत की जगह नयी इमारत खड़ी होती है। वह और भी अधिक सुन्दर होगी, स्मारक भी बनेंगे। फिर अलमा-अता के प्राकृतिक दृश्य भी सुन्दर हैं," एक बार अस्कार ने जोमार्त का मुँह बन्द करने के लिए यों ही कह दिया।

लेकिन जोमार्त तुरन्त बौखला उठा।

"यह बात मान लो कि हमें प्रकृति मात्र पर, केवल फूलों और सेब के बागों पर ही गर्व करते हुए शर्म आनी चाहिए," उसने समझाने की कोशिश की। "ज़रूरत तो शहर को वास्तुकला की दृष्टि से सुन्दर बनाने की है। हमारे अध्यापक कहते हैं कि भविष्य के नगरों में आधुनिक वास्तुकला की सर्वश्रेष्ठ देन—सादगी, सरलता, आकार की स्पष्टता का सम्मिश्रण होना चाहिए, उनमें मनुष्य के लिए अधिकतम सुविधाएं होनी चाहिएं। हर नगर मौलिक और अद्वितीय होना चाहिए।"

"शहर तो सुन्दर बन जायेंगे, लेकिन हमारा गांव कभी बदलेगा?

उसका भविष्य क्या होगा ? बताओ। तुम तो भविष्यवाणियां करते जा रहे हो", अस्कार नाराज़ हो गया।

जोमार्त ने अपने दोस्त पर हैरतभरी निगाह डाली।

"हमारे अक्तूमा और हमारे चरवाहों की ज़िन्दगी कैसी होगी ?" अस्कार कहता जा रहा था, उसके चेहरे का रंग उड़ गया था, भौंहें चढ़ी हुई थीं। "अक्तूमा को अभी तो साधारण और अच्छे निर्माताओं की और समझदार, पढ़े-लिखे लोगों की ज़रूरत है, जो अमीरबेक की जगह ले सकें। तुम जैसे हवाई क़िले बनानेवालों और भविष्यवाणियां करनेवालों की नहीं। जीवन को अपने कर्त्तव्य के अनुसार ढालना चाहिए। किसी चीज़ का शौक़ होना अच्छी चीज़ है, लेकिन यह परले दरजे का स्वार्थीपन है। ज़रा अक्तूमा के बारे में भी सोचो। मेरे ख़याल से रहन-सहन का स्तर ऊपर उठाना गांव से शुरू करना चाहिए। और इसके लिए ज़रूरी है कि ईंटें अपनी हों, जैसा कि सपार-अग़ा ने कहा था..."

"तुम फिर अपना राग अलापने लगे।"

"मैं तुमसे यह पूछ रहा हूं कि गांव में निर्माण कार्य किस चीज़ से और किस तरह किया जाना चाहिए?"

"सहकारी तरीक़े से, सरकारी स्तर पर।"

"सरकारी स्तर पर कैसे ? .. मैं यह इसलिए कह रहा हूं, क्योंकि मैं अमीरबेक और अक्तूमा को दुबारा देख चुका हूं। मैं सपार-अग़ा और अमीरबेक के उदाहरण से फ़ैसला करता हूं कि क्या अच्छा है और क्या बुरा, कौन अक्तूमा का भला चाहता है और कौन अपना भला कर रहा है। आख़िर तुम और मैं अक्तूमा से विश्वविद्यालय में पढ़ने आनेवाले पहले लड़के हैं। हमें ही सोचना है, सपार की मदद करनी है।"

"तुम्हारा कहना ठीक है," जोमार्त सोच में पड़ गया। "लेकिन आख़िर हम कर ही क्या सकते हैं ? इसे सुधारना हमारे बस की बात नहीं है। वैसे प्रांत और ज़िले के समाचारपत्रों में लिखा जा सकता है। यही एक रास्ता है, अक्तूमा और अमीरबेक के बारे में सब कुछ लिख दिया जाये, कि अक्तूमा में लोग सुबह से रात तक काम करते रहते हैं और इसके बदले में उन्हें मिलते हैं रोटी के टुकड़े ,बड़ी मुश्किल से निर्वाह कर पाते हैं। कच्चे घरों में रहते हैं, न बिजली है, न रेडियो, न किताबें। ज़िले के अधिकारी पढ़ेंगे, तो पता लगायेंगे और इस पर ध्यान देंगे।"

"तरीक़े ढूंढ़ निकालने में तो तुम्हारा कोई जवाब नहीं," अस्कार ने शान्त होकर कहा। "कोशिश कर देखते हैं। बस अब समय बेकार नहीं गंवाना चाहिए," उसने मेज़ पर से किताबें उठाते हुए कहा, "लेख कब लिखें?"

"सिर्फ़ आज नहीं। मुझे साहित्य गोष्ठी में पहुंचना है, आज हमें 'इगोर की वाहिनी की यशोगाथा' की विवेचना करनी है। क्या तुम भी चलोगे? बहुत दिलचस्प चीज़ है। मेरे ख़याल से जिस 'कोसोग सेना' का उल्लेख उसमें किया गया है, वह ज़रूर क़ज़ाख़ों की सेना ही है। हालांकि पुराने शब्दकोशों और विश्वकोशों में इन्हें पर्वतीय क़बीलों की संज्ञा दी गयी है। शायद उस ज़माने में 'क़ज़ाख़' शब्द का उच्चारण 'कोसोग' किया जाता था। इसके अलावा इस कृति में अकसर ख़ान ग्ज़ाक, ग्ज़ा या ग्ज़ाच का भी उल्लेख किया गया है। मुझे पूरा विश्वास है कि इन तीनों शब्दों का एक ही अर्थ निकलता है–'ख़ान क़ज़ाख़'। हमारे पूर्वज किपचाकी लोग बहादुर योद्धा थे और बहुत पुराने समय से इस स्तेपी में बसे हुए थे। जार्जिया के इतिहासकारों ने लिखा है कि सन् १२५६ में ख़ान हुलागू से युद्ध करनेवाली काकेशियाई टुकड़ियों में और तेरहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में ईरान के शाह गज़ान की चढ़ाइयों में किपचाकी लोगों ने भाग लिया था और युद्ध में उन्होंने अद्वितीय साहस का परिचय दिया था।"

"अरे, अब तुम ख़त्म भी करो अपने इन कोसोगियों के क़िस्सों को। मैं तुम से काम की बात कर रहा हूं," अस्कार ने उसे टोक दिया।

"तो क्या मैं बेकार की बातें कर रहा हूं? तुम भाषा-विज्ञान के विद्यार्थी हो, इस साहित्य गोष्ठी में तो तुम्हें मुझे बुलाना चाहिए था, न कि मुझे तुम्हें। क्या तुम अपनी जनता के इतिहास के बारे में नहीं जानना चाहते? यह तो बहुत दिलचस्प होगा।"

"अरे, वाह रे देशभक्त! अभी हम थोड़ी देर पहले किस बारे में बात कर रहे थे? तुम तो फिर अपना फ़लसफ़ा सुनाने लगे? किसे ज़रूरत है तुम्हारे इस फ़लसफ़े की, क्या अक्तूमावालों को? चलो कल ही काम शुरू कर दें, सम्पादक को पत्र लिख दें। और जहां तक कोसोगों और किपचाकों का सवाल है, तो तुम अगर चाहो, तो उस पर शोध-

निबंध लिख डालो। लेकिन विश्वविद्यालय की शिक्षा समाप्त करने के बाद ही।"

"ठीक है, कल चाहते हो, तो कल ही सही। मुझे मंजूर है। लेकिन दर्शन के बारे में तुम्हारा ख़याल ग़लत है। यह थोथी चीज़ नहीं है। इसके लिए चिन्तन की ज़रूरत होती है, न कि पाठ्य-पुस्तकों में लिखा रटने की।"

"तो चलो फिर इस सत्य के लिए संघर्ष करें। अक्तूमा की सच्ची कहानी सुनायें," यह कहकर अस्कार ने जोमार्त को इशारा किया कि उनकी बातचीत अब ख़त्म हो चुकी है।

अपने दोस्त के साहित्य गोष्ठी में चले जाने के बाद अस्कार पहली बार ओपेरा थियेटर में कुल्याश बायसेइतोवा का गायन सुनने गया।

...अस्कार गैलरी में निश्चल बैठा रंगमंच की ओर देखता रहा और उसकी आंखों के आगे बचपन से जानी-पहचानी प्रेम-कथा फिर से जीवित हो उठी।

कुल्याश के गीत सुनते समय वह कभी रो उठता, कभी हंस पड़ता। उसने दूसरों को भी आंसू बहाते देखा।

मध्यांतर के समय रंगमंच पर देखे हुए दृश्यों में खोये-खोये उसे अपने आप पर आश्चर्य हुआ कि वह जीवन में पहली बार सबके सामने रोया और उसे इस पर शर्म नहीं महसूस हुई। पहली बार थियेटर देखने आनेवाले युवक को यह एक अजीब बात लगी। वह बचपन से ही मूक पशु की तरह पीड़ा और तिरस्कार बिना रोये सहता आया था। और यहां इन सीधे-सादे गीतों से, जिन्हें वह गांव में सैंकड़ों बार पहले भी सुन चुका था, अचानक उसका दिल भर आया। कुल्याश पुराने युग के जीवन के ज्वलन्त व मर्मस्पर्शी दृश्यों को पुनर्जीवित कर रही थी।

एक बार थियेटर में हो आने के बाद वह अब उसकी आवाज़ नहीं भूल सकता था। वह कुल्याश के गीत रेडियो पर और कंसर्टों में भी सुनने लगा। वह थियेटरप्रेमी बन गया और उसका यह शौक़ उसके पुराने शौक़ों से भी ज़ोरदार निकला—अब वह अपना सारा ख़ाली समय थियेटर, सिनेमा और गायकों व संगीतकारों के बारे में लिखी पुस्तकें पढ़ने में ही लगाने लगा।

"तुम बड़े चंचल हो। तुम्हारा कोई स्पष्ट लक्ष्य नहीं है। पहले तुम्हें

चित्रकारी का शौक़ लगा था, फिर मैंने सोचा था कि तुम संगीतकार या कवि बन जाओगे। और अब तुम थियेटर के शौक़ीन, सौन्दर्योपासक बन गये हो और... अक्तूमा की ही बातें करते रहते हो," चकित होकर जोमार्त कहता। "किसी एक चीज़ के पीछे पड़ना चाहिए।"

अस्कार जवाब में केवल मुस्करा दिया। वह अपने शौक़ों और भावी पेशे के बारे में कम ही सोचता था—जब उस पर कोई धुन सवार होती, तो वह जोमार्त की तरह ही दीन-दुनिया के बारे में भूल जाता था।

पढ़ाई का हर महीना उसके लिए नयी-नयी बातों से परिपूर्ण होता था। अगर पहले साहित्य में उसकी जानकारी आबाय और तोरायगीरोव तक ही सीमित थी, तो अब वह शेक्सपीयर, शीलर, बायरन, ह्यूगो, तुर्गेनेव और तलस्तोय की कृतियां बड़ी रुचि के साथ पढ़ता था और हर बार उनमें कुछ-न-कुछ नया एवं अज्ञात पाता था।

बेकार की उधेड़-बुन के लिए उसके पास समय बचता ही नहीं था। ज़उरेश की याद उसे बहुत ही कम आती थी। कभी-कभी तो उसे आश्चर्य भी होता कि पहले कैसे वह दिन भर उसी के बारे में ही सोचा करता था। अस्कार को यही सोचकर तसल्ली मिलती कि शायद उसका यह अनुराग क्षणिक था और वह महान प्रेम, जिसके बारे में किताबों में लिखा जाता है, अभी उसकी बाट जोह रहा है। वह यह नहीं जानता कि नये-नये शौक़ों ने केवल उसके पहले प्यार की भावना को कुछ समय के लिए दबा दिया है, और यह भावना एक बार जागृत होने के बाद आदमी को कभी नहीं छोड़ती।

जोमार्त द्वितीय सत्र के आरम्भ में अपने संकाय के मित्रों के साथ रहने लगा था। एक बार उसने अस्कार को अपने नये मित्रों के साथ शनिवार की शाम गुज़ारने के लिए कयनार के फ़्लेट में बुलाया।

अस्कार घुंघराले बालों और पतले-पतले होंठोंवाले, बने-संवरे रहनेवाले और ढीठ एवं आत्मसंतुष्ट होकर चलनेवाले लड़के को पहले से जानता था। वह उसे जोमार्त के साथ अक़सर देखता था। अस्कार उसका निकट से परिचय प्राप्त करना चाहता था। लेकिन उसे उपयुक्त अवसर नहीं मिल पाया था। इसके अलावा अस्कार को जोमार्त के मित्र की आत्मसंतुष्टता, ढीठता और बनावटी अकड़ भी अच्छी नहीं लगती थी।

जैसा कि जोमार्त ने बताया था, कयनार के पिता को काफ़ी थकान

महसूस होने लगी थी और वे गर्मियां आने के पहले ही छुट्टी लेकर अपनी पत्नी के साथ गागरा चले गये थे। अब फ़्लेट में कयनार के अलावा और कोई नहीं रहा था।

"कयनार ने कुछ लड़कियों को बुलाया है। ख़ूब मज़ा आयेगा!" जोमार्त ने बड़े उत्साह से कहा। "शराब-वराब के बारे में चिन्ता करने की कोई ज़रूरत नहीं हैं, उनके पास सब कुछ है। तुम तो कल्पना भी नहीं कर सकते कि उनके पास क्या-क्या है!" जोमार्त ख़ुशी के मारे हाथ मलने लगा।

अस्कार हैरान हुआ उसे देखता रहा। उसके सामने वह अक्तूमा और लेनिन्स्कवाला जोमार्त नहीं था। उसे कुछ नये शौक़ लग गये थे, उसके स्वभाव और व्यवहार में भी बहुत-सी नयी बातें दिखाई देने लगी थीं।

जोमार्त ने अस्कार का अपने दोस्तों के साथ परिचय कराते समय उसके लिए "भावी महान भाषाशास्त्री, मार्र और उसके जैसे बकवादी लोगों का विरोधी, संगीत की दुनिया की महान प्रतिभा, जिसे अभी प्रसिद्धि नहीं मिल पायी है, कवि और चित्रकार" जैसे आडम्बरपूर्ण शब्दों का उपयोग किया।

अस्कार शरमा रहा था। उसे ग़ुस्सा भी आ रहा था। शुरू में वह हमेशा की तरह सकुचाया। फिर चुप होकर तटस्थ भाव से बैठा रहा, क्योंकि वह नहीं जानता था कि इस नयी मंडली में उसे किस तरह पेश आना चाहिए।

जोमार्त फ़ौरन जम गया, या शायद वह दिखावा कर रहा था कि वह इन चीज़ों का बहुत पहले से आदी हो चुका है। अस्कार किन्हीं अनुभव-गम्य लक्षणों से समझ गया कि जोमार्त के स्वभाव, उसके बातचीत के ढंग, व्यवहार और उसकी चेष्टाओं में भी जो कुछ नया दिखाई दे रहा है, वह सब दिखावटी है। वह बस अपने नये मित्रों का अनुकरण करने की कोशिश कर रहा था।

फ़्लेट में पांच बड़े-बड़े कमरे थे। कयनार अपने मेहमानों के सामने हर कमरे के किवाड़ खोलते हुए बड़ी शान के साथ कह रहा था: यह सोने का कमरा है, यह खाने का, यह काम करने का, यह मेरा कमरा है, यह बैठक है। अस्कार पुस्तकालय से ही प्रभावित हुआ। अगर सम्भव हो-

ता, तो वह बड़ी ख़ुशी के साथ इस कमरे में बैठकर किताबें उलटता-पुलटता रहता।

रेडियोग्राम चालू कर दिया गया। खुले गले की पोशाक पहने सुनहरे बालोंवाली लड़की पियानो बजाने बैठी। नाच शुरू हो गया।

"दोस्तो, नाच बाद में होता रहेगा। आइये, पहले जाम टकरा लें, देखिये यह सब रखी-रखी ऊब रही हैं, हमारा इन्तज़ार कर रही हैं..." कयनार ने बड़ी ज़िन्दादिली से बोतलों की ओर सिर से इशारा किया। "जोड़े बना लीजिये। धन और ऋण – यह तो प्रकृति का नियम है। समान ध्रुव एक दूसरे को विकर्षित करते हैं। उन्हें मेज़ पर एक दूसरे के पास नहीं बैठना चाहिए।"

अस्कार अभी इसका अर्थ समझ भी न पाया था कि उसी पियानो बजानेवाली लड़की ने बड़ी बेतकल्लुफ़ी से उसके हाथ में हाथ डाल दिया,

"मुझे शर्मीले लड़के बहुत अच्छे लगते हैं। वे निरापद होते हैं," उसने कहा और उसे घसीटकर मेज़ के पास खींच ले गयी।

"अरे, देखो, कितनी डरपोक है!" कयनार ठहाका मारकर हंस पड़ा। "अपने कौमार्य पर कलंक लगने से डरती है। लेकिन अस्कार, तुम मर्द की तरह पेश आना, नहीं तो यह तुम्हें चूसकर गुठली की तरह फेंक देगी।"

अस्कार का चेहरा ग़ुस्से से तमतमा उठा, वह लड़की का अपमान करने के लिए कयनार के चेहरे पर एक तमाचा जड़ देता, लेकिन जब उसने देखा कि स्वयं "अपमानिता" भी सबके साथ ठहाके लगा रही है, तो वह किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया। वह समझ गया कि वे लोग लड़की पर नहीं, उस पर हंस रहे हैं। सबसे ज़्यादा चुभनेवाली बात तो यह थी कि वह इन अप्रिय और ग़ैर लोगों की हंसी का पात्र बन गया था।

"अस्कार ने उसकी चुनौती स्वीकार कर ली है," अस्कार का उतरा चेहरा देख जोमार्त चिल्लाया। "चलियें, उठायें जाम..."

पहले कभी न चखी हुई मलदावियाई कोनक का जाम उसके गले को जलाता हुआ नीचे उतर गया। फिर अस्कार को अपनी रगों में दौड़ती गर्मी की सुखद अनुभूति हुई। उसे सुरूर चढ़ गया और कुछ देर पहले हुई घटना को भूल वह पहले से ज़्यादा बोलने लगा। वह अपने पास बैठी लड़की के कंधे और उसकी चमकती आंखें देख रहा था, उसके हाथों

ग्रौर घुटनों का स्पर्श महसूस कर रहा था। उसका सिर घूमने लगा, वह बेकार की बातें करने ग्रौर कुछ देर बाद सब कुछ भूलकर लगातार बोलने लगा।

"ग्राइये भाईचारे का जाम पियें!" वह लड़की चिल्लायी।

ग्रस्कार ने बिना ग्रर्थ समझे उन शब्दों को दोहरा दिया। वैसे भी ग्रब उसकी समझ में कुछ नहीं ग्रा रहा था। शोरगुल ग्रौर ग्रपने पास बैठी लड़की की ज़िन्दादिल हंसी उसे उत्तेजित कर रहे थे, पागल बना रहे थे। ग्रब तक जो कुछ हुग्रा था, उसे वह भूल चुका था: उसे इस बात का ज्ञान नहीं था कि वे मेज़ पर कितनी देर से बैठे हैं। उसे ग्रपनी ग्रवचेतना में केवल किसी की, शायद जोमार्त की, पुरग़ौर नज़र चुभती हुई महसूस हो रही थी। उसे मेज़ पर बैठे लोगों की ग्रावाज़ें कहीं दूर से ग्राती हुई-सी सुनाई दे रही थीं। वह ग्रपने भरे जाम के ग्रलावा न कुछ देख रहा था, न कुछ सुन रहा था।

"भाईचारे के जाम के बाद एक दूसरे का चुम्बन लेना होता है," ग्रचानक उसे उसी लड़की की ग्रावाज़ सुनाई दी। लड़की की गरम-गरम सांसों से उसका चेहरा भभक-सा उठा। उसने खड़ा होना चाहा, लेकिन उसका सारा शरीर मानो सीसे-सा भारी हो उठा।

"लड़के को मत छुग्रो! वह तुमसे डरता है," उसे सुनाई दिया ग्रौर उसके फ़ौरन बाद ठहाकों का शोर गूंज उठा।

वह झटके के साथ ग्रपनी जगह से उठ खड़ा हुग्रा, उसने गिलास उलट दिये ग्रौर भौंहें ताने डरावनी नज़रों से सारे कमरे को देखा।

संगीत बज रहा था, नशे में उन्मत्त जोड़े नाच रहे थे।

"चलो, चलो!" लड़की ने ग्रधीरतापूर्वक उसका हाथ पकड़कर खींचा।

वह लड़खड़ाता हुग्रा ग्राज्ञाकारी की तरह उसके पीछे-पीछे दूसरे कमरे में चला गया, जिसमें दीप का धुंधला पीला प्रकाश फैला हुग्रा था।

लड़की ने किवाड़ मज़बूती से बन्द कर उसे सोफे पर बिठा दिया, ग्रौर स्वयं उसके पास दीवार के सहारे टेक लगाकर झीने मिनिस्कर्ट के नीचे गोल-गोल घुटने दिखाती हुई खड़ी हो गयी। चुप्पी छा गयी।

"क्या तुम ग्रब मुझे चूम सकते हो?" लड़की ने धीरे से पूछा।

अस्कार खड़ा हुआ। लड़की की आंखें बन्द थीं। उसने उसके कंधे पकड़ लिये। उसका शरीर निढाल और शिथिल था...

अस्कार अपने हाथ छुड़ाकर अपनी जगह पर बैठ गया। उसका सन्तुलन लौटने लगा था। वह अभी भी आंखें बन्द किये हाथ फैलाये अर्धनग्न लेटी थी।

"बेवक़ूफ़, मैं तो ख़ुद..."

अस्कार को महसूस हुआ जैसे एक युग बीत गया। उसकी आवाज़ सुनकर उसका नशा उतर गया। उसने उसे उसी नज़र से देखा, जिस तरह चित्रकार प्रकृति को देखता है। कुहरा छंट गया, उसके कानों में ज़उरेश के प्रिय संगीत 'नीली डेन्यूब' की धुन गूंजने लगी। दरवाज़े में अपने छोटे-छोटे दांत निपोड़ता हुआ कयनार खड़ा था। उसके हाथों में शराब का जाम था।

"मुबारक हो, श्रीमान!"

अस्कार ने झपटकर उसके जबड़े पर एक ज़ोरदार घूंसा जड़ दिया। कयनार फ़र्श पर गिर गया, शराब लड़की की सिकुड़ी पोशाक पर ढुल गयी। अस्कार कयनार पर टूट पड़ा और उसने उसे एक घूंसा और मारा। लड़की चीख उठी। फ़ौरन पिये हुए लोगों की भीड़ वहां बीच-बचाव करने आ पहुंची।

"नीच! तू भी इनके साथ है?" उसने जोमार्त पर थूक दिया और उसके हाथ झटककर लड़खड़ाता हुआ बाहर निकल गया।

"बेवक़ूफ़! बीसवीं सदी में न जाने अपने आपको कहां का सूरमा समझता है। अच्छी तरह समझ लो। अब सूरमा नहीं रहे। सूरमा ख़त्म होते जा रहे हैं। हर आदमी अपनी इच्छानुसार जीवन व्यतीत करता है, ज़िन्दगी से उसे जो मिलता है दोनों हाथों से लपक लेता है, तब तक जीता है, जब तक जलकर खाक नहीं हो जाता..." जोमार्त ने बेबसी में रुके अस्कार को रास्ते में जा पकड़ा। वह उसके ओवरकोट का कालर पकड़कर कहने लगा, "मेरी बात समझ में आयी?! अपने आपको महान प्रतिभाशाली व्यक्ति मत समझो। लोग तुम्हारी नैतिकता पर थूकते हैं, समझे? वे हमसे बेहतर जिन्दगी जीते हैं, हमसे ज़्यादा अच्छी तरह जानते हैं कि क्या कर रहे हैं। अपने आपको किसी दुखियारे का उत्तराधिकारी समझते हो?"

"मेरे रास्ते से हट जाओ!" अस्कार लड़खड़ाता हुआ घर की ओर चल दिया।

उसका चित्त अब शान्त हो चुका था। उसमें हर चीज़ के प्रति विरक्ति की भावना जाग उठी। कठोर व नुकीले हिमकण उसके चेहरे में चुभ रहे थे, उसके जूते में कहीं से ठंडा पानी भर गया था।

थियेटर के प्रवेश द्वार पर तेज़ रोशनी हो रही थी। शानदार कपड़े पहने लोगों को उसमें जाते हुए देख वह सोचने लगा कि शहरी ज़िन्दगी की हर चीज़ उतनी ख़ूबसूरत नहीं होती, जितनी कि वह कल तक समझता रहा था।

* * *

"उस दिन तुमने सूरमाओं और बीसवीं शताब्दी का ज़िक्र किस लिए किया था? क्या डर के मारे? या तुम अपने नये दोस्तों का दर्शन दुहराना चाहते थे?" कुछ दिनों के बाद अस्कार ने जोमार्त से पूछा। "तुम तो आशावादी थे..."

"मुझे लगता है, तुम हर बात को गंभीरता से लेते हो। भला, ऐसे भी कोई जीता है! दुनिया में अभिलाषाएं भी हैं और प्रलोभन भी। और जहां तक मेरी धारणा का सवाल है, तो उसे बदलने का मेरा कोई इरादा नहीं है। मेरी धारणा कार्थेज की तरह सुदृढ़ है, उसे बदलना आसान नहीं है।

"जहां तक तुम्हारे सोचने और बोलने के ढंग का सवाल है, तो वह उस रोमन लेखक जैसा है, जो अगर तुम्हारी शैली में कहूं ,तो पहले तो कार्थेज का गुणगान करता रहा और बाद में रोम के सीनेटरों से उसी शहर को नष्ट करने की अपील करने लगा। तुम इतिहास का और प्राचीन काल की कृतियों का अध्ययन करने का शोर मचाते रहे, और अब इंद्रियसुखों की तृप्ति के लिए कहते हो। तुम्हारे विचार में स्त्री नाक पोंछने के रूमाल की तरह ही है।"

"वाह भई वाह! तुम भी कैसे आदमी हो? तुम्हें तो मनुष्य की नैसर्गिक इच्छाओं के लिए सबसे घिनौनी तुलनाएं ही सूझती हैं। तुम हर चीज़ में सिर्फ़ बुराई ही ढूंढ़ना कब बन्द करोगे? हर आदमी जैसे चाहता है, वैसे ही जीता है।"

"तो जियो। लेकिन दूसरों को तो इस दलदल में मत घसीटो। और जिस चीज़ में कोई अच्छाई हो ही नहीं, उसमें उसे ढूंढ़ने की कोशिश मत करो," अस्कार ने क्लांत स्वर में सुलह-सी करते हुए कहा। "हमने जो बातें तय की थी, उसके बारे में तुम भूल गये क्या? जब तक तुम्हें प्रोफ़ेसर के बेटे के साथ डटके शराब पीने का मौक़ा मिलता रहेगा, तब तक तुम्हें अक्तूमा का ख़याल आ भी कैसे सकता है।"

"तुम अक्तूमा के बारे में पत्र लिखने की ही बात कर रहे हो न? तो चलो लिख डालें। और अब उस पार्टी के बारे में बिलकुल भी बात नहीं करेंगे। इसे हमेशा के लिए ख़त्म किये देते हैं।"

अस्कार अपनी भावुक प्रकृति के कारण अप्रिय यादों को बड़ी कठिनाई से धीरे-धीरे भूलता जा रहा था। दिन बीतते रहे। वसन्त के आगमन के लक्षण आंगन में दिखाई देने लगे। रास्तों के किनारे-किनारे बहती नालियों में जान आ गयी। शहर की छायादार पटरियों पर से सर्दियों में जमी मिट्टी, गंदगी और बर्फ़ की सफ़ाई हो रही थी। चौराहों पर हाज़िरजवाब फूल बेचनेवालियां गुलचांदनी के गुलदस्ते लिये दिखाई देने लगी थीं।

इस बार वसन्त असाधारण रूप से गरम और धूपदार था। सड़कें और मैदान बहुत जल्दी सूख गये, घास बड़ी तेज़ी से हरी होने लगी, रास्तों में पहले से ज़्यादा चहल-पहल दिखाई देने लगी, गर्म शामों में हर जगह प्रेमी-युगल नज़र आने लगे। वसन्त सदा की तरह लोगों के लिए नयी चिन्ताएं, नयी ख़ुशियां लेकर आया था। इन दिनों युवक-युवतियों को एकान्त और शान्त सन्ध्याएं अच्छी लगती हैं, इसीलिए विद्यालयों के हॉल, जिनमें सर्दियों में नृत्य एवं कंसर्टों का आयोजन किया जाता है, इस समय ख़ाली रहते हैं। लेकिन एक दिन शहर के जीवन का आम ढर्रा बदल गया। स्तालिन की मृत्यु हो गयी। विश्वविद्यालय के हॉलों में कई दिनों तक चायकोवस्की, बाख़ और बीथोविन की मातमी धुनें गूंजती रहीं। विद्यार्थी अपने प्रिय नेता, जिसका नाम हर किसी की ज़बान पर था, के चित्र के आगे रात-दिन बारी-बारी से रस्मी पहरा देते रहे। लगता था इस क्षति की पूर्ति करना असंभव होगा।

अध्यापक और विद्यार्थी रो रहे थे। लोग काली पट्टियां बांधे उदास व मौन आ-जा रहे थे, झण्डे शोकसूचक फ़ीतों के बोझ से झुक रहे थे।

एक शोक सभा का आयोजन किया गया। अपने कोर्स की ओर से अस्कार ने भाषण दिया।

"प्रतिभाशाली व्यक्ति मरता नहीं। वह सदा अमर रहता है," युवक ने रुंधे गले से कहा।

उस क्षण अस्कार इस बात की कल्पना भी नहीं कर पा रहा था, कि उसके लिए महानता एवं विद्वता का प्रतीक रहा व्यक्ति भी कभी काल का ग्रास बन सकता है। उसने आंसुओं से तिमिराच्छन्न हज़ारों आंखें और शोकाकुल चेहरे देखे। उसका जन्म व पालन-पोषण उस युग में हुआ, जिसमें राष्ट्र के इतिहास में घटी हर महत्वपूर्ण घटना, हर श्रेष्ठ कार्य का सम्बन्ध लोग इसी नाम से जोड़ते थे। इसीलिए अस्कार सोच रहा था कि देश की जनता के लिए इससे भारी क्षति और कुछ नहीं हो सकती।

वसन्त आ रहा था। फिर से जाग उठी प्रकृति के सौन्दर्य का गुणगान वह अपने ही गीतों से कर रहा था। डालों पर फूली डोंडियों का स्थान कोमलकोंपलों ने ले लिया था। अब गुलचांदनी के फूल केवल अल्मा-अता के ऊपर पहाड़ों में ही मिल सकते थे। शहर में लड़कियों के हाथों में भड़कीले रंगोंवाले कोमल ट्यूलिप दिखाई देने लगे थे। विश्व के निरन्तर पुनर्नवीकरण के शाश्वत सत्य की पुष्टि करता हुआ वसन्त प्रकृति और लोगों को उल्लसित कर रहा था।

बाग़ लहलहा उठे, मैदानों और पार्कों में हरियाली छा गयी। अस्कार मुलायम-मुलायम घनी घास पर बैठकर अपनी अध्ययन गोष्ठियों की तैयारी करने लगा।

अस्कार रोज़ाना शाम को छात्रावास लौटते समय दरबान की मेज़ पर रखी उस दिन की डाक उलट-पुलटकर देखता। वह ज़िले के समाचारपत्र को अक्तूमा के बारे में लिखे आपने पत्र के उत्तर की अधीरता से प्रतीक्षा कर रहा था। डेढ़ महीने बाद उसे केवल एक पोस्टकार्ड मिला, जिस पर संक्षेप में लिखा था: "आपका पत्र जांच के लिए पार्टी की ज़िला समिति को भेज दिया गया है।" अस्कार इस उत्तर से सन्तुष्ट नहीं हुआ, लेकिन उसे निराशा भी नहीं हुई। वह सोच रहा था कि कुछ भी हो, जांच से अक्तूमा का फ़ायदा ही होगा।

यह जांच किस तरह से की गयी, इसका क़िस्सा ज़उरेश ने सुनाया, जब वह शरत ऋतु में अल्मा-अता पहुंची।

"अक्तूमा में ज़िला समिति का एक कर्मचारी आया। एक दिन बाद उसने मीटिंग बुलवायी और कहा कि अपने सूचकों के अनुसार सामूहिक फ़ार्म की गिनती ज़िले के सर्वश्रेष्ठ सामूहिक फ़ार्मों में की जाती है। उसने यह भी कहा कि कुछ चुग़लख़ोरों ने अमीरबेक को बदनाम करने के इरादे से प्रांत के समाचारपत्र में शिकायत की है। बस इतना ही हुआ। क्या तुम्हें और किसी चीज़ में रुचि नहीं है?"

ज़उरेश अपने चाचा के साथ आयी थी। अस्कार उनके सामने कोई और बात नहीं कर सकता था। ज़उरेश के चाचा उसके लिए एक फ़्लेट का इन्तज़ाम करने में लगे थे।

विश्वविद्यालय में पढ़ाई देर से आरम्भ हुई। अब विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को रविवार के अलावा और किसी दिन दम लेने की फ़ुरसत ही नहीं मिल पाती थी।

ज़उरेश ने चिकित्सा संस्थान में प्रवेश ले लिया था। वह स्वयं समय-समय पर अपने गांव के मित्रों से मिलने विश्वविद्यालय चली आती थी। अस्कार इस बात पर ध्यान दिये बिना नहीं रह सका कि लेनिन्स्क में हुई उनकी अन्तिम भेंट के बाद से वह काफ़ी बदल चुकी है। उसकी आंखों में उदासी झलकने लगी थी, उनमें अब बालसुलभ चंचलता नहीं दिखाई देती थी, उसकी चाल भी अब मंद और शान्त हो गयी थी। वह बोलने कम और सुनने ज़्यादा लगी थी। अस्कार ने यह भी देखा कि उसे जोमार्त के क़िस्से सुनना अच्छा लगता है। अस्कार सोचता था कि वह वहां जोमार्त के कारण ही आती है और जब वह अस्कार को अपने विचार सुनाती है, तो इसका कारण उनकी बचपन की दोस्ती है। वह सर्दियों में अस्कार से हुई भेंट का नाम तक नहीं लेती थी। एक दिन वह अस्कार को पार्क में मिल गयी, ज़उरेश ने उससे उसे छोड़ आने को कहा।

रास्ते में हो रहे मद्धिम प्रकाश में वे मौसम और आगामी परीक्षाओं के बारे में बातचीत करते चलते रहे। ज़उरेश शहर के छोर पर एक फ़्लेट में एक कमरा किराये पर लेकर रह रही थी। मकानमालिक घर पर नहीं थे।

"वे लोग कामकाजी दौरे पर गये हुए हैं," ज़उरेश ने कहा। वह चाय बनाने लगी। "आओ थोड़ी देर बैठ लो, तुम्हें कहीं की जल्दी तो है ही नहीं। मुझे यहां अकेले बहुत बुरा लगता है।"

दोनों ने शाम का खाना खाया। अस्कार पुरानी पत्रिकाओं के पन्ने उलटने लगा। ज़उरेश रिकार्ड बजा रही थी।

"तुमने ओगीन्स्की का पोलोनेज़ सुना?" अस्कार ने पूछा।

"मेरे पास इसका रिकार्ड है। अभी लगाती हूं। इसे मैंने जोमार्त की सलाह से ख़रीदा है। हर चीज़ में रुचि लेनी होती है, रिकार्डों में भी। पहले हम लोग कूप-मंडूकों की तरह रहते थे। जोमार्त कम-से-कम हमसे तो ज़्यादा पढ़ चुका है। यह डायरी भी मैं उसी के कहने से लिखने लगी हूं," ज़उरेश मुस्करायी।

"वह तुम्हें बहुत पसन्द है?"

"कौन?" ज़उरेश ग्रामोफ़ोन पर से रिकार्ड उठाकर मेज़ के पास आ खड़ी हुई।

"जोमार्त", अस्कार ने पत्रिका में छपे चित्र में रुचि लेने का बहाना करके मुँह फेर लिया।

ज़उरेश कुर्सी पर बैठ गयी और मेज़ पर से प्याली उठाकर उसे हाथों में घुमा-घुमाकर देखती हुई सोच में डूबी बोली,

"ज़रूर," फिर उसने अस्कार की ओर देखकर प्याली वापस उसी जगह रख दी। "लेकिन तुम पूछ क्यों रहे हो?"

"यों ही..." अस्कार ने ग्रामोफ़ोन फिर से चालू कर दिया।

"तुम कुछ और पूछना चाहते थे न?"

"शायद..."

"मैं ख़ुद भी नहीं जानती कि मैं क्या चाहती हूं। शायद ऐसा इसीलिए होता है क्योंकि मैं गांव की हूं, मेरी आदतें दूसरी ही थीं, विचार भी दूसरे थे। और शहर में तो सब कुछ बिलकुल ही उल्टा है।"

"तुम किस बारे में कह रही हो, ज़उरेश?"

"उसी बारे में, जिस बारे में तुम पूछना चाहते थे। तुम्हें किसी से प्यार हुआ या नहीं?"

अस्कार ने कोई जवाब नहीं दिया। फिर किसी प्रकार के जवाब की ज़रूरत भी नहीं थी। क्योंकि वह जानती थी कि वह उसे प्यार करता है। दोनों कुछ देर मौन रहे। ज़उरेश मेज़ पर रखी चीज़ों को ठीक करने लगी।

"क्या जवाब नहीं दोगे?" उसने धीमे किन्तु स्पष्ट स्वर में कहा।

"नहीं," अस्कार के मुँह से निकल गया।

"इसका क्या अर्थ लगाया जाये?"

"सीधा-सा। मालूम नहीं क्यों मुझे इस वक़्त तुम्हारे सवाल का जवाब देना कठिन लग रहा है। फिर अब यह सवाल कुछ अजीब-सा लगता है: तुम्हारी मेरे साथ दोस्ती हुए कितना समय बीत चुका है।"

"मैं नहीं समझी।"

"तुम मेरा जवाब तो जानती ही हो..."

"तुम बहुत अस्पष्ट बातें करते हो, अस्कार," ज़उरेश ने उसकी आंखों से आंखें मिलाकर कहा।

"मैं तुम्हें प्यार करता हूं..." अस्कार अटक गया जैसे उसके गले में कोई चीज़ फंस गयी हो, फिर धीमे स्वर में बोला, "सिर्फ़ तुम्हें, ज़उरेश। तुम्हें तो यह मालूम ही है। फिर पूछने की क्या ज़रूरत है?"

"औरतों को यह बात बार-बार सुनना अच्छा लगता है।"

"मुझे मालूम नहीं था कि तुम ये शब्द कई बार सुन चुकी हो।"

"तुम लोग ये शब्द बड़ी सरलता से कह देते हो।"

"तुम किसी और का कहा दोहरा रही हो, ज़उरेश। ऐसा नहीं करना चाहिए।"

"मैं औरों से अच्छी नहीं हूं। मैं भी वैसी ही हूं, जैसी और।" वह अपने चेहरे पर हाथ फेरकर धीरे से उठी और खिड़की के पास जा खड़ी हुई। "तुम मुझमें किसी दूसरी को देखने की कोशिश भी मत करो। मैं भी वैसे ही जीना चाहती हूं, जैसे और सब जीती हैं। मेरी समझ में नहीं आता, तुम क्यों चाहते हो कि मैं तुम्हारे विचारों को भांपती रहूं।" उसने खिड़की पर परदा गिरा दिया। "मुझे अपवाद किस लिए होना चाहिए? क्या तुम चाहते हो कि मैं सिर्फ़ तुम्हें ही प्यार करती रहूं, हमेशा तुम्हारी ही बातें सुनती रहूं?"

"मैंने यह तो नहीं कहा।" अस्कार ने टोपी उठायी, "अच्छा मैं चलता हूं..."

ज़उरेश मौन खड़ी खिड़की में देखती रही। अस्कार उठ खड़ा हुआ।

"तुम ग़लत कहती हो, तुम औरों जैसी नहीं हो।"

"औरों" की बात पर अस्कार को प्रोफ़ेसर के घर में मिली सुनहरे बालोंवाली और खुले गले की पोशाक पहननेवाली लड़की का स्मरण हो आ-

था। उसके दिमाग़ में भयानक विचार कौंधा: ज़उरेश इसी तरह की लड़कियों की बात कर रही थी, वह अपने आपको ऐसी ही मानती है।

"बहुत देर हो गयी," ज़उरेश ने अजीब ढंग से कुछ बदली हुई-सी आवाज़ में कहा। "देर हो गयी है" उसने झटके के साथ मुड़कर दोह-राया, "अंधेरा हो चुका है, रास्ते में कोई दिखाई नहीं दे रहा है, तुम यहीं रह जाओ। अगर तुम चले गये, तो मैं सो नहीं पाऊंगी। मुझे डर लगता है।"

अस्कार ने उसकी ओर देखा।

"तुम मेरे बारे में जो जी में आये सोचते रहो, लेकिन मेरी तरफ़ ऐसी नज़रों से मत देखो। यहीं रह जाओ!" उसकी आवाज़ में आदेश के साथ-साथ दर्द भी झलक रहा था।

उसने उसकी ओर देखे बिना जल्दी से बिस्तर लगाया और अपना नि-चला होंठ दबाये दूसरे कमरे में जाकर किवाड़ मज़बूती से बन्द कर लि-ये। ख़ामोशी छा गयी।

इस छोटे-से घर में उन दोनों के अलावा और कोई न था। उनके बीच में केवल तीन-चार क़दमों की दूरी, एक पतली दीवार और किवाड़ ही थे। ज़उरेश यहीं पास में लेटी हुई है और इस समय उस सुनहरे बा-लोंवाली लड़की की तरह अपने सुन्दर कंधे उघाड़े उसकी प्रतीक्षा कर रही होगी। उसने कहा था, बड़ी आसानी से कहा था कि वह औरों जैसी ही है। उसने यह भी कहा था कि सारे लड़के उसे बड़ी आसानी से कह देते हैं कि वे उसे "प्यार" करते हैं। क्या उसके लिए भी कयनार के यहां मिली उस लड़की की ही तरह इन सब बातों का कोई अर्थ नहीं है? नहीं, नहीं। उसने यह यों ही उसका मज़ाक़ उड़ाने के इरादे से कह दि-या था...

अस्कार उस रात बहुत थोड़ी देर सो पाया। उसने उसे सपने में किन्हीं लम्बे काले लड़कों की बांहों में देखा, वह अपने को छुड़ाने के बजाय उसकी हंसी उड़ा रही थी और अपने झीने से ब्लाउज़ को फाड़ रही थी। अस्कार पसीना-पसीना हो गया, उसकी नीन्द खुल गयी। उसे फिर कुछ क्षण के लिए नीन्द आ गयी, इस बार वह उसे दुलहन की सफ़ेद पोशाक में दिखाई दी। वह बहुत सुन्दर लग रही थी। वे अक्तूमा के पहाड़ों में नदी के किनारे-किनारे हाथों में हाथ डाले फूलों के क़ालीन पर चल रहे

थे। वे उस मैदान में चल रहे थे, जहाँ उन्होंने कभी अक-सुएक खेला था जिसमें कार्लीगाश टोली जीती थी। अस्कार उसके कोमल हाथों का स्पर्श महसूस कर रहा था। फिर से नीन्द खुलने पर अस्कार ने बिना आवाज़ किये अपने कपड़े पहन लिये।

बराबर के कमरे के किवाड़ खुले और ज़उरेश दिखाई दी। उसकी मुखमुद्रा से वह समझ गया कि उसे नीन्द नहीं आयी थी। वे बरामदे में निकले।

"अच्छा..." अस्कार धीरे-धीरे फाटक की ओर बढ़ा।

ज़उरेश रेलिंग पकड़े मौन खड़ी थी। वह उसे जाते हुए देखती रही, उसकी आंखों में दर्द था, उलाहना था।

बाहर निकलते समय उसने कॉलर पूरा खोल दिया, ठंडी हवा का झोंका उसके सीने में लगा। बिना पीछे मुड़कर देखे वह तेज़ क़दमों से सुनसान रास्ते में आगे बढ़ गया।

"तुम कहां ग़ायब हो गये थे?" छात्रावास के गलियारे में जोमार्त ने उससे पूछा। "मैं रात में दो बार तुम्हारे यहां आया था।"

"तुम क्या करोगे जानकर? सामूहिक फ़ार्म में सेब तोड़ने गया था," अस्कार ने ग़ुस्से में कहा और पलंग पर गिर गया।

उस दिन से वह अपना सारा ख़ाली समय शहर के पुस्तकालय में किताबें पढ़ने में लगाने लगा। शुरू में दिन धीरे-धीरे बीते, ख़ास तौर से रविवार के दिन उसे बहुत ही भारी लगे। उसे कोई न कोई बहाना बनाकर चिकित्सा संस्थान में ज़उरेश से मिलने जाने की इच्छा होती। वह दो बार शाम को वहां नाच में जाने के लिए निकला भी, लेकिन इमारत के बाहर ही खड़ा रहा और ज़उरेश के न मिलने पर वापस लौट आया। फिर उसे लगातार पढ़ते रहने की आदत हो गयी। उसे विश्वविद्यालय की अन्तिम परीक्षाओं की तैयारी करनी थी, डिप्लोमा का शोध-निबंध लिखना था।

जैसे-जैसे परीक्षाएं पास आती गयी, वैसे-वैसे पुस्तकालयों के हॉलों में भीड़ बढ़ती गयी। विद्यार्थी सुबह जल्दी आकर दिन भर के लिए जगह रोकने लगे।

जिस हॉल में अस्कार पढ़ता था, उसमें हमेशा शान्ति रहती थी। कि-

ताबों पर झुके उच्च कोर्सों के विद्यार्थियों और पोस्ट-ग्रेजुएटों की क़लमों और पन्नों के पलटने की हल्की सरसराहट ही सुनाई देती थी। अपने अगले लेक्चर या डिप्लोमा के शोध-निबंध की तैयारी में तल्लीन हो वह सब कुछ भूल जाता था।

वह अपने शोध-निबंध का अन्तिम परिच्छेद तीसरी बार लिख रहा था कि उसे अचानक ज़उरेश की धीमी आवाज़ सुनाई पड़ी।

"यह जगह ख़ाली है?" अस्कार ने आश्चर्य से सिर उठाकर देखा और खड़ा हो गया।

बराबर की कुर्सी ख़ाली थी। अस्कार को मालूम ही न था कि उसके पास बैठा विद्यार्थी अपनी पुस्तकें उठाकर कब चला गया।

"बैठो!" उसने कहा।

उसने अपनी कापियां खोलीं और आराम से बैठ गयी।

"तुमने 'सलाम' क्यों नहीं किया?" ज़उरेश ने धीरे से कहा और मुस्करा पड़ी।

अस्कार ने मेज़ पर रखे उसके हाथ पर अपना हाथ रखकर ज़ोर से दबा दिया।

"सलाम!" उसने फुसफुसाकर कहा।

आगे बैठे व्यक्ति ने मुड़कर देखा।

"श ऽऽ!" ज़उरेश होंठों पर उंगली रखकर बोली।

दोपहर के खाने के बाद अस्कार को सेमीनार में पहुंचने की जल्दी थी और ज़उरेश को लेक्चर में। वह उसे छोड़ आया और छात्रावास में गये बिना ही सीधा सेमीनार में भागा। अगले दिन पुस्तकालय में आते ही उसने एक साथ दो लोगों की जगह रोक ली। पूरे एक सप्ताह तक ऐसा ही होता रहा।

लेकिन आज वह हॉल में समय पर नहीं पहुंच पाया – सुबह जोमार्त उसका पत्र देने आया था।

"यह लो। दो दिनों से दरबान की मेज़ पर पड़ा था। सब लोग अपने-अपने पत्र उसी दिन ले जाते हैं, लेकिन यह पड़ा था। प्रेषक का पता देखा? सपार ने गांव से भेजा है। अच्छा, आया करो, दोस्त। मैं चलता हूं।"

अस्कार ने अपना पोर्टफ़ोलियो उठाया और ज़उरेश से पहले पुस्तकालय

पहुंचने के लिए पटरी पर जल्दी जल्दी क़दम बढ़ाते हुए पत्र खोल लिया। फिर एकाएक हरी-भरी वीथी में मुड़कर पेड़ों की छाया में रखे बेंच पर बैठ गया।

पत्र टाइप किया हुआ था और उस पर मोहर लगी हुई थी।

"कम्युनिस्ट तुरुसबेक सेम्बिन को उन पर लगाये गये आरोपों से मुक्त घोषित किया जाता है..." उसमें लिखा था। "झूठी गवाही देने के आरोप में लेखाकार अमीरबेक जेतिसबायेव को पार्टी ने चेतावनी दी है। (मामला काफ़ी पुराना हो जाने के कारण जांच-समिति जेतिसबायेव पर न्यायालय में मुक़दमा चलाने में असमर्थ रही)"

उसने ये पंक्तियां बार बार पढ़ीं। उसे उन्हें समझने में कठिनाई हो रही थी, क्योंकि उसके पिता सारी ज़िन्दगी ईमानदार आदमी रहे थे। उन्हें इस तरह की टाइप की हुई सफ़ाई की ज़रूरत नहीं थी। अस्कार को इसका पक्का विश्वास था। लेकिन इन रूखे शब्दों ने उसके दिमाग़ में बीते दिनों की याद फिर ताज़ा कर दी, जब कितनी मूर्खता और निर्दयता से उसका बचपन उससे छीन लिया गया था, और किसी की झूठी गवाही के कारण उसके पिता को ज़हर खाना पड़ा था।

"...वह एक नेक आदमी था," उसे लोहार केनेख़ान के शब्द याद हो आये।

"वह अपने गाँव को सुन्दर बनाना चाहता था, यहां बाग़ लगाना चाहता था, एक रोशनीदार बड़ा स्कूल बनाना चाहता था," सपार के शब्द भी उसे याद हो आये।

पिता की मृत्यु के बाद अंधेरा और ख़ाली-ख़ाली-सा लगनेवाला कच्चा घर भी याद हो आया। जनवरी की वह ठंडी सुबह... उस दिन उसके पिता को दफ़नाया गया था... रेल के डिब्बे की हथपट्टी को पकड़े ख़ून में लथपथ उसके घायल हाथ जब वह फ़ैक्टरी के प्रशिक्षण केन्द्र से भागा था। जेतिसू के रास्ते में भूख से तड़पता, ठंड में ठिठुरता भीख मांगता लड़का... अमीरबेक द्वारा उसका अपमान, सपार का सौहार्दपूर्ण व्यवहार, धौले माथेवाले से गिरना—एक के बाद एक उसे सारी बातें याद आने लगीं।

"झूठी गवाही", "झूठी गवाही..." मामला पुराना हो जाने के कारण इसकी सज़ा नहीं दी जा सकती। नहीं, जो इस झूठ की मार न

सह पाने से मर गये, उन्हें दुबारा जिलाया नहीं जा सकता। पीठ में छुरा भोंकनेवालों से अपनी रक्षा कर पाना कठिन होता है। केवल समय ही सत्य को प्रमाणित कर सकता है।

अस्कार ने फिर उन पंक्तियों पर नज़र दौड़ायी। उसने उस काग़ज़ को मसलकर उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले और नाली में फेंक दिये। पानी उन्हें अपने साथ सड़क के विवर में बहा ले गया।

अस्कार कुछ शान्त हुआ। उसने लिफ़ाफ़े में झांककर देखा, तो उसे एक और काग़ज़ मिला, जिस पर टेढ़ी-मेढ़ी लातीनी लिपि में क़ज़ाख़ भाषा में लिखा हुआ था। यह सपार की लिखावट थी।

"अस्कारजान !

मैं तुम्हें तुम्हारे पिता के बारे में एक दस्तावेज़ भेज रहा हूं। वह इस दिन के आने से पहले ख़ुदा को प्यारा हो गया। उसे अब जिलाया नहीं जा सकता। लेकिन बच्चों को अपने पिता की सचाई पर विश्वास होना चाहिए। इसीलिए मैं यह काग़ज़ तुम्हें भेज रहा हूं।

मुझ में अब पहले जैसी ताक़त नहीं रही है। जो इस वक़्त हो रहा है, उसे समझना मेरे लिए मुश्किल है, नेकी और बदी का वह मेल मेरी समझ में नहीं आता। ज़िन्दगी में काफ़ी उलझनें होती हैं। तुम यह जानते हो। तुम एक नेक आदमी बन रहे हो। अगर तुरुसबेक जीवित होता, तो उसे तुम पर गर्व होता। वह अपने गांव को दूसरे गांवों से बेहतर बनाना चाहता था, वह ईमानदार था और लोगों की भलाई करता रहता था।

तुम यह तो जानते ही हो कि पढ़ने-लिखने में हम दोनों एक से ही थे। अमीरबेक पढ़ाई में तेज़ था। ज़िला मुख्यालय में उसी की बात पर विश्वास किया जाता था। मुझे उसकी शिकायत पर ही कार्लीगाश से निकाला गया है। मुझे सज़ा देकर दूसरे सामूहिक फ़ार्म में भेज दिया गया।

लेकिन हमारे गांव के लोग ज़िला मुख्यालय गये, उन्होंने प्रांत के दफ़्तर में भी लिखा। मैं अब वापस लौट आया हूँ। अब लोग कहते हैं कि तुम्हारे पिता की तरह मेरी भी हर बात सही थी।

क्या तुम अपने गांव वापस आओगे? तुम और जोमार्त उच्च शिक्षा संस्थान की पढ़ाई ख़त्म करनेवाले हमारे गांव के पहले लड़के हो, तुमने बहुत ज्ञान प्राप्त कर लिया है...

अगर आ सकी तो लौट आओ, बेटा। हम दोनों साथ जाकर तुम्हारे पिता और मेरे दोस्त की क़ब्र पर बंदगी करेंगे।

कयसार तुम्हें सलाम कहता है। उसने कृषि-स्कूल पास कर लिया है, मिकेनिक हो गया है और अब मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन में काम कर रहा है।"

...अस्कार शून्य में एकटक देखता हुआ काफ़ी देर तक निश्चल बैठा रहा। अस्कार की स्मृति में वह दिन बहुत दूर भी था और पास भी, जब वह सपार से अन्तिम बार मिला था।

सपार गठीला और मज़बूत था, मानो उसे जंगली सेब की जड़ों को तराशकर बनाया गया हो। उसका रंग सांवला था, भौंहें धनुषाकार थीं, कसकर बन्द किये होंठों के ऊपर काली स्याह मूंछें थीं, उसकी पैनी नज़र में सौम्य मुस्कान छिपी रहती थी – अस्कार की दृष्टि में उसकी हर चीज़ सुन्दर थी। सपार हमेशा चुस्त रहता था। सर्दियों में वह भेड़िये की खाल का कोट और लोमड़ी की खाल की कनटोपी पहनता था, और गर्मियों में धारीदार मख़मल का पुराना सूट और छोटी-सी काली टोपी। उसके पैरों में हमेशा ऊंचे बूट रहते थे, जिन्हें कज़ाख़ भाषा में साआतमा कहते हैं।

"समय कितनी जल्दी बीत जाता है, पता ही नहीं चलता," अस्कार सोच रहा था। "लगता है जैसे कल की ही बात है, मैं गांव की गलियों में भागता था, बुज़ुर्गों के क़िस्से सुनता था और अब पढ़ाई ख़त्म होने जा रही है, जिस तरह कारवां का सरदार अपने लक्ष्य की ओर जा-नेवाला रास्ता चुनता है, उसी तरह मेरा भी रास्ता चुनने का समय आ गया है..."

अस्कार सोच में डूबा सायेदार पटरी पर चलता हुआ पुस्तकालय की ओर जा रहा था। इस समय वह अकेला घूमना चाहता था। लेकिन फिर उसे ज़उरेश से मिलने, उसके साथ कुछ देर रहने और यह ख़बर बताने की इच्छा जाग उठी। अपने विचारों में खोया-खोया जब वह पुस्तकालय के पास पहुंचा, तो उसने दरवाज़े के बाहर खड़ी उसकी प्रतीक्षा कर रही ज़उरेश को नहीं देखा।

"मैं तो अब घर जा रही हूं। इतनी देर कैसे हो गयी? क्या बात हुई, अस्कार?" ज़उरेश ने उसकी ओर ध्यानपूर्वक देखा।

"मैं छोड़ आता हूं," अस्कार ने जबाब दिया।

"पार्क में से होकर चलते हैं।"

सूरज ऊपर चढ़ चुका था। पार्क के पथ इस समय हमेशा की तरह ख़ाली पड़े थे। एक एक, दो-दो विद्यार्थी सायेदार घास के मैदानों, शान्त सुनसान कोनों और लतागृहों में आराम से बैठे बड़ी एकाग्रचित्तता से अपने नोटस और किताबें उलट-पुलट रहे थे—परीक्षाएं निकट आ गयी हैं।

"सपार-अग़ा ने पत्र भेजा है," जब वे एक ख़ाली बेंच पर बैठे, तो अस्कार ने कहा। "यह लो।"

ज़उरेश ने अस्कार पर नज़र डाली। उसने पत्र लेकर शुरू की पंक्तियां पढ़ीं और पूछा।

"दस्तावेज़ में क्या लिखा था।"

"पिता जी को निरपराध घोषित किया गया था।"

"क्या उन पर कोई आरोप था? गांव में तो मैंने उनके बारे में कभी बुरा नहीं सुना..." ज़उरेश ने फिर अस्कार पर नज़र डाली। "ख़ैर अस्कार ,जो होना था, हो चुका। हर हालत में किसी आदमी को सरकारी तौर पर दोषमुक्त और ईमानदार घोषित किये जाने का बड़ा महत्व है"

उसने पत्र पूरा पढ़ डाला और सोच में पड़ गयी, फिर अचानक पूछ बैठी,

"यानी तुम गांव जा रहे हो?"

"और तुम?"

"मैं? मेरा क्या...? मुझे पहले संस्थान की पढ़ाई ख़त्म करनी है, उसके बाद कहीं जाने का फ़ैसला करूंगी। वह भी तब, जब मुझे इसका अधिकार मिल जायेगा।" ज़उरेश उठ खड़ी हुई।

"हमारे गांवों में उच्च शिक्षा प्राप्त डाक्टर नहीं हैं... मैं तुम्हारा इन्तज़ार करूंगा," अस्कार ने कहा।

ज़उरेश ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसने अपनी घड़ी पर नज़र डाली और लेक्चर में जाने की जल्दी करने लगी।

फिर जब कभी वे मिलते, तो अपनी इस बातचीत का कभी ज़िक्र नहीं करते।

जब वह अन्तिम परीक्षाएं दे रहा था और अपने गांव लौटने की तैयारी कर रहा था, वह डाक्टरी के अपने पहले प्रायोगिक कार्य के लिए बाहर जा चुकी थी।

* * *

अस्कार ने अन्तिम सिगरेट पीकर अपने कोट की अन्दर की जेब में से ज़िले के जन-शिक्षा विभाग का आदेश निकाला और उसे एक बार और पढ़ डाला। यह आदेश उसे यानी अस्कार सेम्बिन को फ़ार्लीगाश गांव के स्कूल का मुख्याध्यापक नियुक्त किये जाने के बारे में था।

"मुख्याध्यापक" शब्द को पढ़कर उसे फिर हंसी आ गयी। ज़िले के आंकड़ों के अनुसार इस स्कूल में कुल बत्तीस छात्र-छात्राएं थे। अस्कार को चारों कक्षाओं में सभी विषय पढ़ाने थे—पहली और तीसरी कक्षाओं में दोपहर तक और दूसरी एवं चौथी कक्षाओं में उसके बाद। स्कूल के लिए बस एक और कर्मचारी—झाड़ूबरदार चौकीदार का ही प्रावधान था। इसीलिए यहाँ 'मुख्याध्यापक' शब्द का उपयोग बिलकुल अनुचित था।

"ख़ैर, मुख्याध्यापक तो मुख्याध्यापक ही होता है। आख़िर एकसाथ दो काम करनेवाले दो आदमी—यह कोई बुरी बात नहीं है।" उसने कंधे पर कोट डालते हुए अपने आप से कहा।

किताबों से ठसाठस भरी पेटी उठा और एक मोटे-से गुबरैले को पैर से घास में धकेलकर वह संकरी पगडंडी पर चल पड़ा।

अस्कार को अपने गांव पहुंचने की जल्दी थी। ज्यों-ज्यों गांव नज़दीक आता जा रहा था, त्यों-त्यों उसके दिल की धड़कन तेज़ होती जा रही थी। जिस बड़ी सड़क पर उसने मोटर-चालक से विदा ली थी, उससे लेकर यहां की सारी पगडण्डियां और चश्मे उसके बचपन से जाने-पहचाने थे, हर टीले पर उसके क़दम पड़ चुके थे।

गर्मी की छुट्टियों में न जाने कितनी बार वह अपने दोस्तों के साथ उस सायबानवाले बड़े बाड़े के पास बने कच्ची ईंटों के पुराने घर में छुपा था। यह टोली का कैंप था। वह अभी भी पहले की तरह झुका हुआ खड़ा है। उसकी छत पर बैठा आदमी भी वही जेकेन-कोसे होगा, जिसे अमीरबेक ने इस घर में बसाया था। कहीं कोई दूसरा आदमी तो नहीं है? आख़िर

ग्रस्कार को विद्यालय की पढ़ाई समाप्त करके विश्वविद्यालय में प्रवेश लिये कितने वर्ष बीत चुके हैं।

यह जेकेन-कोसे ही होना चाहिए। उसके बिना काम चलेगा भी कैसे? जेकेन कोसे जैसे भले ग्रादमी, जिसे बड़ों के बजाय बच्चों से ज्यादा घुलने-मिलने की ग्रादत थी, ग्रौर जिसकी ग्रसली उम्र का पता न लगा पाने के कारण लोग बिना दाढ़ीवाला जेकेन कहते थे, के बिना तो कार्लीगाश की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी।

जेकेन हमेशा ग्रकेला रहता था, उसका कोई परिवार नहीं था। गांव के ग्रास-पास के इलाकों में सब उसे जानते थे ग्रौर यहां तक कि ग्रक्तूमा को भी लोग बिना दाढ़ीवाले जेकेन का गांव ही कहते थे। जेकेन को शुभ-सन्देशवाहक माना जाता था, क्योंकि युद्ध के दिनों में वह यहां से पन्द्रह किलोमीटर दूर डाक-घर में दिन-रात डयूटी पर रहता था। ग्रौर मोर्चे से मिलनेवाली हर ग्रच्छी ख़बर को जल्दी से जल्दी ग्रपने गांव में पहुंचाने के लिए हर तरह के मौसम में पुराने नमदे से बने ग्रपने फटे जुराबों को तार से बांध निकल पड़ता था। उन दिनों लोग उसे तेज़ दौड़नेवाला जेकेन भी कहते थे। ग्रस्कार को याद हो ग्राया कि कैसे जेकेन ने कटाई के समय सपार के पास पहुंचकर डरते-डरते उसे बुलाये जाने की ख़बर दी थी।

ग्रस्कार ने छत पर बैठे ग्रादमी की दिशा में एक बार ग्रौर नज़र डाली ग्रौर ग्रपना हाथ उठाकर उसका ग्रभिवादन किया। वह ग्रादमी ग्रपनी जगह पर बैठा ही रहा, केवल उसकी लाठी थोड़ी-सी हिली ग्रौर थके हुए हाथ धीरे-धीरे नीचे गिर गये।

ग्रस्कार ने उदासी से सोचा शायद वह बिलकुल बूढ़ा हो गया है ग्रौर उसकी नज़र भी ग्रब पहली-सी नहीं रही है।

ढाल पार करने के बाद उसे वादी में फैला गांव दिखाई दिया। दो गहरे पहाड़ी कन्दरों से निकलकर पहाड़ी नदियां वादी में बह रही थीं। उनके किनारे-किनारे कच्ची ईंटों के छोटे-छोटे ग्रनाकर्षक घर बिखरे हुए थे। दो धूलभरे रास्ते गांव में से निकलते थे: एक—पहाड़ियों के सहारे-सहारे जाता था, दूसरा—उत्तर से दक्षिण की ग्रोर पहाड़ियों में। एक रा-स्ते पर दो घोड़ों की दोपहिया गाड़ी धूल उड़ाती जा रही थी, दूसरे पर—एक लड़की बकरी के बच्चों को हांक ले जा रही थी। यहां सब पहले जैसा ही था ग्रौर गांव के बीच में खड़े सेब के तीनों पेड़ ग्रौर उसके पास

का खंडहर, लकड़ी से बनी और ज़ंग लगी टीन की छतवाली छोटे-से स्कूल की धूसर इमारत—सभी तो उसका बचपन से जाना-पहचाना है। किसी बाहर के ग्रादमी को यह गांव दूरस्थ और बिलकुल सूना लग सकता था, और शायद ही कोई कभी यहां एक दिन के लिए रुकने को तैयार होता। लेकिन अस्कार को तो यहां की हर चीज़ प्यारी थी।

अपनी यादों में खोया न जाने कब वह धूलभरे रास्ते पर आ पहुंचा। कुछ दूर चलने के बाद वह मुड़ा और सड़क से ही शुरू होनेवाली घोड़े के नाल की अकार की घाटी के तल में उतर आया। वहाँ एक बड़ा चश्मा फूट रहा था। शीतल निर्मल पारदर्शक पानी पीली और सफ़ेद मिट्टी के छोटे-छोटे विचित्र ढेलों को ऊपर धकेल रहा था। वे बच्चों के खिलौने से लगते थे, इसीलिए बच्चे बहुत पुराने ज़माने से यहां अक्तूमा (सफ़ेद चश्मा) के किनारे भागकर आते रहते थे।

गांव के सायेदार स्थानों में बहुत-से चश्मे थे, लेकिन अक्तूमा उनमें सबसे बड़ा और सबसे अच्छा था, इसीलिए सारी लड़कियां पानी यहीं से लेती थीं और लड़के अपने घोड़ों को पानी पिलाने यहीं लाते थे।

अस्कार ने अपनी अंजलि में बरफ़ीला पानी लेकर उंगलियों में से बह रही शुभ्र धारों को निहारा और ऊपर उछाल दिया, कुछ छींटे उसके ऊपर गिरे और दुबारा पानी लेकर उसने अपने होंठों से छुआ लिया। ठंडे पानी से उसके दांत दर्द करने लगे। अपनी प्यास बुझाकर वह बच्चों की तरह पथरा गयी मिट्टी के विचित्र ढेले चुनने लगा। उसे अपने कंधे पर कुछ नरम और खुरदरा-सा दबता महसूस हुआ। अस्कार ने मुड़कर देखा।

"तुम तो यहां जमकर ही बैठ गये, चलो हटो! देखते नहीं हो, मुझे घोड़े को पानी पिलाना है!"

घोड़े की नंगी पीठ पर गोल चेहरेवाला लड़का नंगे पैर बैठा था। वह लगाम पूरे ज़ोर से खींचे हुआ था।

अस्कार उठ खड़ा हुआ। लड़के ने लगाम ढीली छोड़ दी।

"तुम कौन हो?" लड़के ने घोड़े पर अकड़कर बैठे हास्यास्पद ढंग से अपनी लंबोतरी आँखें मिचमिचाते हुए पूछा।

"लेकिन तुम कौन हो?" अस्क़ार ने प्रसन्नता से पूछा।

"मैं यहीं का रहनेवाला हूँ।"

"मैं भी यहीं का रहनेवाला हूं। तुम किसके बेटे हो?"

"किसके, किसके..." लड़के के स्वर में रोष झलका।

"मैं ग्रक्तूमा गांव का हूं।"

"ग्रक्तूमा का?" ग्रस्कार समझ नहीं पाया।

"हाँ। मैं गांव का हूं, जिसके पास रहने को मेरा जी चाहता है, उसी के पास रहता हूं। मेरा नाम कोदार है," लड़के ने गर्व से कहा।

"मेरा नाम ग्रस्कार है। तुम क्या बहुत दिनों से यहां रह रहे हो?"

"हां, मैं सादिक का बेटा हूं। वह यहीं के रहनेवाले थे। मैं एक साल का नहीं हुग्रा था कि मेरे पिता मर गये थे, उनका घाव खुल गया था। मेरी मां दूसरे गांव चली गयीं, चरवाहे का काम करती रहीं ग्रौर वे भी सर्दी ग्रौर बुख़ार से मर गयीं। ग्रक्तूमावाले मुझे ग्रपने यहां ले ग्राये," लड़के ने गम्भीरता से ग्रौर बड़ा बनने की कोशिश करते हुए बताया।

"ग्रब पता चला कि तुम कौन हो!"

ग्रपने गांव से काफ़ी लम्बी जुदाई के बाद ग्रपने गांववाले से हुई इस प्रथम मुलाक़ात से ग्रस्कार व्याकुल हो उठा।

हमेशा की तरह घास की कटाई के मौसम में गांव लगभग ख़ाली पड़ा था। ग्रस्कार ग्रपने बचपन को याद करता रास्ते पर चल रहा था। वह सीधा स्कूल की ग्रोर चल दिया, क्योंकि वह जानता था कि ग्रब वह उस तरह किसी के भी घर का दरवाज़ा खटखटाकर लोगों को परेशान नहीं कर सकता था, जिस तरह कि बचपन में किया करता था।

"मैं समझ गया! ग्राप नये ग्रध्यापक हैं। ग्राप हमारे यहां काम करेंगे। मैंने इस बारे में केनेख़ान-ग्रता के लोहारख़ाने में सुना था," कोदार ग्रस्कार के पास पहुंचकर चिल्लाया, फिर लगाम को ज़ोर से खींच घोड़े को एड़ लगायी ग्रौर धूल के गुबार उड़ाता ग्रस्तबल की ग्रोर सरपट भाग चला।

* * *

स्कूल की इमारत गांव के छोर पर थी ग्रौर हर जगह से साफ़ दिखाई देती थी।

संकरी खड़ी सीढ़ियां चढ़कर ग्रस्कार दहलीज़ पर पहुंचा जहां एक लट-

कते कानोंवाला बकरी का बच्चा खड़ा था। लग रहा था जैसे यह छोटा-सा जीव बिन बुलाये मेहमान को बड़े घमंड से देख रहा है। इमारत के दरवाज़े पर घर का बना बड़ा ताला लटक रहा था। कई जगहों से पलस्तर उतर गया था और दीमकों के खाये शहतीर नज़र आ रहे थे। खिड़कियों की आधी ऊंचाई तक ईंटें रखकर उन्हें बन्द किया हुआ था और उन पर पुटीन लगा हुआ था। अस्कार को इच्छा हुई कि वह फ़ौरन इन ईंटों को उठाकर फेंक दे।

"अच्छा भई, सबसे पहले इन खिड़कियों की दशा सुधारनी चाहिए। इससे कक्षा में ज़्यादा उजाला रहेगा," उसने बकरी के बच्चे की ओर देखते हुए कहा।

बकरी का बच्चा उठ खड़ा हुआ और नये मुख्याध्यापक की ओर कोई ध्यान दिये बिना दहलीज़ से नीचे कूद गया।

"हाय अल्लाह! कितना बड़ा हो गया है!" पीछे से आवाज़ आयी।

अस्कार ने मुड़कर देखा। नीचे एक बूढ़ी किन्तु तगड़ी औरत खड़ी थी जिसकी कमर कुछ झुक चली थी, उसने धूसर रंग की पुरानी नीची पोशाक पहनी हुई थी और उसी तरह का रूमाल सिर पर बांधा हुआ था। उसके हाथों में चाबियों का गुच्छा था।

"सलाम!" अस्कार ने कहा, लेकिन पहचानते ही उसकी ओर लपका। "अरे दमेश-आपा! आप हैं? कितनी ख़ुशी की बात है कि आप अभी तक यहां काम कर रही हैं! आपने मुझे पहचाना? मैं अस्कार हूं।"

"क्यों नहीं पहचानूंगी, मेरे प्यारे अस्कार। मुझे तो सब की याद है, सब की," उसकी आवाज़ कांप उठी। "मैं आपके लिए ये चाबियां लायी हूं।"

"आप दमेश-आपा मुझे 'आप' कहकर पुकार रही हैं? यह क्यों? मैं तो आपके पोतों के बराबर हूं," अस्कार विकल हो उठा।

"यह लो, पुराने मुख्याध्यापक भी आ गये," उसकी आवाज़ में कुछ भय या विकलता झलकी।

वह अस्कार को चाबियां देकर एक ओर हटकर खड़ी हो गयी। कोई पैंतालीस वर्ष का लम्बे क़द का आदमी अस्कार के पास आ पहुंचा। डटकर शराब पीने से उसका चेहरा फूला हुआ था, नीन्द से भारी हो रहा था,

उसने चिक्कट कोट, बिरजिस ग्रौर घुटनों तक के बूट पहने हुए थे। उसने बड़े रूखे ढंग से ग्रस्कार का ग्रभिवादन किया।

"तुम बड़ी जल्दी ग्रा पहुंचे। मुझे कल ही तो बरखास्तगी की चिट्ठी मिली है। ग्रौर तुम यहां टपक पड़े। बहुत तारीफ़ की बात है। यानी तुम बुड्ढे की जगह लेने ग्राये हो। हम तो जैसे ग्रब किसी काम के ही नहीं रहे। मैं तो सोचता था कि विश्वविद्यालय के स्नातक इससे कहीं ऊंचे पद पाने योग्य होते हैं। लेकिन मालूम पड़ा कि उच्च शिक्षा संस्थाग्रों का फ़ायदा हर ग्रादमी नहीं उठा सकता, किसी ने ठीक ही कहा है: जो ज़मीन पर रेंगने के लिए ही पैदा हुग्रा है, वह उड़ तो सकता ही नहीं। ग्ररे, क्या चमगादड़ कभी उक़ाब बन सकता है? वह तो ग्रपनी ग्रंधेरी कोठरी छोड़ने से ही डरता है... ख़ैर, जब ग्रा ही पहुंचे हो, तो ये लो... दमेश, तुमने चाबियां इस नौजवान को दे दीं? ग्रब यह तुम्हारा नया मुख्याध्यापक है। तुम ख़ुद दरवाज़ा खोलो! डेस्कें गिन लें, रिपोर्ट पर दस्तख़त कर दें..."

ग्रस्कार की निगाह उस ग्रादमी की चुभती नज़रों से टकरा गयी। "तुम ग्रब ग्रपने गांववालों के लिए ग़ैर हो गये हो। तुम्हारी भावनाग्रों, तुम्हारी नेकदिली को वहां के बहुत-से लोग नहीं समझ पायेंगे। ज्यादा से ज़्यादा तुम्हें सनकी ग्रौर बेवक़ूफ़ समझ लेंगे, जो विश्वविद्यालय की पढ़ाई ख़त्म करने के बाद ग्रपने ग्रन्धेरे कच्चे घर में लौट ग्राया है।" जोमार्त के साथ हुई बहस में उसके शब्द ग्रस्कार को स्मरण हो ग्राये। कुछ क्षणों के लिए उसके मन में क्रोध उबल पड़ा। उसे इच्छा हुई कि वह भी कटूक्ति का जवाब कटूक्ति में दे, ग्रपमान के बदले में ग्रपमान करे। लेकिन उसने ग्रपने ग्राप पर नियंत्रण किया ग्रौर शान्तिपूर्वक बोला,

"चलिये, कक्षाएं देख लें..."

* * *

सफेद प्लाई लकड़ी के जोड़ लगी पुरानी डेस्कें, ईंटों से बन्द की हुई या गत्ते से ग्राधी ढकी खिड़कियां, ऊबड़-खाबड़ फर्श, प्राथमिक स्कूलों में पढ़ाई के लिए ग्रत्यावश्यक सामान्य चाक्षुष उपकरणों का ग्रभाव, भूत-

पूर्व मुख्याध्यापक से हुई अप्रिय बातचीत – इन सब बातों से अस्कार की लौट आने की ख़ुशी का मज़ा किरकिरा हो गया।

अस्कार दमेश-आपा के छोटे कमरे में रहने लगा। पहली ही शाम को उसका बचपन का दोस्त, नाटे क़द, गठीले बदन, गोल चेहरे और बड़ी-बड़ी आंखोंवाला बाऊकेन उस कमरे में आ पहुंचा। सपार-अग़ा गांव के बड़े-बूढ़ों के साथ आया।

"हमारे बुज़ुर्गों का कहना है कि अगर छः साल का लड़का दूर देशों की यात्रा से वापस लौट आये, तो साठ साल के बूढ़ों को भी उसका स्वागत करना चाहिए," सपार ने दहलीज़ लांघते हुए कहा। "तुम्हारा आना शुभ हो, बेटा। अफ़सोस, मेरे दोस्त को यह दिन देखना नसीब नहीं हुआ। अपने बेटे को देखता, तो कितना ख़ुश होता! ख़ैर बताओ, कैसे रहे, कैसे पढ़े, क्या-क्या देखा? अस्कार, तुम खड़े क्यों हो? मेहमानों को आराम से बिठाओ। घबराओ नहीं और दमेश का मुँह मत ताको। उसके कमरे भले ही तंग और अंधेरे हों, लेकिन उसका दिल बड़ा और नेक है। काश, तुमने इसे इसके जवानी के दिनों में देखा होता! न जाने कितने नौजवानों को तड़पाया है इसने।"

"कम-से-कम बच्चों के आगे तो शर्म करो," दमेश-आपा ने कहा और रूमाल से चेहरा ढांपते हुए दरवाज़े की ओर चली गयी।

"चल दी बुड्ढी मुर्ग़ी, अच्छा, जा, जा, लेकिन यह न भूलना कि जल्दी से चाय बनानी है। मैं तो जानता हूं कि तुम्हारी चाय मेरी बीवी के खाने से भी ज़्यादा स्वादिष्ट होती है," सपार चाचा मज़ाक़ करता रहा। "अस्कार, तुम अपने क़ादिर-बाबा को तो जानते होगे?"

"हां," अस्कार ने जवाब दिया।

"तो सुनो। कादिर-बाबा, उनकी रूह मुझे माफ़ करे, मैं बेकार उन्हें परेशान कर रहा हूं! – यहां के लोगों में से जवानी में सफ़र करनेवाले पहले आदमी थे: वे हज्ज कर आये थे। उनके मरने के दिन तक लोग हमारे गांव में उस पोपले और कमज़ोर नज़रवाले बुज़ुर्ग को देखने आते रहे थे। हम सब तो सिर्फ़ गांव के आस-पास और पहाड़ों में ही घूमते रहे। न हमारे पंख थे, न ज्ञान, इसलिए हम सिर्फ़ रेगिस्तान और पहाड़ों में ही चक्कर काटते रहे, आगे जाने से डरते रहे। हम बिलकुल लवा पक्षी की तरह ही रहे, जो हमेशा एक ही जगह पर घूमता रहता है।

लेकिन अब वह बात नहीं रही, अब हमारे बच्चे अलमा-अता, नोवोसि-बीर्स्क और सेम्येय में पढ़ते है, वे सब जगहों में घूमते हैं। सुना है, जो-मार्त कहीं दूर के सफ़र पर जानेवाला है। क्या यह सच है, अस्कार? बताओ।"

"नहीं। वह स्नातकोत्तर पढ़ाई के लिए रुक गया है, आगे पढ़ना चाहता है।"

"हमारे बुजुर्ग कहते थे: लोगों की ज़िन्दगी के बारे में जानना चाहते हो, तो उससे मत पूछो, जो बहुत दिन जिया हो, बल्कि उससे पूछो जिसने ज़्यादा देखा हो," केनेख़ान भी बातचीत में हिस्सा लेने लगा।

अस्कार बुज़ुर्गों की बात काटे बिना बड़े ध्यान से सुन रहा था, जैसा कि बुज़ुर्गों के बीच में बैठे नौजवान आदमी को करना चाहिए।

"तुम ठीक कहते हो, सपार, हमारे बच्चों के पंख निकल आये हैं," केनेख़ान आगे बोला। "लेकिन पंख तो उक़ाब के भी होते हैं और गौरैया के भी। काला लवा रामगंगरा से ज़्यादा तेज़ आंखोंवाला और तेज़ उड़नेवाला होता है, वह अबाबील से उड़ने में उन्नीस नहीं होता, लेकिन वह सर्दियों में उड़कर दूसरे देशों में सिर्फ़ इसीलिए नहीं जाता, क्योंकि वह अपनी क़ज़ाख़ स्तेपी को सब से ज़्यादा प्यार करता है, उसके साथ सिर्फ़ वसन्त और सुनहरे पतझड़ के दिनों में ही नहीं रहना चाहता, बल्कि हर समय उसके साथ रहना चाहता है। पैदा होते समय और मरते समय भी वह अपने वतन की तारीफ़ के गीत गाता रहता है। अबाबील भी वफ़ादार चिड़िया है, वह नये गीत लाने के लिए हमारा देश कुछ दिनों के लिए छोड़कर जाती है।

क्या अस्कारजान यहां ज़्यादा दिन तक रुकेगा? जिसने प्रकाश देख लिया, उसके लिए अपने अंधेरे घोंसले में लौटकर आना मुश्किल होगा। बच्चों के पंख निकल आने से हमें ख़ुशी भी होती है और दुख भी, सपार। धीरे-धीरे हम सब ख़ानाबदोश लोगों के उन बुड्ढे कुत्तों की तरह हो जायेंगे, जो उनके पिछले पड़ाव के बुझते अलाव के पास पड़े रह जाते हैं।"

"केनेख़ान, यानी मैंने अपने बेटे को पढ़ने के लिए शहर न भेजकर ठीक किया न?" सपार की दायीं ओर बैठे टोली के गोदाम के चौकीदार ममीरबाय ने बूढ़े लोहार से पूछा।

इसी बीच दमेश कमरे में आयी और दस्तरख़ान बिछाकर उस पर बा-

बुरसक* और मिठाइयां रखने लगी। दूसरी औरत प्यालियां और वोदका की कुछ बोतलें ले आयी। समोवार भी रख दिया गया।

बोतलें देखकर अस्कार ने आश्चर्य से दमेश की ओर देखा।

"हैरान न होओ, बेटा। अब हमारे यहां ख़ातिरदारी के लिए वोदका ही सबसे अच्छी चीज़ समझी जाती है," दमेश ने उदासी से दबी आवाज़ में कहा। "आराम से बैठो और थोड़ी-सी पी लो, नहीं तो बुज़ुर्गों को बुरा लगेगा।"

मेहमान लोग अपनी बातचीत जारी रखते हुए चाय की चुस्कियां लेने लगे।

"नहीं, तुमने ठीक नहीं किया," केनेखान ने ममीरबाय को जवाब दिया। "आदमी के पंख मरोड़ना अच्छी बात नहीं होती।"

"बाप कभी बच्चों का बुरा नहीं चाहता। मेरे बेटे ने शादी कर ली है और अब औरों की तरह काम कर रहा है। अपने हमउम्रों से वह किस बात में पीछे है? वह युवा कम्युनिस्ट लीग का आदेश-पत्र पाकर चरवाहा बन गया है," ममीरबाय ने विरोध किया। "वह इस बुज़ुर्ग के साथ मेहनत कर रहा है," ममीरबाय ने शीर्ष-स्थान पर बैठे सफ़ेद दाढ़ीवाले चरवाहे की ओर इशारा किया।

"हमारे गांव तथा पड़ोस के गांव में स्कूल पास करनेवाले हमारे सब बच्चों को दो साल से लगातार चरवाहों का काम करने के लिए बेस्कोपा भेजा जा रहा है," दमेश भी बोल उठी।

अस्कार ने बाऊकेन की ओर देखा, उसने भी चुपचाप समर्थन में सिर हिला दिया। बाऊकेन कुछ कहना चाहता था, लेकिन उसे बुज़ुर्गों के बीच में बोलने का साहस नहीं हो रहा था।

"बहन, ज़िन्दगी में हर बात दोहरायी जाती है," अब तक मौन बैठा चरवाहा बोल उठा। "मैं बैठा सोच रहा हूं: मैं अपने पोते को स्कूल क्यों भेजूं?"

"मैं आपकी बात समझा नहीं, अता। क्या आप अपने पोते को स्कूल में भरती नहीं करवाना चाहते हैं?" अस्कार ने दिलचस्पी दिखायी।

---

* बावुरसक – ख़मीर उठे आटे का एक प्रकार का व्यंजन। सं०

"नहीं, नहीं चाहता!" वृद्ध ने भौंहें सिकोड़ प्याली मेजपोश पर रखकर भर्राये स्वर में जवाब दिया। "मैं नहीं चाहता, बेटा। दस्तख़त करना और ख़त लिखना तो वह घर बैठे ही सीख सकता है। उसके बड़े भाई सिखा देंगे। इसके अलावा उसे और कुछ चाहिए भी नहीं। अमीरबेक भी तो पढ़ा-लिखा है, लेकिन उसने अपने गांव के लिए क्या किया? उसने सिर्फ़ औरों की ज़िन्दगी बरबाद की। और अब ज़िला मुख्यालय में अफ़सर बना घूमता है।"

कमरे में चुप्पी छा गयी।

"मैं बीस साल से चरवाहे का काम कर रहा हूं और अब जाकर मैंने एक महीने की छुट्टी ली है। वह भी इसलिए कि तबीयत कुछ ख़राब हो गयी थी। मैं बुड्ढा हूं, अनपढ़ हूं, लेकिन तुममें से कोई भी मुझे बेवक़ूफ़ नहीं कह सकता। मैं जानता हूं कि तालीम आदमी के लिए रोशनी की तरह है, पढ़ा-लिखा आदमी ज़्यादा जानता है और ज़िन्दगी से ज़्यादा की उम्मीद करता है। ऐसे आदमी के लिए हमारी तरह जीना बहुत मुश्किल होगा। हम जैसे बुड्ढे बहुत कम रह गये हैं, इसलिए पिछले दो-तीन सालों से नौजवानों को हमारी मदद करने के लिए भेजा जा रहा है। वे दस साल स्कूलों में पढ़ चुके हैं, उन्होंने कभी चरवाहे के काम के बारे में सोचा भी नहीं था, अब उन्हें बड़ी मुश्किल होती है। फिर वे अच्छे चरवाहे भी नहीं बनते। लेकिन अगर हमारी सारी पीढ़ियों को चरवाहा ही रहना है, तो फिर मैं चाहूंगा कि मेरा पोता अपने काम में माहिर बने। मैं ख़ुद अपने पोते को अपने पहाड़ों और रेतीले इलाक़ों की पहचान करवाऊंगा, बारिश और तूफ़ान के आने की पहचान बताऊंगा, हरे-भरे चरागाह ढूंढ़ना और उन्हें काम में लाना सिखाऊंगा, जानवरों की आदतें समझना बताऊंगा। उसे अपने काम को प्यार करना सिखाने में मैं कोई कसर बाक़ी न छोड़ूंगा और तब तक उसके साथ रहूंगा जब तक कि मैं अपनी आंखों से न देख लूं कि वह असली चरवाहा बन गया है और अपने मरहूम बाप का और मेरा नाम नहीं लजायेगा। आदमी को हमेशा अपने काम से लगाव रहना चाहिए, नहीं तो जीना बेकार होगा।"

वृद्ध ने अपनी जेब में से रूमाल निकालकर अपना माथा और दाढ़ी पोंछे।

"चरवाहा बनने के लिए किसी ख़ास इल्म की ज़रूरत नहीं होती,

बेटा। मैं अपने पोते को स्कूल नहीं भेजूंगा। वैसे भी दो साल से बच्चों को स्कूलों से हमारे पास वापस भेजा जा रहा है। हमारा गांव पुराने पेड़ की तरह सूखता जा रहा है और लोग एक ही जगह में पड़े वक़्त गुज़ार रहे हैं। हमारे बाग़ फलफूल नहीं रहे हैं, लहलहा नहीं रहे हैं।"

वृद्ध मौन हो गया। किसी ने वोदका के गिलासों को छुआ भी नहीं। बुज़ुर्ग अपनी-अपनी प्याली पकड़े अस्कार की ओर जांचती हुई नज़रों से देख रहे थे।

क़ज़ाख़ों में बुज़ुर्गों की बात सुनने, मानने और उनका विरोध न करने की बहुत पुरानी परम्परा चली आयी है। किसी बुज़ुर्ग और नौजवान में बहस होना मुश्किल है। लेकिन इस क्षण अस्क़ार के लिए उनसे बहस करना ज़रूरी हो गया था। उसके भावी कार्य के लिए इस बूढ़े चरवाहे के साथ होनेवाली बहस काफ़ी महत्व रखती थी।

"माफ़ कीजिये, अता, मैं आपसे सहमत नहीं हूं। कहते हैं न्याय के आगे बड़े-छोटे सब बराबर होते हैं..."

"यूं कहो कि ताक़त उम्र को नहीं मानती," सतार-अग़ा ने हल्की-सी मुस्कान के साथ अस्कार का हौसला बढ़ाते हुए कहा। "आगे कहो, बेटा!"

"अता, मुझे अब तक याद है, जब मैं पढ़ने जाने से पहले एक बार बेस्कोपा आया था। अमीरबेक ने मुझे गोबर पाथने भेजा था। तब शाम को मैं आपके तम्बू में अलाव के पास बैठा करता था, जहां दूसरे चरवाहे भी इकट्ठे होते थे। आपने सर्दियों के पड़ावगाह में रखी सारी किताबें मुझसे पढ़वायी थीं। उनमें सुल्तान महमूद की 'कमर-सुलू', बेयमबेत की 'मीरकीम बाय', 'मुनलीक-ज़रलीक' और 'बहादुरों के गीत' जैसी किताबें थीं। आपको ये किताबें बहुत पसन्द थीं। आप सब बड़े ध्यान से सुनते थे, भावविह्वल हो उठते थे, हालांकि ये गीत सभी को ज़बानी याद थे। उस वक़्त आपने कहा था कि अच्छा लिखने और पढ़नेवाला आदमी कितना शक्तिशाली होता है, ज्ञानी आदमी में कितनी ख़ूबियां होती हैं। तभी आपने मुझसे कहा था कि खुली आंखोंवाला आदमी बनने के लिए पढ़ना चाहिए, लोगों का भला करना चाहिए, किसी से डरना नहीं चाहिए और अपने पिता जैसा बनना चाहिए।

उस समय आप आबाय की यह बात बार-बार दोहराते थे कि अज्ञानी

आदमी केवल एक ही आदमी को हरा सकता है, लेकिन ज्ञानी – हज़ारों को। यह सब मैंने आप ही के मुँह से सुना है, अता। और आज आपने कहा कि पढ़े-लिखे नौजवान के लिए चरवाहे का काम करना और जिस तरह आप जीते हैं, उस पर संतोष करना मुश्किल है। हां, आपकी बात ठीक है। पढ़ा-लिखा आदमी उन परिस्थितियों को स्वीकार नहीं कर सकता, जिनमें आप रहते हैं। क्योंकि वह बिना किताबों और अख़बारों के नहीं जी सकता। पढ़ने के लिए उसे गोबर के कंडों के छोटे-से अलाव की रोशनी से ज़्यादा तेज़ रोशनी चाहिए। वह सर्दियों में भी और गर्मियों में भी तम्बू में नहीं रहना चाहेगा, वह संघर्ष करेगा कि उसके लिए भी रोशनीदार घर बनाया जाये। वह रोज़ाना रेडियो से समाचार सुनेगा, सिनेमा और कंसर्ट की मांग करेगा, अकेले काम नहीं करना चाहेगा। और अगर हमारे गांव में इस तरह के पढ़े-लिखे लोगों की संख्या बढ़ी तो हमारा काम भी आसान हो जायेगा। वे न सिर्फ़ सर्दियों के पड़ावगाहों में बल्कि हमारे सारे गांव में, हमारे घर-घर में नयी ज़िन्दगी ला देंगे . . . " अस्क़ार का स्वर ऊंचा-नीचा हो रहा था, वह जल्दी से जल्दी एक बार में ही वे सारी बातें कह डालना चाहता था, जो काफ़ी समय से उसके मन में थीं। "अगर आपका पोता पढ़-लिख गया तो वह सिर्फ़ एक चरवाहे की ही हैसियत से नहीं, और बहुत-सी योग्यताओं के कारण गांव के सबसे ज़रूरी आदमियों में से एक हो जायेगा। वह काम करते हुए पढ़ाई जारी रख सकता है, वैज्ञानिक बन सकता है, जोमार्त के चरण-चिन्हों पर चलकर अपना मनपसन्द पेशा चुन सकता है।"

"तुम बिलकुल ठीक कहते हो, अस्क़ारजान" केनेख़ान ने टिप्पणी की। "अभी तक हमारे पास न डाक्टर हैं, न मकान बनानेवाले, सपार भी अपना पेशा बदलने को मजबूर हो गया।"

लोहार की टिप्पणी ने सबका ध्यान सपार के परिवार के साथ बीती दुर्घटना की ओर खींच लिया। इस दुर्घटना के बारे में अस्क़ार भी जानता था। बांऊकेन के पत्र में उसने जोमार्त के साथ इस बारे में पढ़ा था।

अक्तूमा लौट आने के बाद सपार अपनी जवानी के दिनों की तरह घोड़ों का चरवाहा बन गया। उस समय तक अक्तूमा छः गांवों को मिलाकर बनाये गये नये बड़े फ़ार्म की एक टोली मात्र था।

दो वर्ष पूर्व कड़ी सर्दियों में सारे ज़िले में पशुधन की भारी हानि हुई

थी। सपार अपने गरम कपड़े, नमक और आटा साथ लेकर सारी सर्दी सामूहिक फ़ार्म के घोड़ों की देखभाल करता हुआ, भेड़ियों के झुण्डों को दूर भगाता हुआ, बेस्कोपा के रेतीले इलाक़ों में भटकता रहा था। सारी सर्दी उसकी कोई ख़बर नहीं मिली, लोगों ने उसे मरा समझ लिया। लेकिन जब बर्फ़ पिघली, तो सपार सामूहिक फ़ार्म की सारी घोड़ियों सहित सही-सलामत अपने परिवार में लौट आया।

अगर उसके बेटे कयसार के साथ दुर्घटना नहीं हुई होती, तो शायद वृद्ध आज भी घोड़ों के चरवाहे की हैसियत से ही काम कर रहा होता।

कयसार अपने पिता से विरासत में मिले साहस, उत्साह और कर्मनिष्ठता के साथ टेकनिकल स्कूल की पढ़ाई समाप्त कर मिकेनिक बन गया था। वह जब अक़्तूमा पहुंचा, तो वहां शरत्कालीन जोताई ज़ोरों पर थी। उस दिन अक्तूमावालों का एक ट्रैक्टर ख़राब हो गया था। कुछ फ़ाज़िल कल-पुरज़ों की ज़रूरत थी। नौजवान मोटर-साइकिल पर बैठ मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन रवाना हो गया। रास्ते में उसकी मोटर-साइकिल पुल पर से फिसल गयी और वह मर गया।

सपार-अग़ा का चेहरा पीला पड़ा हुआ था, कमर झुक गयी थी, वह गांव के केन्द्र में खड़ा अपने बेटे की लाश लानेवाली गाड़ी का इन्तज़ार कर रहा था। औरतें दुख के मारे बेहाल हुई मां को पास के घर में ले गयी थीं।

नौजवान की लाश सावधानी से उठाकर सामूहिक-फ़ार्म के कर्मी पड़ोसी के घर की ओर चल दिये।

"ठहरिये," सपार ने कराहते हुए कहा। "कहां ले जा रहे हैं? उसे अपनी आख़िरी रात अपने घर में बिताने दीजिये..."

"नहीं, सपार, तुम्हारा कच्चा मकान बहुत तंग है।"

"तो एक तम्बू खोलकर लगा दो!"

"तम्बू सिर्फ़ घुमक्कड़ों के लिए ही ठीक होता है। इस वक़्त वह काम नहीं आ सकता, उसमें अन्धेरा रहेगा। उसके दोस्त उसके अन्तिम दर्शनों के लिए आयेंगे।"

सपार का सिर और नीचे झुक गया। कष्ट और शर्म ने उसकी कमर झुका दी। पहली बार उसकी समझ में आया कि अपने बड़े और रोशनीदार घर का न होना आदमी के लिए कितना बुरा होता है। उसे याद आ

गया कि वह एक जगह से तम्बू उठाकर दूसरी जगह लगाता और सर्दियां तहखाने में बिताकर सिर्फ़ यही सोचता कि जैसे तैसे ये दिन कट जायें।

पतझड़ की वह लम्बी और ठंडी रात इस मज़बूत और गर्वीले आदमी ने बाहर सायबान के नीचे अपने बेटे के पास खड़े-खड़े गुज़ारी। पास ही अलाव जल रहा था जिसके इर्द-गिर्द सगे-सम्बन्धी और दोस्त बैठे थे।

जब पहाड़ों के पीछे से सूरज ने अपनी किरणें बिखेरीं, तो लोगों ने देखा कि सपार कितना बदल गया है। उसके चेहरे का रंग उड़ गया था, माथे पर झुर्रियां पड़ गयी थीं, उसकी आंखें बोझिल और उदास हो गयी थीं।

वह रात देर गये तक अपने बेटे की क़ब्र के पास बैठा रहा। वापस लौटा, तो अपने तम्बू में नहीं गया। उसने कुदाल और सब्बल उठाये और अपने क़दमों से गांव के छोर पर चश्मे के पास की ज़मीन नापकर नींव रखने के लिए उसे खर-पतवार से साफ़ करने लगा। पत्थर वह घाटी से लाया, ईंटें ढूढ़ने लगा, कहीं से इमारती लकड़ी और कीलें ले आया। और उसने अपना घर बना डाला। अपने बेटे की क़ब्र पर उसने क़ैराग़च* लगा दिया और अपने घर के इर्द-गिर्द भी इसी तरह के पेड़ लगा दिये।

सपार ने रेतीले इलाक़े में चरवाहे का काम करने से इन्कार कर दिया। वह अपने गांव में ही रुक गया और कुछ आदमियों को इकट्ठा कर अपने गांववालों के कच्चे घर गिराकर उनके लिए पक्के घर बनाने का काम करने लगा। उसे नन्हे-से कोदार से लगाव हो गया। वह चाहता था कि कोदार सिर्फ़ उसी के साथ रहे, उसका कुलनाम रख ले और उसके मृत पुत्र का स्थान ले ले। सपार सामूहिक फ़ार्म के कर्मियों के कई घरों की मरम्मत कर चुका था। बड़े सामूहिक फ़ार्म के नये अध्यक्ष के साथ काफ़ी लम्बी बातचीत के बाद वह अक्तूमा के लिए जेनरेटर लाने में सफल हो गया था। अब कभी-कभी अक्तूमावालों के घरों में विद्युत प्रकाश भी दिखाई देने लगा था। उसी के आग्रह पर फ़ार्म के कार्यालय ने बाउकेन

---

* क़ैराग़च – एल्म क़िस्म का पेड़ जो सोवियत संघ के दक्षिणी इलाक़ों में उगता है। सं०

को अक्तूमा टोली का मुखिया बना दिया था। बाउकेन अनुभवहीन युवक था और पहले ट्रैक्टर-चालक था।

इन सब बातों के बारे में अस्क़ार जानता था। वह देख रहा था कि सपार-अग़ा का सब पहले की तरह ही सम्मान करते हैं, उसे पहले की तरह प्यार करते हैं। इसलिए वह बड़ी अधीरता से उसके कुछ कहने की प्रतीक्षा कर रहा था।

वह क्या कहेंगे, किसका पक्ष लेंगे?

"एक कहावत है: अपनी छाछ को कोई खट्टा नहीं बताता। बुज़ुर्ग ठीक ही कहते हैं, कोई भी नहीं चाहता कि उसका बच्चा बुरा और बेसहारा बने," सपार ने घुमा-फिराकर अपना हर शब्द तौलते हुए कहना शुरू किया। "जिस मास्टर की जगह पर अस्क़ार आया है, वह कोई गया-गुज़रा आदमी नहीं था। पहले वह सामूहिक-फ़ार्म का उपाध्यक्ष था। हाँ, उसका गाँव हमारे अक्तूमा की तरह बड़ा नहीं था। नया फ़ार्म बनाये जाने के बाद उसे मास्टर बनाकर हमारे यहां भेज दिया गया। लेकिन पता चला कि वह इसके योग्य नहीं है।" सपार मुस्कराया। "इसमें कोई शक नहीं कि कभी हम भी काम के आदमी थे। लेकिन अब वह बात नहीं रही। वक़्त बदल चुका है और ज़िन्दगी का ढर्रा भी और ही हो गया है। बुज़ुर्ग भी इस बात की तसदीक़ करेंगे। हम स्कूलों के बारे में कुछ नहीं जानते थे और न ही हमने कभी उनके बारे में सुना था।"

"यह सच है," बूढ़े चरवाहे ने एक गहरी सांस ली।

"लेकिन, कुरेके, फिर भी तुम और हम वक़्त के कारवां से पिछड़ नहीं गये हैं," उसने बूढ़े चरवाहे को सम्बोधित करते हुए कहा। "कुरेके आज मशहूर चरवाहा है, वह चाहता है कि उसका पोता भी उस जैसा बने। लेकिन नौजवान का ज्ञान स्कूल पास करनेवाले अपने हमउम्र लड़कों से कम हो, तो क्या वह उस जैसा बन सकेगा? मेरे ख़याल से नहीं। बात अस्क़ारजान की ही ठीक है। आप बुरा न मानिये, बुज़ुर्ग। मैं आपकी बात ठीक-ठीक समझ गया। सारी मुसीबत यह है कि आपको और दूसरे पशु-पालकों को अभी तक किसी ने नहीं समझाया है कि बच्चों को फ़ार्मों पर भेजने का मक़सद यह नहीं कि वे ज़िन्दगी भर चरवाहे और जानवर पालनेवाले बने रहें। इस वक़्त चरवाहों की कमी है। आप

तो खुद ही कह रहे हैं कि अब आपका बुढ़ापा आ गया है। लेकिन आपकी जगह कौन लेगा? कुछ दिन उन्हें काम करने दीजिये। दुनिया देख लेंगे, कुछ मेहनत कर लेंगे, फिर शहर में संस्थान में प्रवेश पाने के लिये प्रार्थ-ना पत्र भेज देंगे।"

"ख़ुदा के शुक्र से हमारे बच्चे छोटी उम्र से ही मेहनत करने के आदी हो जाते हैं। वे दस साल तक पढ़ते भी हैं और सामूहिक फ़ार्म में बड़ों के साथ मेहनत भी करते हैं। इस क़ानून की ज़रूरत सिर्फ़ शहरी बच्चों को ही होगी," चरवाहे ने विरोध किया।

"दरअसल यह बेइंसाफ़ी है। हमारे बच्चे मेहनत में किसी से पीछे नहीं रहते, लेकिन इसमें शक नहीं है कि उनका किताबी ज्ञान शहरी बच्चों के मुक़ाबले में कम होता है। उनके पास बहुत किताबें होती हैं, वे बहुत पढ़ते हैं। फिर सिनेमा है और कलाकार भी शहर में ही रहते हैं। गांव के बच्चों की पढ़ाई बीच में नहीं रोकनी चाहिए। वे ज्ञान के मामले में शहरी बच्चों से बहुत ज़्यादा पिछड़ जायेंगे," सपार सोच में डूबा कहता रहा। "शायद इन सब बातों को जल्दी ही सुधारा जायेगा। लेकिन बु-ज़ुर्ग, तब तक के लिए आप अपने पोते को अस्क़ारजान को सौंप दीजिये। उसे पढ़ने दीजिये, बड़ा होने पर वह ख़ुद अपना पेशा चुन लेगा। मैं तो आपको जानता हूं, आपके ऐसा कहने का मतलब यह नहीं था कि आप अपने पोते को पढ़ने की इजाज़त नहीं देना चाहते, बल्कि यह है कि इन सब बातों से दिल दुखता है। बहुत दिल दुखता है। देश में कहीं बांध बनाये जा रहे हैं, कहीं रेगिस्तान पर क़ाबू किया जा रहा है, फ़ैक्टरियां खड़ी की जा रही हैं, बंजर तोड़ा जा रहा है, लेकिन हमारे गांवों को तो ऐसे भूल गये हैं, जैसे वे दुनिया में हैं ही नहीं," सपार ने एक ठंडी सांस ली।

बूढ़ा चरवाहा मौन रहा, इसके बाद सारी शाम वह एक शब्द भी नहीं बोला। सुगन्धित तेज़ चाय की चुस्कियां लेते हुए वह अपने ही विचा-रों में खोया रहा।

"सपार-अग़ा, आपने बताया कि मेरा पूर्वाधिकारी सामूहिक फ़ार्म का अच्छा उपाध्यक्ष था, किन्तु उसमें अध्यापन के ज्ञान का अभाव था। लेकिन स्कूल की मरम्मत करने के लिए तो किसी विशेष योग्यता की ज़रूरत नहीं होती।"

"सुना, सपार-अग़ा, मेरा कहा सच निकला न? मैंने इस घर में आने से पहले ही कहा था न कि अस्कार सबसे पहले स्कूल की मरम्मत की बात छेड़ेगा," बाऊकेन मुस्कराया। "तुम ठीक कहते हो, अस्क़ार। लेकिन कुछ देर ठहरो। मैं कुछ दिन हुए ही टोली के मुखिया का काम करने लगा हूं। स्कूल की मरम्मत के बारे में मुझे पुराने मास्टर ने भी कहा था और सपार-अग़ा ने भी। दो सप्ताह बाद मैं कुछ आदमियों को मरम्मत करने के लिए भेजूंगा, तुम ख़ुद उनसे काम करवाना। सपार-अग़ा भी मदद कर देंगे।"

"हां, हम लोगों ने फिर सपार-अगा के सुझाव के अनुसार काम करने का फ़ैसला किया है। याद है, हमने चूना पकाया था और ईंटें बनाना चाहा था। हम फिर से यह काम शुरू कर देंगे। अब तो यह काम किया ही जा सकता है... हर हालत में पता तो लगा ही लेंगे। जोमार्त इस काम में हमारी काफ़ी मदद कर सकता है। निर्माण कार्य का वह अच्छा जानकार है" मेहमानों को छोड़कर आने के बाद बाऊकेन ने अस्कार से कहा। "वह तुम्हारे साथ क्यों नहीं आया, कम-से-कम गर्मियां बिताने के लिए तो आ ही सकता था?"

"गर्मियों में वह प्राचीन क़ज़ाख़स्तान की संस्कृति और वास्तुकला के बारे में ज़्यादा जानकारी प्राप्त करने के लिए पुस्तकालयों और अभिलेखा-गारों को छान डालना चाहता है। इसी उद्देश्य से वह प्राचीन स्मारकों, मक़बरों, मसजिदों आदि को भी देखने जा रहा है," अस्क़ार ने जवाब दिया। "उसके बाद आगे पढ़ेगा।"

"कुछ दिनों के लिए हमारे पास ही आ जाता। जोमार्त को हमारे यहां आने की इच्छा ही नहीं हुई होगी। मुझे उसकी बहुत याद आती है, क्या वह अब भी पहले जैसा ही दार्शनिक है?"

"तुम्हारा अन्दाज़ ठीक है," अस्कार जोमार्त के साथ हुई अपनी बहस का स्मरण कर मुस्कराया और पहाड़ों की ओर से बहनेवाली ठंडी हवा के झोंके से ठिठुरता हुआ बोला, "आज वह होता तो बुज़ुर्गों से इस तरह बात नहीं करता। वह चाहे तो बहुत कुछ कर सकता है, गांव का उससे बहुत फ़ायदा हो सकता है।"

"तुम कुरेके के बारे में ग़लत मत सोचना, वह अपने पोते को स्कूल में ज़रूर भरती करवायेंगे। आजकल जो हो रहा है, उसमें कई बातें उन-

की समझ के बाहर हैं। इसीलिए आज उन्होंने अपनी कह ही डाली," बाऊकेन ने कहा। "तुम अब जितने अच्छे ढंग से काम शुरू कर सको, करो और हम तुम्हारी यथासंभव सहायता करते रहेंगे।"

* * *

अस्क़ार के जाने के बाद अन्य स्नातक भी काम पर चले गये। एक सप्ताह के अन्दर विश्वविद्यालय के छात्रावास में जोमार्त के पुराने सहपाठियों में से एक भी न रहा। व्याख्यानालय धीरे-धीरे पत्राचार-पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों से भरने लगे, जो घबराये हुए इधर-उधर दौड़ते रहते थे और अधिक मिलनसार नहीं थे। छात्रावास के गलियारों में भीरू, शर्मीले और शान्त प्रवेशार्थी दिखाई देने लगे। सार्वजनिक पुस्तकालय के हॉल भी नये लोगों से भरे रहने लगे। अब जाने-पहचाने चेहरे बिरले ही दिखाई देते थे, पुस्तकाध्यक्ष भी अपनी जगह पर टेक्नीकल स्कूलों के प्रशिक्षणार्थियों को छोड़कर छुट्टी पर चले गये।

अस्क़ार के चले जाने के बाद जोमार्त को कुछ अजीब-सी उलझन महसूस होने लगी। पाण्डुलिपियों की पीली पड़ गयी फ़ाइलें उलटते-पुलटते उसका दिल ऊबने लगा। बिना किसी विशेष रुचि के वह दिन भर "अगान्योक" (प्रकाश) पत्रिका के पन्ने उलटता-पुलटता रहता और शाम को अपने ख़ाली कमरे में लौटकर किवाड़ भीतर से बन्द करके बिस्तर बनाये बिना ही पलंग पर पड़ जाता।

वह बिलकुल बदल गया, एकाएक उसे अकेलापन महसूस होने लगा और उस पर उदासी छा गयी। केवल एक बार जब उसे एक समाचार पत्र में पुरातत्विक खोजों की नयी विधा — अन्तर्जलीय पुरातत्व के बारे में एक छोटी-सी टिप्पणी मिली, तो वह उसमें खो गया और दो दिनों तक इस विषय पर नयी सामग्री खोजता रहा।

वह अन्तर्जलीय अन्वेषक दल के कार्यों का विवरण बड़े उत्साह से पढ़ता रहा, जिसके अन्तर्गत समुद्र और महासागरों में डूबे दसियों जहाज़ों को तल से ऊपर उठाया गया था, अकदमीशियन ओरबेली के लेख, बूग्स्क में उनके द्वारा खोजी गयी डोंगी और पनडुब्बों की खोजों का वर्णन पढ़ता रहा। वह इस्सीक-कुल के तल में डूबे चिगूचेन शहर के इतिहास के बारे में जानने की कोशिश करता रहा। उसने ओल्ड्रिज़ की पुस्तक "पानी के

नीचे शिकार" एक ही बैठक में पूरी पढ़ डाली और उस अंश को भी कापी में उतार लिया जिसमें ओल्ड्रिज ने सुखूमी की खाड़ी के तल में सूरज की झिलमिलाती किरणों के प्रकाश में एक आदमी को सीधे खड़े देखने का ज़िक्र किया था। लेकिन जब वह उसके पास पहुंचा, तो मालूम हुआ कि... वह एक पुराने यूनानी घर की छत पर खड़ी प्रतिमा थी।

लेकिन यह शौक़ जल्दी ही ख़त्म हो गया और जोमार्त फिर खिन्न रहने लगा।

जोमार्त ने इतनी ऊब और इतना अकेलापन कभी महसूस नहीं किया था। उसके सूटकेस में उसकी उच्च श्रेणी में मिली उपाधि पड़ी थी, जिसे दिखाने पर उसे किसी भी शहर में नौकरी मिल सकती थी। लेकिन विश्वविद्यालय की नियोजन समिति की बैठक में उसे स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में दाख़िला देने की सिफ़ारिश की गयी थी।

उसके दोस्तों ने उससे विदा लेते समय कहा था कि वह भाग्यशाली है और वह स्वयं भी अपने को भाग्यशाली समझा था। वह प्रसन्न था और तुरन्त अपने शोध-निबंध का विषय चुनकर समय बिना गंवाये काम शुरू कर देने की बात सोच रहा था। लेकिन दोस्तों से बिछड़ते ही उसकी सारी योजनाएं गड़बड़ा गयीं। उसे ख़ास तौर से अस्कार की कमी बहुत ख़ल रही थी।

अब वह उसके साथ न जाने के लिए अपने को कोसने लगा। अपने को किताबी कीड़ा और हवाई क़िले बनानेवाला कहने लगा।

अपने विद्यार्थी जीवन की यादें उसके दिमाग़ में फिर से उभरने लगीं। ज़उरेश के साथ बिताये दिन उसे अकसर याद आने लगे। उसकी मुस्कान, दृष्टि और इशारे उसकी चेतना में स्पष्ट थे। उसे अपना बचपन याद आ गया। एक बार लड़के पहाड़ों पर जाने लगे। ज़उरेश भी उनके पीछे-पीछे चल दी। लेकिन जोमार्त ने उसे उपदेशात्मक स्वर में कह दिया कि वह लड़कियों को बिलकुल पसन्द नहीं करता, क्योंकि वे रोनी और डरपोक होती हैं और पहाड़ों पर चढ़ते समय परेशान करती हैं। ज़उरेश ने चुपचाप नज़रें झुका लीं और आंखें पोंछती हुई वहीं रुक गयी। जोमार्त उस क्षण को स्मरण कर मुस्करा उठा। फिर उसे ज़उरेश के साथ अपना पहला नाच याद आया। वह वसन्त की एक शाम की बात थी। दोपहर में बारिश हुई थी, जंगली स्ट्राबेरी के चौड़े-चौड़े पत्तों पर बड़ी-बड़ी पार-

दर्शक बूंदें पड़ी थीं। ज़उरेश नये जूते पहने खड़ी थी। जूतों के काटने और तंग होने की शिकायत कर वह काली चेरी के पेड़ के नीचे गीले पत्थर पर बैठ गयी थी।

"बहुत तंग हैं। बहुत दर्द हो रहा है। मेरी मदद करो," एक हाथ से जोमार्त का कोट पकड़कर वह झुकी।

जोमार्त को उसकी हथेलियों की तपिश महसूस होने लगी। ज़उरेश के बाल उसके चेहरे को गुदगुदा रहे थे। जब वह सीधी खड़ी हुई, तो जोमार्त ने पुराने ज़माने के फ़िल्मी अन्दाज़ में उसका हाथ चूम लिया और बोला कि उसने यह मज़ाक़ में किया था।

"यह बेवक़ूफ़ी का मज़ाक़ है!" ज़उरेश नाराज़ हो गयी।

जोमार्त को डर लगा कि वह यह बात अस्कार को बता देगी। वह बहुत पहले से जानता था कि अस्कार ज़उरेश को प्यार करता है और इसी लिए वह उसके साथ दोस्त की तरह व्यवहार करने की कोशिश करता था। लेकिन न जाने क्यों उनमें मन-मुटाव हो गया और वे अलग-अलग रहने लगे? इस बारे में उन्होंने उसे कुछ भी नहीं बताया था।

जिन दिनों ज़उरेश लेनिन्स्क में थी, जोमार्त ने अपने पत्र में उसे डायरी लिखने की सलाह दी। "रूसी भाषा में लिखा करो। इस तरह तुम्हें अपनी भाषा सुधारने में मदद मिलेगी। मैं भी डायरी लिखता हूं। इससे काफ़ी मदद मिलती है। जब हम मिलेंगे, तो एक-दूसरे को अपनी-अपनी डायरी पढ़ने को देंगे।" एक वर्ष बाद जब ज़उरेश अल्मा-अता आयी, तो उन्होंने अपनी डायरियों की अदला-बदली की और एक-दूसरे के राज़ किसी को न बताने का वायदा किया। पार्क में सायेदार बलूत के नीचे बैठकर जोमार्त ने धड़कते दिल से उसकी डायरी खोली। उसमें सारी बातें स्पष्ट रूप से लिखी हुई थीं। उसने उन्हें पूरा नहीं पढ़ा। रास्ते में दिखाई पड़े पहले टेलीफ़ोन-बूथ से ही उसने ज़उरेश के फ्लेट पर फ़ोन किया और उससे तुरन्त उसकी डायरी लाने और अपनी ले जाने को कहा।

"फिर कभी ले आऊंगी। इस वक़्त घटा छा रही है," ज़उरेश ने जवाब दिया।

"डरो नहीं, पिघलोगी नहीं," जोमार्त ने उसे टोक दिया।

जोमार्त का लहजा उसे अच्छा नहीं लगा। वह शायद इसी आशा से भागी चली आयी कि वह उसे अपनी अप्रत्याशित नाराज़गी का कारण बता-

येगा। लेकिन जोमार्त ने बिना कुछ कहे उसकी डायरी उसके हाथों में रख दी। ज़उरेश हैरान हुई कुछ देर खड़ी रही और फिर चली गयी।

यह सब हुआ केवल एक ही पंक्ति के कारण। ज़उरेश ने लिखा था कि जोमार्त की तुलना में अस्कार में अधिक मानवता है और अगर उससे चुनने को कहा जाये, तो वह अस्कार को ही चुनेगी।

फिर वह ज़उरेश के साथ पहले की तरह स्वाभाविक न रह सका, हालांकि अकसर उससे मिलने आता रहा। वह ज़उरेश के साथ अपने सम्बंधों के बारे में न सोचने की कोशिश करने लगा। अपने को भोला-भाला दिखाने की कोशिश में वह उसके सामने बुद्धुओं की तरह बकवास करने लगता, या फिर अपने ज्ञान का रोब जमाने की कोशिश करता।

ज़उरेश दिन भर पुस्तकालय में रूसी उपन्यास पढ़ती रहती। एक बार वह बड़े उत्साह से उन्नीसवीं शताब्दी के साहित्य के बारे में बोलने लगी, लेकिन जोमार्त ने उसी वक़्त उसकी बात काट दी:

"तुम दूसरे साहित्यों के बारे में बात करती रहती हो, लेकिन तुम अपना क़ज़ाख़ साहित्य भी पढ़ती हो? उन्नीसवीं शताब्दी हमारे साहित्य और संगीत के इतिहास का स्वर्ण युग था। इस्ताय और महमबेत ने विद्रोह किया था। उसी युग में हमारी जाति का जीवट और प्रतिभा स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आये।"

जोमार्त हमेशा की तरह अपनी बातों में खो गया और तब तक बोलता ही रहा, जब तक कि ज़उरेश ने उसे टोक न दिया।

"तुम्हारे लेक्चरों से तंग आ गयी हूं! तुम इतिहास और पुरातत्व विज्ञान के अलावा और किसी विषय पर इन्सान की तरह शान्ति से बोल सकते हो? अगर नहीं बोल सकते, तो चुप रहो, हमारे संस्थान में वैसे ही लेक्चरर बहुत हैं। क्या अस्क़ार और क्या तुम, दोनों ही एक से हो। एक गाता है, दूसरा गुनगुनाता है।"

जोमार्त को मालूम था कि ज़उरेश प्रायोगिक प्रशिक्षण के लिए दक्षिण के एक शहर गयी हुई है। यह शहर अलमा-अता के पास ही था। उसकी इच्छा हुई कि वह सब कुछ छोड़कर उसी क्षण उसके पास चला जाये।

उसकी भूली हुई किताबें और कापियां फ़र्श पर बिखरी पड़ी थीं। अस्तव्यस्त मेज़ पर खाने के सामान के ख़ाली डिब्बों, दही और बियर की ख़ाली बोतलों का ढेर लगा हुआ था। वह वास्तव में बहुत अधिक उदास

हो गया था। और अगर युवा-कम्युनिस्ट-लीग से एक लड़का उसे उनकी असाधारण बैठक में बुलाने न आ गया होता, तो शायद वह ज़उरेश के यहां या अक्तूमा चला गया होता।

बैठक में शहर में रह गये विद्यार्थियों को सामूहिक फ़ार्मों में फ़सल की कटाई पर भेजे जाने और एक बड़े कारख़ाने के निर्माण के समापन-समारोह में एक प्रतिनिधि-मण्डल भेजे जाने के प्रश्नों पर विचार किया गया।

विश्वविद्यालय का प्रतिनिधि-मण्डल युवा निर्माताओं को विद्यार्थियों द्वारा एकत्रित पुस्तक-संग्रह भेंट करनेवाला था, एक रंगारंग कार्यक्रम पेश करनेवाला और विभिन्न विषयों पर भाषण देनेवाला था। व्याख्याताओं की सूची में जोमार्त का नाम भी लिख दिया गया।

जोमार्त स्थिति में हुए इस अप्रत्याशित परिवर्तन से प्रसन्न हुआ। हवाई जहाज़ में बैठे-बैठे बादलों को उड़कर पीछे छूटते देखते समय वह ज़उरेश के बारे में ही सोच रहा था, लेकिन अब वह अलमा-अता लौट आने पर भावी भेंट के बारे में ही सोच रहा था। बीच-बीच में हवाई जहाज़ के पंख के नीचे बिखरे मरुस्थल के टीलों और मैदानों के दृश्यों को देखते हुए वह इतना खो जाता था कि ज़उरेश को बिलकुल ही भूल जाता था। उसने बालख़ाश झील की गहराई का अन्दाज़ लगाने की कोशिश की। तपते रेगिस्तान की जीवनविहीन पहाड़ियों के बीच कभी-कभी दिखाई पड़ जानेवाले मटमैले घरोंवाले नन्हे-नन्हे गांवों को देखकर उसका दिल बुरी तरह दुखने लगता था।

वह कारख़ाने में नयी शाप के उद्घाटन के कुछ समय पहले पहुंचा। उसे यह कार्य बहुत रुचिकर लगा और वह उसमें खो गया। निर्माण करनेवाले शाप को चालू करने की तैयारी में लगे थे, ख़राद मशीनों की जांच की जा रही थी और कर्मियों को क्रम से खड़ा किया जा रहा था।

जोमार्त के लिए यहां सब कुछ नया था। वह शाम देर हुए तक मशीनों के शोर से गूंजती शाप में प्रथम उत्पादन की तैयारी में लगे युवकों का काम देखता रहा।

दिन ढले जोमार्त युवाओं के छात्रावास में गया, जहां विभिन्न जनतंत्रों से निर्माण कार्य के लिए आये नौसिखियों के अनुरोध पर उसे क़ज़ाख़स्तान के बारे में भाषण देना था।

"वे लोग हमारे जनतंत्र के बारे में ज़्यादा से ज़्यादा जानना चाहते

हैं," निर्माण-स्थल की युवा-कम्युनिस्ट-लीग की शाखा के संगठनकर्त्ता ने उसे बताया। "इन्हें रोचक ढंग से सुनाइये।"

लेकिन जोमार्त घबरा गया। उन युवा और तगड़े लड़कों के सामने उसे अपनी कमज़ोरी महसूस होने लगी, उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह बात शुरू किस तरह करे। अन्य निर्माण स्थलों की तरह इस निर्माण स्थल के बारे में भी उसे समाचारपत्रों से मालूम हुआ था। "विशाल कारख़ाने का निर्माण कार्य पूरा हो गया।" पहले उसे ये शब्द भाषण के लिए आवश्यक शब्द लगते थे। लेकिन आज वह पहले की तरह नहीं बोल सका। रोटरी प्रेस में छपे और लेकचर ब्यूरो द्वारा अनुमोदित भाषण को वह धैर्यपूर्वक पढ़कर नहीं सुना सकता।

विश्वविद्यालय के पार्टी संगठन के अपनी ओर से कुछ न जोड़ने के निर्देश के विरुद्ध जोमार्त ने क़ज़ाख़स्तान के बारे में अपने शब्दों में ही बोलने का निश्चय किया।

सुबह जोमार्त दुबारा कारख़ाने गया। एक कोने में खड़ा होकर वह युवा गैस इंजीनियर के काम को श्रद्धा भाव से देखता रहा। वह अपने पसीने से लथपथ चेहरे को पोंछता हुआ एक उपकरण से दूसरे के पास भाग रहा था और निर्देश दे रहा था। उसे अपने चारों ओर डायलों और उपकरणों की सूइयों के अलावा और कुछ नहीं दिखाई दे रहा था। जोमार्त ने उसे मोटी कार्य-दैनिकी, जिस पर 'शॉप नम्बर १ की कार्य-दैनिकी' लिखा था, घबराहट से कांपते हाथों से खोलते और लिखते देखा: "६.३७ शाम को शॉप चालू की गयी..."

"कितना सौभाग्यशाली है! उसने इस कार्य-दैनिकी में पहला इन्दराज किया है," जोमार्त को उससे ईर्ष्या हुई, "लेकिन शायद उसे इस बात का ख़याल भी नहीं आ रहा होगा कि इस तरह इतिहास लिखा जाता है।"

"चलिये, शॉप में चलिये। ऐसा अवसर गंवाना नहीं चाहिए। कारख़ाने में उत्पादन शुरू हो रहा है!" गैस-इंजीनियर ने जोमार्त को आवाज़ दी।

जोमार्त किवाड़ को ठेलकर लोगों से भरे संकरे गलियारे में भागता हुआ शॉप की ओर लपका। बढ़ते हुए शोर और लोहे की खड़खड़ के बीच उसे हर्षनाद और तालियों की गड़गड़ाहट सुनाई दी। ऊपर के गलियारों

में, लटकी हुई विशाल क्रेन की केबिन में और उसके दोनों ओर की रेलिंग पर—सब जगह लोग खड़े थे। उसकी आंखों के आगे शॉप में जीवन संचार हो रहा था। जोमार्त को वह दृश्य याद आ गया, जब "इंजीनियर" अक्शाल के अपने हाथों से बनाये भट्ठे में आग जली थी और उन्होंने अक्तूमा के पहाड़ों में मिला चूना-पत्थर उसमें पकाया था। लेकिन वह छोटा-सा भट्ठा इस विशाल शॉप की तुलना में कुछ भी नहीं लग रहा था।

शोर से गूंजती इमारत को अपने प्रकाश से आलोकित करता, चारों ओर लपटें बिखेरता पिघला हुआ धातु सुनहरे गाढ़े लसदार शहद की तरह नाली में से होकर धीरे-धीरे बहने लगा। शॉप कानों के परदे फाड़ देनेवाले "हुर्रा!" के हर्षनाद से गूंज उठी, लोग एक दूसरे को बधाई देने लगे और संकोची लड़कों के हाथ पूरे ज़ोर से दबाने लगे।

जोमार्त उन लड़कों को बड़ी ईर्ष्यालु दृष्टि से देख रहा था। उसे अब शोर नहीं सुनाई दे रहा था, न ही वह यादगार के तौर पर ढाले जा रहे क़ज़ाख़ी अलंकरणवाले फलकों को देख रहा था।

जोमार्त के साथ ही बूढ़ा निर्माता खड़ा था, जिसे वह समाचार पत्रों में छपे उसके फ़ोटों से जानता था। वृद्ध अपनी घनी भौंहें सिकोड़े ठीक अपने सामने से बहकर आती हुई पिघले धातु की धार को देख रहा था और होंठों ही होंठों में कुछ बुदबुदा रहा था।

"आप क्या कह रहे हैं, अता?" जोमार्त ने शोर को दबाते हुए ज़ोर से पूछा।

"सोच रहा हूं, बेटा," भट्ठी पर काम कर रहे एक मज़दूर को देखते हुए वृद्ध ने कहा। "मैं बचपन से ही यहीं रहता हूं। अपनी जवानी के दिनों में एक छोटी-सी फाल को पाने के लिए मुझे ज़मींदार के यहां डेढ़ साल तक काम करना पड़ा था। इतनी छोटी-सी मुड़ी हुई, भोथरी और ज़ंग लगी हुई फाल को पाने के लिए," वृद्ध ने फफोलों से भरी अपनी खुरदुरी हथेलियां उसे दिखाईं। "और अब देखो!" उसने सिर से उस ओर इशारा किया, जहां से अभी भी पिघला धातु आग के चश्मे की तरह फूटा पड़ रहा था। "देखो कैसे बहता आ रहा है! ऐसा यहां पहले कभी देखने में नहीं आया था," वृद्ध ने आश्चर्य से अपनी ज़बान टकटकायी।

एक युवक उसके पास आया। वह यादगार के फलक ढालनेवालों में से एक था। वृद्ध ने उसका आलिंगन कर लिया।

"शाबाश! बेटा, मेहमान को अपनी शॉप के बारे में बताओ," उसने जोमार्त की ओर इशारा किया।

"आप अक्तूमा से हैं?! कितनी ख़ुशी हुई आपसे मिलकर!" जोमार्त के साथ परिचय होने पर युवक बहुत प्रसन्न हुआ। "जानते हैं, कैसा दिन है यह मेरे लिए? अगर मैं अपने गांव में इस बारे में सुनाऊं, तो कोई भी विश्वास नहीं करेगा। मैं तुन्कुरूस से हूं। हमारे गांव पास-पास हैं। क्या आप जल्दी ही अपने घर लौटेंगे? मेरी आपसे एक विनती है," लड़का जल्दी से अपने विशाल कोट की जेब टटोलने लगा। "जब आप तुन्कुरूस से गुज़रें, तो हमारे घर होकर जाइये। और यह चीज़ मेरे बाबा अक्शाल को दे दीजिये। उन्हें बता दीजिये कि यह क़ज़ाख़ मगनीतका में ढाले गये सबसे पहले धातु का टुकड़ा है और इसे मैंने ढाला है। कह देंगे न? वे बहुत ख़ुश होंगे।"

"मैं तुम्हारे बाबा को जानता हूं। उन्हें 'इंजीनियर' कहते हैं। उन्होंने अकाल के दिनों में अक्तूमावालों के लिए चूना तैयार किया था।"

"उन्हीं की इच्छा थी कि मैं धातु-कर्मी बनूं। उन्हें आपसे मालूम पड़ जायेगा कि सब ठीक है। ऐसा तोहफ़ा मिलने पर वे बड़े ख़ुश होंगे। आपका क्या ख़्याल है?"

"मैं उन्हें सब कुछ बता दूंगा," जोमार्त ने बिना इस बात का ख़याल किये कि वह उसके गांव में जायेगा भी या नहीं, जवाब दिया।

"रेलगाड़ी में बैठे-बैठे जोमार्त अकसर अपनी जेब में हाथ डालकर काग़ज़ में लिपटे धातु के शीतल चपटे टुकड़े को छू-छूकर मुस्कराता रहा।

"मैं अस्कार को इस बारे में विस्तार में लिख दूंगा और यह तोहफ़ा भेज दूंगा। वही तुन्कुरूस जाकर अक्शाल को ख़ुश कर देगा," जोमार्त सोचता रहा।

यही सोचते-सोचते उसने छात्रावास के दरबान से चाबियां और अस्कार का पत्र ले लिया।

"आख़िर तुम्हें कुछ पंक्तियां लिखने का समय मिल ही गया! वैसे मुझे यह पत्र नहीं लिखना चाहिए था, क्योंकि अभी तक तो तुमने मुझे एक छोटा-सा पत्र लिखने की कृपा भी नहीं की," अस्कार ने लिखा था। "तुम फिर अपने सपनों और किताबों में खो गये होगे। उन्हें ज़रा एक मिनट के लिए एक ओर हटाकर मेरा सन्देश ध्यान से पढ़ लेना। यहां कोई ऐसा

आदमी नहीं है, जिससे दिल खोलकर बात कर सकूं। इसीलिए मैंने तुम्हें पत्र लिखने का निश्चय किया। अपनी पढ़ाई के दिनों में हम अकसर अक्तूमा को याद किया करते थे, उसकी अच्छाइयां भी गिनाते थे और बुराइयां भी। आखिरकार मैं उन लोगों के पास लौट आया हूं, जिन्होंने बचपन में मेरी मदद की थी। अब तुमसे क्या छुपाऊं, यहां हर चीज़ मेरी आशा से भी बुरी निकली। कच्ची ईंटों के तंग और गंदे घरों में क़दम रखते समय बहुत ही बुरा लगता है। यहां से सिर पर पांव रख कर भाग जाने को जी करता है। लेकिन भाग नहीं सकता। काम ढंग से नहीं हो पा रहा है। यहां ज़रूरत है ठोस काम की। सब कुछ तोड़कर नये सिरे से बनाने की ज़रूरत है। और इस तरह की योग्यता मुझमें नहीं है। यहां ख़ाली बातों से काम नहीं चलेगा, बल्कि भारी आर्थिक सहायता की ज़रूरत है। कल मैंने घर-घर जाकर स्कूल जाने योग्य आयु के बच्चों के नाम लिखे, गिना तो मालूम पड़ा आठ बच्चे स्कूल नहीं जा रहे हैं। मुझे मालूम पड़ा कि लोग अपने बच्चों को पढ़ने के लिए शहर भेजने से डरते हैं: उच्च शिक्षा संस्थान या विद्यालय पास करने के बाद कोई घर नहीं लौटना चाहता। अगर आ सको तो चले आओ। ख़ुद देख लोगे। कम-से-कम हम लोगों को सलाह तो दे दोगे।"

जोमार्त ने कपड़े भी नहीं बदले। उसने चाबियां दरबान को वापस कर दीं और स्टेशन जाकर अक्तूमा का टिकट ख़रीद लिया।

* * *

टोली के मुखिया बाऊकेन ने स्कूल की मरम्मत करने सपार और ये-गोर बढ़ई को भेजा।

अस्कार काफ़ी देर तक पीले पड़ गये और सूखकर कांटा हुए येगोर चाचा के चेहरे को देखने के बाद ही पहचान पाया कि यह सामूहिक फ़ार्म का वही मोटा-ताज़ा और ज़िन्दादिल कर्मी है जिसने उसे पहाड़ों में चूना पकाने के दिनों में ख़मीरे आटे के टुकड़ों से बना शोरबा खिलाया था। बाद में बाऊकेन ने उसे बताया कि येगोर कई साल पूर्व अक्तूमा में आकर बस गया है। यहां तरकारियों की खेती करता है और हरे-भरे घास के मैदान में बने कच्ची ईंटों के छोटे-से घर में रहता है। उसके दो बेटे थे।

बड़ा बेटा मोर्चे पर मारा गया। छोटा बेटा सैनिक सेवा के बाद वापस नहीं आया, उसने विवाह कर लिया और वोरोनिझ प्रांत में ही कहीं बस गया है।

येगोर और सपार ने जल्दी ही डेस्कों की मरम्मत कर उन पर रंग कर दिया। लेकिन फ़र्श, किवाड़ों और छत की मरम्मत के लिए तख़्तों की ज़रूरत थी। किसी ने बताया कि तख़्ते कुगालिन्का नदी पर बन रहे नये राजकीय फ़ार्म में मिल सकते हैं।

येगोर और सपार राजकीय फ़ार्म पर गये। लेकिन उन्हें तख़्ते नहीं दिये गये। वे गुम-सुम और खीझे हुए वहां से लौटे।

"किसी के आगे हाथ पसारने की ज़रूरत नहीं है। किसी ने हमारे लिए इमारती लकड़ी तैयार करके नहीं रखी है। हमें ख़ुद को ही तैयार करनी पड़ेगी," सपार ने बाऊकेन से कहा।

"लेकिन लोग कहां से आयेंगे?" बाऊकेन ने उदासी से पूछा। "आप को ख़ुद ही जाना पड़ेगा, और कोई है भी नहीं, सब गेहूं की फ़सल काटने में लगे हैं। वैसे कुछ देर इन्तज़ार करके इमारती सामान का सवाल कार्यालय की बैठक में रखना और ज़िले की अन्य संस्थाओं से मांगना बेहतर होगा।"

"अरे छोड़ो... मैं जानता हूं ऐसी बैठकों और उनमें होनेवाले फ़ैसलों को," सपार ने हाथ झटककर कहा। "ऐसे तो इमारती लकड़ी एक साल में भी नहीं मिलेगी। और वक़्त निकला जा रहा है, कुछ ही दिनों में बारिश का मौसम आ जायेगा। छत को जल्दी से जल्दी ढकना ज़रूरी है। हम कोई अच्छा-सा लट्ठा लाकर ख़ुद ही तख़्ते बना लेंगे। अस्कार को हमारे यहां रखने के लिए उसकी मदद करना ज़रूरी है। नहीं तो मैं देखता हूं लड़के के दिल में शुबहा पैदा होने लगा है।"

अस्कार में वास्तव में परिवर्तन आ गया था। उसका उत्साह ठण्डा पड़ गया था, उसकी आँखों में थकान और उदासी दिखाई देने लगी थी। उसे लग रहा था जैसे अपने दोस्तों, शहर, थियेटर और सिनेमा को छोड़े दो महीने नहीं, पूरा एक साल बीत चुका है। धीरे-धीरे उसका जीवन भी वैसा ही नीरस हो गया, जैसा कि गांव के सारे लोगों का। अब वह अकेला रहने से डरने लगा था, कुछ घंटों के लिए भी बेकार बैठने से घबराने लगा था। अगर पहले वह सन्तोषपूर्वक काम करता था, तो अब दिल

में उठ रही तरह-तरह की आशंकाओं को और उदासी दूर करने के लिए ही मेहनत कर रहा था। वह दो बार ज़िला मुख्यालय हो आया था। पहली बार वह ज़िले के डाक-तार संचालक से यह मालूम करने गया था कि अक़्तूमा में समाचार पत्र दो सप्ताह देर से क्यों पहुंचते हैं।

डाक-तार विभाग के कर्मचारी ने हैरानी से उसकी ओर देखकर पूछा,

"आप क्या आसमान से उतरे हैं? मास्को से आपके अक़्तूमा तक अभी कोई "TU" हवाई जहाज़ नहीं जाता। समाचार पत्र समय पर पहुंचते हैं। आप विलंब की शिकायत बेकार ही कर रहे हैं।"

पोस्ट-मास्टर अस्कार को उत्साहपूर्वक समझाने लगा कि पत्र-पत्रिकाएं कहां छपते हैं और उन्हें ग्राहकों तक किस प्रकार पहुंचाया जाता है।

"शहरों में उन्हें हवाई जहाज़ से पहुंचाया जाता है, ज़िला मुख्यालयों और बड़े गांवों में मोटरगाड़ियों से, आगे घोड़ागाड़ियों से और पैदल।"

एक बार अस्कार ज़िले के सांस्कृतिक विभाग में पता लगाने गया कि क्या वहां अक्तूमा के लिए फिल्म प्रोजेक्टर आदि ख़रीदे जा सकते हैं। उसके इस सवाल ने फिर सब लोगों को हैरानी में डाल दिया।

"सिनेमा उपकरण केवल सौ से ज़्यादा घरोंवाले गांवों को ही दिया जाता है। लेकिन, नौजवान दोस्त, आपके अक्तूमा में तो सत्तर घर भी नहीं हैं। आप तो पढ़े-लिखे आदमी मालूम देते हैं, आपको तो मालूम होना ही चाहिए कि सिनेमा-उपकरण किसी को निजी तौर पर नहीं बेचे जाते।"

दफ़्तर के किवाड़ बन्द करते समय अस्कार ने अपनी पीठ पीछे किसी को दबी ज़बान में कहते सुना,

"यह तो वही है जो विश्वविद्यालय की पढ़ाई समाप्त करने के बाद अक़्तूमा के प्राथमिक स्कूल में काम करने आया है। सनकी है, काश मेरे पास भी इसकी जैसी डिग्री होती!"

अस्कार इस बात का आदी हो गया था कि बहुत-से लोग उसे सनकी समझते हैं, लेकिन वह इस पर ध्यान नहीं देता था। किसी न किसी तरह समय काटने के लिए वह पाठ्य-पुस्तकें जमा करने लगा, चाक्षुष उपकरण तैयार करने लगा और अपने भावी छात्र-छात्राओं से मिलने लगा।

हर जगह जीने का ढंग एक-सा ही था। मिट्टी का फ़र्श छोटी-सी नीची गोल मेज़। कुछ घरों में रेडियो भी दिखाई देते थे, लेकिन उनसे लाभ

क्या था, सबकी बैटरियां तो बहुत पहले ही ख़त्म हो चुकी थीं। शहर में रहनेवाले लोगों को अपने रेडियो सेटों के लिए इस तरह की समस्या का सामना नहीं करना पड़ता, क्योंकि वहां बिजली है। अक्तूमा को तो किसी ऐसे आविष्कारक के पैदा होने तक इन्तज़ार करना पड़ेगा, जो उन जगहों के लिए जहां बिजली नहीं पहुंची है, रेडियो के लिए कभी न ख़त्म होनेवाली बैटरियों का आविष्कार कर सके।

पहले अस्कार को अक्तूमा में जो कुछ अच्छा लगता था, देहाती जीवन की जो विशेषताएं उसे नज़र आती थीं, वही अब उसके लिए असह्य हो उठा।

गांव का युवक वर्ग अभी भी उसी तरह अपना जी बहलाता था, जिस तरह अस्क़ार अपने बचपन में बहलाया करता था। सप्ताह में एक बार किसी न किसी के घर में "बैठक" होती थी। वे गोश्त खाते, चाय पीते और धुएं व भाप से भरे उसी तंग कमरे में बैठे-बैठे गाने गाते। कभी-कभी चांदनी रात में आक़-सुएक भी खेलते।

लड़के सभी अच्छे थे। वह उन्हें खेतों में देखता था, वे उसे सामूहिक फ़ार्म के तेज़ घोड़ों के बारे में बड़े उत्साह से बताते, शिकार और चरवाहों के जीवन के रोचक क़िस्से सुनाते। गांव के जीवन के बारे में भी बहस होती थी। लेकिन अपनी बातचीत के अन्त में सबकी ज़बान पर यही सवाल होता कि आगे कैसे जिया जाये। अक्तूमा का अपना क्लब, अपना सिनेमा होगा या नहीं? क्या ज़िन्दगी के इस ढर्रे को बदलना सम्भव होगा? अस्क़ार के समवयस्क, उसका बहुत आदर करते थे, हर काम में उसका समर्थन करने को तैयार थे। लेकिन अस्क़ार की समझ में नहीं आता था कि शुरू कहां से करे। केवल एक ही काम था उसके सामर्थ्य में – नयी पुस्तकें जमा करना। उसने एक छोटा-सा पुस्तकालय बना लिया और पुस्तकों को पाठकों के सुभीते के लिए स्कूल में शेल्फ़ों में रखवा दिया। उसने सपार-अग़ा के साथ इमारती लकड़ी तैयार करने के लिए ख़ुद जाने का फ़ैसला किया। इसमें कम-से-कम एक सप्ताह लगेगा, इस बीच वह हर चीज़ के बारे में भली-भांति सोच-विचार कर सकेगा, सपार से अकेले में सलाह-मशविरा करेगा, पर्वतीय हवा में सांस लेगा और जंगल का आनन्द लेगा।

एक अच्छी टोली बन गयी। उनके साथ येगोर चाचा और सामूहिक फ़ार्म के भण्डार का चौकीदार ममीरबाय भी जानेवाले थे।

कुल्हाड़ियों की धार तेज़ की गयी, आरे जमा किये गये और कुछ अतिरिक्त घोड़े लेकर वे तीन दोपहिया गाड़ियों में तड़के ही अक्तूमा से निकल पड़े।

आगेवाली गाड़ी में अस्क़ार के साथ कोदार बैठा था। वह बड़ी जल्दी अस्क़ार से घुल-मिल गया, दिन भर उसी के साथ रहने लगा। वह उसी के साथ सामूहिक फ़ार्म के केन्द्र, खेत, टोली के कैंप और ज़िला मुख्यालय जाता। वैसे अस्क़ार को भी लड़के से काफ़ी लगाव हो गया था।

कोदार सच्चे माने में उसका सहायक हो गया। बाऊकेन ने, जो घोड़ा स्कूल की मरम्मत हो जाने तक के लिए अस्क़ार को दिया था, उसकी संभाल की पूरी ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ले ली।

जैसे ही कोदार को मालूम पड़ा कि अस्क़ार इमारती लकड़ी लाने जा रहा है, वह रात को ही सपार के पास जाकर रोने लगा, जिससे कि वृद्ध को उसे अपने साथ ले चलने के लिए आसानी से मना ले।

रास्ता जाना-पहचाना था। शुरू के लगभग बारह किलोमीटर वे लोग पहाड़ों के सहारे-सहारे चले, तुन्कुरूस और जेलान्दी पीछे छोड़ने के बाद एकाएक दक्षिण की ओर मुड़ गये और वर्षा के नालों से कटे पुराने कच्चे रास्ते से ऊपर चढ़ने लगे। खड़ी चढ़ाई थी, रास्ते में रुक-रुककर पहियों के नीचे पत्थर रखने पड़ रहे थे, जिससे कि घोड़े कुछ देर सुस्ता लें। उन्होंने ऊंचाई पर से तेज़ी से बहते हुए छोटे-से पहाड़ी नाले के किनारे पड़ाव डाला। अलाव जलाया और चाय की केतली निकाली। कोदार ऊपर चढ़कर देगची में मोटी-मोटी काली बेरियां भर लाया।

जुन्गारा के पहाड़ों में शरत् ऋतु हमेशा बड़ी उदार होती है। नीचे मैदानों में गेहूं के खेत और सूखी घास की टालें दिखाई देती रहती हैं। पहाड़ी रास्तों के किनारे-किनारे जंगली सेब और श्वेतकण्ट की कंटीली झाड़ियां इधर-उधर उगी दिखाई देती हैं। कहीं-कहीं प्रथपर्णी उगी और हमेशा नम रहनेवाली रास्ते की काली मिट्टी पर जंगली फल अपने आप पक-पककर गिरते रहते हैं। वे बिना आवाज़ किये ढाल पर लुढ़कते हुए आस-पास की हवा में अपनी मादक गंध फैलाते रहते हैं। जंगली फलों को कोई नहीं चुनता। उन्हें यहां से कहीं ले भी नहीं जाया जा सकता। न अच्छी सड़कें हैं, न परिवहन और न ही कोई ख़रीदार।

अस्क़ार को बचपन में इन स्थानों की यात्रा करनी पड़ती थी, जमा-

न्तास चरागाह जाना होता था। तब वह कुछ समय मधु-मक्खी पालकों के साथ गुज़ारता था, जिन के घर पहाड़ी नालों के मुहानों के पास सदियों पुराने पेड़ों की छाया में बने हुए हैं। लेकिन उन दिनों की याद अब धुँध-ली पड़ गयी थी।

अपने जन्म स्थान की हर चीज़ उसे नयी लग रही थी, वह पर्वतों की रूपरेखा को बड़ी तन्मयता से देख रहा था, वादी के सौंदर्य का आ-नन्द ले रहा था।

"सपार-अग़ा, उस चोटी का नाम क्या है? .. और उस घाटी का?.. उस शृंग-पथ को ख़ान-किज़ी क्यों कहते हैं?" अस्क़ार अपने बचपन में सुनी बातों की याद ताज़ा करने के लिए पूछता रहा।

"कहते हैं ये चरागाह एक ख़ान की थीं। उसकी बेटी को गर्मियों में शृंग-पथ के पीछे नीले पठार में आराम करना अच्छा लगता था। उसके पास एक सफ़ेद ऊंटनी थी। एक बार शरत् ऋतु में ख़ान की बेटी मूसल-धार वर्षा में फंस गयी। बारिश के मौसम में पहाड़ों में ऊंट की सवारी करना बहुत ख़तरनाक होता है, वह बड़ा बेढब और बेबस हो जाता है और उसके पैर घास पर फिसलने लगते हैं। मूसलधार बारिश में सफ़ेद ऊंटनी नीचे लुढ़कने लगी।

नौजवान नौकर अपनी मालकिन को बचाने लपका। लेकिन बचा नहीं गया। ऊंटनी बिजली गिरने से फटे सेब के उस पेड़ से टकरायी, जो गह्वर के किनारे उगा हुआ था, लड़की उछटकर गह्वर में गिर गयी। नौ-जवान नौकर ख़ान के ग़ुस्से से डरकर अपने घोड़े पर बैठे-बैठे उसके पीछे कूद गया।

लोगों ने नीचे उतरकर उन्हें खोजा, लेकिन न लड़की की लाश मिली, न नौजवान नौकर की। पानी की तेज़ धार उन्हें पहाड़ी नदी तेन्तेक में बहा ले गयी और तेन्तेक अला-कूल झील में।

ख़ान ने हर साल गर्मियों में अपनी बेटी के मरने के स्थान पर आने के लिए रास्ता बनाने का हुक्म दिया। तभी से लोग इस शृंग-पथ को ख़ान-किज़ी कहने लगे।"

"यह दास्तान शायद इस रास्ते जितनी पुरानी है। इसकी मरम्मत कर-नी चाहिए, यहां सवारी करना बहुत ख़तरनाक है," अस्क़ार ने कहा। "आख़िर चरवाहे यहां तक कैसे पहुंचते हैं?"

"अरे बेटा, लेकिन लोगों में इतनी ताक़त कहां से आयेगी? लोग बड़ी मुश्किल से तो घास और अनाज काटने का काम कर पाते हैं, किसी किसी साल तो ज़रूरत लायक़ घास भी नहीं काट पाते। हमारी ज़मीन बड़ी उदार है, लेकिन मौसम मनमौजी है। फिर हमारे यहां मशीनें भी बहुत कम हैं। न यह सरी-अर्का है, न तुरगाय, न मिर्ज़ाचेल। हां, अगर जुन्गारा के पहाड़ों का अच्छी तरह अध्ययन किया जाये और उनके जंगली बाग़ों, मधुमक्खियों को पालने के स्थानों की ठीक से संभाल की जाने लगे, तो बिलकुल ही दूसरी बात हो। तब शायद रास्ते भी बन जायें। नहीं तो देखो कितनी क़ीमती चीज़ें बेकार जा रही हैं! ज़इली अलाताऊ से लेकर तारबाग़ताय तक के सारे पहाड़ घने जंगली बाग़ों से ढके पड़े हैं, लेकिन उनसे किसी को भी वास्ता नहीं है। यहां के सारे फल एक बड़े देश के लिए काफ़ी होंगे। कितने जानवर यहां पाले जा सकते हैं!"

"नये राजकीय फ़ार्म भी तो बनाये जा रहे हैं न? आप ख़ुद भी वहां कुछ दिन पहले लकड़ी लेने गये थे।"

"यह नया कहां है? सब फ़ैशन के दीवाने हैं। ज़रूरत हो या नहीं, लेकिन राजकीय फ़ार्म बनाना सभी चाहते हैं। कुछ पुराने सामूहिक फ़ार्मों को मिलाकर पशुपालक राजकीय फ़ार्म बना दिया गया है, बस यही 'नयी' बात है। अब इस फ़ार्म को थोड़ा बहुत इमारती सामान दिया जा रहा है और विशेषज्ञ भेजे जा रहे हैं। लेकिन उन लोगों से फ़ायदा ही क्या? जब हम उस राजकीय फ़ार्म में लकड़ी लेने गये तो, हमने ऐसे दो विशेषज्ञों को अपने-अपने सूटकेस उठाये पैदल लौटते हुए देखा। कहने लगे, हमें बिठा लो। मैं बुड्ढा भी बेवक़ूफ़ था, जो उन्हें अपनी गाड़ी में बिठा लिया। फिर एक ऐसी बात हुई कि अगर येगोर साथ नहीं होता, तो मैंने उन्हें चाबुक से पीट दिया होता।"

"छोड़ो, सपार, उनकी याद मत दिलाओ। वे आदमी थोड़े ही थे,' येगोर बाबा बोल उठा।

"आख़िर बात क्या थी?" अस्कार ने दिलचस्पी ली।

"वे हमें वापस आते समय मिले। मैंने उन्हें बिठा लिया। उनमें से एक पूछने लगा: 'बड़े मियां, क्या आप यहाँ काफ़ी दिनों से रह रहे हैं?' मैंने जवाब दिया: 'मेरी सारी ज़िन्दगी यहीं बीती है।' वे कहने लगे:

'आपको क्या? आप यहां के आदी हो चुके हैं। लेकिन हम इस उजाड़ में नहीं रह सकते।' मुझे उसका हमारे इलाक़े को उजाड़ कहना ही चुभ गया।"

सपार ने यगोर की ओर देखा और उसकी असन्तुष्ट मुखमुद्रा देखकर बोला,

"अच्छा, अच्छा, येगोर, आगे नहीं बताऊंगा। कहने का मतलब यह है कि हमने उनके सूटकेस नीचे फेंक दिये और ख़ुद आगे चल दिये। येगोर ने उन्हें ज़ोरदार डांट लगायी।"

अस्क़ार मन-ही-मन उन लड़कों को दोषी नहीं ठहराता। इस में कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि उन्हें यहाँ अच्छा नहीं लगा। सपार ने दूसरों की ज़िन्दगी तो देखी ही नहीं थी इसलिए वह नाराज़ हुआ।

"अल्लाह जाने उन्हें," सपार ने कहा। "जाते हैं तो जाएं। ज़मीन होगी, तो जोतनेवाला भी मिल जायेगा।"

"जब तक यह मालूम न हो कि आदमी कौन है, उसने कैसी ज़िन्दगी देखी है, वह क्या सोचता है, तब तक उसे दोष देना ठीक नहीं," ममी-रबाय सोच में डूबा हुआ बोला।

"नेक आदमी बुराई देखकर भागेगा नहीं," येगोर झुँझलाकर बोला। "तुम बेकार ही उनकी तरफ़दारी कर रहे हो।"

"मैं उनकी तरफ़दारी नहीं कर रहा हूं, लेकिन तुम्हारी बात को भी ठीक नहीं समझता हूं। कभी-कभी आदमी को समझ पाना मुश्किल हो जाता है। हो सकता है, उनकी बात सही हो," ममीरबाय ने ज़ोर देकर कहा।

"अच्छा सपना वही देखेगा, जो मेहनत से जी नहीं चुराता। मेरा मरहूम दोस्त नुकेश कहा करता था कि कायर का सपना क्षणिक और बेकार होता है," सपार ने कहा।

"अस्क़ार, तुम्हें उसकी याद है? हो भी कैसे सकती है। तुम बहुत ही छोटे थे। वह हमारे गांव का पहला मास्टर था। उसने बच्चों को ही नहीं, बड़ों को भी लिखना-पढ़ना सिखाया था।"

"मुझे याद है, सपार, मैं उनसे पहली क्लास में पढ़ा था। मेरे पिता मरने के कुछ दिन पहले मुझे उनके पास ले गये थे, मैं उस वक़्त सात साल का भी नहीं हुआ था।"

अस्क़ार को पुराने शिक्षक के साथ हुई अपनी पहली भेंट स्मरण हो आयी। यह बहुत पुरानी बात है। दिन साफ़ था, धूप खिली थी। छोटा-सा, दुबला-पतला फुरतीला वृद्ध पहला पाठ देने के बजाय बच्चों को पहाड़ पर ले गया था। इससे पहले अस्क़ार गांव के पास खड़े पहाड़ों की चोटियों पर कभी नहीं चढ़ा था। उसके लिए तो पास की पहाड़ी के पीछे की हर वस्तु रहस्यमय थी। सुबह जब वह आंखें मलता हुआ घर से बाहर भागकर आता, तो अकसर पहाड़ों की चोटियों को देखने लगता था। वह सोचता था कि पहाड़ की चोटी पर पहुंचकर आसमान को हाथ से छुआ जा सकता है और मुट्ठियों में ओले भरे जा सकते हैं।

वह अपने शिक्षक से पीछे न रह जाने के डर से जल्दी-जल्दी चल रहा था। शिक्षक उन्हें अपने गांव और उन स्थानों के बारे में बता रहा था। वह हर पौधे का और हर चिड़िया का नाम जानता था और इतने मनोरंजक ढंग से बता रहा था कि बच्चे दुनिया की सारी बातें भूलकर उसी की बातें सुन रहे थे।

पगडंडी ऊपर ही ऊपर चढ़ने का प्रलोभन दे रही थी। बच्चे जंगली रसबेरी की झाड़ियों में से रास्ता बनाते हुए निकटतम चोटी पर पहुंच गये, जहां से अद्‌भुत दृश्य दिखाई दे रहा था।

पीछे तलहटी के पास असीम और कहीं-कहीं कबूतर के रंग की धुँधली चादर से ढकी स्तेपी फैली हुई थी। आगे हरे-नीले रंग के शिखर फैले हुए थे और उनके पीछे हिमधवल शिखर थे। अस्क़ार ने आसमान को पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाया, लेकिन पकड़ नहीं सका। अपनी हथेली से सूरज की ओट कर उसने उस ओर दृष्टि डाली, जहां बादलों को छूती हुई सफ़ेद चट्टानें फैली हुई थीं।

शिक्षक उन्हें इन पहाड़ों के बीच में बिखरे क़सबों, गांवों, चश्मों, हिमसंहतियों से निकलनेवाली नदियों, हिमाच्छादित शिखरों के बारे में बता रहा था, और यह भी बता रहा था कि पृथ्वी गोल है। बच्चों के सामने से रहस्यमय परदा उठानेवाला शिक्षक जादूगर-सा लग रहा था।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि उस ज़माने में शिक्षक गांव में पहला आदमी था, जिसने दूसरों से ज़्यादा देखा और तरह-तरह की पुस्तकें पढ़ी थीं। अस्क़ार गाड़ी के पीछे-पीछे चलते हुए सोच रहा था कि अब वह बात नहीं रही, अब अपने व्यवसाय के बारे में जानना ही काफ़ी नहीं होता। यहां

शिक्षा की परिस्थितियां शहर और बड़ी बस्तियों के स्कूलों से बिलकुल ही अलग हैं। कुरेके ठीक ही कहता था कि यहां अभी लोगों में सभ्यता कम ही है। शिक्षक को इस खाई को पाटना होगा। वरना उसके छात्र-छात्राएं वह ज्ञान प्राप्त नहीं कर पायेंगे, जो शहरी बच्चों को आसानी से प्राप्त हो जाता है। इस मामले में शिक्षक को केवल शिक्षक ही नहीं, उद्यमी शिक्षक बनना होगा।

क्या मुझमें इसकी क्षमता है? क्या मुझे बच्चों से प्यार है? क्या मैं एक अच्छा शिक्षक बन सकता हूं? अगर मुझमें शिक्षक की प्रतिभा नहीं हुई, तो क्या मेरी विश्वविद्यालय की शिक्षा किसी काम आ सकेगी? क्योंकि यहां तो कोई भी माध्यमिक अध्यापन शिक्षा प्राप्त आदमी मुझसे कहीं ज़्यादा अच्छे ढंग से काम कर सकता है।

अस्क़ार को फिर ज़िले के सांस्कृतिक विभाग में और डाक-तार विभाग के संचालक के साथ हुई बातचीत याद आ गयी, जनतंत्र के शिक्षा मंत्रालय का बड़ी बस्तियों को ही सिनेमा-उपकरण दिये जाने के बारे में आदेश याद आ गया। उसने पूछा,

"सपार-अगा, कई सामूहिक फ़ार्मों को मिलाकर एक फ़ार्म बनाने का काम औपचारिक ढंग से क्यों किया गया है?"

"औपचारिक ढंग से तुम्हारा क्या मतलब है?"

"आपने सामूहिक फ़ार्म को बड़ा बनाये जाने यानी छः छोटे-छोटे गांवों को मिलाकर एक बड़ा गांव बनाये जाने का फैसला किया है, है न?"

"हां।"

"लेकिन वास्तव में अन्तर इतना ही हुआ कि हर गांव अब सामूहिक फ़ार्म के स्थान पर टोली कहलाने लगा है। एक दूसरे से अठारह किलोमीटर तक की दूरी पर बसे गांव वैसे ही छोटे-छोटे हैं। सब एक ही जगह पर रहकर एक बड़ा गांव बना लेते, तो ज़्यादा अच्छा रहता, इस तरह से दसवर्षीय स्कूल, छात्रावास, अस्पताल, क्लब सभी कुछ बनाया जा सकता है, सिनेमा-उपकरण भी ख़रीदा जा सकता है। तब ज़िन्दगी ज़रा ज़्यादा मज़े से बीतेगी।"

"लम्बे अरसे से एक ही जगह पर रहनेवाले लोगों के लिए उसे छोड़कर जाना आसान नहीं होता। सब से बड़ी समस्या है—रिहायशी घरों की। अगर तुम अपना मकान छोड़ दोगे, तो नयी जगह पर तुम्हारे लिए

मकान कौन बनायेगा? तुम ख़ुद ही देख रहे हो कि स्कूल की छत की मरम्मत के लिए हमें ऊबड़-खाबड़ कच्चे रास्तों से क़रीब-क़रीब आसमान तक चढ़ना पड़ रहा है। अगर इमारती सामान की समस्या हल हो जाये, तो फिर सारे काम दूसरे ही ढंग से होने लगें। हमारे गांव भी राजकीय फ़ार्मों की बस्तियां जितने बड़े हो जायेंगे। इस वक़्त न तो यह हमारे बस का काम है न ही ज़िले के अफ़सरों के बस का।"

सपार की बात का किसी ने प्रतिवाद नहीं किया। आगे सब मौन सफ़र करते रहे। घोड़े ज़रूरत से ज़्यादा न थक जायें इसलिए चढ़ाई का अधिकांश भाग पैदल चलकर ही पार किया गया। शाम होते होते चढ़ाई ख़त्म हो गयी और यात्रियों को अपने सामने लम्बा-चौड़ा नीला पठार दिखाई देने लगा।

ठंड हो गयी, बादलों से घिरी हिमाच्छादित चट्टानों की ओर से ठंडी हवा बहने लगी। आगे सर्दियों के पड़ावगाह तक न पहुंच पाये चरवाहों के तम्बू दिखाई पड़ रहे थे।

"ये हमारे चरवाहे हैं। रात उनके यहां गुज़ार लेंगे और कल काले पत्थरों की घाटी में पहुंच जायेंगे," सपार ने लगाम खींचते हुए कहा।

दो बड़े ज़बरदस्त रखवाले कुत्ते उनकी ओर लपके।

"ठहरो, शैतानो!" एक अधेड़ उम्र की स्त्री खेमे में से निकली। "आप बहुत ठीक वक़्त पर आये, बहुत अच्छा हुआ," उसने उनका अभिवादन करके कहा।

उसका चेहरा बर्फ़ीली हवाओं से काला पड़ गया था। अस्क़ार उसकी आंखें देखकर आश्चर्यचकित रह गया। कभी अत्यन्त आकर्षक रही उसकी काली आंखें जागते रहने से लाल हो गयी थीं। उसने पुराने मर्दाने कोट के ऊपर भेड़ की खाल का उतना ही पुराना ओवरकोट पहना हुआ था।

"क्या हुआ?" ममीरबाय ने अधीरतापूर्वक पूछा।

"तम्बू के भीतर आ जाइये," स्त्री ने जवाब के बजाय कहा।

"कोदारजान, घोड़ों को खोलो और कसकर गाड़ी से बांध दो। उन्हें थोड़ी देर सुस्ता लेने दो, फिर चरने के लिए छोड़ देना," सपार ने गाड़ी से नीचे कूदकर कहा।

तंग तम्बू में चार तह किये हुए मोटे नमदे के ऊपर एक आदमी रज़ाई

ओढ़े लेटा हुआ था। उसका चेहरा दिखाई नहीं दे रहा था, उसकी सांस भारी चल रही थी और वह कराहता हुआ करवटें बदल रहा था।

"ख़ुश रहो, कुरेके, क्या हुआ?" सपार ने बेचैनी से चरवाहे के चेहरे को देखते हुए कहा।

कुरेके ने रज़ाई में से हाथ निकालकर चमड़ी पर लाल धब्बे और दाने दिखाये।

"देखा? मैं दूसरे चरवाहों से पीछे रह गया था। मैंने भेड़ों को यहां दो दिन और चराने की सोची, तीसरे दिन तम्बू समेटने लगा, तो बीमार पड़ गया। एक भेड़ मर गयी। मैंने सोचा शायद उसने कोई ज़हरीली चीज़ खा ली होगी और उसकी खाल उतारने लगा। इत्तफ़ाक़ से मेरा हाथ कट गया। घाव छोटा ही लगा, लेकिन ख़ून में ज़हर फैल गया... यह देखो... अब मेरे रेवड़ को जानवरों के डाक्टर के जांच करने तक दूसरों से दूर रखना होगा। शायद सारे रेवड़ में ही कोई ख़तरनाक बीमारी फैल गयी है।"

"डाक्टर आया था?" अस्क़ार ने यह सवाल बीमार चरवाहे को देखते ही किया।

लेकिन किसी ने भी जवाब नहीं दिया। औरतों ने हैरत भरी नज़रों से उसकी ओर देखा, मरीज़ बड़ी मुश्किल से मुस्कराया।

"यहाँ डॉक्टर कहाँ से आयेगा, अस्क़ारजान?" सपार ने नाराज़गी ज़ाहिर करते हुए फुसफुसाकर कहा।

अस्क़ार शर्मिंदा हो गया। उसे यही चिन्ता लगी हुई थी कि वृद्ध की बीमारी संक्रामक हो सकती है।

सपार ने उसे निकट के तम्बू में भेज दिया। लेकिन उसमें भी एक बीमार लेटा था। उनके पहुंचने के कुछ घंटे पहले ही चरवाहे का पोता, वही जिसे कुरेके स्कूल में भरती नहीं करवाना चाहता था, अचानक बीमार पड़ गया।

"मुझे कौन-से पागल कुत्ते ने काटा था, जो मैं गांव लौट आया? यहां डाक्टर और पशुचिकित्सक की ज़रूरत है, मास्टर तो मेरे अलावा भी कोई न कोई मिल ही जाता," अस्क़ार तम्बू के चारों ओर चक्कर लगाता और तारोंभरे आसमान को देखते हुए सोच रहा था। उसे सपार के आने का पता ही नहीं चला और एकाएक उसे सामने देखकर वह चौंक पड़ा।

"दिन निकलते ही तम्बू खोलकर ऊंटों पर लाद देंगे, बुढ़िया के साथ भेड़ों की रखवाली कर रहा चरवाहे का सहायक भेड़ों को गांव हांक ले जायेगा," सपार ने कहा। "तुम और ममीरबाय बीमारों को गाड़ी में ले जाना। जैसे ही सुबह का तारा निकलेगा, कोदार को सबसे अच्छे घोड़े पर सवार कराके बाऊकेन के नाम चिट्ठी भिजवा देंगे, जिससे कि वह ज़िला मुख्यालय से डाक्टर को जल्दी से जल्दी बुलवा भेजे। कल रात हो-ते-होते तुम लोगों को गांव पहुंच जाना चाहिए, जल्दी करनी चाहिए। लक-ड़ी लेने मैं और येगोर जायेंगे। संभलकर जाना और जल्दी से जल्दी गांव पहुंचना। हम भी यथाशीघ्र लौटने की कोशिश करेंगे। कुरेके कहता है कि जंगल में जहां गाड़ी में जाया जा सकता है, वहां पेड़ काटे गये हैं और काले पत्थरों की घाटी में अन्दर जाकर आर्चा के बीच बर्च के नये पेड़ हैं।"

"नये पेड़ों को क्यों काटें?" अस्क़ार को आश्चर्य हुआ।

"क्या किया जाये," सपार ने एक गहरी सांस ली। "छोड़ो नये पेड़ों की बात, लेकिन कुरेके का बहुत अफ़सोस हो रहा है।"

"उसे कौनसी बीमारी लग गयी है?"

"मैं नहीं जानता बेटा, पता नहीं क्या बीमारी है।"

उसने तम्बू की दिशा में दृष्टि डाली तो अस्क़ार ने चांदनी में सपार-अग़ा की आंखों में उमड़ते आंसू देख लिये।

* * *

अस्क़ार ने ज़िन्दगी में अपने को कभी इतना लाचार और निकम्मा नहीं समझा था जितना कि अब। वह सख़्त बीमार अल्पभाषी बूढ़े और लड़के के पास बैठा था, जिसे अभी तक इस बात का ज्ञान भी नहीं हो पाया था कि मनुष्य के लिए जीवन क्या होता है। ममीरबाय आगे बैठा घोड़े हांक रहा था। वह चिन्ता के मारे बार-बार पीछे मुड़कर देख रहा था। बीमार सूखी घास पर लेटे थे। वे न कराह रहे थे, न किसी तरह की शि-कायत कर रहे थे।

अस्क़ार बालक की सहनशीलता देख हैरान था। उसके चेहरे का तनाव

ग्रौर ग्रांखों की गोल-गोल पुतलियों से दिख रहा था कि उसे कितना कष्ट हो रहा है।

ग्रस्क़ार को बूढ़े चरवाहे की दमेश-ग्रापा के घर में कही बातें याद हो ग्रायीं। हां, बच्चों को पाल-पोसकर बड़ा करना उसे वास्तव में ग्राता है। उसके पोते को ग्रपने पर नियंत्रण रखना ग्राता है, वह एक बांका नौज-वान बन सकता है। लेकिन वह गांव तक पहुंच पाने के पहले मर भी सक-ता है। काश, ग्रास-पास में कोई डाक्टर होता! ऐसे क्षणों में ग्रपने को लाचार ग्रौर ग्रनाड़ी लड़का महसूस करने पर कितना बुरा लगता है।

"हमारे गांव में डाक्टर होना चाहिए। कितना ज़रूरी है डाक्टर का होना!" ममीरबाय बार-बार ठंडी सांस लेकर कह रहा था। "हर बार डाक्टर को बुलाने ज़िला मुख्यालय जाना – भला यह कोई ग्रच्छी बात है!"

"हमें ग्रक्तूमा ले चलो!" कुरेके ज़ोर दे रहा था।

वे लोग जेलान्दी में बिना रुके ग्रागे बढ़ गये।

तुन्कुरूस में उन्हें बाऊकेन, जोमार्त ग्रौर कोदार मिल गये। कोदार सरपट घोड़ा दौड़ाता गांव पहुंच चुका था ग्रौर उसने बूढ़े की बीमारी की ख़बर वहां बता दी थी।

"तुम ग्रा गये, बहुत ग्रच्छा हुग्रा!" ग्रस्कार ने मित्र का ग्रालिंगन करते हुए कहा। "काश, तुम जानते कि मेरे दिल पर क्या गुज़र रही है।"

जोमार्त ने देखा कि ग्रस्क़ार दुबला हो गया है ग्रौर उसके बाल व दा-ढ़ी बढ़ गये हैं।

"मैं कल पहुंचा। मैंने ग्रौर बाऊकेन ने ज़िला मुख्यालय में टेलीफ़ोन कर दिया है। डाक्टर ग्रायेगा। तुम्हारा पत्र मिल गया था।"

जोमार्त गाड़ी के पास जा खड़ा हुग्रा।

"सलाम, ग्रता, सफ़र कैसा रहा? ग्ररे, ग्राप तो तगड़े लग रहे हैं, डाक्टर जल्दी ही ग्रापको ठीक कर देंगे," उसने बूढ़े को तसल्ली दिलाने की कोशिश करते हुए कहा।

कुरेके थोड़ा उठकर मुस्कराया ग्रौर उसने जोमार्त का ग्रभिवादन कि-या। बालक हिल-डुल नहीं रहा था। उसकी सांस भारी चल रही थी ग्रौर वह बार-बार पानी मांग रहा था।

"रास्ता ख़राब ग्रौर ऊबड़-खाबड़ है। क्या यहां मोटरगाड़ी मिल सक-

ती है?" अस्क़ार ने बाऊकेन से पूछा। "कोई मोटर गाड़ी में छोड़ आयें, अब सिर्फ़ दस किलोमीटर की दूरी और तय करनी है।"

"देखो, वहां दुकान के पास एक ट्रक खड़ी है। बाऊकेन-अग़ा, भागकर जाइये, आपको गाड़ी मिल जायेगी," कोदार ने कहा।

ड्राइवर फ़ौरन तैयार हो गया।

"मुझे सिर्फ़ अपने अफ़सर को बताना ज़रूरी है। वह नया आदमी है, बिगड़ सकता है। कहेगा, इजाज़त क्यों नहीं ली।"

"वह कौन है?"

"ज़िला उपभोक्ता संगठन का प्रधान। किसी से मिलने आया हुआ है। मैं एक मिनट में कहकर आया। तब तक आप ट्रक में सूखी घास फैलाकर बीमारों को लिटा दीजिये।"

बाबा और पोते को सावधानी से गाड़ी में लिटा दिया गया।

ड्राइवर बड़ी जल्दी लौट आया, लेकिन उसके चेहरे से लग रहा था कि वह अपने अफ़सर से लड़कर आया है।

"कहता है, सरकारी गाड़ी है, इसलिए आपको किराया देना होगा। कितनी शर्म की बात है," रेडिएटर में पानी डालते हुए ड्राइवर बड़बड़ाया।

"चलिये, जितना मांगेगा, दे देंगे।"

"मैं आपसे पैसे नहीं लूंगा। वह ख़ुद ही ले ले। देखो, वह आ रहा है।"

"अरे, यह तो अमीरबेक है!" बाऊकेन के मुँह से निकल गया।

"कौन?" ट्रक की बॉडी में से आवाज़ आयी।

कुरेके ने रज़ाई हटाकर सिर उठाकर देखा। उसे बहुत तेज़ बुख़ार था। उसका सारा चेहरा लाल हो रहा था, आंखें जल रही थीं। वह कांपते हाथों से ट्रक के तख़्ते का सहारा लेकर घुटनों के बल बैठ गया।

"आप चैन से लेटिये, अता। हम बस चलने ही वाले हैं," अस्क़ार ने कहा।

कुरेके ने उसकी बात नहीं सुनी। वह धीरे-धीरे उठ खड़ा हुआ। उसने सफ़ेद कुरता पहना हुआ था, उसके बाल सफ़ेद थे और आंखें सूजी हुई थीं। वह बड़ा डरावना लग रहा था। उसका चेहरा तमतमा उठा, आंखों में ग़ुस्सा चमक रहा था।

"हाय अल्लाह, तूने मेरे आख़िरी वक़्त में किस मनहूस से मिला दिया!" कुरेके ने कांपती आवाज़ में कहा।

ड्राइवर कुछ न समझ पाकर किंकर्तव्यविमूढ़ हुआ अपनी केबिन के पास खड़ा रह गया। अस्क़ार और जोमार्त चुप खड़े अमीरबेक को देखते रहे।

"मैं अपनी ज़िन्दगी का आख़िरी सफ़र इसकी मोटर में नहीं करना चाहता... यह हमेशा लोगों को दुख ही देता रहा है, मेरे गांव में एक भी आदमी ऐसा नहीं है, जो इसे न कोसता हो... मुझे घोड़ागाड़ी में लिटा दो..."

"सलाम, अक्तूमावालो। मुझे पता ही नहीं था कि आप लोग यहां हैं," अमीरबेक ने ग़ुस्से भरी नज़र से ड्राइवर की ओर देखा। "आपको क्या हुआ है, कुरेके?"

वृद्ध ने सीधे अमीरबेक के मुँह पर घृणापूर्वक कहा,

"अमीरबेक, पुराने ज़माने में कहते थे: जिसके दिल में रहम नहीं होता, वह कसाई है। शायद आज सूरज डूबते-डूबते मैं यह दुनिया छोड़ दूंगा। लेकिन मुझे तेरी हमदर्दी नहीं चाहिए। बेईमान आदमी की हमदर्दी से मेरी बेइज़्ज़ती होती है। तेरा न पहले कोई ईमान था, न अब है। तू हत्यारा है। जिस आदमी का लड़का मेरे पास खड़ा है, तूने धोखा दिया था उसे," गुस्से के कारण वृद्ध का पूरा शरीर कांपने लगा। "तूने सपार को भी बरबाद करना चाहा। मैं यह सबके सामने कह रहा हूं। लानत है तुझ पर!.. अगर मेरे बस में होता, तो मैं तुझे भी अपने साथ क़ब्र में ले जाता, ताकि तू इस धरती पर औरों की ज़िन्दगी तबाह न करे..."

"भागो यहां से!" बाऊकेन ने ग़ुस्से में अमीरबेक से कहा और कुरेके को शांत करते हुए लिटा दिया।

सब लोगों की तिरस्कारपूर्ण नज़रों से अमीरबेक सिर नीचा किये सबसे पासवाले घर के पीछे ओझल हो गया।

सब घोड़ों पर सवार हो गये और गाड़ी के पीछे-पीछे चलने लगे।

"क्या वह अभी भी अफ़सर बना घूम रहा है?" जोमार्त ने बाऊकेन से धीरे से पूछा।

"देख ही रहे हो। इस नीच के कारण मेरा इमारती सामान के लिए ज़िला उपभोक्ता संगठन तक जाने को दिल नहीं करता। क्योंकि किसी हालत में कुछ नहीं मिल सकेगा।"

डाक्टर दूसरे दिन सुबह आया। उसने आते ही बीमारों के साथ आ रहे लोगों के इंजेक्शन लगा दिये।

"कौन सी बीमारी है?" जोमार्त ने डाक्टर से अधीरतापूर्वक पूछा।

"बड़ी देर कर दी आप लोगों ने। यह बहुत ख़तरनाक बीमारी है। ख़ून में ज़हर फैलने लगा है। अब इसे रोका नहीं जा सकता। अस्पताल ले जाना बेकार होगा, बूढ़ा बहुत कमज़ोर है। लेकिन लड़के को अस्पताल में भरती कराकर इलाज कराना चाहिए। अपने चरवाहों के लिए घर बनाइये। इन्हें सर्दियों के पड़ावों और चरागाहों में बहुत पहले ही रोशनीदार, गरम और साफ़-सुथरे घरों में रखना चाहिए था, इस तरह की घटनाएं तभी कम हो सकेंगी।"

डाक्टर सारी रात बीमार के पास बैठा रहा।

शाम से ही आकाश में बादल छा गये और पहाड़ों की तरफ़ से ठंडी हवा बहने लगी। अक्तूमा के ऊपर लोहे के तार-सी पतली बिजली चमकी और उसके कड़कने की हल्की आवाज़ आयी।

"जल्दी से जल्दी खलिहान में पहुंचना चाहिए," बाऊकेन टटोलता हुआ घोड़ों के थान की ओर जा रहा था।" बारिश होनेवाली है। वह देर तक बरसती रहेगी। अनाज खुला पड़ा है।"

बिजली दुबारा चमकी, तो अस्क़ार और जोमार्त ने बाऊकेन को घोड़ा सरपट दौड़ाते सामूहिक फ़ार्म के कंप की ओर जाते देखा। दोनों दोस्त बिना कुछ बोले दमेश चाची के घर की ओर चल दिये।

"घुप्प अंधेरा है," जोमार्त किसी कड़ी-सी चीज़ से टकरा गया। "आख़िर लोग यहां रह कैसे रहे हैं?"

"आदी हो चुके हैं," अस्क़ार ने जवाब दिया।

उसी समय पास कहीं जेनेरेटर चालू होने की आवाज़ आयी और पास के खंभे पर बिजली का लट्टू धीरे-धीरे जल उठा। जेनेरेटर और तेज़ी से चलने लगा, राहगीरों को रास्ता दिखाई देने लगा, घरों की खिड़कियों में भी रोशनी चमकने लगी। हवा बहने लगी, एक सूखा पत्ता न जाने कहां से उड़कर अस्क़ार के चेहरे पर लगा।

"तुम कहते हो, ये आदी हो गये हैं," जोमार्त शायद फिर अपना दर्शन झाड़ने जा रहा था।

लेकिन उसी समय, जिस घर में बीमार लेटा था, उसका दरवाज़ा पूरा खुला। दरवाज़े पर हो रहे प्रकाश में डाक्टर दिखाई दिया।

"भाइयो, यहां आम्रो!" उसने आवाज़ दी।

अस्क़ार और जोमार्त को किसी अशुभ बात का पूर्वाभास हुआ और वे उसकी तरफ़ लपके।

"यहीं खड़े रहिये। इस वक़्त यहां से हटना नहीं चाहिए," डाक्टर ने कहा।

बीमार पैर पसारे लेटा था। उसकी आंखें अन्दर धंस गयी थीं, चेह-रा पीला पड़ गया था। कमरे के कोने में चरवाहे की बूढ़ी पत्नी सिसकि-यां भर रही थी। उससे कुछ दूरी पर दो स्त्रियां और एक बूढ़ा आदमी बैठा था, जो शायद कुरेके का दोस्त था।

डाक्टर सावधानी से बीमार का हाथ उठाकर उसकी नब्ज़ देखने लगा।

कुरेके ने धीरे-धीरे आंखें खोलीं और काफ़ी ज़ोर लगाकर सिर उठाने की कोशिश की, लेकिन उठा न सका। बुढ़िया ने रोना बन्द कर दिया। बीमार की आंखें डाक्टर पर टिकी थीं, उसके होंठ कुछ हिले और तना-वपूर्ण शान्ति में उसके शब्द सबको स्पष्ट सुनाई दिये,

"डाक्टर, लड़के को बचा लो। उसे पढ़ने देना, ज़रा रोशनी दिखा-ओ..." वह अपनी बात पूरी न कह पाया।

उसकी आंखें खुली ही रह गयीं, लेकिन अब वे कुछ नहीं देख रही थीं। डाक्टर ने सावधानी से मृत के माथे पर हाथ फेरा, उसकी भौंहों को छुआ और आंखों को बन्द कर दिया...

"सब ख़त्म," डाक्टर के शब्दों ने संकेत का-सा काम किया।

स्त्रियां रोने-बिलखने लगीं।

सारी रात लोग कुरेके के घर में आते रहे। लगता था जैसे उस रात इस छोटे-से गांव में कोई नहीं सोया, एक परिवार का दुख सारे अक्तूमा का दुख हो गया। सफ़ेद बालोंवाले डाक्टर को कई बार मौत के आगे अपनी हार स्वीकार करनी पड़ी होगी, लेकिन उसने कभी अपने को इतना दुर्बल और क्षुद्र नहीं समझा था जितना कि आज। वह अपने पैरों पर खड़ा न रह सका, उसके लिए रोती हुई औरतों को देखना मुश्किल हो गया, उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि अब किसी काम में न आ रहे अपने हाथों का क्या करे।

वह अपना एप्रन उतारना भूल बाहर निकल आया। किसी ने उसके कंधों पर गर्म ओवरकोट डाल दिया, एक औरत ताज़ा किमीज़ का प्याला लेकर आयी और धीरे से बोली,

"डाक्टर, आप बहुत थक गये हैं, थोड़ा-सा पी लीजिये।"

डाक्टर ख़ुद भी नहीं समझ पा रहा था कि क्यों वह अंधेरे में मैदान की ओर चला जा रहा है, जहां से घोड़े की नाल की आकार की खड़ी चट्टान के नीचे तेज़ी से बहती हुई अक्तूमा नदी का शोर स्पष्ट सुनाई दे रहा था।

"संभलकर, यहां नदी है, गिरने का ख़तरा है," अस्क़ार की आवाज़ से डाक्टर को होश आया।

"अच्छा, आप हैं, नौजवान दोस्त," डाक्टर इतना कहकर फिर अपने विचारों में खो गया।

अस्क़ार भी मौन था। प्रातःकालीन शीतल पवन का झोंका सीधा उसके चेहरे पर लग रहा था।

"हां, मैं कमज़ोर साबित हुआ," डाक्टर ने ओवरकोट को अपने कंधों पर और खींच लिया। "आख़िर मैं हूँ ही क्या? सिर्फ़ एक पेशेवर डाक्टर, आपके गांव के लोग शायद मुझे डाक्टर वासका के नाम से ही जानते हैं। अनुभवी से अनुभवी डाक्टर भी इस मौत को रोक नहीं सकता था! चिकित्सा-विज्ञान सर्वशक्तिमान नहीं है। वैसे उसका इससे वास्ता ही क्या है। नौजवान दोस्त, आप यह न सोचिये कि मैं अपनी सफ़ाई दे रहा हूं। इसकी जवाबदेही मुझसे नहीं औरों से तलब करनी चाहिए। उन लोगों से, जिन्हें कुरेके चरवाहे की ज़िन्दगी काफ़ी पहले बदल देनी चाहिए थी। आपसे भी मेरे दोस्त। आख़िर आप ही जैसे लोगों को तो इस सब का पुनर्निर्माण करना चाहिए। आप अक्तूमा के पुत्र हैं, विश्वविद्यालय की पढ़ाई पूरी कर चुके हैं, आप अच्छी तरह समझते हैं कि क्या भला है और क्या बुरा।"

"मैं अपना कर्तव्य नहीं भूला हूं। हम नये घर बनायेंगे," अस्क़ार भी डाक्टर की व्याकुलता से स्वयं व्याकुल हो उठा था। वह कहने ही लगा था कि डाक्टर ने उसे टोक दिया।

"बात सिर्फ़ नये घरों की या गांव के रंग-रूप की ही नहीं है। मनुष्य का बाह्य रंग-रूप हमेशा उसकी आत्मा के अनुरूप नहीं होता।"

"लगता है आपको चेख़व बहुत पसन्द है, डाक्टर?" अस्क़ार नें डा-क्टर को तसल्ली दिलाने और अपने को कटु बात कहने से रोकने के इरादे से बातचीत का रुख़ मोड़ना चाहा।

"अभी तो अक्तूमा के लिए आबाय की रचनाएं समझ पाना ज़्यादा आसान है। लेकिन हर शिक्षित आदमी को सब सुन्दर वस्तुओं के लिए संघर्ष करना चाहिए। और आप जैसे लोगों को तो सबसे पहले करना चा-हिए। तब हमें ज़िला मुख्यालय से घोड़ा दौड़ाकर अक्तूमा नहीं आना पड़ा करेगा। मैं यहां पहली बार नहीं आया हूं। जहां तक गांव के रंग-रूप का प्रश्न है, तो वह बदल गया है। यहां नये घर बन रहे हैं। यह सच है कि और गांवों के मुक़ाबले ज़रा धीमी गति से बन रहे हैं, लेकिन बन रहे हैं। लेकिन लोगों का रहन-सहन पहले जैसा ही है। आपने विश्ववि-द्यालय में शिक्षा पायी है, और आप 'सभ्यता' का अर्थ बहुत अच्छी तरह समझते हैं। ऐसा काम कीजिये, जिससे कि यहां के लोग न केवल उसका अर्थ ही समझने लगें, बल्कि उसकी उपलब्धियों का भी लाभ उठा सकें।

"इसका मतलब क्या यही है कि सब कुछ मुझ पर निर्भर करता है और मैं पलक झपकते अक्तूमा का रूप बदल सकता हूं?" अस्क़ार खीझ उठा।

"आबाय ने यही कहा था न कि जो आदमी तुम्हारी बात न समझ सके, उससे बातचीत करने के बजाय तो किसी भेड़ को चारा खिलाना ज्यादा अच्छा होता है, कम-से-कम वह मोटी तो होगी। मेरे ख़याल से आप अच्छी तरह समझते हैं कि बात किस बारे में हो रही है, लेकिन आपको शायद यह अच्छा नहीं लगता कि कोई आपके मुँह पर ऐसी बातें कहे। यही बात है न, नौजवान दोस्त? वैसे," डाक्टर एकाएक बोलते-बोलते रुक गया, उसके स्वर में अब क्रोध और खीझ नहीं रहे थे। "मुझ बूढ़े को माफ़ करना। जल्दी उत्तेजित हो उठता हूँ... फिर आज कुछ घटनाएं भी इस तरह की हुई हैं," उसने क्लांत स्वर में कहा।

"माफ़ी तो मुझे आपसे मांगनी चाहिए।"

लेकिन डाक्टर ने अब उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। वह कुरेके के आंगन में कुछ देर पहले जलाये गये अलाव की ओर जा रहा था। अस्क़ार ने आग के पास सपार और येगोर को उसका अभिवादन करते देखा। "शायद बर्च को काट लाये हैं," अस्क़ार ने सोचा।" मैं भी कि-

तना बेवक़ूफ़ हूं जो ऐसे आदमी के साथ रुखाई से पेश आने लगा," वह अपने घर लौटते समय सोच रहा था।

अस्क़ार और जोमार्त की सारी रात पलक से पलक न लगी। वे उस दिन जो हुआ, उसी के बारे में सोचते रहे। जोमार्त को गहरा धक्का लगा था।

लेकिन अस्क़ार सोच रहा था कि कुरेके की मृत्यु में कुछ दोष उसका भी है। दिन निकलने पर सारा गांव वृद्ध को दफ़नाने जायेगा। जोमार्त और अस्क़ार भी जायेंगे। फिर लोग अपने-अपने घर चले जायेंगे। और वह, यानी अस्क़ार फिर सपार के पीछे लगा रहेगा, बेबसी में हाथ मलता रहेगा, इन्तज़ार करेगा, पूरे एक महीने इन्तज़ार करेगा जब तक कि छात्र-छात्राएं डेस्कों पर न बैठ जायें। फिर वह ब्लेकबोर्ड पर अक्षर लिखेगा। लेकिन क्या इस काम के लिए पन्द्रह साल तक पढ़ना ज़रूरी था? और क्या यहां उस जैसे बुद्धिजीवी शिक्षकों की कोई ज़रूरत है?

मरनेवाला तो मर गया, लेकिन लोगों को अब ख़याल आया है कि उसका जीवन कितना एकरस था। क़ब्रिस्तान में एक और ताज़ा टेकरी बन गयी। लोग अपने-अपने घर लौटते समय यही सोचते रहे कि किस तरह कुरेके सारी ज़िन्दगी भेड़ें चराता रहा, सारी ज़िन्दगी, बिना आराम किये। हर एक ने उसे एक एक मुट्ठी मिट्टी दे दी। जेकेन-कोसे ने मिट्टी दी, ममीरबाय ने, सपार ने, येगोर ने, कोदार ने, जोमार्त ने...

देर तक होनेवाली और उकता देनेवाली शरत्कालीन वर्षा की बूंदें चेहरे पर कांटों-सी चुभ रही थीं। कोदार भीड़ के आगे-आगे गाड़ी में लोमड़ी की खाल की पुरानी टोपी आंखों तक खींचकर पहने और किसी के दिये हुए मोटे कुर्ते की चौड़ी आस्तीन से आंखें पोंछता हुआ चल रहा था।

* * *

शरत्कालीन वर्षा की पहली फुहारें गिर चुकी थीं। जेकेन-कोसे अपनी छत पर बैठा हुआ उदासी से पक्षियों के झुंडों को दक्षिण की ओर उड़कर जाते हुए देख रहा था। वृद्ध सूरज की अन्तिम गरम किरणों को विदा कर रहा था। जब कभी कोई भटकता बादल शरत्कालीन सूरज को कुछ मिनटों के लिए ढक लेता, तो जेकेन-कोसे बड़बड़ाने लगता। देखो, फिर बा-

दल ग्रा गया ग्रौर उसने सूरज को ढक लिया। जेकेन कराहते हुए चरमराती सीढ़ियों से नीचे उतर ग्राया। वह दीवार के सहारे बने मिट्टी के चबूतरे पर बैठा, तो उसे गांव की तरफ़ से एक घोड़ागाड़ी मुख्य मार्ग की ग्रोर जाती दिखाई दी। गाड़ीवान के ग्रलावा उस पर दो व्यक्ति बैठे थे।

"ये कौन हो सकते हैं?" जेकेन सोचने लगा। उसे मालूम न था कि ग्राज जोमार्त गांव से जा रहा है ग्रौर ग्रस्क़ार उसे ज़िला मुख्यालय तक छोड़ने जा रहा है।

जेकेन को देखते ही ग्रस्क़ार को याद ग्राया कि ग्रभी कुछ दिन पहले ही वह ख़ुशी-ख़ुशी इस रास्ते से होकर गांव गया था। ग्रब एकाएक उसकी इच्छा हुई कि वह भी जोमार्त के साथ चला जाये। इस बारे में उसने कहा कुछ नहीं। उसे कुछ रोके हुए था, वह इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकता कि ग्रब वह ग्रपने ग्रक्तूमा को छोड़कर जा सकता है, जहां लोग उसकी ग्रोर ग्राशा से देखने लगे हैं, उसकी इज़्ज़त करते हैं, उसकी सहायता करने की कोशिश करते हैं, जो भी काम वह ज़रूरी समझता है, उसे पूरा करने की कोशिश करते हैं। नहीं, उसके लिए इन लोगों को छोड़कर जाना ग्रसंभव होगा।

उन्हें सामने से एक दोपहिया गाड़ी ग्राती दिखाई दी। उसमें सपार-ग्रग़ा ग्रौर कुरेके का पोता बैठे हुए थे। लड़का ठीक हो गया था ग्रौर सपार उसे ग्रस्पताल से ग्रक्तूमा ला रहा था। ग्रस्क़ार ने घोड़ा रोक दिया।

"लगता है, सफ़र की तैयारी कर ली है?" सपार गाड़ी से उतरकर जोमार्त के पास ग्राया ग्रौर उसका ग्रालिंगन कर उसका माथा चूम लिया। "ग्रगर जाना चाहते हो, तो जाग्रो। तुम्हें कोई कायर या भगोड़ा नहीं कहेगा। किसी को ऐसा कहने का हक़ भी नहीं है। पंछी के पंख नहीं काटने चाहिएं। मैं जानता हूं, ग्रगर तुम्हारे बस में होता, तो तुम हम लोगों के लिए बहुत कुछ करते। फिर भी हमें भूलना नहीं।"

"मुझे छोड़ने जाने की कोई ज़रूरत नहीं है," जोमार्त ने गाड़ीवान की जगह बैठकर गाड़ी हांक दी।

"ज़उरेश को मेरा सलाम कहना," ग्रस्क़ार ने ग्रनुरोध किया।

जोमार्त ने उस पर खोजपूर्ण दृष्टि डाली।

"फिर मिलेंगे। ग्रपनी सेहत का ख़याल रखना, जोमार्त!" सपार-ग्रगा ने पीछे से ग्रावाज़ दी।

बादल हटने पर सूरज फिर निकल आया। जेकेन-कोसे लाठी का सहारा लेकर धीरे-धीरे उठा, सपार को पहचानकर उसने अपनी लाठी हिलायी।

* * *

इस वर्ष का शरद आश्चर्यजनक रूप से पिछले वर्ष के शरद से मिलता-जुलता था। सामूहिक फ़ार्म में कटाई और अनाज को उठाने का काम पूरा होते ही वर्षा होने लगी। अनाज की बोवाई रोकनी पड़ी। कार्यालय की बैठक में खेती के जानकार अनुभवी बुज़ुर्गों और हाल ही में उच्च शिक्षा प्राप्त कर अपने गांव वापस लौटे युवा कृषिविज्ञ की दलीलें सुनकर सारे खेतों में शरद में ही अनाज बोने का निश्चय किया गया क्योंकि वसन्त में बोया गया अनाज पहाड़ों में देर से पकता है। लेकिन बोवाई की अपनी व्यापक योजना वे पूरी नहीं कर पाये। लगातार बारिश हो रही थी। उसके बाद हिमपात होने लगा।

शीत ऋतु में हमेशा की तरह ठंड रही और ख़ूब बर्फ़ गिरी। दमेश चाची को स्कूली चूल्हे को दिन में दो बार – सुबह और शाम जलाना पड़ रहा था।

अच्छी मरम्मत और पुवाई के बाद इमारत गर्म, रोशनीदार और आरामदेह हो गयी थी। पाठ समाप्त होने के बाद युवक-युवतियां अस्क़ार के पास आते थे। एक कमरे को मनोरंजन कक्ष बना दिया गया, वहीं सब जमा होते थे। वहां शतरंज खेलते, पुस्तकें और समाचार पत्र पढ़ते, रेडियो सुनते, सामूहिक फ़ार्म की ख़बरें सुनते-सुनाते, उन पर विचार-विमर्श करते थे। इसलिए दमेश-आपा को घर जाने की जल्दी नहीं होती थी, वह सारे दिन स्कूल में ही रहती।

अस्क़ार आराम से बैठना नहीं जानता था। रविवार के दिन कभी वह सामूहिक फ़ार्म के केन्द्रीय दफ़्तर जाता, कभी ज़िला मुख्यालय चला जाता, कभी स्कूल के बच्चों को स्कीइंग कराने ले जाता।

अस्क़ार के ज़ोर देने पर बाऊकेन ने जेकेन-कोसे को गांव में रहने भेज दिया। उसके लिए स्कूल से कुछ दूरी पर एक छोटा-सा घर बना दिया गया। सामूहिक फ़ार्म ने वृद्ध की पूरी ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ले ली।

"यह पेंशन है," अस्क़ार कहता। "और दमेश-आपा आपको भी पें-शन मिलनी चाहिए।"

"अस्क़ारजान, तुम भी कैसी बात करते हो। मैं भला बेकार कैसे बैठी रह सकूंगी," वह कुछ डर गयी। "हमारे यहां काम-चोर को बिठाकर कभी नहीं खिलाया गया।"

अस्क़ार हंस पड़ा,

"आप काम-चोर कैसे हुईं, आपा? ख़ुदा करे हर आदमी आपकी तरह काम करे और आप-सी इज़्ज़त पाये।"

वह यह सोचकर कुछ उदास हो उठा कि वह बात, जो सारी दुनिया बहुत पहले से जानती है, इन बूढ़े लोगों को एक बिलकुल ही नयी ख़बर लगती है। उसका अक्तूमा बहुत पिछड़ गया है।

"आप चाहें तो काम करती रहिये, आपा। मुझे आपके साथ अच्छा लगेगा। लेकिन अब आपको हर हालत में तनख़्वाह ही नहीं पेंशनभोगी की हैसियत से पेंशन भी मिलती रहेगी।"

बाऊकेन रोज़ाना काम के बाद शाम को अस्क़ार के पास आया करता। वे दोनों रात देर गये तक बैठे रहते। बाऊकेन गांव के हाल-चाल बताता। धीरे-धीरे अस्क़ार को उसकी बातों से उन सब घटनाओं, कठिनाइयों और ख़ुशियों के बारे मालूम हो गया जिन्हें अक्तूमा को उसकी पढ़ाई के दौरान बर्दाश्त करना पड़ा। अस्क़ार दिन में मध्यांतर के समय अकसर जेकेन-कोसे से मिल आता था। एक दिन वह कोदार और कुरेके के पोते कोज़ा को साथ लेकर उससे मिलने पहुंचा।

कोदार को देखकर जेकेन में फिर से जान आ गयी।

"ज़रा देखूं तो कितना बड़ा हो गया है! अब तो तुझे चरवाहा नहीं बनना पड़ेगा," वह अपने पोपले मुँह से बूढ़ों की तरह चबा-चबाकर बोल-ता रहा। "अस्क़ारजान हमारी सारी शरारतों के बारे में जानता होगा, क्यों?"

"उसने तो कुछ भी नहीं बताया," कोज़ा ने अपने दोस्त की तरफ़-दारी की।

"शाबाश! मैं ख़ुद उसे हमारी सारी करतूतों के बारे में बता दूंगा। बुड्ढे से मिलने आने के लिए शुक्रिया। अस्क़ार ने बताया है कि तुम मेह-नत से पढ़ रहे हो, यह देखो, मैंने तुम्हें उपहार में देने के लिए स्लेज

बनाकर रखी है। वह बाहर सूखी घास से ढकी रखी है, जाओ कुछ देर बर्फ़ पर फिसल लो," वृद्ध ने अपने झुर्रियोंदार काले हाथों से प्यार से उनके गाल थपथपाये, "यह दो साल पहले की बात है, तब हमें मकई बोने के लिए मजबूर किया गया था। मैं रखवाली करते-करते ऊब गया था, इस लिए चरवाहा बन गया," बच्चों के बाहर जाने के बाद वृद्ध ने अपनी कहानी सुनाना शुरू किया। "कोदार को घुड़सवारी का शौक़ था, इसलिए मैं कभी-कभी उसे अपने साथ ले जाता था। तब वह पांच या छः साल का था। वह सारे गांव में भागता फिरता था, सबसे घोड़े की सवारी कराने को कहता था।

घोड़ा मुझे ऐसा मिला, जो बिना मार खाये एक क़दम आगे नहीं बढ़ता था, बहुत ही सुस्त और मरियल था।

हमने गांव से कुछ दूरी पर मकई बोयी। जब उसके अंकुर फूटे, तो गायों ने खेत के किनारे-किनारे चलते समय कुछ मकई चर ली। अमीरबेक ने इस नुक़सान की भरपाई मेरी तनख़्वाह से कर ली। उन गर्मियों में भी वह यहां काम कर रहा था।

बस यहीं से शुरुआत हो गयी। गायों पर जैसे शैतान सवार हो गया। उन्हें जब भी मौक़ा मिलता, वे मक़ई के खेत पर टूट पड़तीं। मैं उन्हें बड़ी मुश्किल से रोक पाता। फिर जब घास हरी हुई तो कुछ शान्त हो गयीं, मुझे एक-आध घंटा आराम करने की फ़ुरसत मिलने लगी। मैंने इस दौरान कोदार के जूतों की मरम्मत करने की सोची। मैंने सुतारी ली, पैवंद के लिए चमड़े का टुकड़ा लिया, बकरी की कंडरा को बटकर मोम लगा लिया, लेकिन सूअर का बाल लेना भूल गया। तुम तो जानते ही हो, वह सूई का काम देता है।

मैंने सूअर का बाल लाने और जूतों की मरम्मत करने के लिए कुछ जल्दी गांव लौटने की सोची। यह दोपहर की बात है, मैं अपनी जगह कोदार को छोड़ गया। मैंने उससे कहा कि जब छाया बिलकुल छोटी पड़ने लगे, तो रेवड़ को गांव तक हांक लाना। यानी एक घंटे बाद।

मैं छाया में बैठा जूता सी रहा था। एकाएक अमीरबेक सरपट घोड़ा दौड़ाता आ पहुंचा, गुस्से के मारे लाल हो रहा था। वह कुछ बोल न पा रहा था, बस चाबुक फटकारे जा रहा था।

"सत्यानाशियो! तुम सब एक से हो। मुझे मार डालना चाहते हो!" वह चिल्लाने लगा।

"क्या हुआ?" मैंने शान्त स्वर में उससे पूछा। लेकिन उसने मुझे बिना दाढ़ीवाला बेवक़ूफ़ कहकर मेरी बेइज़्ज़ती कर दी।

"देख ज़रा!" वह चिल्लाया। "देख, तेरे जानवरों का झुंड कहां है।"

मैं हक्का-बक्का रह गया। मैंने देखा गायें मकई का खेत रौंदे जा रही हैं। मरभुक्खों की तरह जल्दी जल्दी मकई चरे जा रही हैं। मेरा कोदार तो पीछे रह गया था, उस मरियल घोड़े पर हचकोले खाता चिल्ला रहा था। फिर उस पर से उतरकर गायों के पीछे लपका। लेकिन मैं क्या कर सकता था? अमीरबेक को ही कोदार की मदद करनी चाहिए थी, लेकिन वह खड़ा ही रहा। मैं भी खड़ा रहा।

"लगता है मकई बहुत स्वादिष्ट है। गायों को अच्छी लगती है, दूध ज़्यादा देंगी, तो मालकिनें ख़ुश होंगी," मैंने उससे कहा। वह आग-बबूला हो उठा।

"जेल भिजवा दूंगा!" वह चिल्लाया। उसने मेरी पूरे साल की तनख़्वाह कटवा दी और मुझे फिर कैंप की रखवाली करने भेज दिया। तभी से मैं उस अंधेरी कोठरी में रहने लगा। मुझे देश-निकाला-सा दे दिया गया।"

जेकेन ने आंखें मिचमिचायीं और अस्क़ार की ओर देखते हुए आगे बोला,

"लोग अब भी वहां रह रहे हैं। बाऊकेन और तुमने मुझे नये घर में बसा दिया, पेंशन दिलवा दी। लेकिन वहां अब दूसरा बूढ़ा रह रहा है। उस कोठरी की मरम्मत करनी चाहिए, चिमनी ठीक करनी चाहिए, खिड़की बनानी चाहिए। आख़िर वहां लोग रह रहे हैं," उसने सोच में डूबे हुए कहा। "चरागाह में भी यही हाल है। बाऊकेन को और कार्यालय में भी कहना चाहिए। हर वक़्त सपार के पीछे पड़ने से काम नहीं चलेगा। वह ख़ुद ही काफ़ी परेशान रहता है। वह उक़ाब था, सब कुछ देखता था, अब वह बात नहीं रही, उसका बुढ़ापा आ गया है।"

अस्क़ार जेकेन का इशारा समझ गया। वह सारे समय गांव के उन्हीं कामों में व्यस्त रहता था, जो उसे नज़र आ जाते थे और बाक़ी बातों के बारे में भूल जाता था।

जेकेन की बात ठीक है, सपार अब पहले जैसा सपार नहीं रहा। वह अकसर दमेश-आपा के यहां आता है। थोड़ी देर बैठकर हंसी-सज़ाक़ करता है, दमेश-आपा का मज़ाक़ उड़ाता है, फिर उकताने लगता है, बेटे को याद कर उदास हो उठता है, इस दौरान में उसके बाल भी सफ़ेद हो चुके हैं।

"अब सारी ज़िम्मेदारी तुम लोगों पर है, बड़ों का मुँह मत ताको, ख़ुद सोचो-समझो और फ़ैसला करो," सपार कहता था। "मैं पार्टी की सदस्यता के लिए तुम्हारे नाम की सिफ़ारिश करना चाहता हूं।"

सपार अब हर जगह येगोर के साथ ही दिखाई देता था। उन दोनों ने मिलकर केनेख़ान के लोहारख़ाने के पास सायबान बना दिया और अब उसमें वे बढ़ई का काम कर रहे थे। कुछ दिन पहले संयोग से उनकी मुलाक़ात हुई, तो सपार ने पूछ लिया: "क्या ज़उरेश उनके यहां डाक्टर बन सकती है?"

"किसी के दिल में क्या है, यह जानना मुझे नहीं आता," अस्क़ार ने रूखा जवाब दिया।

अस्क़ार दिन-रात ज़उरेश के बारे में सोचा करता था, सपनों में उससे बातें किया करता था, लेकिन कभी किसी से इस बारे में कुछ भी नहीं कहता था।

वह वहां कैसे रह रही है? उसकी पढ़ाई कैसी चल रही है? जोमार्त ने उसे क्या-क्या बता दिया है? अपने मित्र से ईर्ष्या करते हुए वह सोचने लगा कि उसने उसे गांव की हालत बहुत ही बढ़ा-चढ़ाकर बताई होगी। वह ज़उरेश के बारे में सोचता हुआ ईर्ष्या के मारे कई रातें जागते हुए बिता देता।

अस्क़ार ने अपने सूटकेस में कपड़ों के नीचे उसका छोटा-सा फ़ोटो रख रखा था। अकेले में वह कभी-कभी उसे निकाल लेता और काफ़ी देर तक उसकी प्यारी-प्यारी सूरत को देखा करता।

"हमारे गांव में बहुत-सी अच्छी लड़कियां हैं, शहरी लड़कियों से किसी बात में कम नहीं हैं, मेहनत के मामले में उन्हें पीछे छोड़ सकती हैं," एक बार दमेश-आपा ने कुछ गंभीरता से और कुछ मज़ाक़ में कहा। "मुझ बुड्ढी से भी ज़्यादा अच्छी चाय बनाती हैं। मेरा दिल तो बहू के हाथ की चाय पीने को करता है। ऐसे जवान आदमी को अकेले थोड़े ही

रहना चाहिए। हमारी साकिश किस बात में कम है? समझदार भी है और ख़ूबसूरत भी।"

साकिश ज़उरेश की हमउम्र थी। अस्क़ार का कभी उसकी ओर ध्यान नहीं गया था। अपने वापस लौटने के बाद भी उसने उसकी ओर विशेष ध्यान नहीं दिया था। दूसरी लड़कियों की तरह वह भी सीधी-सादी, परिश्रमी लड़की थी। एकाएक अस्क़ार के दिमाग़ में विचार कौंधा कि वह ज़उरेश के साथ पत्रव्यवहार करती होगी।

"दमेश-आपा, क्या ज़उरेश साकिश को चिट्ठी नहीं लिखती?" उसके मुँह से निकल गया।

"ज़उरेश?" दमेश ने उसकी ओर बड़े ध्यान से देखा, जैसे उसे पहली बार देख रही हो। "मुझे मालूम नहीं, बेटा। लेकिन पूछ सकती हूं।"

अस्क़ार बाहर चला गया। स्कूल के बच्चे अपने-अपने घर जा चुके थे। बाऊकेन आ पहुंचा।

"ज़िला मुख्यालय में खेती के बारे में एक बड़ी मीटिंग हो रही है। अनुभवी लोगों को बुलाया गया है। अपनी टोली से मैंने सपार-अग़ा के नाम की सिफ़ारिश की है। अक्तूमा से चार आदमी जायेंगे। दो-तीन दिन के लिए। तुम ज़रा मेरी जगह काम कर लेना।"

"लेकिन मैं तो शिक्षक हूं, तुम्हारे काम को क्या समझूंगा?" अस्क़ार ने आश्चर्य व्यक्त किया।

"तो क्या हुआ? इस वक़्त तुम्हारे जैसे लोगों की ही ज़रूरत है। हुक्म देना हर एक को आता है। लेकिन लोगों को समझ पाना—बहुत ही मुश्किल काम है। इस वक़्त इसी की सबसे ज़्यादा ज़रूरत है। वैसे उलझा हुआ काम कोई नहीं है। सूखी घास जानवरों के बाड़े में काफ़ी मात्रा में भेज दी गयी है, चरवाहों को खाने-पीने का सामान रवाना कर दिया गया है। इसलिए आराम से संभाल लोगे, तुम्हारे काम में इससे कोई रुकावट नहीं आयेगी। हम कल शनिवार को चले जायेंगे।"

रविवार को अस्क़ार ने गांव के सब युवा लोगों को इकट्ठा किया। उन्होंने निर्माण-कार्य की टोली बनाने का निश्चय किया, जिसमें सामूहिक फ़ार्म के हर गांव से दस आदमियों को शामिल होना था। नौजवानों ने कार्यालय से सामूहिक फ़ार्म के केन्द्र में चिकित्सालय और क्लब बनाने की

ज़िम्मेदारी सौंपने का अनुरोध करने का निश्चय किया, उसके तुरन्त बाद इमारती सामान तैयार करने और डिज़ाइन आदि प्राप्त करने का फ़ैसला किया, जिससे कि बर्फ़ पिघलते ही काम शुरू किया जा सके।

* * *

सपार का भाषण देने का इरादा नहीं था। उसे भाषण देना नहीं आता था। पहले वह सोचा करता था कि वक्तृता नेता लोगों का काम है और भाषण देना वही जानते हैं। लम्बे अरसे तक काम करने के दौरान वह मंजे-मंजाये भाषण सुनने का आदी हो चुका था, जिन में हर बात सिलसिलेवार ढंग से कही जाती थी—पहले अन्तर्राष्ट्रीय मामलों, अपनी सफलताओं के बारे में, फिर परोक्ष रूप में किसी की आलोचना और उसके बाद फिर सफलताओं और उपलब्धियों के बारे में।

इस बार तो जैसे लोग परम्परागत तरीक़ा भूल ही गये। लोग खड़े होते और फ़ौरन काम की बात छेड़ देते। कुछ लोगों ने ऊट-पटांग किन्तु रोचक ढंग से भाषण दिया, गत वर्षों में जो कुछ कष्टदेह लगा और जिन बातों से परेशानी उठानी पड़ी, उन्हें फ़ौरन कह डाला। चरवाहों की कमरतोड़ मेहनत की चर्चा ही।

"जब चरवाहे बीमारी से मरते हैं, हमारे पशुधन की रक्षा करते हुए तूफ़ान में मारे जाते हैं, तो हम कहते हैं कि वे वीरतापूर्ण कार्य करते हुए मारे गये। लेकिन आप मुझे बताइये, साथियो, इस तरह की बहादुरी दिखाने की ज़रूरत किसे होगी?! कई बार हम रहन-सहन और संस्कृति का पिछड़ा हुआ स्तर, पशुपालकों के पास मामूली रिहायशी सुविधाओं का अभाव आदि को श्रमजीवियों का 'वीरतापूर्ण कार्य' जैसा नाम देकर न्यायोचित ठहरा देते हैं," युवा पशु-विशेषज्ञ ने कहा, जिसे सपार ने पहले नहीं देखा था।

"जवान आदमी है, नये ढंग से काम शुरू कर रहा है। यह हमारे अस्क़ारजान जैसा है," सपार वक्ता का भाषण बड़े ध्यान से सुनते हुए सोच रहा था।

"निर्माण-कार्य ढंग से किया जाना चाहिए," सभा की अध्यक्षता कर रहे पार्टी की ज़िला समिति के सचिव ने, जो स्वयं भी युवक था, वक्ता का समर्थन किया।

सपार को आश्चर्य हुआ, उसने अभी तक इतने जवान आदमी को ऐसे पद पर नहीं देखा था।

"बहुतों ने ढंग से निर्माण कार्य शुरू किया, लेकिन उनके काम में रुकावटें डाली गयीं," वक्ता ने जवाब दिया।

"अब जो अड़चन डालेगा, उसे हम मुँहतोड़ जवाब देंगे। आवश्यकतानुसार निर्माण कार्य की टोलियां बनायी जानी चाहिएं, ईंटें बनाने का काम शुरू कर देना चाहिए। सामूहिक फार्म के कर्मियों के लिए रिहायशी मकान बनाने चाहिएं। और जो कोई भले के बदले बुरा करता है, उसे समझ लेना चाहिए कि वह न केवल अपना ही नुक़सान करता है बल्कि देश का भी। गत वर्षों के सूची-पत्रों को देखिये!" सचिव ने एक काग़ज़ उठाकर दिखाया। "इन से यही ज़ाहिर होता है कि हमारा इलाक़ा प्रांत के सबसे अच्छे इलाकों में से एक था। सब कुछ जोड़-तोड़कर बढ़ा-चढ़ाकर दिखाया गया है। अब हमें अग्रणीय लोगों की क़तार में शामिल हो जाना चाहिए। सूचकों को सही माने में तभी अच्छा मानना चाहिए, जब लोगों के रहन-सहन का स्तर पहले से ऊंचा हो जाये, वे सुसंस्कृत हो जायें, उन्हें रिहायशी मकान मिल जायें। हां, अक्तूमा गांव में तो सामूहिक फ़ार्म के कर्मियों के लिए मकान बनाने का काम शुरू भी हो चुका है। यह सच है कि अब तक कुल दो-तीन मकान ही बने हैं। लेकिन बन तो रहे हैं।" अध्यक्ष ने कहा। "इस हॉल में इस गांव का सबसे सम्मानित आदमी उपस्थित है, आपमें से बहुत-से उसे जानते हैं। वह है—सपार-अग़ा। सपार-अग़ा, हम आप से प्रार्थना करते हैं कि आप इस पहल के बारे में बतायें," अध्यक्ष ने कहा।

सपार हक्का-बक्का रह गया, उसे इसकी आशा नहीं थी, उसने सोचा भी न था कि नया सचिव उसे नाम से जानता है।

"घबराओ नहीं, अग़ा, ज़रा ढंग से बता दो," बाऊकेन ने फुसफुसाकर कहा। सपार धीरे-धीरे भाषणमंच के ऊपर चढ़ गया।

"क्या बताऊं? अक्तूमा जी रहा है। मुसीबतों का सामना कर रहा है... हमने घर बनाये। जेकेन तथा दो और आदमियों के लिए। लेकिन क्या इन्हें घर कहा जा सकता है? वे कच्चे हैं। हमें इससे बेहतर घर बनाने चाहिएं।"

"फिर भी काम शुरू हो गया। शुरुआत अच्छी हुई, सपार-अग़ा,"

अध्यक्ष ने मुस्कराते हुए उसका हौसला बढ़ाया। "आप हमें अच्छी और बुरी सारी बातों के बारे में बताइये।"

"अच्छी बातों के बारे में? अच्छी बात यही है कि कारवां नये रास्ते पर चलते हुए अपने आप को संभालने लगा है। सड़ी-गली, टूटी-फूटी चीज़ों को उठा-उठाकर फेंक रहा है, अपनी ताक़त का जायज़ा ले रहा है। और अक्तूमा भी एक ही जगह में न पड़े रहने के लिए अपनी ताक़त का जायज़ा लेना चाहता है," सपार खांसा। "हम बुड्ढों के पास पुराने कपड़े हैं, लेकिन वे भी अब हम पर लटके हुए हैं, हमारे कंधे सिकुड़ने लगे हैं। हमारा गांव पहले की तरह आज भी आंखों का कांटा बना हुआ है। तो क्या हुआ, बच्चों के अपने कपड़े तंग होने लगे हैं, उन्होंने अपने पिताओं के कपड़े पहन लिये हैं। और वे ही हमारे कारवां को नयी राह पर ले जाने के लिए तैयार कर रहे हैं।"

"बहुत अच्छा कहा, सपार-अग़ा, बहुत समझदारी की बात कही, हम लम्बे सफ़र पर जा रहे हैं, सूरज की ओर, प्रकाश की ओर," सचिव और सब लोगों के साथ तालियां बजाने लगा।

"हमारा बाऊकेन हॉल में बैठा है, अस्क़ारजान गांव लौट आया है, वह बोल्शेविक सेम्बीन का बेटा है, जिसने हमारे सामूहिक फ़ार्म को संगठित किया था। अब उन्हें बोलना चाहिए। वे ही रास्ता दिखा रहे हैं। हम लोग तो सिर्फ़ सलाह दे सकते हैं। कभी-कभी प्रकृति बुढ़ापे में आदमी को बुद्धि दे देती है। इससे हमें लोगों से मिलने-जुलने में मदद मिलती है... अब अक्तूमा पहलेवाला अक्तूमा नहीं रहा," एकाएक सपार ऊंचे स्वर में बोलने लगा। "हम लोग मामूली पढ़े-लिखे थे। जो सुनते थे, उस पर विश्वास कर लेते थे, अफ़वाहों को सच मान लेते थे। हमसे सलाह नहीं मांगी जाती थी। सिर्फ़ हुक्म दिया जाता था। उन हुक्मों को समझ पाना मुश्किल होता था। अब हालत बदल गयी है। ये लोग, मेरा मतलब बाऊकेन, अस्क़ार और दूसरे लोगों से है, पढ़कर समझ लेते हैं, सोच-समझकर काम करते हैं। अक्तूमा में भी विद्वान हैं, जोमार्त विद्वान बनेगा!" वह जल्दी-जल्दी बोलने लगा। "ज़िन्दगी अपनी रफ़्तार से गुज़र रही है। मुश्किलें आती हैं, लेकिन यह कोई चिन्ता की बात नहीं है, मुश्किलें हमेशा आती रहेंगी। कारवां को सफ़र में बहुत-सी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है: गहरे पांझ का, तूफ़ान का, टूटे हुए पुल

का और सूखे का भी। दृढ़निश्चयी आदमियों को ही कारवां को रास्ता दिखाना चाहिए। इसीलिए हम नौजवानों की ताक़त का जायज़ा ले रहे हैं। अगर वे अच्छे और मज़बूत हुए, तो सब ठीक होगा।

अब कमियां बताता हूं। कमियां बहुत हैं, बेटा," सपार ने अध्यक्ष की ओर देखा। "निर्माण बहुत करना है, लेकिन सामान कुछ नहीं है।"

"सामूहिक फ़ार्म के कर्मियों के लिए इमारती सामान ज़िला उपभोक्ता संगठन के ज़रिये निकलवाना चाहिए," पार्टी की ज़िला समिति के सचिव ने कहा। "अब वहां काम दूसरे ढंग से होना चाहिए। कल वहां नया निदेशक नियुक्त किया गया है। उससे पहलेवाला कुत्ते का बच्चा निकला, उसने ग़बन किया। सुना है, यह अमीरबेक पहले आपके गांव का प्रधान था, उसने यहां भी बहुत ज़ुल्म ढाये होंगे। हमने कल उसे पार्टी से निकाल दिया, काम से बरख़ास्त कर दिया, उस पर मुकदमा चलाया जा रहा है।"

"तुमसे एक विनती करना चाहता हूं, बेटा, उन लोगों को मत भुलाना, जो हमारी भेड़ों और घोड़ों की रखवाली करते हैं। उन्हें बड़ी मुश्किलें झेलनी पड़ती हैं। अमीरबेक ने इतने सालों में उनके लिए एक घर भी नहीं बनाया। कहने को बहुत कुछ है, लेकिन सारी बातें मैं किसी तरह नहीं कह पाऊंगा," सपार शान्तिपूर्वक तनकर चलने की कोशिश करते हुए अपने स्थान पर लौट आया।

* * *

अस्क़ार की मेज़ ठीक करते समय दमेश को किताब में से बाहर निकला हुआ एक छोटा-सा फ़ोटो दिखाई दे गया। यह ज़उरेश का फोटो था। वह मन्द-मन्द मुस्कराती दमेश की ओर देख रही थी।

"अच्छा, तुम इतनी सुन्दर हो गयी हो, ज़उरेशजान। मेरा अस्क़ार यों ही तो तुम्हारे लिए आहें नहीं भरता है," उसने लड़की के चेहरे की ओर देखते हुए कहा। "तुम उसे सता क्यों रही हो, बेटी?"

वह काफ़ी देर तक फ़ोटो लिये बैठी रही और फिर उसे सावधानी से वापस रख, जल्दी से कमरा ठीक कर कपड़े बदलकर साकिश को ढूंढ़ने निकल पड़ी।

"साकिश, मुझे तुमसे काम है," दमेश-आपा ने चारों ओर नज़र दौड़ायी। कमरे में उनके अलावा कोई नहीं था। "बताओ, ज़उरेश तुम्हें चिट्ठी लिखती है?"

"हां, हम दोनों एक दूसरे को पत्र लिखती हैं।"

"तब उसे सलाम लिख देना। लिख देना कि मैं उससे नाराज़ हूं। उसे शहरी लड़कों पर नज़र डालने की ज़रूरत नहीं है। हमने भी जवानी देखी है। सब समझती हैं। जब हमारी क़दर की जाती है, तो हम सिर उठाकर चलने लगती हैं। भलाई का बदला भलाई से ही चुकाना चाहिए। कुछ भी हो, अस्क़ार से ज़्यादा प्यार उसे कोई नहीं करता।"

"आप भी कितनी दिल्लगी करती हैं, दमेश-आपा," साकिश ठहाका मारकर हंस पड़ी। "आपकी बात का मतलब तो यह हुआ कि अगर कोई लड़का किसी लड़की को प्यार करने लगे, तो उस लड़की को किसी दूसरे लड़के को प्यार करने का हक़ ही नहीं रहता।"

"बात किसी 'ऐसे-वैसे लड़के' की नहीं, अस्क़ार की हो रही है। तुम मेरा मज़ाक़ मत उड़ाओ। मैं संजीदगी से कह रही हूं। यही लिखना। मुझे मालूम है, वह उसकी याद में कितना तड़पता है।"

"वह भी तो हर समय उसी के बारे में पूछती रहती है। वह मुझे यक़ीन दिलाती रहती है कि यों ही जिज्ञासा के मारे जानना चाहती है, लेकिन मैं उस पर विश्वास नहीं करती। आख़िर वह दूसरों के बारे में तो नहीं पूछती, सिर्फ़ उसी के बारे पूछती रहती है। उसे अभी तक अस्क़ार का एक भी पत्र नहीं मिला है।"

"ख़ैर, तुम्हें इससे कोई मतलब नहीं। उसके सिर वैसे ही काम का भारी बोझ रहता है, उसे सबकी चिन्ता लगी रहती है, पत्र लिखने की फ़ुरसत ही नहीं मिलती।"

दमेश चली गयी।

शाम के खाने के समय उसका हर काम उल्टा हो रहा था, चम्मच की जगह उसने चाकू बढ़ाया, सूप गिरा दिया। यही सोच रही थी कि बात कैसे छेड़े।

अस्क़ार ने चकित होकर पूछा,

"आपको क्या हुआ है, आपा?"

"कुछ नहीं हुआ मुझे। अगर मैंने कोई ग़लती की तो मुझे पेंशन दिलवा-

कर भिजवा दो। लेकिन तुम्हें ख़ुद को क्या हुआ है? तुम सोचते हो— तुम्हारे मां-बाप नहीं हैं, तुम पर किसी का ज़ोर नहीं है, क्यों?!" दमेश निढाल होकर बेंच पर बैठ गयी। "अरे, मैं बुढ़िया भी क्या बकवास करने लगी; तुम नाराज़ न होना, अस्क़ारजान। मुझे तुम नौजवानों की बात समझ में नहीं आती... तुम यहां और वह वहां तड़प रही है। एक दूसरे के दुश्मन से बने हुए हो... हमारे यहां ऐसा कभी नहीं हुआ, सब आसानी से हो जाता था। सलाह-मशविरा होता, बात तय होती, कुछ सौदेबाज़ी होती और शादी हो जाती, फिर बाद में एक दूसरे की इज़्ज़त करना शुरू कर देते।"

अस्क़ार हैरानी से देखता रहा। दमेश-आपा को इतना उत्तेजित होते उसने कभी नहीं देखा था।

"आप किस बारे में कह रही हैं, आपा?"

"ज़उरेश के बारे में, बेटा। वह तुम्हारी याद में तड़प रही है, तुम्हें प्यार करती है, लेकिन तुम हो कि उसे एक शब्द भी नहीं लिखते।"

"छोड़िये..." अस्क़ार दर्दभरे स्वर में धीरे से बोला और बाहर चला गया।

वसन्त की गरम-गरम उज्ज्वल फुहार निःशब्द पड़ रही थी। अहाते में पद-दलित पगडंडियों के चारों ओर गुलचांदनी के फूल खिले हुए थे। बादल छंट गये और अपने साथ-साथ चेहरे को सुहावनी लगनेवाली प्यारी-प्यारी फुहार को भी ले गये। फूल आश्चर्यचकित होकर अपनी मखमल-सी सफ़ेद पंखड़ियां खोले सूरज की प्रतीक्षा कर रहे थे। मेमने बदन झकझोरकर ओसारे में से बाहर भाग आये, हरी-हरी घास पर गौरैयाएं फुदकने लगीं।

"मैं भी कितना बेवकूफ़ और ज़िद्दी हूं," अस्कार गौरैयाओं के झुंड को पत्थर फेंककर उड़ाता हुआ उत्तेजना से बुदबुदा रहा था। "वह मुझे प्यार करती है, ज़रूर प्यार करती है!.."

"अस्क़ार, देखो, स्पूतनिक छोड़ दिया गया है, स्पूतनिक!" डाकिये ने उस की ओर समाचार पत्र बढ़ाया।

"अच्छा!" अस्कार डाकिये की बात नहीं समझा, वह अपनी ही ख़ुशी में खोया हुआ था, जिसे दबा पाना मुश्किल था।

"क्या हुआ?" किवाड़ खोलकर दमेश-आपा ने पूछा।

अस्क़ार ने अख़बार खोला।

"नया कृत्रिम उपग्रह पृथ्वी का चक्कर लगा रहा है!"

"हाय अल्लाह! इस दुनिया में क्या-क्या सुनने को नहीं मिलता!" दमेश ने एक ठंडी सांस ली।

पहाड़ों में बर्फ़ बोझिल होकर नीचे धसकने लगी, छोटे-छोटे नाले एक दूसरे में मिलकर शक्ति संचित करते, शिथिल हुए श्वेत हिम-कवच को तोड़ते घाटी में बह चले। बर्फ़ से साफ़ हुए ज़मीन के टुकड़ों पर हरियाली छाने लगी। बर्फ़ निरन्तर कम होती जा रही थी, वह केवल छायादार खड़ी चट्टानों और कराक़शी की चट्टान के नीचे ही चमक रही थी, जहां से गांव और वह गहरी घाटी साफ़-साफ़ नज़र आ रहे थे, जिसमें कभी कलताय और आयसलू घूमा करते थे।

सामूहिक फार्म के खेतों में ट्रैक्टर आने लगे थे। केनेख़ान के लोहारख़ाने के आगे भीड़ जमा हो रही थी। बाऊकेन, सपार, येगोर और ममीरबाय गांव के लड़कों के झुंड से घिरे बोने की मशीनों और कल्टीवेटरों की जांच कर रहे थे।

"हेंगा चलाने का काम ढंग से नहीं हो पायेगा। दांते घिस गये हैं," बाऊकेन ने अपना सिर खुजलाते हुए कहा।

"पुराने हो गये, इसलिए घिस गये। नये हैं नहीं, अध्यक्ष से मांगो, कहीं से दिलवा देगा," केनेख़ान ने जवाब दिया।

बाऊकेन अल्मा-अता जा रहा था। पिछली बार उसे प्रजातंत्र के सम्मेलन का प्रतिनिधि चुना गया था। वह जल्दी में था। उसके जाने से पहले टोली को बोवाई का काम पूरा कर लेना था।

"तुम जोमार्त के यहां जाना मत भूलना, ज़उरेश से भी मिलना। उससे बातचीत करना और और पता लगाना, हो सकता है, हम अस्क़ार को बेकार ही यहां रोके हुए हैं। हो सकता है, ज़उरेश उसी के बारे में सोचती रहती हो, लेकिन गांव आना नहीं चाहती। ऐसी हालत में अस्क़ार का कुछ करना होगा" सपार ने कहा। "मनुष्य का सुख क्षण-भंगुर होता है, उसकी आंख की पुतली की तरह रक्षा करनी चाहिए। अगर ज़रूरी हुआ, तो अस्क़ार शायद ख़ुद चला जायेगा। बेशक उसकी यहां ज़रूरत है, लेकिन सुखी रहना उसके लिए ज्यादा ज़रूरी है। बिना इसके सब बेकार है।"

"वैसे मैं कोई राजनयिक तो हूं नहीं, पर फिर भी सारी बातों का पता लगाने की कोशिश करूंगा।"

"जोमार्त को हमारी यथासंभव सहायता करनी चाहिए, उसकी मदद से क्लब, चिकित्सा-केन्द्र और स्कूल के प्रामाणिक डिज़ाइन निकलवाने की कोशिश करना। हमें अपना स्कूल बनाना है," अस्क़ार ने ज़ोर देकर कहा। "बच्चों को बीस किलोमीटर दूर दूसरे सामूहिक फ़ार्म में पढ़ने जाना पड़ रहा है।"

"और ज़उरेश से क्या कहूं,?" बाऊकेन ने सीधी बात कही।

"तुम्हारे जाने के दिन तक कुछ सोच लूंगा।"

* * *

"यह थैला दे देना," अस्क़ार ने बाऊकेन को छोड़ने जाते समय कहा। सफ़ेद रूमाल में गीली काली मिट्टी में लिपटे गुलचांदनी के छोटे-छोटे गोल-गोल अंकुर और मंजिष्ठा की जड़ें रखी थीं। "वह इन्हें डिब्बे में लगा देगी, तो फूल निकल आयेंगे... एक बार बचपन में मैंने इस तरह की जड़ें भूनकर ज़उरेश को खिलायी थीं। उसने कहा था कि वे उसे बहुत स्वादिष्ट लगीं। फिर हम इस तरह के फूल चुनने लगे थे। उसे याद आ जायेगा..."

"ठीक है। तुम्हारा काम कर दूंगा," बाऊकेन ने ख़ुशी-ख़ुशी कहा। अब ज़उरेश को अस्क़ार के बारे में बताने में उसे आसानी होगी। "ख़ुदा करे, बस इन जड़ों को विश्व-युद्ध के दिनों में जिस तरह खाना पड़ा, अब कभी चखना भी नहीं पड़े।"

* * *

बाऊकेन की जोमार्त के साथ बातचीत कुछ ढंग से नहीं हो पा रही थी। जोमार्त के अक्तूमा छोड़कर चले जाने के बाद से बाऊकेन को उससे कुछ चिढ़-सी हो गयी थी। वैसे उसे दोष भी किस लिए दिया जाये? गांव के बुज़ुर्ग कहते थे: आख़िर सभी तो गांव में नहीं रह सकते, जोमार्त वास्तुविद बनना चाहता है, उसे शहर बनाने दो, अक्तूमा के लोगों को सिर्फ़ शिक्षक और चरवाहे ही तो नहीं बनना है। इस बात की याद

ग्राने पर बाऊकेन ने पूछा कि उसकी वास्तुकला की पढ़ाई कैसी चल रही है। जोमार्त ने जब महसूस किया कि ग्राख़िरकार बातचीत उसके प्रिय विषय पर होनेवाली है, तो उसने रेमार्क की खुली हुई पुस्तक एक ग्रोर सरका दी।

"मैं ने यों ही तो पुराविद्या छोड़कर वास्तुकला पढ़ना शुरू नहीं किया। तुम चाहो, तो मैं हमारी योजनाग्रों के बारे में सुनाऊं... कल्पना करो कि हमारी मुलाक़ात इस वक़्त नहीं, ग्राज से कुछ समय बाद होती है। समझे?" ग्रपने माथे पर गिर रहे बालों को उसने पीछे किया। उसकी ग्रांखों में ख़ुशी की वही चमक ग्रा गयी, जो बाऊकेन बचपन से देखता ग्राया था। "मान लो हमारी मुलाक़ात चोकान के स्मारक के पास होती है।"

"तुम्हारी बात मैं समझा नहीं," बाऊकेन ने कहा। "मैंने तो सिर्फ़ टेकनिकल स्कूल पास किया है, तुम्हारा दर्शन मेरी समझ से बाहर हो सकता है।"

"टोको मत। मैं तुम्हें इस तरह से बताऊंगा कि तुम सब समझ जाग्रोगे। ऐसा स्मारक शीघ्र ही बनेगा। ग्राशा है तुम यह नहीं भूले होगे कि बचपन में हम कैसे चोकान जैसा बनने की कोशिश करते थे। हां, तो सुनो। तुम कल्पना करो कि तुम कहीं बहुत दूर हो। ग्रौर मैंने तुम्हें पत्र भेजा है। तुमने ग्राने का वादा किया ग्रौर मैंने तुम से पहली बार चोकान के स्मारक के पास मिलना तय किया। हमारी जुदाई के वर्ष बड़ी जल्दी बीत गये। इस बीच बहुत कुछ बदल गया," जोमार्त ने ग्रपनी कल्पनायुक्त दृष्टि खिड़की में टिकाये ग्रागे कहा। "स्तेपी के बीचोंबीच इरतीश से बेतपाक-दाल तक बेजोड़ नहर बना दी गयी। कास्पियन सागर में पटेले चलने लगे, मुयून की रेत में बाग़ ग्रौर कपास लहलहा उठी। शारदारा ग्रौर मिर्ज़ाचोल में ताड़ की हरी-भरी वीथिकाएं बन गयीं।"

जोमार्त मुस्कराकर चुप हो गया। फिर ग्रपनी हथेली से सिर के बाल पीछे कर खिड़की के पास से हट गया ग्रौर शरारती मुस्कान से बाऊकेन की तरफ़ देखने लगा।

"इस बीच क़ज़ाख़स्तान में बहुत-से नये शहर, कारख़ाने, फ़ैक्ट्रियां ग्रौर सड़कें बन जायेंगे। कल्पना करो कि उनमें से एक सड़क पर तुम ग्रल्मा-ग्रता की ग्रोर जा रहे हो। यह एक नया पहाड़ी मार्ग है, जो जइली

अलताऊ की चोटियों से होकर निकलता है। तुम्हारी प्लास्टिक की बनी बिजली से चलनेवाली हल्की मोटरकार आसानी से चढ़ाई चढ़ लेती है। परी-कथा की सी सुन्दर इस्सीक़-कुल झील से अलमा-अता तक का रास्ता हिमधवल शिखरों, शाश्वत हिम, पहाड़ी झरनों से होकर विशाल चट्टानों, पहाड़ी जंगलों, पर्वतमालाओं और घाटियों के पार जा रहा है। यह नया मार्ग आल्प्स में बनी पर्यटकों की सड़कों, आस्ट्रिया और स्विटज़रलैंड की पहाड़ी सड़कों से किसी बात में कम नहीं है। तरह-तरह की सैंकड़ों रंग-बिरंगी मोटरकारें इस रास्ते से किर्गीज़ियाई पर्वतों के रत्न इस्सीककुल, किर्गीज़िया के शहरों, वहां से ताशक़न्द, शारदारा, ग़ज़ली, गुलिस्तान, समरक़न्द और फिर वापस हमारे शहर और हमारे बाग़ों की ओर दौड़ी जा रही हैं। पर्यटकों को हमारे कप्चागाय समुद्र के सुनहरे तट पर सूर्यस्नान बहुत अच्छा लगता है। यह समुद्र जल्दी ही अलमा-अता के पास बन जायेगा। पर्यटकों को हमारे पर्वत, बाग़, हमारी अनूठी पर्वतीय स्केटिंग रिन्क आकर्षित कर रहे हैं, और सब से ज़्यादा तो स्वयं हमारा नगर आकर्षित कर रहा है।

ऐसा होगा हमारा शहर! यह देखो, नीचे महान अलताऊ की तलहटी में विशाल कटोरे की तरह झिलमिला रहा है।" जोमार्त ने अपने ड्राइंग खोल दिये। "कटोरे के ऊपर बहुत तेज़ सफ़ेद रोशनी चमक रही है। शहर के पीछे स्तेपी है, जो शाम के धुँधलके में लिपटी हुई और जिसके आर-पार नयी सड़कों की बत्तियों की कतारें जगमगा रही हैं।

तुम बिना शोर किये विश्रामगृहों, सेनेटोरियमों, और शहर को सस्ती विद्युतशक्ति देनेवाले अनेक पर्वतीय बिजलीघरों के पास से गुज़रते हुए शहर में दक्षिण की ओर से प्रवेश करते हो। तुम अपनी यात्रा उस स्थान से आरम्भ करो, जहां ग्रेनाइट की चट्टान पर आबाय का स्मारक है।

खिड़कियों पर पड़े बेलबूटेदार परदों, कारख़ानों की शॉपों की शीशे की दीवारों, तरह-तरह की चीज़ों से अटे शो-कैसों के पीछे, इमारतों के ऊपर, रास्तों और चौकों पर सफ़ेद, पीले, हरे और नारंगी रंग की बत्तियां जगमगा रही हैं। एकाएक विज्ञापनोंवाले निओन-दीप जल उठते हैं जिनके किनारों पर राष्ट्रीय अलंकरण बना हुआ है। तुम मुझसे ठीक निश्चित समय पर मिलने के इरादे से अपनी घड़ी पर नज़र डालना चाहते हो लेकिन सुन्दर शहर पर से अपनी नज़रें हटा ही नहीं पाते हो।

सर्चलाइटों और बत्तियों की धुँधली रोशनी गुलाब की अधखिली कलियों पर, बर्फ़ के ढेर-से सफ़ेद सेब के फूलों, ट्यूलिपों, पोस्त के सुर्ख़ फूलों पर पड़ रही है, जिन्हें स्तेपी से लाकर शहर के घास के मैदानों में लगा दिया गया है। चारों ओर पहाड़ी देवदार की कतारें खड़ी हैं। पवन के मन्द-मन्द झोंके पेड़ों के पत्तों को फड़फड़ा रहे हैं, कहीं बहुत दूर किसी बाग में से किसी युवती का आकर्षक गीत सुनाई दे रहा है। तुम पत्तों की सरसराहट और प्रेमियों की दबी हुई आवाज़ें सुनते हुए चांदी-सी झिलमिलाती कलकल करती नहर के किनारे-किनारे चौड़ी और रोशनीदार सड़क पर चलते हुए रिहायशी मकानों के आगे से गुज़र रहे हो, जो बहुत हल्के-फुल्के लगते हैं। ये मकान भवननिर्माण कला के आधुनिकतम तरीक़ों से बनाये गये हैं और इनमें पूर्वी नगर निर्माण की श्रेष्ठतम परम्पराओं का समावेश है।

तुम अपने दोस्त से मिलने की जल्दी में हो। लेकिन फिर भी बारबार रुककर इस नयी विलक्षण इमारत को देख रहे हो।" जोमार्त ने ड्राइंग पर उंगली से दिखाया। "तुम हवा की सरसराहट, गीत को सुने बिना और मूर्त्ति समूहों को देखे बिना रह नहीं पा रहे हो।"

बाऊकेन सुनता रहा, जोमार्त का उत्साह धीरे-धीरे उसमें समाता जा रहा था। बाऊकेन सोच रहा था कि जोमार्त कवि बन सकता है, एक बहुत ही अच्छा कवि।

बाऊकेन यह भूल गया कि वह कमरे में बैठा है। जोमार्त की कल्पना की उड़ान के साथ-साथ वह भी उड़ चला था। वह अपने ख़यालों में भविष्य के शहर की सड़कों पर घूम रहा था। चलते-चलते वह देख रहा था कि जोमार्त के सपने साकार हो चुके हैं।

जोमार्त सुनाता रहा। वह जादूगर था, उसमें अपने श्रोता की आंखों के आगे अतिस्पष्ट चित्र उभारने का सामर्थ्य था।

"हमारा शहर ऐसा हो जायेगा। लेकिन अभी तक हमने अपने सपनों के दसवें अंश को भी कार्यरूप में परिणत नहीं किया है," उसने कहा। "मैं तुम्हें सिर्फ़ वही दिखाऊंगा, जो इन सालों में बनाया गया है, अपने भूत, वर्तमान और भविष्य की कहानी शहर स्वयं सुनायेगा। हां, हां। तुम ऐसे हैरान होकर मेरी तरफ़ मत देखो। शहरों को भी बोलना आता है, हर गांव भी अपनी कहानी सुनाना जानता है। उनका भाग्य लोगों

के भाग्य का अभिन्न अंग होता है। वे भी लोगों की तरह ही जीते हैं उनका अपना विशेष स्वभाव, जीवन की अपनी लय, अपना ढंग और अपना तरीक़ा होता है। उनकी अपनी ख़ुशियां, अपने ग़म, अपने सपने और अपनी आकांक्षाएं होती हैं। वे भी जवानी और बुढ़ापे के दौर से गुज़रते हैं।

शहर भी कुछ लड़कियों की तरह चंचल और बूढ़ों की तरह बुद्धिमान हो सकते हैं। वे व्यापार से या शानदार वैज्ञानिक खोजों, गीतों, कला और अमीरी या ग़रीबी से प्रसिद्धि पा सकते हैं। क्रूर, शांत और दयालु हो सकते हैं। लोगों की तरह बोलते और सांस लेते हैं। सुन रहे हो? हमारे शहर की सांस कितनी शान्त, स्पष्ट और समान गति से चल रही है।" जोमार्त ने खिड़की खोल दी। "वह कितने चैन की नीन्द सो रहा है। इसे किसी चीज़ का अभाव नहीं है और अपने भविष्य में उसका पूरा विश्वास है। उसके बच्चे सुखी और स्वस्थ हैं, इसीलिए वे भी गहरी नीन्द में सो रहे हैं।

हर शहर का अपना इतिहास निराला ही होता है। मनुष्य केवल शहर की सांसों को ही नहीं, उसके हृदय और नाड़ी के स्पंदन को भी सुन सकता है और पता लगा सकता है कि वह कैसी ज़िन्दगी जी रहा है।

कभी-कभी उसका स्पंदन रुक जाता है, शहर कार्थेज, अफ़ासिआब और ओतरार की तरह मर जाता है। या फिर उस शहर की भांति जो इस समय हमारे अलमा-अता के नीचे दबा पड़ा है। लेकिन मनुष्य में अपनी रचना को अमर बना देने की शक्ति है।

"तुम तो सचमुच स्वप्नदर्शी हो गये हो, जोमार्त।"

"मैं हमेश स्वप्नदर्शी रहा हूं। बिना सपनों और कल्पना के वास्तुकला असम्भव है। फिर आदमी भी बिना सपने देखे नहीं रह सकता।" एकाएक जोमार्त चुप हो गया और एकाग्रचित्त हो अपने ड्राइंग समेटने लगा।

"तुम्हारे पास हमारे क्लब या स्कूल के लिए कोई सीधा-सादा ड्राइंग है?" बाऊकेन ने पूछा।

"तुम्हें सारे गांव के लिए ड्राइंग की ज़रूरत है। शहररूपी गांव के लिए, जिस में क्लब, स्कूल और थियेटर आदि सब हो। लेकिन इस तरह का ड्राइंग अभी नहीं है। डिज़ाइन संस्थान और सांस्कृतिक मंत्रालय में जाना होगा। लेकिन वहां शायद ही कुछ मिल सके। ज़उरेश ने भी इसमें कुछ दिलचस्पी ली थी।"

"वह कैसी है? मैं कल उसके पास जानेवाला हूं।"

"ख़ुद ही देख लोगे। मज़े में है, दो बार प्रायोगिक प्रशिक्षण ले आयी है, संस्थान की पढ़ाई समाप्त कर चुकी है। हाऊस-सर्जन बनने के लिए पढ़ाई कर रही है और अस्क़ार के बारे में सोचती रहती है," जोमार्त ने सोच में डूबे हुए कहा। कमरे में तकलीफ़देह चुप्पी छा गयी। किसी ने दरवाज़ा खटखटाया। दहलीज़ में छंटे हुए बालोंवाली एक सुन्दर लड़की दिखाई दी, जिसने हरे रंग के दस्ताने पहने हुए थे...

"आ रहे हो क्या?" उसने बाऊकेन की ओर ध्यान दिये बिना कहा।

"अभी आया, एक मिनट ठहरो, प्रिया," जोमार्त ने बाऊकेन की ओर क़सूरवार की तरह देखकर कहा।

"मैं इन्तज़ार कर रही हूं," लड़की ने दरवाज़ा भड़ाक से बन्द कर दिया।

"अच्छा मैं चलता हूं," बाऊकेन उठ खड़ा हुआ।

"माफ़ करना। हम थियेटर जा रहे थे।" जोमार्त ने क्षमा-याचना की।

बाऊकेन को न जाने क्यों कुछ बुरा लग गया। वह जल्दी से उससे विदा लेकर बाहर निकल गया।

लेकिन रात्रिकालीन शहर में अपने होटल की तरफ़ चलते हुए वह इस अप्रिय घटना के बारे में भूल गया। जोमार्त की कहानी सुनने के बाद सभी चीज़ों के बारे में उसका दृष्टिकोण बदल गया था।

"कुछ भी हो, जोमार्त आदमी अच्छा है," वह सोच रहा था, "वह अपने गांव नहीं लौटा तो इसमें कोई बुरी बात नहीं है। वह जो चाहता था, उसे मिल गया है, उसकी ज़रूरत यहां है। लेकिन डिज़ाइन कहां से मिल सकेगा?" वह नीन्द की आग़ोश में जाते-जाते बड़बड़ा रहा था।

* * *

"क्या ख़बर है, अता," साकिश ने खनकती हुई आवाज़ में पूछा।

लड़की अपनी चोटियों को समेटकर रूमाल बांधे और आस्तीनें ऊंची किये बड़ी फुर्ती से नांद में बालू मिली हुई मिट्टी भर रही थी।

"तुम्हें किस बात में दिलचस्पी है, बेटी?" सपार ने उसके काम से मुग्ध होकर पूछा।

"हमारी टोली का मुखिया तो बिलकुल ही ग़ायब हो गया।"

"बाऊकेन के बारे में कह रही हो? शायद वह किसी काम में लगा हुआ है। ऐसे नौजवान को तो हर कोई मेहमान बनाना चाहेगा," सपार शरारती ढंग से मुस्कराया। "तुम्हें क्या उससे कोई ज़रूरी काम आ पड़ा है?"

"काम से मुझे उसके पास जाने की क्या ज़रूरत पड़ी है," साकिश ने आस्तीन से नाक पोंछते हुए नख़रीले स्वर में कहा। "अजीब मुखिया है टोली का, काम छोड़कर घूमता फिरता है।"

"जब वह आये तो उसके साथ ज़रा सख़्ती से पेश आना," सपार मुस्कराया। "अच्छा अब ख़त्म करो, लड़कों को आवाज़ दे दो। घर जाने का वक़्त हो गया है। आज के लिए काफ़ी हो गया, मिट्टी भी सारी ख़त्म हो चुकी है, सुबह तक लोग और तैयार कर लेंगे।"

सामूहिक फ़ार्म का केन्द्र अक़्तूमा से तीन किलोमीटर की दूरी पर था, इसीलिए सपार अपने गाँववालों को गाड़ी में काम पर लाता और वापस घर ले जाता था।

"अस्क़ारजान, काम बन्द करो। आज तुम्हारे मेहमान आनेवाले हैं।"

"कौनसे मेहमान?" साकिश ने अस्क़ार से पहले पूछ लिया।

"शहर से," सपार ने, जो आज बहुत ज़्यादा ख़ुश दिखाई दे रहा था, आंख दबाई।

अस्क़ार भांप गया कि वृद्ध उनसे कुछ छुपाने की कोशिश कर रहा है, पर छुपा नहीं पा रहा है।

"अरे, आपने पहले क्यों नहीं बताया," साकिश जल्दी करने लगी। "मेरी पोशाक पर धब्बे लग गये हैं। मुझे जल्दी से घर जाना चाहिए।"

"क्या तुम्हें पता है कि कौन आ रहा है?"

"ऐसी बातें छोड़िये, अता। मैं कोदार के साथ जाऊंगी जिससे कि जल्दी पहुच जाऊं।"

"अरे, कोदारजान, अपना घोड़ा साकिश को दे दो, उसे जल्दी घर पहुंचना है!" सपार ने लड़के को आवाज़ दी।

अपनी छुट्टियों में कोदार हरकारे का काम करते समय भूरे रंग के घोड़े पर सवारी करता था जो धौले माथेवाले की सन्तान था।

"एक मिनट, सपार-अग़ा, मैं पार्टी ब्यूरो के कमरे में झांक लूं, पता कर लूं कि मीटिंग कब होगी," अस्क़ार ने अनुरोध किया।

"लो अब इसका और भी इन्तज़ार करना पड़ेगा। अच्छा पार्टी का सदस्य बना है," साकिश लपककर घोड़े पर सवार हो गयी।

"दमेश से कह देना कि खाना बढ़िया बनाये। मेरी बुढ़िया से कह देना कि उसकी मदद करे, अपनी सारी मिठाइयां निकालकर परोसे और मुर्ग़ी की तरह सन्दूक़ पर न बैठी रहे!"

"क्या बात है, सपेके? साफ़-साफ़ बताइये," अस्क़ार ने गाड़ी में बैठते हुए पूछा।

"हर बात का अपना वक़्त होता है, ख़ुद पहुंचोगे तो देख लेना," सपार ने जवाब दिया।

उसने मन-ही-मन इस बात पर ध्यान दिया कि आज अस्क़ार ने पहली बार उसे अपने बराबर के आदमी की तरह "सपेके" कहकर पुकारा है। वृद्ध को यह अच्छा लगा। वह कब से अस्क़ार में सच्चा आत्मविश्वास, पुरुषोचित आत्मगौरव और छिपी शक्ति जागने की प्रतीक्षा कर रहा था। सादगी बेशक एक अच्छा गुण है। लेकिन जब उसके साथ आदमी में अपनी शक्ति और अपने सम्मान का अहसास एवं आत्मविश्वास की भावना जाग उठती है, तो वह पहले से बेहतर और शक्तिशाली हो जाता है। बुढ़ापा भी ख़ूब है, हमेशा कोई न कोई मज़बूत सहारा ढूंढ़ता रहता है।

वे पुराने धूलभरे रास्ते से गेहूं के लहलहाते खेतों के बीच जा रहे थे। निर्मल नीले आकाश में एक उक़ाब चक्कर काट रहा था।

"बहुत ऊंचा उड़ता है," सपार ने अपनी आदत के अनुसार कहा।

"आप किसकी बात कर रहे हैं?" अस्क़ार सोच-विचार से जाग उठा।

"उक़ाब बहुत ऊंचे उड़ते हैं... मालूम है, अस्क़ार, वे मरते भी ऊंचाई पर हैं। घावों या बुढ़ापे की वजह से अपनी मौत को नज़दीक आते महसूसकर उक़ाब अपनी बची-खुची ताक़त लगाकर आकाश में ऊंचा उड़ जाता है। फिर पंख समेटकर वह नीचे गिरता है और चट्टान से टकराकर टुकड़े-टुकड़े हो जाता है।"

अक्तूमा के नज़दीक रास्ता एक टेकरी का चक्कर लगाते हुए निकलता है, जिस पर एक क़ब्र बनी थी। उक़ाब अस्क़ार के पिता की क़ब्र के ऊपर चक्कर काट रहा था।

टेकरी के शिखर की ओर देखते हुए सपार को बीती बातें याद हो आयीं, उसने एक ठंडी सांस लेकर लगाम झटकी:

"चल, चल, ज़रा रफ़्तार बढ़ा!"

"बाबा, लगाम मुझे दे दीजिये," कोदार ने, जो पीछे टांगें लटकाये बैठे-बैठे उकताने लगा था, कहा।

"सीधे स्कूल हांक ले चलो, अस्क़ार के यहां चलकर चाय पियेंगे," सपार ने शरारती ढंग से कहा।

जब वे वहां पहुंचे, तो अस्क़ार ने उतरकर अपने कंधों पर कोट डाल लिया और सबको दमेश-आपा के घर में निमंत्रित किया।

"जल्दबाज़ी मत करो, बेटा। देखो और भी मेहमान आ रहे हैं," सपार ने ज़िला मुख्यालय से आनेवाले रास्ते की ओर सिर हिलाकर कहा।

"ज़रूर बाऊकेन लौट रहा होगा" अस्क़ार ख़ुश हुआ, लेकिन नारी आकृति देखकर ध्यान से देखने लगा।

उसे लगा यह ज़उरेश आ रही है। सब कुछ भूल वह उसकी ओर दौड़ा। उसका कोट कंधों पर से खिसककर रास्ते में गिर पड़ा। कोदार ने उसे जल्दी से उठाकर गाड़ी में रख दिया।

"इस तरह तो तुम अपनी टांगें तोड़ लोगे," बाऊकेन हंस पड़ा।

उसके साथ एक अपरिचित लड़की बैठी थी।

"मैंने सोचा ..." उसने क़सूरवार-सा कहा।

"मैं जानता हूं, तुम क्या सोच रहे थे। ज़उरेश एक महीने बाद आयेगी। उससे मुलाक़ात की तैयारी कर लो। अरे, खड़े क्यों हो। इनसे मिलो। यह हमारी कृषिविद हैं। सीधे अलमा-अता से आयी हैं," उसने कहा।

फिर उसने सपार से दुआ-सलाम किया और आगंतुका को टकटकी बांधे देख रहे कोदार की नाक पकड़कर हिला दी।

"तुम उधर देखो," सपार ने बाऊकेन को सिर हिलाकर उस ओर इशारा किया, जहां नहा-धोकर कपड़े बदलकर आयी साकिश खड़ी थी।

"सलाम, बेटी! बड़ी ख़ुशी की बात है कि तुम आयीं," सपार ने कृषिविद लड़की से कहा। "लाओ अपना सामान दो। थक गयी होगी। कोई बात नहीं। समझो कि तुम अपने घर आयी हो... अस्क़ार तुम क्या कर रहे हो? मेहमान को अपने घर बुलाओ।"

"बाऊकेन कहां है, वह कब आया?" दमेश-आपा आ गयी।

"वह रहा, दिखाई दिया?" सपार ने मुस्कराते हुए कहा।

बाऊकेन और साकिश एक दूसरे से कुछ बातें करते पगडंडी पर धीरे-धीरे चलते वसन्त में अस्क़ार के छात्र-छात्राओं द्वारा लगाये गये बाग़ की तरफ़ जा रहे थे...

१६६०–१६६१

13—3522

ओतार का स्मृति-चिह्न

अनुवादक : राय गणेश चन्द्र

13—3522
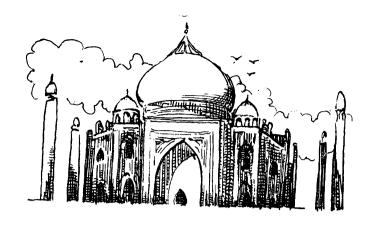
अतीत व दुनिया भर के देशों का ज्ञान मानव-मस्तिष्क के लिए आहार ही नहीं, अनमोल निधि भी है।

लियोनार्दो द विंसी

ऐसा ज़माना था, जब यह भूमि हरी-भरी थी। आजकल भी मानसून के बाद यह प्रफुल्लित हो उठती है।

लेकिन इस समय यह ज़मीन ज़ंगदार सूखे टीन की तरह खनखना रही है। हवा गले को सुखा देती है, शरीर को पेर कर मानो पसीने की अंतिम बूंदें भी निकाल लेती है। और ड्राइवर किसी न किसी तरह उमस को थोड़ा कम करने के लिए गति बढ़ा रहा है। छह सीटोंवाली चौड़ी मोटर-कार "कैप्टन" अधिकाधिक तेज़ी से आगे बढ़ रही है।

सूरज अस्त होने जा रहा है। जोमार्त और उसके हमराही सूर्यास्त तक फ़तेहपुर सीकरी देख लेना चाहते हैं। वे जल्दी कर रहे हैं। लेकिन इतने में जंगली मोरों का एक झुंड रास्ते को धीरे-धीरे पार करता नज़र आया। ड्राइवर गति कम कर देता है। एक छोटे-से धूसर गांव के पास से गुज़रते समय एक दुबली-पतली गाय रास्ते के बीचोंबीच लेटी मिली। ड्राइवर ब्रेक मारकर गाय को बचा लेता है और पहियों के नीचे आने से मुश्किल से बच पाते राहगीरों पर ध्यान न देकर तेज़ी से आगे बढ़ता है।

सड़क के किनारे मानो ज़मीन में गड़ा एक साधु बैठा है। यह आजकल के भारत के हज़ारों संन्यासियों में से एक है। वह नंगा मगर गौरवपूर्ण, काला और दुबला-पतला है। लम्बी-लम्बी काली लटें दाढ़ी से मिलकर एकाकार हो जाती हैं। काली आंखें एक ही बिंदु पर टिकी हैं। वह संसार त्यागी संन्यासी है जो कहीं दूर गमन से पूर्व कुछ विश्राम करने बैठा है। शायद वह संन्यासियों की राजधानी बनारस जा रहा हो, जिसे साधु स्वर्ग का द्वार कहते हैं।

दूर से लकड़ी की ढेंकीवाला कुआं दिखाई दे रहा है। ढेंकी पर संतुलन रखते हुए एक दुबले टांगोंवाला आदमी चल रहा है। विश्व का सबसे अच्छा नट भी उससे स्पृहा कर सकता है। कभी पत्थर के प्रतितुला, कभी चरसे को नीचे झुकाता वह थका हुआ आगे-पीछे चल रहा है। वह इस मुट्ठी भर सूखी ज़मीन के मालिक, ग़रीब किसान का सेवक है।

"अगर गिर जाये तो?" जोमार्त की बग़ल में बैठी युवा अमरीकन ने पूछा।

"गिरा तो मर जायेगा, मिस," जोमार्त की जगह ड्राइवर ने उत्तर दिया। "अगर अभी नहीं तो थोड़ी देर बाद भूख से। उसको कोई दूसरा काम नहीं देगा। दुनिया में भूखे बहुत हैं। सबको काम चाहिए।"

"सभी को खिलाया भी तो नहीं जा सकता। यहां भिखारी बहुत हैं," लड़की दार्शनिक अन्दाज़ में बोली।

जोमार्त को कुछ भी सुनाई नहीं दिया। वह अपने ख़यालों में डूबा था। जो कुआं उसने इस चटियल मैदान में देखा वह दूसरे दृश्य की, आगरा से जाते समय नज़र आये दृश्य की याद दिला रहा था।

अहाते के केन्द्र में कुआं है, वह चक्की के पाट जैसे एक बड़े पहिये से ढका है। एक मोटा-सा बांस पहिये से मज़बूती से जुड़ा है। मानो उसे अभी-अभी राख से निकाली गयी हो, ऐसी खाकी लंगोटी पहने दुबला-पतला बूढ़ा जिस की सिर्फ़ हड्डियां ही रह गयी थीं, पहिये को चलाने के लिए ज़ोर लगाकर बांस को गोलाकार ढकेल रहा है। पानी की हल्की धारा कुएँ से निकल नाली से होती अहाते की गहराई में ग़ायब हो जाती। लगता था बूढ़ा बाँस से जुड़ा हुआ हो और उससे अलग नहीं हो सकता, अपनी पीठ तक सीधी नहीं कर सकता। लगता था रौंदे हुए ज़मीन के इस टुकड़े के अलावा उसके जीवन में और कुछ न रहा।

बूढ़े के पैरों तले रौंदी ज़मीन की याद आने पर जोमार्त के मन में विचार आया कि वह रास्ता जिसपर वे नयी कार में तेज़ी से बढ़ रहे हैं, कितना पुराना है।

यह बहुत पुराना रास्ता है और यहाँ की भूमि हज़ारों घोड़ों की टाप से पत्थर जैसी सख़्त हो गयी है। इसी रास्ते पर बैलों ने पत्थर, संगमरमर और ग्रेनाइट खींचे थे, ऊंटों पर दूरवर्ती देशों से रेगिस्तान पार करके चांदी और सोना लाया गया और सैंकड़ों हाथी हिन्दुस्तान के भूतपूर्व शासकों – महान मुग़ल बादशाहों के हीरों से लदे रेशमी तंबुओं को लेकर चले थे।

इसी पथ पर भीड़ को तितर-बितर करता २८ वर्षीय अकबर प्राय: चला करता था, जो विजयों और ख्याति का पर्याय था, शेर जैसा साहसपूर्ण, हिरण जैसा चतुर, सुनहरी लोमड़ी की तरह चालाक और मिट्ठा था। वह कला का संरक्षक, जोशीला और पक्का शतरंजबाज़ था। वही अकबर, इतिहास में महान मुग़ल साम्राज्य का तीसरा बादशाह।

बाबर के बाद तीसरा। वही अकबर, जो १३ साल की उम्र में तख़्त पर बैठा था और और ३० के आस-पास मालवा, राजपुताना और गुजरात, हिमालय से लेकर अरब सागर तक, सिंध के निकास से गंगा के मुहाने तक भारत पर क़ब्ज़ा कर चुका था।

वह सदा अचानक आ धमकता था। यमुना की ओर से जहां नीला महल खड़ा था, वज्र की तरह वह आगरा से उस तरफ़ दौड़ता था, जहां समतल मैदान के बीचोंबीच पथरीला पहाड़ खड़ा था, जो उसके मध्य एशियाई घुमंतू पूर्वजों के काले गोल तंबू-घरों की याद दिलाता था। रास्ता साफ़ करते हुए उसके आगे संदेशवाहक और सन्तरी दौड़ते थे। दास और सैनिक, निर्माता और संगतराश, अमीर और नौकर, पथ-प्रदर्शक और कंगाल, धूप से पीड़ित लोग, यह सब के सब कवच और म्यान चमकाते इसी पथ पर धीरे-धीरे रेंगते थे।

कभी-कभी संदेशवाहकों और सन्तरियों के चाबुक लोगों के इस प्रवाह को भंग करते थे। सफ़ेद घोड़े के सालार को देखकर लोग ज़मीन पर गिर जाते और अपना मुँह घास और धूल में छुपा लेते।

अकबर काली पोशाक पहने अंगरक्षकों के घेरे में सरपट घोड़ा दौड़ाता चलता था। वह सुडौल, उन्नतमस्तक और बाल-सुलभ आह्लाद से परिपूर्ण रहता। वह ख़ज़ांची को उस सुन्दरी को मुट्ठी भर मोती फेंक देने का आ-

देश दे सकता था जो उसे निहार रही होती थी। और कभी-कभी उसकी आंखें चमक उठती थीं, वह तेज़, बिना शोर मचाये, तलवार म्यान से निकालता और किसी का सिर से जुदा लरज़ता तन क्षण भर को धूल से ऊपर उठता, फिर हमेशा के लिए ज़मीन पर गिर पड़ता।

बादशाह हाथ के एक इशारे से दस चुने सिपाहियों को मैदान पर निकाल, हाथ में तलवार लिये रणहुँकार के साथ उनपर हमला कर सकता था। अगर डरकर किसी ने प्रत्याक्रमण नहीं किया तो उसकी मौत निश्चित होती थी। सैनिक जितनी अधिक क्रूरता से लड़ते अकबर उतनी ही अधिक चालाकी से, उतनी ही तेज़ी से हमला करता था। लेकिन अगर उनमें से कोई संभावित चोट पहुंचाने में सफल रहता तो बादशाह ईमानदारी से अपनी पराजय मान लेता था और विजेता सौ सैनिकों का कमाँडर, कभी-कभी तो दस हज़ारी मनसबदार तक बन जाता था। मगर ऐसी घटना विरले ही होती थी, क्योंकि अकबर १३ वर्ष की आयु से ही हाथ में मज़बूती से तलवार पकड़ना सीख गया था। वह प्रतिद्वन्द्वी के हर प्रकार के हमले का सामना कर सकता था।

विजयी होना उसकी आदत बन गयी थी और अपने सिपाहियों के साथ "लड़ाई" उनकी परीक्षा मात्र थी। महान बादशाह के सैनिक लड़ने में उसके जितने ही माहिर होने चाहिए। उसके सैनिक बहुत कम विश्राम करते थे। वे दूर की यात्रा पर जाते समय काठी पर सोते और फिर अचानक शत्रु पर हमला करते।

विजय पाने के बाद विजित ज़मीन पर अकबर नवाब नियुक्त कर ख़ुद विजय मनाते हुए जंगल में शिकार पर रवाना हो जाता था। उसके पीछे-पीछे पेड़ों को नष्ट करते प्रहरी घुसते थे और फिर शिकारियों द्वारा प्रशिक्षित बाज़ों, तेंदुओं और चीतों को लेकर चतुर युवक चलते थे।

शिकार में अकबर कुछ समय के लिए काम के बारे में भूल जाता था लेकिन थोड़े ही दिनों बाद वह फिर यमुना के किनारे स्थित अपनी राजधानी, नीले महल की ओर दौड़ पड़ता था, राजदूतों और सेनापतियों से मुलाक़ात करता, संगीत का रसास्वादन करते हुए, नर्तकियों का नृत्य देखते हुए ख़ुश होता था, बड़े स्नेह के साथ अपनी बेटियों से बातचीत करता था या तो हाथी दाँत से बनाये शतरंज खेलते-खेलते रात बिताता था। शतरंज वह राजदूतों, विदेशी सौदागरों के साथ और प्रायः

अपने आप से खेलता था। शतरंज की बिसात पर वह अपनी भावी यात्रा-ओं, घुड़सवार और स्थल-सैनिकों, हाथियों और सरबाज़ों की पैंतरेबाज़ी की जांच करता था। वह "शत्रु" के अधिक सिपाहियों के खिलाफ़ अपने सिपाहियों को अल्प संख्या में लड़ाता था, रक्षा करने के जटिल तरीक़े ढूंढ़ निकालता था। शतरंज खेलते समय वह घोड़ों के हमले को बेहतर मानता था और लड़ाई में अश्वारोही सेना पर ही विश्वास करता था।

जब वह शतरंज की चालों में मशग़ूल रहता, कोई भी वज़ीर या से-नापति उसका ध्यान भंग करने का साहस न करता था। यहां तक कि शरीफ़ और बुद्धिमान वज़ीर फ़ज़ल और उसके भाई फ़ैज़ी भी। सिर्फ़ धर्म-गुरू सलीम चिश्ती ही अकबर का साधारण सिपाही-सा संबोधन कर सकता था और अकबर प्रायः उसी के विचार पर निर्णय लेता था। सलीम के सामने बादशाह एक विनयशील युवक था। क्रोध के क्षण में बूढ़ा उसे ठंडा और शाँत स्थिति में उसमें क्रोध उत्पन्न कर सकता था।

सलीम पथरीली पहाड़ी में नमदे से बनाये गये साधारण तंबू-घर में रह-ता था। और अकबर पथरीली पहाड़ी से नीले भवन, और उधर से फिर बूढ़े सलीम के तंबू-घर की ओर भागता था, ताकि अपने प्रिय सेनापति, मित्र और दूरदर्शी राष्ट्रीय कार्यकर्त्ता से सलाह-मशविरा कर ले। सलीम के घर से अकबर भारतीय साहित्य के माहिर फ़ैज़ी के घर भागता था, जिसने धार्मिक महाकाव्यों का संस्कृत से फ़ारसी और चगताई भाषाओं में अनुवाद किया था...

और एक आदमी, जिसकी सलाहें युवा सम्राट मानता था, शेख़ तो-हार था, जो विलक्षण कूटनीतिज्ञ और ईमानदार ख़ज़ाँची था।

अकबर ने तोहार को पैसे की कोताही न करने का आदेश दिया।

भूत और भविष्य की विजयों के सम्मान में, सद्यः प्रसूत पुत्र के सम्मान में अकबर लाल पत्थर और सफ़ेद संगमरमर से नये नगर फ़तेहपुर सीकरी का निर्माण करवा रहा था। कितने समय तक ज्योतिषी, जादूगर आदि उसके लिए पुत्र फल की भविष्यवाणी करते रहे थे। लेकिन सब बेकार।

पिछले साल पथरीले पहाड़ की तलहटी में स्थित सीकरी गाँव में सड़क के किनारे सूखी टहनियों से बनायी गयी झोंपड़ी में रहनेवाले संत ने ही कहा कि नौ रोज़ से पहले-पहले अमावस्या के दिन शाह की बीवियों में से एक (अकबर की दो बीवियां थीं: एक आम्बेर की राजकुमारी, दूसरी

मेवाड़ की) पुत्र को जन्म देगी। उसकी बात ठीक निकली। ग्राम्बेर की राजकुमारी ने पुत्र को जन्म दिया।

तब ग्रकबर ने नौकरों को उस संत का, जिसने उसके लिए पुत्र फल की भविष्यवाणी की थी, पता लगाने का ग्रादेश दिया। सड़क के किनारे झोंपड़ियों, गुफ़ाग्रों, खंडहरों ग्रौर तंबुग्रों में संन्यासियों की भीड़ ही भीड़ थी, ग्राज की तरह तब भी भारतवर्ष में उनकी संख्या बहुत ग्रधिक थी ग्रौर वे सब भूखे, मैले-कुचैले होते थे। वे हाथ में चमकीले झंडे लिये, निगाहें ग्रासमान पर टिकाये जीवन की सार्थकता के बारे में सोच-विचार करते बैठे रहते थे। फिर भी नौकरों ने बूढ़े को ढूंढ़ ही निकाला। ग्रौर जब उन्होंने उससे नाम पूछा, बूढ़े ने उत्तर दिया:

"सीकरी!"

ग्रपना नाम वह कभी का भूल चुका था। हो सकता है, साधुग्रों की ऐसी ग्रादत रही हो कि वे ग्रपना नाम जन्म स्थान के नाम पर रखते हों।

संत सीकरी ने बादशाह के हृदय में सलीम चिश्ती के पास जगह ले ली। उसे बाहशाह के पास ग्रपने मन से ग्राने-जाने का ग्रधिकार मिल गया। मगर सीकरी हमेशा सलीम से कुछ दूर रहता क्योंकि वह भिखारी संत था ग्रौर सलीम बुद्धिमान शेख़ ग्रौर महान वज़ीर।

ग्रगर साधु सीकरी भविष्यवक्ता माना जाता था तो सलीम धार्मिक गुरु। वह तब से ग्रकबर का ग्रभिभावक ग्रौर शिक्षक रहा था, जब १३ वर्ष की ग्रायु में ग्रकबर ग्रपने पिता की गद्दी पर बैठा था। सलीम की सलाहें ग्रकबर को पड़ोसी देशों के शासकों के रहस्यों को खोलने ग्रौर ग्रपने लोगों की कपटी योजनाग्रों का पता लगाने में सहायता देती थीं। उन्हीं की सलाह पर दूरवर्ती बंगाल ग्रौर शक्तिशाली ईरान में गुप्तचरों का मज़बूत व ज़बरदस्त जाल बिछाया गया था। ग्रकबर ने ग्रनुशासनपूर्ण ग्रौर ताक़तवर सेना की स्थापना की, ऐसे बड़े राष्ट्र का निर्माण किया जो पहले यहाँ कभी नहीं स्थापित हुग्रा था, सैकड़ों क़बीलों, भिन्न-भिन्न भाषाएँ बोलनेवाली, विभिन्न देवी-देवताग्रों की पूजा करनेवाली दसियों जातियों को एकत्रित किया।

विभिन्न जातियों के लोगों को वश में रखने के लिए न सिर्फ़ ताक़त, सेना, पहरेदारों, विश्वस्त सहायकों ग्रौर सेनापतियों, न सिर्फ़ सम्पदा ग्रौर तलवार की बल्कि बुद्धि, चालाकी ग्रौर सूझ-बूझ की भी ज़रूरत थी।

सलीम की बुद्धि हमेशा से प्रखर और गहरी रही थी। उन्हीं की सलाह पर अकबर ने घोषणा की कि अब से हिमालय पहाड़ से लेकर बंगाल की उत्तरी सीमा तक सभी धर्मों के लोग भाईचारे के साथ रहेंगे, क्योंकि सारे भगवान भाई-भाई हैं। अब से उसके देश के लोगों को न सिर्फ़ अपने धर्म का बल्कि उस महान धर्म का भी पालन करना चाहिए, जिसमें अग्नि-पूजक भी, हिंदू भी, बौद्ध और मुसलमान भी सम्मिलित हैं। "दीने-इलाही" पृथ्वी के सभी भगवानों और पैग़ंबरों को एकत्रित करती है, अल्लाह को भी, बौद्ध को भी, शिव को भी, ईसा को भी, मुहम्मद को भी।

ढिंढोरचियों ने पवित्र हाथियों पर, जिन के दाँत सोने की कुंडलियों से सजे थे, रखी रेशमी पालकियों में बैठकर ढोल बजाते हुए एलान किया कि अब से सभी हिन्दू और मुसलमान एक हैं। यही है बादशाह का इरादा!

सलीम ने फ़ज़ल के साथ "आयन-ए-अकबरी" अर्थात अकबर के निर्देश बनाये। ढिंढोरची सफ़ेद घोड़ों पर सवार पहरेदारों के साथ सिंध, गंगा और यमुना के किनारों पर सभी नगरों और गांवों में जाते। वे ज़मीन पर और गुफ़ाओं में स्थित सभी मंदिरों में जाकर बादशाह की ओर से बड़े पुजारियों और पादरियों को दान देते थे। दरवेशों और दीनहीन अंधविश्वासियों, भगवानों के ज़मीनी दूतों की भीड़ अकबर का गुणगान करनेवालों के पीछे-पीछे चलते हुए पृथ्वी पर सभी भगवानों के नवाब के रूप में उसकी प्रशंसा करती थी।

सलीम, फ़ज़ल और तोहार की सलाह मानते हुए स्वयं अकबर ने पूरी सेना के लिए समान वेतन सुनिश्चित किया और ख़ुद व्यक्तिगत रूप से न सिर्फ़ हम-मज़हब मुसलमानों बल्कि हिन्दू राजाओं को भी सेनानायक नियुक्त किया। उसने देश की सभी जातियों के लिए एक जैसा कर लगाया।

कभी सख़्ती से, कभी नम्रता से उसने सभी राजाओं और शेख़ों को अपना हुक्म मानने को मजबूर किया। उसने अपने सगे भाई मुहम्मद पर भी दया नहीं दिखायी जब पंजाब पर क़ब्ज़ा करके वह उसका स्वावलंबी संचालन करना चाहता था।

नये राष्ट्र के लिए एक नयी राजधानी की आवश्यकता थी जो पहले की

सभी राजधानियों से भिन्न हो। फ़तेहपुर सीकरी ऐसी ही राजधानी बननी चाहिए थी। इसी लिए वह सभी सर्वोत्तम शिल्पियों को पथरीली पहाड़ी में इकट्ठा कर, उनको दिनरात काम करने को मजबूर करता था ताकि जल्द से जल्द उसका निर्माण किया जा सके।

सुखी बाप फ़तेहपुर के महल में अपना तख़्त शीघ्र स्थापित करने के लिए अधीर था। वह ख़ुद वास्तुकलाकारों की डिज़ाइनों की जाँच करता था। वह चाहता था कि फ़तेहपुर की इमारतें शानदार और सादी, ख़ूबसूरत और सुव्यवस्थित हों और साम्राज्य की प्रबलता की अभिव्यक्ति करें। अकबर प्राचीन अजन्ता की गुफ़ाओं के भित्ति चित्रों की चमक और सुन्दरता से मंत्रमुग्ध हुआ था, अनेक बार विसह्वांता और खजुराहो के मंदिरों पर आश्चर्यचकित हुआ था, जो हिंदुओं द्वारा उसके सत्तारूढ़ होने से क़रीब ५०० वर्ष पूर्व बनाये गये थे, लाल क़िले की इमारतों के विचित्र दृश्यों पर ध्यान से देखा था, जो आगरा में उसके पिता द्वारा निर्मित था, गगनचुँबी गौरवपूर्ण क़ुतुब-मीनार पर मोहित हुआ था, जो अकबर के पूर्वजों – किप्चाक स्तेपियों से आये प्रथम शासकों द्वारा दिल्ली में खड़ी की गयी थी। वह चाहता था कि फ़तेहपुर सीकरी की हरेक मीनार, हरेक बुर्ज, हरेक महल अभूतपूर्व हो।

सुंदरता, साहस और सादगी। इन्हीं तीन शब्दों में फ़तेहपुर सीकरी का रूप व्यक्त होना चाहिए था। वह एक के बाद दूसरी प्रायोजना को अस्वीकृत कर देता। साम्राज्य के दूरवर्ती कोनों से उसके पास नये-नये शिल्पी लाये जाते। महान वज़ीरों और सलाहकारों के बेटों को वह सर्वोत्तम शिल्पकारों का शागिर्द बना देता था। राज्य को नये निर्माताओं की आवश्यकता थी। फ़तेहपुर में तो तुरानियों, इरानियों और हिंदुओं की वास्तुकला की उत्तम विशेषताएँ सम्मिलित होनी चाहिएं। उसका निर्माण भी जल्दी होना चाहिए। इतनी जल्दी, जितनी पृथ्वी के एक भी नगर का – न बुख़ारा, न समरक़न्द, न हिरात का निर्माण किया गया हो और वह कभी इस धरती से न मिट पाये।

वह दरवेशों, मक्का से हज करके आनेवालों और व्यापारियों को उन नगरों के बारे में बताने कहता, जिनसे होकर वे आये थे। वह पाठ-कर्त्ताओं को बुलाता था ताकि वे पुस्तकों से अन्य देशों की राजधानियों के बारे में सूचनाएँ पढ़कर सुनाएँ। वह शहरज़ादा की परी कथाएँ सुना करता था,

जिनमें अरबों के प्रासादों, पवित्र मिस्र और बग़दाद का काफ़ी अधिक ज़िक्र होता था। सिकंदर के बारे में अपने मित्र फ़ज़ल की बतायी एक कथा उसे प्रायः याद आती थी। सिकंदर ने बादशाह दारा को पराजित किया था, बल्कान से लेकर लाल, पीली और काली रेतों तक सारे क्षेत्र पर कब्ज़ा कर ईरानी रेशम से बनाये तंबुओं में हिरात की सुंदरियों के नृत्यों का रसास्वादन किया था, भारतवर्ष के हीरे, जवाहिरात और सोने से अपना रथ सजाया था, मगर तराज़ और सग्दिआना पर विजय प्राप्त न कर सका, फ़राबा पर हाथ लगाने का साहस उसे नहीं हो पाया था।

इस्लाम के समस्त धर्मावलम्बी अपने नगर मिट्टी से बनाते थे। सिकन्दर दूसरा धर्म मानता था। उसने भवन का निर्माण सफ़ेद पत्थर से करवाया ताकि उसकी स्मृति सदियों तक बनी रहे। और अकबर न सिर्फ़ भवन बल्कि पत्थर से एक पूरा नगर खड़ा कर देगा, लाल और सफ़ेद पत्थर से। लेकिन वह सर्वशक्तिमान तो सिर्फ़ अल्लाह को ही मानता है। अगर बौद्ध और शैव मंदिरों का निर्माण गुफाओं में किया गया तो अकबर अपने नगर की स्थापना पहाड़ी पर करेगा ताकि वह चारों ओर से दिखाई देता रहे।

आगरा बुलाये गये सभी वास्तुकारों को अकबर ने अपने महल में आमंत्रित कर उनसे भावी फ़तेहपुर के बारे में अपनी योजनाएँ बताने कहा। स्थापत्यकारों ने बड़े दिलकश अन्दाज़ में भावी फ़तेहपुर की काल्पनिक तस्वीर खींच दी। लेकिन साथ ही यह भी बता दिया कि निर्माण-कार्य में चालीस वर्ष लगेंगे तो अकबर इतने क्रोध से तख़्त से उठ खड़ा हुआ कि फ़ौलादी ज़ंजीरों में जकड़े तख़्त की सीढ़ियों के पास लेटे शेर भी गरज उठे।

"चार वर्ष!" बादशाह की आवाज़ ने शेरों की गरज को दबा दिया।

महान वज़ीर काँप उठे, विदेशी राजदूत थोड़ा पीछे हट गये, वास्तुकार और चित्रकार संगमरमर के बने फ़र्श पर पनाह मांगते लोट गये। बादशाह के पीछे अन्धेरे कोने में बैठे केवल संत सीकरी ही शान्तिपूर्वक दुआ पढ़ते बैठे रहे, मानो बादशाह की क्रोध-गर्जना उन्हें सुनाई ही नहीं दी हो। तख़्त के पीछे खड़ा बुद्धिमान सलीम भी शांत खड़ा रहा।

"तुम्हारी इच्छा पूरी हो क्योंकि दीने इलाही की भी यही मर्ज़ी है। महान बादशाह, क्रोध पर क़ाबू पाओ!" फ़ज़ल ने धीमी किन्तु रोबदार आवाज़ में कहा।

खंजर फेंक अकबर बैठ गया। शेर शांत हो गये। वास्तुकार और चित्रकार पीछे हटते-हटते बाहर चले गये। उनकी जगह अकबर की विजयों के गीत रचनेवाले कवि आ पहुंचे। मगर बादशाह ने उनके गीत सुनने की अनिच्छा प्रकट की। कवि भी चले गये। हॉल में युवा नर्तकियों ने प्रवेश किया। अकबर ने घूंट भर शराब पी ली। उसकी नज़र उन दासियों पर जा पड़ी जो उसे पश्चिम और पूर्व के राजाओं से उपहार स्वरूप मिली थीं।

मालिक की दृष्टि लड़कियों के बदनों पर धीरे-धीरे फिसलने लगी और आख़िरकार श्रीलंका की नर्तकी पर जा ठहरी। नर्तकी की ओर उसने विनम्रता और स्नेह से देखा। लेकिन किसी तरह की दुर्बलता का प्रदर्शन बादशाह के लिए उचित नहीं था।

अकबर के पीछे खड़े सलीम ने हाथ के हल्के इशारे से युवा नर्तकी को हॉल के बीच में आने का आदेश दिया। नर्तकी बादशाह के सामने आकर रुक गयी।

कहीं से आहिस्ता-आहिस्ता ढोल की ध्वनि सुनाई देने लगी। फिर वह हॉल के कोने में गूँज उठी और अन्य ध्वनियों के साथ मिलकर सारे हॉल को गुँजा दिया। लड़की ने मुखड़े के झीने परदे को हटा बड़ी चपलता से हाथ फैलाये। उसके बंधे होंठ ज़रा खुले और संगीत लय में उसका मधुर स्वर घुलमिल गया।

अकबर सब कुछ भूल गया। वह युवा सुंदरी की प्रत्येक भंगिमा से बंधे संगमरमर के बने तालाब के ताज़ा पानी में उसके नंगे बदन की कल्पना कर रहा था।

बायाँ हाथ उठाकर उसने सब को चले जाने का हुक्म दिया। वज़ीर, नर्तकियाँ, नौकर, सब बिना शोर के धीरे-धीरे बाहर निकले। शेरों को जानवरों को पालनेवाले ले गये। हल्की धारियोंवाले नीले मेलाकाइट के फ़र्श पर सचित्र चीनी कालीन बिछे थे। अब उसपर एक ही नर्तकी नाच रही थी। कभी वह हल्की तितली की तरह हॉल में चक्कर लगाती, कभी मन मोहक फूल की तरह एक क्षण को रुक जाती। घबराहट के कारण वह ठीक से सांस नहीं ले पा रही थी। उसका सारा मनोबल टूट गया और वह लड़खड़ा कर गिरते-गिरते बची। अकबर तख़्त से उठ तेज़ी से उसकी ओर लपका। मगर फ़ज़ल ने शांत आवाज़ में उसे रोक दिया। संगीत बंद हो गया। युवा नर्तकी कटी बेल-सी गिर पड़ी।

सलीम बोला: "महान बादशाह! वह तुम्हारी दासी है। उसे अपनी फुलवारी में पहुंचा देने की आज्ञा दो। तुम्हारी प्रतीक्षा मलिका कर रही हैं। वह चाहती हैं कि तुम अपने बेटे की प्रथम मुस्कान देखो और किप्चाक़ की स्तेपियों के गायकों का गायन सुनो।"

पूर्वजों के अर्द्ध दुखपूर्ण, अर्द्ध गतिशील फ़ौजी गीत ने, जिसे किप्चाक़ स्तेपियों के गायकों ने सुनाया अकबर के मन में नये हमले का विचार उत्पन्न नहीं किया, जैसा कि पहले हुआ करता था, बल्कि श्रीलंका की नर्तकी से उसका अनुराग बढ़ा दिया।

अगले दिन सुबह-सबेरे जब अकबर रेशमी वसना, हीरों से सजी युवा नर्तकी की सेज छोड़ रहा था, पत्थर की पहाड़ी पर एक लाख दास इकट्ठा हो चुके थे। संगतराशों से राई भर जगह भी ख़ाली न थी। आगरा से काले पहाड़ तक के रास्ते पर व्यापार की मेज़ें लगा दी गयी थीं।

किले से, जिसके अंदर नील भवन था, अकबर के व्यक्तिगत घोड़ों, हाथियों, चीतों और शेरों को सैर कराने के लिए निकाला जा रहा था।

सूच्याकृति छत की छाया तले लाल मीनार पर चढ़कर अकबर भावी फतेहपुर की ओर सफ़ेद संगमरमर और भारी काले ग्रेनाइट ले जानेवाले जंगी हाथियों का निरीक्षण कर रहा था।

वज़ीर से उसने कहा: "यह भूमि पुरानी और नरम है। मेरे हाथी उसपर घाव लगाते जा रहे हैं।" फिर ज्योतिषी को बुलाकर यह बताने का आदेश दिया कि फ़तेहपुर कितने साल तक राजधानी बना रहेगा।

"एक हज़ार साल", ज्योतिषी ने जवाब दिया।

"घोड़े को लाना!" युवा बादशाह ने गरजती आवाज़ में आदेश दिया।

और आशिक़ नौजवान की तरह प्रसन्न व उत्तेजित होकर वह इसी रास्ते पर दौड़ पड़ा जिस पर आज सन् १९६५ की गरमी में जोमार्त जा रहा था।

जोमार्त को बादशाह के घोड़े के खुरों की आवाज़ सुनाई देती महसूस हुई। वह मुस्कराया। उसके ख़्यालों में ४०० वर्ष पहले की घटनाएँ गुज़र गयी थीं। फ़तेहपुर का निर्माण सन् १५६९ में शुरू हुआ था।

* * *

कार भी, रास्ता भी, धूप में सँवलाये खुले कंधोंवाली पड़ोसन भी, जिस की लाड़-प्यार से बिगड़ी अभिजात लड़की-सी आदतें थीं—सब कुछ जोमार्त को आकस्मिक और सामयिक लग रहा था।

सिर्फ़ फतेहपुर ही उसके लिए शाश्वत था, जो अभी कहीं आगे था। ओत्रार के खंडहरों की खुदाई के समय वह उसी के बारे में सोचता था।

हिमालय पहाड़ों के उस ओर, मास्को में और इससे पहले तुर्केस्तान के पासवाली स्तेपियों में ओत्रार की खोदाई करते समय भी उसने अपनी यात्रा फ़तेहपुर से शुरू करने और फिर अपनी पुस्तक में उसके बारे में लिखने का निश्चय किया था।

लेकिन हुआ यह कि हिन्दुस्तान की लंबी यात्रा के बाद, दिल्ली और कलकत्ता में व्याख्यान देने के बाद ही जोमार्त को फ़तेहपुर आने का मौक़ा मिला।

सच पूछिये तो जोमार्त ने इन व्याख्यानों की तैयारी भी नहीं की थी। यह यात्रा अचानक हुई थी, उसकी आशा से परे। इससे ओत्रार के खंडहरों के पास तम्बू में कट रहे उसके एकरस, थकाऊ जीवन में तब्दीली आयी थी।

वह ओत्रार में पुरातत्व खोज का काम पूरा कर रहा था। प्रति दिन टीलों के पास रेवड़ चरानेवाले चरवाहे की सहायता से उसने कई बार परीक्षात्मक खोदाइयाँ कीं, १५ वर्ष पहले खोज कार्य करनेवाले पुरातत्ववेत्ता बर्नश्ताम द्वारा खोदी गयी छिन्न-नालियों के निकट ख़ंदक़ खोदी। जोमार्त उधेड़बुन में था। क्या करूँ? आगे खोदाई करूँ या अल्मा-अता वापस जाकर पुरातत्व संबंधी विशेष दल आने की प्रतीक्षा करूँ?

इतने में विज्ञान अकादमी से सूचना मिली कि सांस्कृतिक सहयोग की योजना के अन्तर्गत उसे मध्य एशिया के प्राचीन इतिहास पर व्याख्यान देने भारत जाना है। जोमार्त काम रोकने को मजबूर हो गया।

जोमार्त अल्मा-अता पहुँचा। कुछ ही घंटों में रिपोर्ट तैयार कर, खोदाई की जगह के नक़्शे के साथ उसने उसे पुरातत्व, इतिहास और नृवंश विज्ञान संस्थान के निदेशक को सौंप दिया।

बूढ़े अकादमीशियन ने कहा: "नक़्शा—यह तो अच्छी चीज़ है। ले-

किन नक़्शा-मात्र से हमारे वित्तशास्त्रियों को किसी भी बात के लिए तैयार नहीं किया जा सकता। कभी बर्नश्ताम ने भी नक़्शा पेश करके, तुरंत खोदाई शुरू करने की माँग की थी लेकिन सब बेकार रहा था। तथ्य चाहिए, वहाँ पायी वस्तुएँ चाहिएँ ताकि उनको पेश करके हम उन लोगों से बातचीत कर सकें जो हमारे विज्ञान को मृत कहते हैं।"

जोमार्त निदेशक के कमरे में एक छोटा-सा डिब्बा ले आया और बोला, "हाँ, ऐसे प्रमाण, ऐसे तथ्य हैं!"

बूढ़ा हौले-हौले उठा। उसने ऐनक लगायी, मेज़ साफ़ करके उसपर कागज बिछाया।

जोमार्त ने मेज़ पर पंखवाले जानवरों के चित्रों से अलंकृत घोड़े के साज का बकलस, मिट्टी के बने बरतन की ढकनी, मूर्ति का एक टुकड़ा, कवच का पुरजा ,तीर की काँसे की बनी तीन फलकवाली नोक, दो सिक्के और शीशे से बनी किसी और चीज़ का टुकड़ा रख दिया।

"माह भर की प्रारंभिक खोदाई के समय यही चीज़ें मिली हैं। भावी खोज दल के लिए यह प्रमाण काफ़ी होंगे?"

जोमार्त को अपने प्रश्न का कोई उत्तर नहीं मिला। निदेशक के कमरे में संस्थान के समस्त कर्मी एकत्र हुए। बूढ़ा अकादमीशियन विस्मय भाव से शीशे के टुकड़ों को देख रहा था। फिर उसने मूर्त्ति का टुकड़ा उठाया और वापस रख दिया। तीर की नोक हाथ में लेकर उसे ध्यान से देखा और जोमार्त से पूछा:

"क्या आप को विश्वास है कि यह सभी चीज़ें एक ही स्थान पर भूमि की एक ही सतह पर पायी गयी हैं?"

"इसके गवाह भी हैं," जोमार्त ने उत्तर दिया। "सिर्फ़ बकलस और कवच का टुकड़ा पहले मिले। यह चीज़ें मुझे चरवाहे ने दी थीं।"

"यह तो महान सिकंदर के काल के सैनिकों का वस्त्र है। पर मूर्ति किस काल की है? इस्लाम से पूर्व की? और यह शीशा? नौजवान, शायद इन खोजों से आपने सभी कालों के बारे में मौजूदा धारणाओं में आमूल परिवर्तन ला दिया है। अगर यह सारे चमत्कार भूमि की एक ही सतह पर प्राप्त हुए तो इसका अर्थ यह है कि आपने फ़राबा और ओत्रार को मिलानेवाली बिंदु ढूँढ़ निकाली है। कहने का मतलब है कि ओत्रार

का एक हिस्सा फ़राबा के खंडहरों पर खड़ा कर दिया गया, जैसे समर-क़न्द का एक भाग अफ़ासिआब के खंडहरों पर स्थित है।"

"लेकिन यह भी अनुमान है कि फ़राबा और ओत्रार एक ही नगर के दो नाम हैं," जोमार्त ने कहा।

"सत्य का पता तो खनन के बाद ही चलेगा," अकादमीशियन ने जवाब दिया। "आपने जो वस्तुएँ प्राप्त की हैं, उन्हें शीघ्रातिशीघ्र प्रयोगशाला में जांच कराने के लिए सौंप देनी चाहिए। हाँ, एक और बात। आप अपनी यात्रा स्थगित तो नहीं कर सकते?"

"नहीं, अब तो देर हो गयी। टिकट लिया जा चुका है। वीज़ा भी मिल गया है। परसों मास्को और फिर मास्को से दिल्ली हवाई जहाज़ से जाना है।" जोमार्त की जगह पार्टी समिति के सेक्रेटरी ने उत्तर दिया।

बूढ़े ने नाक-भौ सिकोड़ते हुए कहा: "फिर ठीक है... शुभ यात्रा। लेकिन प्राचीन मध्य एशिया के बारे में अपने व्याख्यानों में शीशे के इस टुकड़े का ज़िक्र करना मत भूलिये।" अकादमीशियन ने हाथ में दुबारा शीशे का वह टुकड़ा लेते हुए कहा। "यह क्या है, आप कल्पना कर सकते हैं?" और जवाब की प्रतीक्षा किये बिना वह स्वयं कह उठा: "यह सुमाक है। अर्थात पालने में लेटे हुए बच्चे के लिए पेशाब करने का पात्र। आपने देखा होगा हमारे चरवाहे एक चरागाह से दूसरे में जाते समय अपने गोद के बच्चे को कैसे ले जाते हैं। नन्हा हमेशा पालने में होता जो घोड़े या ऊँट की काठी पर बंधा होता है। बच्चे की पट्टी हमेशा सूखी रहती है। आप जानते हैं कि घुमंतू जीवन बितानेवालों की परिस्थितियों में बच्चे के स्वास्थ्य के लिए इसका कितना बड़ा महत्व है?! समय-समय पर माँ पेशाबदान और सुमाक को साफ़ कर देती है। बस। पहले लड़ाइयों और धावों के समय ऐसा करते थे, अब पशुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते समय ऐसा ही करते हैं।"

"खोदाई के समय सहायता करनेवाले चरवाहे ने कहा था कि यह सुमाक का एक टुकड़ा है," जोमार्त ने कहा।

"आप ने ख़ुद सुमाक कभी देखा या नहीं"?

"मैं गांव में बड़ा हुआ, बार-बार चरवाहों के साथ एक जगह से दूसरी जगह जाता-आता रहा," जोमार्त ने उत्तर दिया। उसे यह बात

अच्छी न लगी कि बूढ़ा उससे स्कूली छात्र जैसे प्रश्न करे। "अब उन्हें भेड़ों की जाँघ की हड्डी से बनाते हैं।"

"आप की पायी वस्तुएँ इस बात को साबित करती हैं कि मध्य एशिया मुग़लों के आक्रमण से पूर्व न सिर्फ़ उम्दा क़िस्म की मिट्टी की चीज़ें, लोहे, सोने और चाँदी की बनी सुनारी की चीज़ें बल्कि उम्दा शीशा भी उत्पादित करता था," वृद्ध वैज्ञानिक बड़े जोश के साथ बता रहा था। "ओत्रार भी फ़राबा की तरह स्वाधीन होने का इच्छुक था। जब दो शताब्दियों के दौरान ओत्रार में चांदी की कमी थी तब भी उसने बाहर से मुद्रा नहीं मँगायी। चंगेज़ख़ां से हुई लड़ाई के बाद ओत्रार में सिक्के की ढलाई बंद हो गयी। वह ख़ोरेज़म शाह के ख़ज़ाने के सिक्कों का प्रयोग करता था। ऐसा भी समय था जब ओत्रार में सिक्कों की जगह गेहूँ की चपातियों के माध्यम से व्यापार किया जाता था। इसी लिए जो सिक्के आपको मिले उनके ज़रिये बहुत-सी बातों का स्पष्टीकरण सम्भव हो सकेगा। चंगेज़ख़ाँ के धावों के क़रीब दो शताब्दियों बाद तैमूर ने ओत्रार को फिर से स्थापित करने की कोशिश की। लेकिन तैमूर का ओत्रार पहले के ओत्रार से काफ़ी कमज़ोर था, हालांकि बाबर काल तक वह बना रहा," वैज्ञानिक ने कहा।

धूप से जले खेतों को देखते-देखते जोमार्त को बाबर के बारे में अकादमीशियन की बातें याद हो आयीं। किसी ज़माने में अकबर का दादा बाबर भी इसी पथ पर चलता था। पत्थर की पहाड़ी के पास, जहाँ अब फ़तेहपुर खड़ा है, बाबर ने पहली बार राजपूतों की बड़ी सेना से मुक़ाबला किया था और सन् १५२७ के १६ मार्च को विजय प्राप्त की थी। यह थी उस की सबसे बड़ी विजय।

पराजित लोगों के प्रति बाबर की उदारता, उसकी बहादुरी और बुद्धि, कला और विज्ञान से उसके प्रेम के बारे में बहुत-सी कथाएँ प्रचलित हैं। स्वयं बाबर की रचनाएँ भी लेखक की प्रतिभा, एक सेनापति और दार्शनिक के रूप में उसकी विशेष योग्यता का परिचायक हैं।

अपने रिश्तेदारों, मध्य एशियाई शासकों की क्रूरता और दबाव का उसने कोई जवाब नहीं दिया, तुर्किस्तान में अपने क़बीलेवालों पर तलवार उठाने को अनुचित माना और अफ़ग़ानिस्तान के पहाड़ों की ओर रास्ता लिया, हालाँकि ऐसा करने का कोई ठोस कारण नहीं था। उसे आशा थी,

उसके चले जाने के बाद उसके सगे भाइयों के बीच आपसी विरोध ख़त्म हो जायेगा।

पहाड़ों में रहनेवाले ग़रीब क़बीले उसके झंडे तले एकत्र हुए। उनके साथ वह रहने योग्य स्थान की खोज में नीचे सिंध नदी की घाटी में उतरा। उसका दल बहुत बड़ा न था। उसमें मुख्य रूप से अफ़ग़ान लोग शामिल थे। स्थानीय राजाओं ने बिन बुलाये मेहमानों को सज़ा देने का निश्चय किया। मगर सज़ा अपने आप को दी। बाबर को एक के बाद दूसरी विजय हासिल हुई। उसकी सेना बढ़ती जा रही थी, अधिकाधिक भू-क्षेत्र उसके अधिकार में आ रहे थे। इस प्रकार महान मुग़लों के साम्राज्य की स्थापना हुई। लेकिन बाबर का स्वभाव पहले ही जैसा था: वह सीधा-सादा और अपने सभी सैनिकों, चाहे वे किप्चाक़ हों, अफ़ग़ान हों या भारतवासी, वह सबके साथ एक जैसा व्यवहार करता था, हालांकि राज करने की तृष्णा उसमें किसी और से कम न थी।

शांति के दिनों वह अपने वंशजों के लिए पुस्तक लिखता था, शिकार करने जाता था लेकिन जब उसपर किसी ओर से धावा बोला जाता, वह तुरंत बदल जाता। वह अपने साहस और जुर्रत से सिपाहियों को आश्चर्यचकित कर देता था। उसके विचार में सभी इनसान भाई-भाई थे।

'अपने भाइयों को मत मारना, उनसे प्रेमपूर्वक व्यवहार करना'—यह मरते दम बाबर के कहे अंतिम शब्द थे", बूढ़े अकादमीशियन ने जोमार्त से कहा।

जोमार्त की पायी चीज़ों से जोश में आकर अकादमीशियन बोल उठा कि उसका संस्थान पुरा विज्ञान के क्षेत्र में एक शुभ कार्य कर रहा है। फिर उसने तकिया कलाम की तरह कई बार दोहराया:

"क़ज़ाख़ स्तेपियों का अतीत बर्बरता की अंधेरी रात नहीं।"

जोमार्त जल्दी में था। जाने की तैयारियाँ करनी थीं। उसकी बीवी गुल्सारा ख़ुश थी कि पति भारत जा रहा है लेकिन छुट्टियाँ साथ-साथ न बिता पाने के लिए उसे थोड़ा दुख भी था।

ज़ोमार्त ने आवश्यक पुस्तकें चुन लीं, उपहार और यादगार की चीज़ें ख़रीद लीं और जल्दी में वह उस विचित्र छह पहलूवाला सिक्का संस्थान को देना भूल गया जो उसे खंडहरों में सभी अन्य चीज़ें पैक करने के बाद मिला था। तब उसे उसने बटुआ में रख लिया, मास्को से दिल्ली

रवाना होते समय कस्टम में उसे ज्ञात हुआ, सिक्का तो उसके पास ही रह गया था।

सिक्के पर सदियों पुरानी ज़ंग लगी थी। जोमार्त ने कई बार उसे साफ़ करने की कोशिश की। व्याख्यान देते समय उसने उसे कई बार दिखाया। सफ़र के दौरान भी अकबर और बाबर के बारे में सोचते हुए वह यंत्रवत हाथ जेब में रखकर विचित्र सिक्का टटोलने लगता।

"ओत्रार का सिक्का सामनेवाले सूखे ताड़ के पास के खंडहर जैसा पुराना है," जोमार्त ने सोचा। "संभव है, यह बाबर या अकबर काल का मंदिर हो। अकबर काल का कहा जाये तो ज़्यादा सही होगा। चूंकि हुमायूँ आगरा के नज़दीक हिन्दुओं के मंदिर का निर्माण करने की इजाज़त हरगिज़ न देता। वह कट्टर मुसलमान था।"

हुमायूँ के शासन काल में साम्राज्य नष्ट होते-होते बचा। बहुत-से विद्रोह हुए, हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच लड़ाइयाँ हुईं और बादशाह देश के एक से दूसरे कोने में भागते-भागते दंगे दबाता रहा। उसका देहांत भी इसी तरह भाग-दौड़ में हुआ। वह लड़ाई में नहीं बल्कि दौड़ रहे घोड़े से गिरकर मर गया था। वह नशे में था!

* * *

अकबर का जन्म स्तेपी में सैनिक सफ़र करते समय हुआ था। उसका पालन पिता के सैनिकों ने किया। बाद में अपने उत्तराधिकारी की जीवन-रक्षा के लिए हुमायूँ ने उसे राज भवन में छुपा लिया। अकबर मानो क़ैद-ख़ाने में बड़ा हुआ।

जब हुमायूँ चल बसा, छोटा जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर अपने पिता से घृणा करनेवाले लोगों के घेरे में अकेला रह गया। उसके सामने जटिल और कठिन समस्या खड़ी थी—बरबाद हो चुके राज्य की पुनस्स्थापना।

साहसी तुर्कमेन बैरम खां ने, जिसे हुमायूँ ने मृत्यु से पहले अपना बेटा सौंप दिया था और उसे "ख़ान-बाबू" यानी "ख़ान का पिता" उपाधि से विभूषित किया था, राजकुमार की वयस्कता तक देश की बागडोर अपने हाथों में ले ली। हुमायूँ की मृत्यु के कई महीने बाद बैरम ख़ाँ ने

पानीपत में लोदी के सैनिकों पर विजय प्राप्त की। विजय से उसका दिमाग़ फिर गया और उसने तख़्त पर दृढ़ता से बैठ जाने का निश्चय किया।

ख़ान-बाबू को ख़ुशी थी कि राजकुमार शिकार और खेलकूद में व्यस्त रहता है, जंगली घोड़ों और हाथियों को पालतू बनाना, उन्हें शिक्षा देना पसंद करता है। उसे लग रहा था, शासन बहुत समय तक उसके हाथों में रहेगा।

लेकिन अचानक एक बार जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर ने शिकार से वापस आकर एलान किया कि अब से वह ख़ुद साम्राज्य की देखभाल करेगा।

बैरम ख़ाँ ने उत्तराधिकारी को शांत करने की कोशिश की, मगर दरबार के लोगों में से किसी ने उसका समर्थन नहीं किया। युवा बादशाह ने उसे क्षमा प्रदान कर अपना मुख्य सलाहकार नियुक्त कर दिया। बैरमख़ां ने वफ़ादारी की शपथ खायी और न सिर्फ़ बादशाह, बल्कि ख़ुदा के सामने भी अपने गुनाहों को मिटाने के लिए मक्का जाने का निर्णय लिया। लेकिन आगरा से जाते समय शत्रुओं ने उसे मार डाला।

हत्या इसी सड़क पर की गयी थी, जिस पर अब जोमार्त जा रहा था।

"... यह दुनिया अजीब है। अगर ध्यान से देखा जाये तो लगता है, सब जगह रास्ते भी, भूमि भी, लोग भी किसी न किसी तरह एक दूसरे से मिलते-जुलते हैं। ऐसा भी होता है कि एक पीढ़ी पहले की पीढ़ी का काम फिर से करती है, जैसे कि बेटा अपने बाप का, जैसे कि अकबर बाबर का," जोमार्त सोच रहा था।

बाबर अपने पोते जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर में मानो फिर से जी उठा।

दादा से विरासत में उसे उदारता, दृढ़ इरादा, सेनापति की बुद्धि और कला से प्रेम मिला। उसके शरीर की बनावट बहुत ख़ूबसूरत थी। निरंतर अभ्यास, शिकार और सन्धान ने उसकी माँसपेशियों को सुडौल बना दिया था।

एक बार अपनी धर्मपत्नी की सहेली, युवा राजकुमारी को बचाने के लिए जिसे अपने पिता के आदेश पर पति के मर जाने के बाद सती होना

था, उसने २०० किलोमीटर घोड़े पर बिना रुके तय किया और प्रसन्न व पुरजोश होकर अच्छी ख़बर लेकर वापस आया था।

तख़्त पर बैठने के बाद वह भी बाबर की तरह राजपूतों की एक बड़ी सेना के साथ लड़ने को मजबूर हुआ। उसी स्थान पर, जहाँ बाबर ने जद्दोजेहद किया था—पत्थर की पहाड़ी के पास, जहाँ अब फ़तेहपुर सीकरी खड़ा है, सेनाओं का टकराव हुआ, लोहे से लोहा बज उठा।

फ़तेहपुर के पास युवा बादशाह की विजय बाबर की विजय के समान थी। शत्रु भागकर अपने क़िले में छुप गये। राजपूतों का साहसी नेता चित्तौड़ क़िले की मेड़ पर अकबर से हुई लड़ाई में मारा गया था। अकबर ने क़िले को अपने हाथ में ले उसके निवासियों को माफ़ कर दिया। लेकिन नगर के रक्षकों ने नेता से वंचित होने के बाद अपनी प्राचीनतम परंपरा का पालन करते हुए पहले अपनी बीवी और बच्चों (ताकि बीवियाँ और लड़कियाँ अपनी इज़्ज़त खोने से पूर्व मर जायें, और बच्चे अपने पिता के धर्म के वफ़ादार होकर मर जायें) और फिर अपने आप को मार डाला। अपने मित्र या भाई को मारते समय हर एक राजपूत अपने को भगवान की इच्छा पूरी करनेवाला मानता था। ऐसी परंपरा बाबर के ज़माने में भी प्रचलित थी। क़िले से जीवित निकलनेवाला था सिर्फ़ चित्तौड़ के राजा का पुत्र। उसने उदयपुर में नये राज्य की स्थापना की, जिसके शासकों को आज तक इस पर गर्व है कि उनकी जाति ने दिल्ली और आगरा के मुसलमान बादशाहों से रिश्ता बाँधकर अपने को कलंकित न किया, कि उनका ख़ून साफ़ और पहले जैसा है।

विजय के बाद युवा बादशाह महान अकबर कहा जाने लगा।

जोमार्त सोच रहा था: "एक ही मैदान पर एक ही शत्रु से हुई दो लड़ाइयाँ—दो महान जीतें। संयोग का फिर भी अजीब मेल। फतेहपुर की निर्माण-संबंधी कथा कहीं सचाई छुपाने के लिए तो नहीं रची गयी?

संभव है, फ़तेहपुर का निर्माण अकबर ने अपने प्रथम पुत्र के जन्म के मौक़े पर नहीं बल्कि यहाँ प्राप्त दो जीतों, दादा और पोता की जीत के सम्मान में करवाया हो। शायद ऐसा ही है क्योंकि नगर का निर्माण सन् १५६९ में शुरू हुआ था, अर्थात अकबर की प्रथम सबसे बड़ी विजय के १२ महीने बाद।

* * *

... युवा पड़ोसन की आवाज़ ने जोमार्त के ख़्याल भंग कर दिये। उसने लड़की पर दृष्टि डाली। उत्तेजित चेहरा, उत्साह भरी आंखें।

"माफ़ कीजिये, मुझे ऐसा लगा मानो आप नींद में बड़बड़ा रहे हों। उधर तो देखिये, क्या चमत्कार है!" लड़की ने सिर से आगे की ओर इशारा करते हुए कहा।

जोमार्त धीरे से कराहकर फ़तेहपुर की बाह्य रेखाओं की ओर देखने लगा।

क़िले की बायीं, दायीं ओर की दीवारें पहाड़ी का रास्ता रोक देती हैं। वे तीनों तरफ़ से नगर को घेरे हैं। क़िले की चौथी तरफ़ अकबर काल में गहरी कृत्रिम झील बनायी गयी थी। परंतु वह कभी की सूख चुकी है।

क़िले की दीवारों का पहला चक्कर पीछे रह गया है। हवा इस क़दर सूखी है कि लगता है, अगर छोटी-सी चिनगारी डालें तो न सिर्फ़ रास्ते के पास की झाड़ियों में बल्कि उन लाल पत्थर की दीवारों में भी भयंकर आग लग जायेगी जो छोटे-छोटे ताड़ों की सूखी चोटियों के ऊपर गर्व के साथ खड़ी दिखायी दे रही हैं।

"कैप्टन" धीरे-धीरे ऊपर चढ़ता जा रहा है। रास्ता सांप की तरह बल खाता, गढ़ी की ओर ले जाता है।

वे एक छोटे-से पत्थर के मैदान में रुके। आगे गढ़ के दरवाज़े के पास ले जानेवाली सीढ़ियां हैं।

वे कार से उतरे। तभी कहीं से चुपचाप बंदरों का एक झुण्ड भागता आ पहुँचा। बन्दर हाथ पसारने लगे।

जोमार्त को उसी समय लम्बे बालों व दाढ़ियोंवाला एक बूढ़ा दिखाई दिया। फिर बारह साल का एक लड़का भी आ पहुँचा। दोनों मौन थे।

बूढ़ा बन्दरों को भगाने लगा। लड़का कुछ बोले बग़ैर दिलचस्पी के साथ उनके पीछे-पीछे दरवाज़े तक गया।

जोमार्त अमरीकी लड़की के साथ चट्टान में बनी तपती सीढ़ियाँ तय करने लगा। सीढ़ियाँ बहुत बड़ी थीं।

जोमार्त की बातूनी हमराह दृश्यगत महानता और गूढ़ता से प्रभावित

चुप हो गयी। पथरीली सीढ़ियों की दरार में पास ही सूखे पत्ते की सरसराहट सुनाई पड़ी और कुछ लचीला काला तीर-सा उछल पड़ा तो वह डर के मारे चौंक उठी।

"स्नेक," लड़के ने खुश होकर अंग्रेज़ी में सूचना दी।

उन्होंने सीढ़ियाँ चढ़कर महान मुग़ल साम्राज्य की भूतपूर्व राजधानी फ़तेहपुर के पूर्वी दरवाज़े में प्रवेश किया।

एक आश्चर्यजनक दृश्य उनके सामने आया। चारों तरफ़ सादे ललित स्तंभ खड़े हैं! दसियों या शायद सैंकड़ों हवा जैसे हल्के स्तंभ पत्थर की बनी इमारत को संभाले हुए हैं। स्तंभों के पीछे दीवार और उसमें बहुत से दरवाज़े। कुछेक दरवाज़े नीले, सफ़ेद, लाल और भूरे हॉलों में खुलते हैं, दूसरे मैदान में और तीसरे व्यापार केंद्र में। और अहाते के केंद्र में तालाब बना हुआ है जिसके किनारे मेलाकाइट से सजाये गये हैं। उसका पानी गरम, क़रीब-क़रीब उष्ण है, दिन भर में सूरज की किरणों ने उसे गरमा दिया।

"लेकिन पानी यहाँ आया कहाँ से? किसने तालाब भर दिया था? लगता है अभी भी चारों तरफ़ लोग रह रहे हैं, वे अभी-अभी बाहर निकले हैं, एक मिनट में वापस आ जायेंगे," जोमार्त ने कहा।

"पानी ज़मीन के नीचे बिछी नालियों में रिसता है," लड़के ने जोमार्त से कहा, "लेकिन वह कहाँ से आया इसका मुझे पता नहीं। चारों ओर ज़मीन सूखी है, श्रीमान। यहाँ अकबर के संगमरमर के तालाब तथा साधु सलीम की मसजिद के पास भी तालाब हैं।"

उन्होंने हॉल में प्रवेश किया। नगर की सड़कों की सैर की। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था। कल्पनातीत इमारतें, छतवाले बाज़ार, भवन, पहरे की मीनारों की ओर ले जानेवाली तंग गुज़रगाहें, खुले बरामदे। हर एक कमरे, हर एक हॉल की तीन दीवारें हैं। चौथी तरफ़ में कालीन, चटाई या रेशमी कपड़ा लगा दिया गया है ताकि गरमी के दिनों में ठंडा रहे। इमारतों की रूप-रेखा, उनके अलंकरण, उत्कीर्णन और सज्जा में पश्चिम और पूर्व की स्थापत्य कला की उपलब्धियाँ प्रयुक्त हुईं।

हर एक पत्थर, हर एक ईंट में अजन्ता के मंदिरों के भित्ति चित्रों जैसे भारतीय माहिरों का हाथ महसूस होता है। जोमार्त को ऐसा लगा, मानो वह शहरज़ादा परी-कथा का कोई पात्र हो।

पाँच महल। यह नाम मंज़िलों की संख्या पर रखा गया। बयासी हल्के सजीले स्तंभों पर शिकारी और हाथियों की लड़ाई के दृश्य, फूलों और फलों की नक़्क़ाशियाँ हैं। हर एक स्तंभ एक अनुपम कलात्मक रचना है। ऊपर चढ़ते-चढ़ते स्तंभों की संख्या कम होती जाती है। पाँचवीं मंज़िल सिर्फ़ चार स्तंभों पर खड़ी सुँदर और हल्की छतरी-सी है। अहाते के केन्द्र में एक और हौज़ है जो संगमरमर की बनी नक़्क़ाशीदार झंझरी और छोटे-छोटे डिज़ाइनदार पुलों से घिरा है।

जामा मसजिद आस-पास की इमारतों के बीच क़िले की भाँति विशेष गर्व के साथ खड़ी है। उसका तोरणवाला प्रवेश द्वार न सिर्फ़ मीनारों, बल्कि तीन बड़े बुर्जों और बहुसंख्यक छोटे-छोटे बुर्जों से सजाया हुआ है जो एक-दूसरे पर टिके हुए हैं।

किन्तु मसजिद से भी ऊँचा, नगर की सभी इमारतों से ऊँचा है बुलंद दरवाज़ा। वह लाल पथर से बना है और उसपर सफ़ेद संगमरमर की मीनाकारी है।

विशाल मैदान के केंद्र में सलीम चिश्ती की संगमरमर की बनी समाधि है। वह साफ़ और बर्फ़ जैसे सफ़ेद फूल-सी लगती है। वह स्तंभों से घिरी है जिनके छोटे-छोटे लाल बुर्ज घंटिकाओं की याद दिलाते हैं।

कहते हैं, सलीम दुबला-पतला कमज़ोर बूढ़ा था। लेकिन उस बूढ़े की बुद्धि, तार्किकता और दूरदर्शिता ने अकबर को सर्वशक्तिमान बनने में मदद दी।

सलीम तब भी ज़िंदा था, जब अकबर दरबार के लोगों के साथ फ़तेहपुर आ बसा और हाथियों पर सवार उसके सेवकों ने उत्सव शुरू होने की ख़बर दी थी। सेना ने उल्लासपूर्ण ढंग से शहर में प्रवेश किया और सड़कें भिन्न-भिन्न भाषाओं के शोर-गुल से भर गयीं। गली-गली में कारवाँ खड़े थे, जिनपर स्वयं बादशाह के माल और उन विदेशी शासकों के उपहार लदे थे जो क्रूर अकबर के साथ मैत्री रखने को लालायित थे।

वह तब भी ज़िन्दा था जब बादशाह नयी राजधानी के भवन में स्थित तख़्त पर पहली बार बैठा। कुछ ही दूरी पर सड़क की उस ओर कमलाकार तख़्त का हॉल स्थित था। उसमें अकबर राजदूतों और मंत्रियों से भेंट करता था, अपने नवाबों की रिपोर्टें सुनता और शतरंज खेलता था।

हॉल के फ़र्श पर समचतुर्भुजी आकार का सफ़ेद संगमरमर और लाल

पत्थर बिछा हुआ था। उनपर मोहरों की जगह ज़िन्दा सिपाही उनकी वेश-भूषा में धीरे-धीरे क़दम रखते थे। एक प्यादा सिपाही दूसरे को तलवार के वार से मार डालता था...

नगर का निर्माण पूरा होने के बाद अकबर की नेकी और आत्मनिग्रह के भाव ग़ायब हो गये। वह रक्तपिपासु और उन्मत्त हो उठा। जब उसने फ़तेहपुर का निर्माण करनेवाले वास्तुकारों को मार डालने का आदेश दिया, सलीम ने अपने शागिर्द का प्रतिरोध किया।

"फतेहपुर का कोई प्रतियोगी नहीं होना चाहिए, जैसे कि उसके शासक का", अकबर ने कहा।

"परंतु कला तलवार और समय के अधीन नहीं है!"

सलीम के साथ बुद्धिमान वज़ीर फ़ज़ल ने भी बादशाह का विरोध किया।

शायद उनके ख़्याल में प्रतिभाशाली लोगों पर ज़ुल्म करने का नतीजा शासकों के लिए भी अच्छा नहीं होता था। अगर चित्रकार और कवि शासक का विरोध करें तो वह अवश्य कमज़ोर हो जायेगा। चूँकि शासक और जनता के बीच घनिष्ठता अच्छे कवियों, लोकप्रिय कवियों से उसकी निकटता पर निर्भर है।

क्रोधित कवि की कविता और बदला लेने के लिए लालायित चित्रकार की तूलिका तलवार से अधिक शक्तिशाली होती है।

लेकिन अकबर ने न ही सलीम की, न ही फ़ज़ल की बात मानी।

लोगों के दिल भय से भर उठे। उनका अपना मुक्तिदाता—पर्सेई नहीं था। कवि व चित्रकार मार डाले गये।

फ़तेहपुर के पत्थर यहाँ मारे गये कवियों और स्थापत्यकारों, हज़ारों ग़ुलामों के ख़ून से लाल हैं।

जोमार्त ने गर्म लाल दीवार पर सावधानी से हाथ लगाया। वह खुरदरा थी। ईंटों के बीच की रेखाएँ अरब लिपि की अंडाकृति की याद दिलाती हैं।

सब लोग इस नगर के भव्य रूप पर मुग्ध होते हैं। लेकिन क्या उस नगर को महान बताया जा सकता है जो लोगों की हड्डियों पर खड़ा है, जिसने पैदा होते ही अपने निर्माताओं को खा डाला?

बबीलोन और कर्फ़ागन, ट्रॉय और एथेंस, पर्सिपोलिस और शिराज़, ताराज़ और हिरात की स्थापना भी ग़ुलामों ने की, वे भी दासों की

हड्डियों पर खड़े हैं। परंतु ट्रॉय का होमेर ने, शिराज़ का साग्रादी और हाफ़िज़ ने और हिरात का महान जामी ने गुणगान किया था।

हाथ में ओत्रार का सिक्का थामे जोमार्त सोच रहा था; कवियों ने निर्माताओं का गुणगान किया, ज़ालिमों की भर्त्सना की थी। कवियों ने मृत पत्थरों का नहीं बल्कि इन नगरों में सैनिकों द्वारा दिखाये गये कारनामों का गुणगान किया था। ताराज़ की भाँति ट्रॉय ने जी-जान से लड़ाई लड़ी, सिपाही की तरह लड़ाई में अपनी जनता, अपने देश की रक्षा करते हुए वह मरा था। फ़राबा और पेर्सिपोलिस का भी भाग्य ऐसा ही रहा था। उन्हीं के कारनामों का कवियों ने गुणगान किया। फ़तेहपुर ऐसी प्रशंसा के योग्य नहीं है। वह जन्म से ही मृत है।

यहाँ यूरोपवासियों में सबसे पहले क़दम रखे अंग्रेज़ फीच ने। उसने १६ वीं सदी के अंत में लिखा था कि फ़तेहपुर तब के लंदन से काफ़ी बड़ा है, उसकी शान-शोहरत वर्णनातीत है, अकबर के दरबार में एक हज़ार हाथियों, तीस हज़ार घोड़ों, सैकड़ों शेरों, चीतों, बाघों, भैंसों, बाज़ों, तोतों, मोरों और शिकारी कुत्तों को पाला जाता है। उसने लिखा था कि फ़तेहपुर से आगरा जाने का रास्ता हमेशा भीड़-भाड़ से भरा होता है, उसके दोनों तरफ़ व्यापार की मेज़ें लगी होती हैं, जिन पर काफ़ी बड़ी मात्रा में सब कुछ है—सोना, चाँदी, मोती, हाथी दाँत और कपड़े, जो हवा से बनाये लगते है और उनकी बुनाई का रहस्य अब तक कश्मीरवाले छिपाये रखते हैं।

जोमार्त सड़कों के चक्र-व्यूह पर चलता जा रहा था। वह अपने हमराहों को भूल चुका था। भयंकर नीरवता का यह नगर उसके मन में कला की महानता और ज़ालिमों की असीम क्रूरता, मानव-निर्माता और मानव-हत्यारे के विचार उत्पन्न कर रहा था। उसके पीछे-पीछे इस महानता से आश्चर्य अभिभूत, घबरायी-सी युवा अमरीकी चल रही थी। धूप से गरम हुई इन दीवारों से वह डरती थी। हर एक शोर में उसे साँप की सरसराहट सुनाई देती थी। लगता था, हर एक कोने के पीछे कोई छुपा हो।

वे रास्ता भूल गये और अनजान में दूसरे दरवाज़े के पास आ पहुँचे।

प्राचीन ढलवाँ पथ नीचे भूरी धुआँधार घाटी की ओर ले जा रहा था। क़िले की दीवार से एक शक्तिशाली पेड़ चिपका था। वह कभी का सूखकर

चट्टान के टुकड़े की तरह काला पड़ चुका था। सूरज ने उसपर अपनी किरणें बिखेरने में कंजूसी नहीं की थी। हो सकता है, इसी पेड़ के नीचे वादी से इस नगर में आये गुलाम और बंदी अंतिम बार रुके हों। यह संयोग की बात नहीं है कि इस दरवाज़े का नाम बंदियों का दरवाज़ा रखा गया था। उनको इसी चट्टान से नीचे गिरा दिया जाता था।

पृथ्वी के किनारे सूरज की अंतिम किरणें जगमगा रही थीं। आसमान जल्दी ही अंधकारमय होता जा रहा था। सूखते अविकसित विचित्र पेड़ों की महान वादी धुँधली-सी पड़ती जा रही थी।

परंतु यह क्या है? कहीं मृत शून्यता से ज़ोर से "तुक" आवाज सुनाई दी। फिर एक बार... फिर एक बार... यह ध्वनि मृत नगर, काले पहाड़ और नगर के गिर्द फैली खाकी वादी के ऊपर लगातार धीरे-धीरे गूँजती रही। "तुक... तुक... तुक..." मानो रहस्यपूर्ण ध्वनि समय की गिनती कर रही हो। युवा अमरीकी के चेहरे पर आश्चर्य, भय और आशंका की झलक दिखाई दे रही थी। जोमार्त कान लगाकर सुनने लगा लेकिन उसकी समझ में नहीं आया आख़िर गूँजती, एकरस आवाज़ें कहाँ से आ रही थीं।

"यह क्या है?"

"शायद चोट की प्रतिध्वनि हो।"

"किंतु वादी तो नीचे की ओर है, वह हमें साफ़-साफ़ दिखाई दे रही है, उसमें रिहायशी मकानों का नामोनिशान तक नहीं, चारों ओर स्तेपी ही स्तेपी है। बहुत डर लगता है..."

"यह पवित्र पक्षी है," उनके सामने आ गये लड़के ने तेज़ आवाज़ में कहा। लड़की चौंक उठी। "वह कभी दिखाई नहीं देता। वही यहाँ का मालिक है और बहुत पहले से यहाँ रहता है। लेकिन कब से यह मुझे मालूम नहीं, श्रीमती जी। आप मत डरिये, वह पवित्र है, वह कभी दिखाई नहीं दे सकता। और वह किसी को तकलीफ़ नहीं पहुँचाता।"

वे नगर में वापस लौटे, संत सलीम की समाधि के पास से जल्दी से गुज़रे और पथरीली सीढ़ियों पर से नीचे कार के पास उतरे।

उनके सामने फिर मितभाषी भूखा भूत-सा बूढ़ा आ गया। उसकी आकृति ने जोमार्त को संन्यासी सीकरी के बारे में अफ़साने की याद दिलायी।

अकबर ने उसके लिए न झोंपड़ी, न समाधि का निर्माण किया।

सीकरी ग़रीब था और यहीं पत्थर की खान में भूखों मर गया था।

अकबर के इस प्रश्न पर कि फ़तेहपुर कितने साल तक साम्राज्य की राजधानी बनी रहेगी, ज्योतिषी ने उत्तर दिया था: "एक हज़ार!" तब बूढ़ा सीकरी न केवल ज्योतिषी बल्कि उसकी बात पर विश्वास करनेवाले अकबर पर भी हँसा था।

बादशाह ने क्रोध में आकर उसे मार डालने का आदेश दे दिया। लेकिन फ़ज़ल की हिमायत से ग़रीब भविष्यवक्ता को क़िले के बाहर भगा दिया गया। संत सीकरी को भूखों मरने का कोई डर न था। जीवन के अंतिम दिनों तक वह अकबर पर हंसता रहा।

पत्थर की खानों में वह इधर-उधर घूमता फिरता झाड़ियों में छुपता रहा। उसके सूखे सीने में हंसी कुलबुला रही थी।

नगर की दीवारों की ओर संकेत करते हुए वह देर तक हँसता और धीमी आवाज़ में कहता था, "मैं इसके साथ मरूँगा।"

यह किसी को मालूम नहीं कि वह कब और कहाँ मरा। लोगों ने सिर्फ़ फ़तेहपुर का नाश ही देखा।

"और वह ख़ुद अभी तक ज़िन्दा, जंगल में घूमता-फिरता होगा" लड़के ने कहा।

चार साल में खड़ा किया गया नगर चालीस साल भी जी न सका। अपनी स्थापना के १०-१५ वर्षों के बाद ही वह मर चुका था।

सूरज पत्थरों को तपा देता था। बादशाह के दरबार को ही काफ़ी मात्रा में पानी मिल पाता था। धूप और उमस से सब कुछ नष्ट होता जा रहा था। इतने में अचानक सलीम का देहांत हो गया। फ़ज़ल को शत्रुओं ने विष खिलाकर मार डाला।

तब से अकबर का अपने दरबार के लोगों पर विश्वास नहीं रह गया था। वह ख़ुद राजधानी छोड़कर लाहोर जा बसा और फिर ७ साल के बाद बिना किसी शोरोगुल के आगरा स्थित अपने क़िले में आ गया। दरबार के लोग भी उसके पीछे-पीछे आये।

इसके बाद भी बहुत समय तक ग़रीब लोग फ़तेहपुर में असह्य धूप से कष्ट उठाते रहे, धीरे-धीरे मरते गये। अंततः नगर निर्जन हो गया।

तब से वह धूप से तपे इस काले पहाड़ पर असीमित मानव प्रतिभा के

प्रतीक, महत्वाकांक्षी और ख़ून के प्यासे शासक की अदूरदर्शिता के सूचक के रूप में खड़ा है।

फ़तेहपुर के कुख्यात विनाश से लोगों को अकबर की शक्ति और बुद्धि पर भरोसा नहीं रह गया।

धर्म माननेवाले कहते थे, "भगवानों ने अपना धर्म बनाने के साहस के लिए उसको सज़ा दी। भगवानों ने बादशाह से मुँह फेर लिया। चाहे अक्बर को मानते हों या अल्लाह के खिदमतगार हों या बौद्ध के – सब के सिर मुसीबत आ पड़ी। यहाँ तक कि संत सलीम ने बादशाह को छोड़ दिया और ग़रीब सीकरी ने उसकी हँसी उड़ायी। कितनी मुसीबत है..."

बहुत समय से अकबर की तानाशाही से पीड़ित नवाब अब सक्रिय हो गये। शेख़ और राजा विरोध प्रकट करने लगे। फिर हिन्दुओं और मुसलमानों, वज़ीरों और सेनापतियों के बीच मुठभेड़ें होने लगीं। आंखों के सामने सेना विभाजित होती जा रही थी। अकबर के अच्छे दोस्त एक के बाद एक मार डाले गये। साथ ही पुत्रों का दुराचार भी उसको दुख पहुँचाता था।

* * *

उसके तीन पुत्र थे। सबसे बड़ा पुत्र, जिसका जन्म फ़तेहपुर के शिलान्यास के समय हुआ था, अब उन्नीस साल का हो चुका था। राजकुमार भ्रष्ट जीवन व्यतीत करते थे। अकबर अनुभव कर रहा था कि उसके पुत्र उसके विरोधियों के प्रभाव में आ चुके हैं, मगर वह कुछ भी नहीं कर सकता था। उसने अपना इरादा खो दिया, वह चिड़चिड़ा, क्रोधी और क्रूर हो गया। मित्रों की मृत्यु और दरबार के लोगों की गद्दारी ने उसकी हिम्मत पस्त कर दी।

अब वह सिर्फ़ कवि और यशस्वी सेनापति राजपूत बीरबल और सेनापति मानसिंह पर विश्वास करता था। अपनी सेना को फिर सुदृढ़ बनाने, उसकी सैनिक क्षमता की जाँच करने और प्रिय लोगों की मृत्यु से हुए दुख को दूर करने के लक्ष्य से अकबर बीरबल और मानसिंह को लेकर अपनी सेना के साथ अहमदनगर की ओर बढ़ा, जहाँ मनमौजी चाँद बीबी शासन करती थी, जिसके बारे में बहुत-सी कथाएँ फैली थीं। चाँद बीबी सभी

छोटे-छोटे राज्यों और रियासतों को एकत्रित करके शक्तिशाली सेना स्थापित करके अकबर के साम्राज्य में आनेवाले नगरों पर हमले करने लगी थी।

जीत अकबर की हुई। लेकिन जीत के अवसर पर ख़ुशियाँ नहीं मनायी गयीं। शोक मनाया गया। दरबार में लौटकर अकबर ने देखा, उसके दो पुत्र मरे पड़े हैं।

वे नंगी नर्तकियों और दासियों के बीच हद से ज़्यादा शराब पीने से मर गये थे। राजकुमारों के अंगरक्षकों ने अकबर के क्रोध से डर के मारे आत्म हत्या कर ली थी। महिलाएँ भी क़त्ल कर दी गयी थीं। और अकबर जीवनपर्यन्त पुत्रों की मृत्यु के रहस्य को न जान सका।

उद्धत, विकल अकबर अब नीले भवन से बाहर बहुत कम निकलता था। अब उसकी पुरानी आदतें नहीं रह गयी थीं, वह शिकार करने कम जाता था, पहले की तरह अब धर्मात्माओं, पुजारियों, प्रचारकों, दार्शनिकों, इतिहासविदों, कवियों और संगीतकारों को जमा नहीं करता था। अगर पहले हर बृहस्पतिवार को रोम के मिशनरी भी अकबर के यहाँ आने के इच्छुक थे तो अब मुल्ला भी उससे न मिलने की कोशिशें करता था।

अब वह वज़ीरों को भी एकत्रित करके उनसे बातचीत नहीं करता, अपने पुस्तकालय में भी नहीं जाता था, जिसमें सारी दुनिया की चौबीस हज़ार अनुपम हस्तलिपियाँ जमा की गयी थीं। अब वह न वज़ीरों, न पुस्तकों और न ही ज्योतिषियों पर विश्वास करता था, कवियों और संगीतकारों की रचनाएँ नहीं सुनता था क्योंकि उसका कोई उत्तराधिकारी न रहा और अच्छे कवि एवं संगीतकार मार डाले गये थे।

अकबर की प्रशंसा ऐसे कवि करते थे जिनमें कोई प्रतिभा नहीं थी। उनकी बात सुनकर उसे लगता था, वे माफ़ी माँग रहे हों।

हर एक व्यक्ति उसे गद्दार, जासूस और शत्रु लगता था। तख़्तवाले हॉल में मंत्री, राजदूत, व्यापारी और अन्य देशों के कूटनीतिज्ञ एक ही वाक्य सुनते थे: "मार डाला जाये!" वह डरपोक, एकान्तप्रिय और शक्की हो गया, उसे लगता था, उसका पीछा किया जा रहा हो।

कभी-कभी वह बाग़ में घूमने निकलता था और पालतू शेरनियों के बीच चहलक़दमी करता रहता था जो धूप में अलस भाव से ऊँघती रहती थीं। तब उसके पास किप्चाक स्तेपियों के बूढ़े दरबारी गायक को लाया जाता था।

अकबर घुटने मोड़, आँखें बन्द कर पहले की यात्राओं की याद में डूबा बैठा रहता था। बूढ़ा धीरे-धीरे देर तक गाता रहता था।

तैमूर शब्द सुनकर (जिसका अर्थ लोहा है) अकबर को दिल्ली के केन्द्र में स्थित लोहे का स्तंभ याद आता। वह एक हज़ार से अधिक वर्ष से खड़ा है। किसने ढाला उसे? किसने स्थापित किया? लोग उस काल के शासक का नाम भूल चुके हैं। शायद वे अकबर का नाम भी भूल जायेंगे। पत्थर का फ़तेहपुर ही रह जायेगा।

लोहे का स्तंभ विशालकाय है। लेकिन अगर उसपर कुतुबमीनार की तीन सौ अठहत्तर चक्करदार सीढ़ियों से ऊपर चढ़कर देखा जाये तो वह दंत खोदनी जैसा छोटा लगता है। लेकिन इनमें कौन अधिक साल सुरक्षित रहेगा? छोटा-सा स्तंभ जो लोगों के कहने के अनुसार एक हज़ार तीन सौ वर्ष से खड़ा है या अज़ीब चित्रोंवाला ख़ूबसूरत क़ुतुब मीनार, जिसकी स्थापना को अभी सिर्फ़ ३०० वर्ष हुए। स्तंभ को भारतीय लोहारों ने खड़ा किया था। क़ुतुब मीनार की स्थापना दिल्ली में प्रथम मुसलमान राजवंशों के प्रतिनिधियों ने की थी।

कौन-सा अधिक मज़बूत है? लोहे का स्तंभ! लोहा जैसा मज़बूत, दृढ़ होना चाहिए! अकबर एकदम उठ खड़ा होता, तलवार खींच लेता। गायक चला जाता, शेरनियाँ हट जातीं। अकबर शराब और घोड़ा लाने का आदेश देता, यात्रा की तैयारियाँ करने कहता। लेकिन जब तुरही बजती और सेनापति आते वह उन्हें भौंहें चढ़ाकर देखता और धीमी-सी आवाज़ में "गद्दार!" कहकर अपने कमरे में ग़ायब हो जाता।

* * *

एशिया का आश्चर्यजनक कवि बीरबल जिसकी अर्थपूर्ण और दुख भरी हास्यपूर्ण कविताएँ और चुटकुले भारतीय साहित्य की पाठ्यपुस्तकों में शामिल हैं, बादशाह के आदेश पर सेनापति से दरबारी मसख़रा बन गया था। कवि उदासी से मुस्कराता था। उसे बादशाह पर दया आती थी।

वह अकबर में साहस और लोगों के प्रति उदारता एवं विश्वास फिर से उत्पन्न करने की कोशिशें करता था। मगर अकबर उसकी कविताएँ, बुद्धिमत्तापूर्ण कथाएँ नहीं सुनता था, वह उसे दासों की तरह चाबुक से

मारता था। बीरबल हँसता रहता था, जैसे पहले कभी ग़रीब सीकरी हँसता था।

महान बादशाह अपने पुत्रों की मृत्यु के बाद बहुत कम दिनों तक जीवित रहा। अंतिम क्षण तक वह अपने मित्रों – धर्मात्मा सलीम और बुद्धिमान फ़ज़्ल के साथ न होने से उदासी महसूस करता था। फ़तेहपुर से कुछ दूरी पर सिकन्दरा में उसकी समाधि बनायी गयी। चार नीली-सफ़ेद मीनारें उसकी शान्ति बनाये रखती हैं। अकबर की समाधि भी स्थापत्य कला का मोती मानी जाती है। उसकी दीवारों के अलंकरण और हल्की रेखाएँ दुख और उदासी से भरी लगती हैं।

लेकिन वह न सिर्फ़ अपनी वास्तुकला की विशेषताओं के लिए प्रसिद्ध है बल्कि समाधि के धुंधलापन में विश्व भर का सबसे सुँदर और सबसे बड़ा हीरा – कोहिनूर भी छोटे से सूरज की तरह जगमगाते रहता था, जिसका मालिक दार्शनिक, वैज्ञानिक और सेनापति बाबर था और बाद में उसका पोता अकबर।

कल सिकंदरा में युवा अमरीकी लड़की हीरे की बात सुनकर क़ब्र के ऊपर के संगमरमर के अलंकरण और खोदाई की ओर देर तक देखती रही मानो कोहिनूर की खोज कर रही हो। फिर आश्चर्य के साथ उसने पूछा:

"और हीरा कहाँ है?"

"उसे संगीन से कुरेद कर भारत के अन्य हीरे जवाहरतों की तरह इंगलैंड ले जाया गया," जोमार्त ने जवाब दिया। "अगर आप कभी इंगलैंड गयी होंगी तो शायद ब्रिटिश संग्रहालय को देखा होगा? उधर देखने योग्य काफ़ी कुछ है।"

"हाँ, वह तो बहुत ख़ूबसूरत है!" लड़की पहले उत्साह से फिर धीरे से बोली: "मैंने कभी सोचा तक नहीं कि वह सब कहाँ से आया!" फिर कुछ देर की चुप्पी के बाद बड़ी सरलता से तेज़ी से बोली, "यह बात हास्यजनक तो है लेकिन मेरे पिता मुझे 'मोती' कहकर पुकारते थे।"

जोमार्त ने उसकी ओर मुस्कराकर देखा। लड़की लजा गयी।

"हमारे पास मोती बहुत हैं। लेकिन पिता जी कहते थे, सबसे मूल्यवान मोती मैं हूँ," अपनी सफ़ाई देते हुए लड़की ने कहा।

उनकी मुलाक़ात दिल्ली हवाई अड्डे पर हुई थी। जब जोमार्त हवाई

जहाज़ की सीढ़ियों के पास पहुँचा, उसे पास में ही एक लड़की खड़ी दिखाई दी।

सादे व ख़ूबसूरत ढंग से सिला मोटे रेशम का कुर्ता, उसके सुडौल बदन से आकर्षक रूप से चिपक गया था। हमारी फ़ैशन-पसंद लड़कियों की तरह उसकी छाती या पीठ नहीं बल्कि बायाँ कंधा खुला था। पैरों में ख़ूबसूरत जूते और हाथ में सूटकेस। बाल सँवरे।

वह कुछ डरपोक और साथ-साथ गर्वीली भी लग रही थी और जोमार्त को अनायास ही ख़्याल आ गया, शायद नताशा रोस्तोवा का भी रंगरूप ऐसा ही था जब वह पहली बार नृत्यशाला में आयी थी। उसे देखकर जोमार्त को अपने जन्मस्थान कार्लीगश की एक लड़की के प्रति अनकहे प्यार की याद हो आयी।

और जोमार्त आदतन पुराने सिक्के को टटोलने लगा।

हवाई जहाज़ पर बैठते समय जोमार्त को आश्चर्य हुआ कि लड़की अकेली है।

"माँ-बाप ने इस युवा लड़की को अकेली यात्रा पर जाने की इजाज़त कैसे दे दी?"

सभी यात्रियों की निगाहें उसी पर टिकी थीं। हरेक उसकी सहायता करने को तैयार था लेकिन वह अत्यन्त आत्मविश्वासपूर्ण लग रही थी। उसके हाथ में एक खुली पुस्तक थी। सीढ़ियों के पास खड़े होते समय भी वह पुस्तक पढ़ रही थी। हवाई जहाज़ में अपनी जगह पर बैठते ही वह फिर पुस्तक पढ़ने में लग गयी।

विमान छोटा-सा था, उसमें केवल १६–१७ सीटें थीं। मालूम हुआ जोमार्त की जगह लड़की के पास है।

पेटी कसकर जोमार्त ने उड़ान के समय थोड़ी देर सो रहने का निश्चय किया। लड़की पैर पर पैर चढ़ाकर पढ़ रही थी।

हवाई जहाज़ धीरे-धीरे ज़मीन से ऊपर उठा, काफ़ी ऊँचाई पर पहुँचने के बाद अचानक एक ओर झुक गया, फिर धक्के के साथ ऊपर बढ़ा। जोमार्त ने हाथों से पकड़नेवाला बेल्ट थाम लिया।

एक और झटका। लड़की का सिर हवाई जहाज़ की खिड़की से टकरा गया। संतुलन बनाये रखने की कोशिश करते हुए उसने बल खाकर जोमार्त को पकड़ लिया। हवाई जहाज़ झटके के साथ नीचे उतर पड़ा। लड़की

चिल्लाकर जोमार्त की छाती से लिपट गयी। जोमार्त ने उसकी कमर थाम ली ताकि उसे झटकों से चोट न लगे।

अंततः हवाई जहाज़ सामान्य स्थिति धारण कर फिर ... अचानक तेज़ गति से नीचे गिरने लगा। एक और धक्का! जहाज़ के अन्दर शोर मच गया। लेकिन अब की बार हवाई जहाज़ ने ज़मीन से टक्कर खाया था। वह अपनी गति धीरे-धीरे कम करने लगा।

मालूम हुआ, किसी को क्षति नहीं पहुँची। लड़की अपनी सीट पर जा बैठी।

"माफ़ कीजिये, छोटी-सी तकनीकी गड़बड़ी पैदा हो गयी है। कंपनी आपको अपने ख़र्चे पर रेस्तराँ में आमंत्रित करती है। आधे घंटे के बाद आपकी सेवा में नया आरामदेह हवाई जहाज़ प्रस्तुत किया जायेगा। २० ही मिनट में आप आगरा पहुँच जायेंगे।" दरवाज़े के पास कंपनी का प्रतिनिधि खड़ा होकर कह रहा था।

रेस्तराँ में जोमार्त लड़की के साथ ही गया। उसके हाथों में अब किताब नहीं थी।

एक ही मेज़ के पास दोनों बैठे। बिना कुछ कहे कॉफ़ी पी। कुछ भी खाने को जी नहीं कर रहा था। कॉफ़ी के बाद लड़की अपनी यात्रा की प्रतीक्षा करनेवाली बूढ़ी अंग्रेज़ी महिलाओं के पासवाले सोफ़े पर जा लेटी। जोमार्त सड़क पर निकल आया।

"आप हवाई जहाज़ से जायेंगे?" जोमार्त ने पास ही फिर उसी युवा लड़की की आवाज़ सुनी।

"दूसरा कोई चारा नहीं," जोमार्त ने उत्तर दिया। "टिकट खरीदा जा चुका है। दिल्ली का होटल ख़ाली कर आगरा में आर्डर बुक किया जा चुका है।"

लड़की सोच में पड़ गयी। घोषणा की गयी कि हवाई जहाज़ पर बैठा जा सकता है। जोमार्त हवाई जहाज़ की ओर बढ़ा। एक मिनट बाद युवा अमरीकन भी जहाज़ के अन्दर आ पहुँची।

जब हवाई जहाज़ आगरा में उतरने लगा, लड़की ने जोमार्त से पूछा:

"आप किस होटल में ठहरेंगे?"

"लॉरेंस में।"

"ओ, तब तो हमें एक ही स्थान पर जाना है," लड़की बोल उठी। वह अपनी ख़ुशी छुपा नहीं पा रही थी। "यहाँ टैक्सी मिलती है क्या?"

"मुझे नहीं मालूम। मैं यहाँ पहली बार आया हूँ," जोमार्त ने कहा।

"आपको ले जाने के लिए कार आयेगी क्या?" लड़की ने फिर प्रश्न किया।

"हाँ।"

"मैं आपके साथ जा सकती हूँ?"

"हाँ, क्यों नहीं, बड़ी ख़ुशी से।"

जोमार्त ने न तो हवाई जहाज़ में, न तो दिन भर नगर के स्मारकों को देखते समय ही उसका नाम पूछा।

विमान में वह कलकत्ता और मद्रास में हुई मुलाक़ातों, बम्बई और बंगलोर में इतिहासविदों, कवियों और पत्रकारों से वार्त्ताओं के बारे में सोचता रहा था।

कलकत्ता और दिल्ली में उसने मध्य एशिया के अतीत के बारे में व्याख्यान दिया। दिल्ली में व्यख्यान सुननेवालों में इतिहास के बहुत-से अच्छे जानकार थे। उसने मध्य एशियाई इतिहास की आम समस्याओं का वर्णन करने की कोशिश की।

"अभी कुछ सदियाँ पहले ही यूरोप के विद्वान और आक्रमणकारी दोनों ही मध्य एशिया की ओर, बर्फ़ से ढँके उसके पहाड़ों, हरे-भरे चरागाहों, नदियों, रेगिस्तानों, उसके रेवड़ों और सोने, चाँदी व लोहे के लिए धनी उसकी भूमि की ओर आश्चर्य, अचंभे और लालच के साथ देखते थे," जोमार्त ने कहा, "ऐसा भी समय था जब विज्ञान ने पूर्व और पश्चिम की झोंपड़ियों में, व्यापार की पगडंडियों में उत्पन्न पुरानी कथाओं के मुताबिक़ इस बात को प्रमाणित करने की कोशिश की थी कि मध्य ऐशिया मानवता का जन्म स्थल था, संस्कृति का पालना था। और शायद इसे प्रमाणित भी किया।" उसका कहना था कि उन लोगों का जन्म यहीं हुआ था, जो बाद में यूरोप में जा बसे, उसको अपना दूसरा वतन बना लिया, अपने मध्य एशियाई पूर्वजों के सामने डींग मारने लगे।

विद्वान एक-दूसरे के सामने क़सम खाने को तैयार थे कि मध्य एशिया के वासी बड़ी संख्या में गंगा और सिंध नदियों की उमसदार वादियों, चमत्कारों के देश भारत गये थे।

वे कहते थे कि मानवता ने अपनी कल्पनातीत, जोशीली जवानी को

हमारे पहाड़ी मैदानों के हरे-भरे कालीनों पर बिताया, कि पहले मध्य एशि-
या की प्रकृति और हवा लोगों को स्वास्थ्य प्रदान करती थी और पृथ्वी
के भावी शासकों को तैयार करती थी।

यह धारणाएं उस समय के वस्तुगत तथ्यों से पूर्णरूपेण मेल खाती थीं।

लेकिन अध्ययन की भावना, मनुष्य के सदा खोजी और शक्की मस्ति-
ष्क ने नये-नये तथ्यों का आविष्कार किया और उनकी तुलना की। ले-
किन ऐसा दिन भी आया, जब विद्वान अपनी पहले कही बात को अब
इंकार करने लगे।

जो कुछ पवित्र था, अब पवित्र न रहा।

हालाँकि विज्ञान ने पुराने तथ्यों के बदले में इतने ज़्यादा नये तथ्य नहीं
पेश किये, फिर भी विद्वान प्रतिस्पर्द्धापूर्वक मध्य एशियाई ताज के प्रभामंडल
को बुझाने के प्रयत्न करते हुए कहते थे कि इस विशालकाय इलाक़े के पास,
जो पृथ्वी के सब से बड़े भूमंडल का हृदय है, किसी और भूभाग की तु-
लना में मानव सभ्यता का पालना माने जाने के लिए कम अधिकार हैं।
पर बहस अभी समाप्त नहीं हुई थी। ऐसे भी इतिहासविद थे जो पहले
के विचार का समर्थन करते थे। वे कहते थे कि अगर हम कहें कि एशि-
याई महाद्वीप का केंद्र– मानवता का जन्मस्थल है तो यह ज़्यादा सही हो-
गा। अगर हम मानवता का पालना की जगह संस्कृति का पालना कहें,
तब भी मध्य एशिया अनुसंधानकर्ताओं के ध्यान का केंद्र बनने के लायक़ है।

यूरोप और एशियाई महाद्वीप के केंद्र के गिर्द, जो हिमालय, पामीर,
त्यान-शान जैसे पृथ्वी के सबसे ऊँचे पहाड़ों से क़िले की दीवारों की तरह
घेरा हुआ है, बेबीलोन, भारतवर्ष और चीन जैसे महान देश स्थित थे।
जहाँ तक प्राचीन मिस्र की सभ्यता का संबंध है तो वह भी मध्य एशियाई
संस्कृति से मेल खाती है।

"इस लिए, मित्रो, मैं सोचता हूँ कि यह ख़्याल रखा जा सकता है
कि प्राचीन काल में मध्य एशिया में उच्च संस्कृति का स्रोत मौजूद था।
ऐसा विचार भी संभव है कि यहाँ से दूसरे देशों में जाकर बसनेवाले लोग
इन संस्कृतियों की परम्पराएँ अपने साथ ले गये थे।

वैसे तो यह विचार मेरे अपने नहीं," जोमार्त ने समझाया, "यह
विचार उन विद्वानों के हैं जो मध्य एशिया के ऊपर प्रभामंडल फिर
उत्पन्न करना चाहते हैं।"

इसके बादवाले काल में, जब विद्वानों का जोश थम गया; मध्य एशिया अपनी पहले की शक्ति भी, अपनी संपत्ति भी खो चुका था। उसकी ज़िन्दगी भी युद्धों, लूट-खसोट और दबाव के प्रभाव के कारण परिवर्तित हो चुकी थी। नहरें बंद हो गयीं, नगर राख के ढेर बन गये।

अपनी पहले की शान्ति खोकर वह वास्तव में घुमंतू लोगों की वादी में परिवर्तित हो गया। अब वह संस्कृति का स्रोत न रहा, वह संस्कृति को बरबाद करनेवाला हो गया। ज्वालामुखी के लावा की तरह घुमंतू सैनिक हर तरफ़ फैल गये, रास्ते में नवोदित जातियों द्वारा स्थापित सांस्कृतिक थातियों को भी वे नष्ट करते गये। वे मिस्र, भारत, बेबीलोन और चीन तक पहुँचे। उनके घोड़ों के खुरों ने प्रफुल्लित इलाक़ों को रेगिस्तानों में और नवोदित नगरों को खंडहरों में परिवर्तित कर दिया।

बातीख़ाँ की सेना को याद कीजिये, जिसमें सिर्फ़ तीन हज़ार मुग़ल और तीन लाख तुर्क-किप्चाक़ थे, माम्लूकों को याद कीजिये, जो मध्य एशियाई थे और अतंतः तुरानवासियों को। उन्होंने समाधियों और मक़बरों का निर्माण कराया तो नगरों को ख़ाक में भी मिलाया। वे लोगों की दासता साथ लाये।

"शायद इसीलिए मध्य एशिया के बड़े ऐतिहासिक महत्व संबंधी प्राथमिक विचार पूर्णत: इंकार किये गये थे," जोमार्त ने अपनी बेलगाम कल्पना को दबाते हुए धीमी आवाज़ में कहा। "चूँकि उसकी क्रूरता ने अनुसंधानकर्ताओं के नेक इरादे को बरबाद किया, उनकी भावनाओं को अपमानित किया था। इतिहासविद और विद्वान उसके बारे में लम्बे अर्से के लिए भूल गये। उस पुराने काल के बाद बहुत कम लोगों ने सचाई प्रमाणित करने की कोशिश की।

"फिर भी मित्रो, अपनी बर्बरतापूर्ण कार्रवाइयों के दौर में भी मध्य एशिया ने न केवल ख़ून के प्यासे अत्याचारियों को जन्म दिया बल्कि विश्व को महान दार्शनिक मुहम्मद अल-फ़राबी, चिकित्सा विज्ञान के संस्थापक अबू सिना, बीजगणित के संस्थापक अल-ख़ोरेज़मी, तथा अनेक महान गणितज्ञ भी दिये। उसकी झोंपड़ियों में प्रथम समीकरण और उपपाद्य पैदा हुए, ज्योतिषी और कवि सृजन करते रहे। अगर मध्य एशिया के अपने माइकलएंजेलो और रैफ़ेल नहीं थे तो इसका कारण यह है कि इस्लाम धर्म, जिसने मध्य एशिया में रूस में ईसाई धर्म से पूर्व प्रवेश किया, हज़ारों

वर्षों के दौरान दिन प्रति दिन वह सब कुछ नष्ट करता आया, जिसे चित्र-कला और मूर्तिकला माना जा सकता है। जिस आदमी ने मानव की तस्वीर बनाने का साहस किया, उसी का हाथ काटा जाता था। हमारी स्तेपी में समाधियों और कालीनों के अलंकरण और इस्लाम के पक्षपातियों की स्मृति में बनाये गये मक़बरे ही रह गये हैं।"

जोमार्त ने परफ़्यानों, नीस्सा* की कला, सुग्दियाना और उसके निवासियों, ताराज़ के चित्रकारों और मूर्तिकारों, समरक़न्द और ओत्रार के बारे में, नगरों के बारे में, फ़ाकिया के वासियों और अप्पासिआकों, उन तुर्क और क़िप्चाक़ क़बीलों के इतिहास के बारे में बताया, जो अब स्वतंत्र हो गये हैं और स्वावलंबी जीवन बिताते हैं।

"चंगेज़ख़ाँ के ख़िलाफ़ लड़ाई करते समय भी ओत्रार के मेरे पूर्वजों के सामने यह सवाल उठा था कि रहेंगे या मरेंगे। यह प्रश्न जन्म से ही हर एक जाति का साथ देता है," जोमार्त ने कहा। "... मैं इतिहास का अध्ययन करने लगा, ओत्रार की खोज करने लगा और सोचता हूँ कि इस नगर के रहस्यों को जानना मेरी जनता के अतीत के बारे में सत्योद्घाटन में सहायता देगा," जोमार्त ने अंत में कहा।

हॉल में सन्नाटा था।

"व्याख्याता साहब, कृपा करके बताइये, आपके विचार में आपके देशवासी, फ़राबा के महान दार्शनिक मुहम्मद अल फ़राबी के सिद्धान्त को किस विचारधारा में शामिल किया जा सकता है: आदर्शवादी में या वस्तुवादी में?" श्रोताओं में एक ने जोमार्त से पूछा। "और मध्य एशियाई दर्शन के विकास में उसकी क्या भूमिका रही है?"

"मैं दर्शन को मध्य एशियाई, एशियाई या पूर्वी में विभाजित नहीं कर सकता। फिर मेरी समझ में यह बात नहीं आ रही है कि हमारे माननीय अतिथि मध्य एशिया में सिर्फ़ उन्हीं देशों को शामिल क्यों करते हैं जो महान पहाड़ों के चँदोवे के पार स्थित हैं? मेरे ख़्याल से उसमें भारत, मंगोलिया और किसी हद तक चीन भी शामिल हैं," दूसरे श्रोता ने कहा।

---

* नीस्सा – परफ़्यान राज्य की राजधानी जो वर्तमान अश्ख़ाबाद के आसपास स्थित थी।

"यानी आपके कहने का मतलब है कि 'भारतीय दर्शन', 'जर्मन दर्शन' जैसी ठोस परिभाषाएँ ग़लत हैं?" तीसरे ने टोका।

जोमार्त व्याख्याता से श्रोता बन गया। जब तक बातचीत अंग्रेज़ी में होती रही, वह हर बात को समझने की कोशिश करता रहा था। दर्शन और धर्म की प्रवृत्तियों, भारत की विलक्षण संस्कृति और इतिहास के बारे में जिससे सैंकड़ों कबीलों और जनगण का भाग्य जुड़ा है, बड़ी रोचक बातचीत हो रही थी। लेकिन किसी ने उर्दू, किसी ने पंजाबी में बोलना शुरू किया। जोमार्त के पास कोई दुभाषिया नहीं था। सो, वह बातचीत के प्रवाह को समझ न सका।

नयी बहस शुरू हो गयी—भाषा पर। किस भाषा का प्रयोग वाद-विवाद में किया जाये?

जोमार्त ने उल्लेख किया कि यहाँ ऐसी बहसें अकसर हुआ करती हैं। और यह स्वाभाविक भी है क्योंकि इस देश में छोटी-बड़ी जातियों के ५० करोड़ से अधिक लोग रहते हैं। उपनिवेशवादियों की भाषा यहाँ जम न पायी, आबादी के २–३ प्रतिशत लोग ही, ख़ास तौर से बुद्धिजीवी ही अंग्रेज़ी बोलते हैं।

"भाषा की समस्या हमारे लिए अब जीवन-मरण की समस्या बन गयी है" एक अधेड़ उम्र के हिन्दुस्तानी ने पॉर्टी के बाद जोमार्त से कहा।

उन्होंने पुरानी दिल्ली की सड़कों पर सैर की जो जले खाद्य पदार्थों की बू, पसीना और चंदन की छड़ियों की ख़ुशबू से भरपूर थीं। लाल क़िले के पास वे टैक्सी पर बैठे, नेहरू द्वारा राष्ट्रीय कर्मचारियों और मज़दूरों के लिए निर्मित फ़्लैटों के पास से गुज़रकर फिर वे नये मुहल्लों की ओर गये।

जोमार्त के साथी ने कहा: "हमें नेहरू जी जैसे आदमी की ज़रूरत है, जिनको जनता का असीमित प्यार और विश्वास प्राप्त हो। सिर्फ़ ऐसे नेता की आवाज़ ही अनपढ़ और भूखी जनता के लिए जो धार्मिक अंधविश्वासों में डूबी है, बहुत बड़ा महत्व रखती है। नेहरू की मृत्यु असामयिक रही। उन्होंने बहुत कुछ किया लेकिन अभी तो बहुत कुछ करना बाक़ी है।" वैज्ञानिक ने कहा। "हर एक जाति के इतिहास की तरह हमारी जनता के इतिहास में भी ऐसे उदाहरण बहुत-से हैं, जब अलग-अलग व्यक्तियों ने एक-दूसरे से पृथक होकर रहनेवाले क़बीलों, जातियों, विभिन्न

वर्णों और धर्मों के प्रतिनिधियों को ऐक्यबद्ध करने की कोशिशें की थीं। निश्चय ही, प्राय: उनका लक्ष्य अपनी शक्ति मज़बूत बनाना होता था, फिर भी उनके प्रयत्नों में उदारता का अंकुर दिखाई देता है जिसका विकास न हो पाया।

उदाहरण के लिए, महान मुग़लों के राजवंशजों और उनमें सबसे विख्यात बादशाह अकबर को लें, जिसको आज तक इतिहासविद 'महान' कहते हैं।

"उस वक़्त, जब हमारा देश आप की स्तेपियों से आये मुसलमान आक्रमणकारियों के अधीन था, भारत वर्णात्मक पृथकता और धार्मिक अंतर्विरोधों से पीड़ित था। अजनबी लोगों की नफ़रत और घमंड के जवाब में भारतवासी घृणा प्रकट करते थे। अगर इतिहासविद इन सबके बावजूद अकबर को 'महान' कहते हैं, तो इसका कारण उसके हमले, यात्राएँ और जीतें नहीं बल्कि देश के बारे में उसकी चिंता है। वे चाहे थोड़े समय के लिए ही सही लेकिन शाँति तो स्थापित कर सके, धार्मिक और वर्णात्मक फूट को तो मिटा सके," जोमार्त के सहभाषी ने आगे कहा। "आपने कहा कि पिछले कुछ बर्षों में आपको एशिया के बहुत-से देशों में जाने का मौक़ा मिला। अब आप हमारे देश के उत्तरी नगरों, उत्तरी व मध्यवर्ती भारत के स्मारकों को ध्यान से देखिये। आपके देश की अतीत की संस्कृति और वास्तु-कला में इतनी समानता और किसी देश में नहीं मिलेगी।

वैसे आप आगरा जानेवाले हैं तब तो इसके बारे में पहले से बताने की कोई ज़रूरत नहीं, आप ख़ुद देख लेंगे।"

"क्या आप 'अशोक' होटल में ठहरे हैं?!" प्रवेश-द्वार के पास कार रुकते ही वह अचानक चकित होकर बोल उठा। "यह एशिया का सब से समृद्ध, सब से उत्तम होटल है!"

"उसका निर्माण इस लिए किया गया होगा कि उसमें ठहरनेवाले लोग यह भूल जायें कि वे भारत में आये हैं?" जोमार्त ने कहा।

"जी हाँ, यहाँ शानदार सुविधाएं हैं, तालाब भी, बाग़ भी और ठंडी हवा भी और यहाँ वही ठहरता है जो दोनों हाथों से धन लुटा सकता हो," प्रोफ़ेसर की आवाज़ में कटाक्ष था।

"आप ठीक कहते हैं, यहाँ सब कुछ महंगा है और सिर्फ़ बड़े धनवान लोग ही रह सकते हैं। जहां तक मेरा सम्बन्ध है तो मैं यहाँ आपके अफ़-

सरों की इच्छा से ठहराया गया हूँ। उन्हें ऐसी उदारता के लिए मैं शुक्रिया ही दूंगा। मगर मैं किसी तरह अपने काम से यह क़र्ज़ चुकाने की कोशिश करूँगा," जोमार्त ने मज़ाक़िया ढंग से जवाब दिया।

"हां, हां, आपने बहुत अच्छा काम किया है। आगरा से वापस आने पर आपको एक और व्याख्यान देना है," विदा लेते हुए प्रोफ़ेसर ने कहा।

* * *

फ़तेहपुर से वापस लौटते समय जोमार्त ख़्यालों में अपने देश जाने से पहले के आख़िरी व्याख्यान की तैयारियाँ कर रहा था। कल जब वह युवा अमरीकन के साथ सिकन्दरा में अकबर की समाधि देख रहा था, उसने अपनी नोटबुक में कुछ लिख भी लिया।

इसके बाद वे ताज महल के बाग़ के हरे-भरे लॉन पर एक बड़े-से चिनार की छाया में बैठे। जोमार्त को संयोग से मिली सहयात्री कभी एक पेड़ से दूसरे तक भागनेवाले नेवलों के पीछे दौड़ती और उत्साह के साथ "एशियाई गिलहरी!" कहकर चिल्लाती थी और कभी उसके पास आकर बैठती, हाथ में पेंसिल लेकर नोटबुक में सफ़ेद मक़बरे की रेखाएँ खींचने लगती थी।

"काश! इस सुन्दरता पर मुग्ध होकर, हमेशा इस बाग़ में रहा जा सकता!"

"मैंने भी कभी ऐसी सुँदरता नहीं देखी," जोमार्त बोला।

कभी-कभी वह इस लड़की की ख़ुशी पर मुग्ध हो जाता। उसे यह विस्तार से जानने की इच्छा होती कि वह कौन है और कहां से आयी है? लेकिन उसने दिलचस्पी न दिखाने का फ़ैसला किया। इसके अलावा, वह अपने काम में मग्न थी—ताजमहल की सफ़ेद आकृतियों से दृष्टि हटाये बिना वह चित्र बना रही थी।

जोमार्त ने ताजमहल के बारे में बहुत-सी कथाएं सुनी थीं, उसके चित्र भी देखे थे लेकिन अब उसको विश्वास हो गया था कि न कोई कविता, न किसी प्रतिभाशाली चित्रकार की तूलिका ही उसकी मोहकता को प्रतिबिंबित करने में समर्थ हो पायी थी।

ताजमहल—यह प्रेम की गाथा है, यह वास्तव में आगरा के आस-पास

बनाये गये प्राचीन महलों और समाधियों की काली छाया के बीच सफ़ेद मेघ है।

बाअलबेक, रोम, एथेंस, कर्फ़ागेन, हिरात और बुख़ारा, बेपीन और बोरोबोदूर में जाकर जोमार्त ने कहीं भी ताजमहल की सुन्दरता की झलक तक न देखी थी।

"अगर अमर प्रेम और असीमित दुख की गाथा पत्थरों से गढ़ी जा सकती है तो वह ताज महल ही है," जोमार्त सोच रहा था। "और उसे मक़बरा कहना उचित नहीं। यह शब्द उसके साथ जंचता नहीं।"

"ताजमहल धुँध में इंद्रधनुष जैसा है, ताज महल ज़मीन की बरौनियों पर आंसू, स्तेपी में प्राचीन सड़क के किनारे पर उगा पतला सफ़ेद अंकुर है। अगर वास्तुकला के इतिहास में सिर्फ़ एक ही मोती है तो वह ताज महल है।" कल्पना जोमार्त को कहीं दूर ले गयी और वह ख़्यालों में ताज महल की स्थापना के बारे में कथाएँ और कहानियाँ सोचने और रवीन्द्र-नाथ ठाकुर के शब्द "तू महान है शाहजहाँ!" दोहराने लगा।

जिस तरह लैला व मजनूं, रोमियो-जूलिएट का प्रेम यूरोप और एशि-या के दो महान कवियों की अमर सुँदर रचनाओं का आधार बना, वैसे ही मुमताज़ महल से शाहजहाँ का प्रेम भी ताजमहल की स्थापना का का-रण बना।

उस दिन ताजमहल में भी फ़तेहपुर जैसा सन्नाटा छाया था लेकिन यह सन्नाटा दुख भरा सन्नाटा था।

"अनेक सदियों से ताजमहल यमुना की नीली लहरों को निहारता आया है। यमुना – समय, ताजमहल – प्रेम है। समय गुज़र जाता है, प्रेम रह जाता है" जोमार्त यंत्रवत यह शब्द बोल उठा। लड़की चित्र बनाना छोड़ उसके पास आ बैठी।

"अरे, आप तो कवि निकले," लड़की चिल्लाकर बोली और जूता एक तरफ़ फेंककर टाँगें ड्रेस के नीचे मोड़कर बैठ गयी। "क्या आपने कभी किसी से प्रेम किया था? क्या अपने प्रेम के हेतु आप ऐसा महल बना सकते हैं?"

जोमार्त ने उत्तर दिया: "बचपन में मैं सैंकड़ों ऐसे महलों का निर्माण किया करता था लेकिन समाधियों का नहीं, महलों का। एक काली आँ-खोंवाली लड़की के लिए। लेकिन मेरे गाँव के लोगों ने ताज महल के बारे
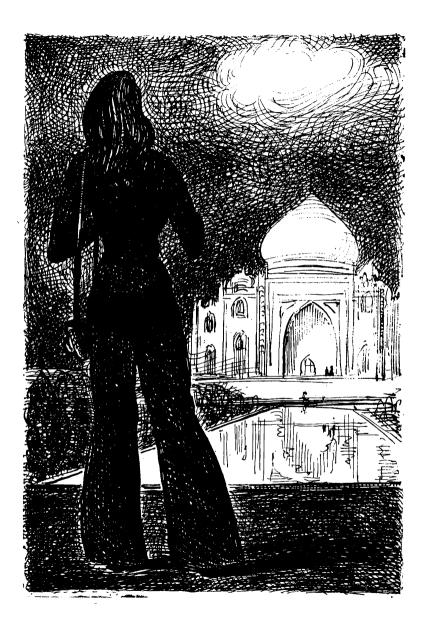
में कभी सुना तक नहीं था, इसी लिए मेरे बचपन की कल्पना के महल मेरे गाँव के सबसे अच्छे मकान जैसे थे, फ़र्क यह था कि मेरे महल उनसे कुछ बड़े और रोशन थे।"

"ओ, आपके पास अपना गाँव है, मेरे पास फ़ार्म भी नहीं है, न्यू-यार्क में सिर्फ़ मकान है। हाँ, शहर के बाहर एक बंगला और छोटा-सा ता-लाब भी है। यह सब मुझे पिता ने शादी के मौक़े पर उपहार स्वरूप दिया था लेकिन मैंने जल्दी ही तलाक़ ले लिया। वह हमारी मंडली का आदमी नहीं था, हालाँकि प्यानो बहुत अच्छा बजाता था, हमारी मंडली के लोगों से योग्य व्यवहार रख सकता था, लड़कियाँ उसे पसंद करती थीं, मुझे भी वह पसंद आया था। अपने पिता की इच्छा के विपरीत मैंने उससे शादी कर ली थी। लेकिन बाद में मुझे मालूम हुआ कि उसे मेरे पैसे की मुझ से अधिक ज़रूरत है। अब तो शादी की बात से ही मिचली आती है। बच्चों से भी मुझे कोई लगाव नहीं।"

"तब आप किसको पसंद करती हैं?" जोमार्त ने पूछा।

"मैं छोटे पिल्लों को बहुत पसंद करती हूँ, वे बहुत अजीब होते हैं। कुत्तों के साथ ताज़ा हवा में घूमना पसंद है मुझे। हाँ, एक पत्रिका में बतौर चित्रकार काम करने का भी प्रयत्न मैंने किया," लड़की ने एक आधुनिकतम पत्रिका का नाम बताया। "फिर मैंने यह काम छोड़ दिया। संपादक मुझसे छेड़-छाड़ करने लगा था। आप कल्पना भी नहीं कर सकते न्यू-यार्क कितना बुरा शहर है। वेंनेजुला गयी। वहाँ मेरा एक मित्र रहता है। मुझे लगता था कि मैं उससे प्रेम करती हूँ। वह बहुत अच्छा, नेक-दिल नौजवान है। लेकिन वह साहसपूर्ण नहीं है, सुस्त है। उसका अपना शानदार महल भी है।"

"तेल भी है," जोमार्त ने व्यंग्य भरी आवाज़ में स्वर मिलाया।

उसकी बातों पर जोमार्त को उतना ही बड़ा आश्चर्य हो रहा था, जितना लड़की को ताजमहल के बारे में उसकी बात सुनकर हुआ था। अब लड़की उसे सीधी-सादी नहीं लग रही थी।

"ओह, तेल बहुत है। उसके पिता के पास ऐसी ही बड़ी तेल कंपनी है, जैसी मेरे पिता की इस्पात कंपनी। लेकिन मुख्य बात यह नहीं है। बात यह है कि वहाँ जाकर मैंने अपने मित्र के पिता से परिचय प्राप्त कि-या और मुझे ऐसा लगा, कोई और मर्द उसके जैसा महिलाओं से प्रेमसं-

पादन नहीं कर सकता हो। मुझे उससे लगाव हुआ। लेकिन मैंने सोचा, पिता और बेटे के बीच फूट डालना उचित नहीं। सो, वहाँ से मलाया जा पहुँची। वहाँ मेरी एक अच्छी सहेली है। वहाँ से जापान गयी। और संयोग से एक विज्ञापन देखा, जिसमें लिखा था कि विश्व के देशों की यात्रा बहुत सस्ती पड़ती है। कुल मिलाकर दो हज़ार पाँच सौ डालर। परिस्थितियाँ थी इतनी बुरी नहीं। इस प्रकार मैं भारत आ गयी।

हाँ एक बात भूल गयी। जापान में एक लड़का मिला। काफ़ी मिलनसार और सुन्दर। हमारे परिचय के दूसरे दिन ही उसने शादी का प्रस्ताव रखा। मेरे साथ यात्रा पर जाने को भी तैयार था। यह हास्यजनक है न? कहता है: 'नैन्सी, मैं आपके बिना जी नहीं सकता'।"

"इसका अर्थ यह है कि आपका नाम नैन्सी है?" जोमार्त ने पूछा।

"नैन्सी स्टोड्डार्ट," लड़की ने उत्तर दिया।

"हाँ, तो फिर क्या हुआ नैन्सी? शायद उस लड़के को आपसे प्रेम हो गया और वह आपके लिए ऐसे ही महल बनवाने को तैयार था।"

"आप कहना चाहते हैं समाधि, क़ब्र! बहुत क्रूर मज़ाक है। हाँ, आपने अभी तक अपना नाम नहीं बताया।

"जोमार्त।"

"जो-ओमार्त?" लड़की ने "जो" और "मा" अक्षरों के उच्चारण को लंबा खींचते हुए मुस्कराकर कहा। "मैं आपके प्रति बहुत कृतज्ञ हूँ। तब हवाई जहाज़ में आपने मुझे हार्दिकता के साथ सहारा दिया।"

"हम सब उस समय कुछ डर गये थे।"

"मैंने सोचा, आप डरे नहीं।"

"प्रथम अनुभव प्रायः धोखे में डालते हैं। पहले मुझे लगा कि आप अभी स्कूल की छात्रा हैं।"

"ओ, उन्नीस साल की हो गयी हूँ। मैंने कॉलेज की पढ़ाई ख़त्म की है। वैसे हर मर्द का अपना दृष्टिकोण होता है। यहाँ होटल 'लॉरेंस' में किसी को यह विचार तक नहीं आया कि मैं अभी लड़की हूँ। विशेषकर वह वेटर, जो राजा का सूट पहने हुए था, उसने पूछा कि मुझे दिल बहलाने के लिए किसी युवा सुंदर सिख की तो आवश्यकता नहीं?"

जोमार्त समाधि के पास जानेवाले तीर्थयात्रियों की ओर देखते

हुए चुप रहा। भारतीय महिलाएँ उज्ज्वल रंग की साड़ियाँ पहने थीं और मर्द सफ़ेद कुरते। बहुत-से लोगों के हाथों में गुलाब की फूलमालाएँ थीं।

नैन्सी ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा: "फ़र्म का प्रतिनिधि मुझे अलग से कार देना चाहता था। लेकिन मैंने निश्चय किया कि अगर किसी के साथ जाऊँ तो बेहतर होगा। होटल में विदेशियों में आप अकेले निकले। अगर आपको कोई एतराज़ नहीं तो हम साथ यात्रा कर सकते हैं। कहते हैं कि आप कल किसी मृत नगर को देखना चाहते हैं?"

"हाँ," यंत्रवत् उत्तर देकर जोमार्त अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ। "फ़तेहपुर हम साथ जा सकते हैं।"

नैन्सी तितली की तरह बहुत हल्के ढंग से उठी, लंबे तालाब की ओर दौड़ पड़ी और गरम पानी में पैर धोकर जूते फिर से पहनने लगी।

"बहुत गरम है। यहाँ का सूरज इतना तेज़ है। यह क्या है आपके हाथ में, तावीज़ है क्या?"

"नहीं, सिक्का।" जोमार्त ने ओत्रार से लायी यादगार की चीज़ बढ़ाते हुए कहा।

"क्या आप मुद्राशास्त्री हैं? आप पुराने सिक्के जमा करते हैं न? मैंने ठीक समझा?"

"मुझे पुरानी चीज़ें पसंद हैं।"

"हाँ, हाँ, समझ गयी। यमुना—समय है, ताज महल—प्रेम है और काली आंखोंवाली लड़की जो बचपन की साथी है," नैन्सी खिलखिला उठी। "चलिए, ताज महल को पास से देखें, उसके अलंकरण और ठंडी दीवारों पर हाथ फेरें, फिर उसे पार करके यमुना रूपी समय को देखेंगे।"

वे समाधि के पास खड़े थे। सामने से नदी बह रही थी। उसका पानी बेआवाज़ बह रहा था, इसलिए इस बात पर विश्वास ही नहीं आता कि यह नदी तेज़ है। लगता था कि उसकी चाल रुक गयी हो मानो धूप ने उसे थका दिया हो, सूरज ने उसे कृत्रिम निद्रा में ला दिया हो और वह ज़मीन की बड़ी-सी दरार में ढले पारे की भाँति मौन पड़ी है। उसके किनारे कुछ पीले-लाल रंग के हैं, खाकी-काली स्तेपी और सूखी पगडंडियों पर यात्री अकेले भटकते जा रहे थे। कहीं-कहीं टूटी-फूटी झोंपड़ियाँ

खड़ी हैं और एक-दूसरे से काफ़ी फ़ासले पर भवनों या मंदिरों के खंडहर दिखाई देते।

"यमुना क्यों सफ़ेद है?" नैन्सी ने पूछा।

जोमार्त ने कोई जवाब नहीं दिया। वह इस दृश्य में मग्न था। नदी की तरफ़ से हवा का झोंका आया और तभी लहरों की धीमी सरसराहट सुनाई दी।

यहाँ की हर चीज़ अकबर मकबरा और सिकन्दरा के आस-पास के स्थानों की याद दिलाती थी। इमारतों की शांत, विशालकाय सुन्दरता, बाग़, तालाब, मैदान, झुलस रही दीवारें। सिकन्दरा की तरह यहाँ भी पानी की सरसराहट, मक़बरे की छाया और संगमरमर की नम बू दुखद इतिहास के पन्ने और उन मृत शहरों की याद दिलाती थीं जो आगरा के आस-पास स्थित है। उनमें महान भारत का दीर्घकालीन दुख और अल्पकालीन ख़ुशी प्रतिबिम्बित हैं।

इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि हर कलाप्रेमी की तरह युवा वास्तुकार की कल्पना में भी ये शहर सजीव हो उठते थे।

ज्यों-ज्यों जोमार्त स्तेपी, खंडहर और मक़बरे, महल और झोंपड़ियों पर नज़र डालता जाता, त्यों-त्यों वह सोच में डूब जाता। समय के बारे में, लोगों की नियति के बारे में, इस पृथ्वी पर जीवन के बारे में। सिकन्दरा की संगमरमर की शीतल भूमिगत गुफाएँ, ताजमहल की कोमल रेखाएँ उसे इसलिए नहीं प्रभावित कर रही थीं कि उन का निर्माण बादशाहों ने करवाया था बल्कि इसलिए कि वे जनता—यानी अपने सृजनकर्त्ता की कहानी सुनाती थीं।

जोमार्त ने इन प्राचीन निर्जन भवनों को "मृत" कहना नहीं चाहा। आज जब पर्यटन फ़र्म के प्रतिनिधि ने उससे पूछा कि क्या आप मृत नगर जा रहे हैं? तो उसने उत्तर दिया: "मैं फ़तेहपुर-सीकरी, विजय के नगर जा रहा हूँ।" क्योंकि यह नगर अभी तक ज़िंदा है। उसने अपना दरवाज़ा सब लोगों के लिए, ग़रीबों और अमीरों के लिए खोल दिया और चाहता है कि लोग उसका दुख समझें, उसके राज़ जानें, उसके इतिहास से अवगत हों और अतीत की त्रासदी न दोहरायें। इस अर्थ में फ़तेहपुर के भवन आज के भारत के उन आबाद महलों से ज़्यादा ज़िंदा है, जिनके मालिक उतनी ही सम्पत्ति प्राप्त करने की कल्पना करते हैं, जितनी अकबर के

पास थी। वे ऐसे महलों में रहते हैं, जिनके पहरेदारों ने अपने हाथ में कुल्हाड़ों और नेज़ों की जगह बीसवीं सदी की बंदूकें ले लीं, जिनमें घोड़ों की जगह गैरजों में "फ़ोर्ड", "केप्टन" और "एम्बेसडर" गाड़ियाँ खड़ी हैं।

दो सप्ताह पहले विदेशी अतिथि के रूप में जोमार्त को एक ऐसे भवन को देखने की इजाज़त मिल गयी। उसे इसके लिए फ़ीस देनी पड़ी। कुछ रुपये। मैसूर के महाराज अपना शानदार महल दिखाने को सहमत हो गये।

अपने मित्रों के साथ जोमार्त ने एक ऐसे जगत में प्रवेश किया, जिसकी संपत्ति और धन का शब्दों में वर्णन करना असंभव है। ढले साफ़ सोने और चाँदी के बने मोटे-मोटे दरवाज़ों को वह मुश्किल से खोल पाया। उसने हाथी दाँतों से मीनाकारी किये गये हॉल, पत्तेदार सोने की बनी छतें, अनुपम डिज़ाइनों वाले कालीन बिछे फ़र्श, मोती से सजी आराम कुर्सियाँ, सुनहरा तख़्त देखा। महाराज के युद्ध के समय और त्योहार के दिन काम आनेवाले हाथी, उनके पहरेदार, देखा। दर्जनों हॉल, सैकड़ों कमरे, भूखे सेवक और महल के पहरेदार, शानदार बाग़, झीलें और तालाब। महल के तहख़ाने में कितना सोना और चांदी है! यह ख़ुद महाराज भी नहीं जानता। लेकिन फिर भी वह उसको बचाकर रखता है। हर सप्ताह उसकी जांच करता है, तहख़ाने में नयी लिफ़्ट से उतरता है और आधुनिकतम चिराग़ की रोशनी में ख़ज़ाने के ऊपर पड़ी धूल की तहें देखता है: कहीं उनपर किसी के हाथों के चिह्न तो नहीं?

मृत ख़ज़ाना। मृत महल। उसके अन्दर आना मना है। यहाँ तक कि मेहमान भी पहरेदारों के साथ आता है।

जोमार्त को ख़ुद महाराज को देखने का मौक़ा नहीं मिला। इसकी ज़रूरत भी क्या थी? नौकरों ने अपने मालिक की प्रशंसा करते हुए बताया कि अन्य शहरों में भी उनके राजा के अनेक भवन हैं और हरेक में महाराज के पिता, दादा और स्वयं महाराज के काँसे के स्मारक बने हैं।

स्मारकों के इर्द-गिर्द भूखे-नंगे बच्चे घूम रहे थे।

मैसूर के महल में तो जोमार्त की एक ऐसे भूखे बूढ़े से भी मुलाक़ात हुई जो पहले महाराज के दादा, फिर उनके पिता की और अब उनकी सेवा में था। जोमार्त को हॉल दिखाकर उसने उसे अहाते तक पहुँचाया और फिर उसकी ओर अपना हाथ फैला दिया। उसकी आंखें जिनमें दासता की पीड़ा प्रतिबिंबित थी, दूसरी ओर देख रही थीं। बूढ़े को अपनी

बेसब्री पर शर्म आ रही थी। लेकिन भूख के सामने शर्म की नहीं चलती। जोमार्त ने उसको अपने रुपये दे दिये। मगर उसी क्षण निकटवाले संगमर-मर के स्तंभ के पीछे से भवन का संचालक आ गया और अशिष्टतापूर्वक बूढ़े के हाथ से रुपये छीन लिये। जोमार्त ख़ुद को क़ाबू में नहीं रख पाया : उसने संचालक से रुपये छीन दुबारा बूढ़े को थमा दिये। संचालक पीछे हट गया।

"यह महाराज के बैंक के लिए है!" चिल्लाते हुए वह फिर बूढ़े की ओर बढ़ा।

"मैं महाराजों को भीख नहीं देता!"

अपनी नाक के आगे नाचते मुक्के को देखकर संचालक पीछे हट गया। इकट्ठा हुए नौकरों की आँखों में तनाव-सा जमा हुआ था।

नाजायज़ आचरण करके, मेहमानों के साधारण नियमों को तोड़कर जोमार्त प्रासाद से बाहर निकल आया और भविष्य में कभी भारत के महाराजों, राजाओं और शेख़ों के दरबार में क़दमबोसी न करने की शपथ ली। आधा घंटे बाद वह बंगलोर में था, जहाँ के पेड़ों की टह-नियाँ गुलाब जैसे बड़े-बड़े लाल और पीले रंग के फूलों से लदी थीं, जो सुनहरी और अग्निमय लगती थीं। मैसूर से बंगलोर तक का रास्ता धान के ऐसे सघन खेतों के बीच से जाता है कि कोई ऐसी ज़मीन पर भूखा होने की कल्पना तक नहीं कर सकता।

भारत के प्राचीन मार्गों, उसकी नयी सड़कों पर बहुत कुछ देखा जा सकता है। भारतवासी अपने स्मारक सुरक्षित रखते हैं, जो कुछ उच्चतम है उसका मूल्यांकन और क़दर कर सकते हैं। ख़ूबसूरती के प्रति उनमें जागरूकता और सहृदयता है, वे उदार, गौरवपूर्ण, ग़रीब और अमीर हैं। ज़मीन धनी है पर लोग ग़रीब। हो सकता है, भारत के सम्बन्ध में आदिम काल से जिन चमत्कारों की चर्चा की जाती रही है, उनका रहस्य भी इसी विरोधाभास में है।

पुराना मार्ग काले कमरबंद की भाँति पृथ्वीतल पर फैला हुआ है। अब शाम के धुँधलेपन में वह कारों की हेड-लाइट में चमक रहा है मानो उसकी पुताई काले रोग़न से की गयी हो।

शायद यह मार्ग मुहम्मद के शासन काल में बहायी गयी ख़ून की नदियों के सूख जाने से काला पड़ गया हो, जिसने अपना नाम जहाँगीर, यानी विश्व विजेता रखा था।

मरते समय अकबर ने उसी को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया क्योंकि वही उसका एकमात्र जीवित पुत्र था।

शायद ही कभी जहाँगीर को नशे के बिना होश में देखा जाता हो। उसकी क्रूरता की कोई सीमा नहीं थी। रात के नंगे नाचों में सिर्फ़ वही आदमी शराब पीने से इंकार कर सकता था जो सुबह मृत्यु का वरण करने को तैयार हो। उसके विशाल हरमों में राजकुमारियों के साथ वेश्याएँ भी थीं। महान वज़ीरों और शाह के सेनापतियों की बेटियों को भी हरम में रहना पड़ता था। जब सेना के मुख्य सेनापति महाबतख़ाँ ने गुप्त रूप से अपनी इकलौती बेटी की शादी करवा दी, ताकि उसे शाही ज़ुल्म से बचाया जा सके ,तो मुख़बिरों ने इसकी ख़बर जहाँगीर को दे दी।

क्रोधित शाह ने दूल्हे को नंगा करके काँटों से पीटने और उसकी सारी संपत्ति छीन आवारे की तरह भगा देने का आदेश दिया।

शाह की निर्ममता का शब्दों में वर्णन करना मुश्किल है। कवि चुप थे। इतिहासकार जहाँगीर की महानता ही के बारे में, उसकी धार्मिक सहिष्णुता के बारे में लिखते थे, उसकी धर्मपरायणता की प्रशंसा करते थे। लेकिन वह अपने पुत्र हस्रोव की पुनीत भावना ,उसके प्रेम पर भी दया नहीं रख पाया। जिस युवा राजकुमारी से हस्रोव को प्रेम हुआ, वह उसके पिता को उपहारस्वरूप मिली दासी सिद्ध हुई। तब बेटे ने अपने पिता का प्रतिरोध किया।

मगर इस बार भी क्रूरता की विजय हुई।

हस्रोव के ७०० पक्षपाती लाहोर की ओर ले जानेवाले पथ और उस मार्ग के किनारे, जिससे अब जोमार्त फ़तेहपुर से वापस जा रहा था, खूँटों पर चढ़ा दिये गये थे। और युवा हस्रोव को ज़ंजीरों से जकड़कर, हाथी पर बैठाया गया और खूँटों पर चढ़ाये लोगों के सामने से गुज़ारा गया।

कहते हैं, वह लोगों की इन चिल्लाहटों से बहरा हो गया, सदमे से उसके बाल पक गये, लगातार आंसू बहने से वह अंधा हो गया। अपने पिता के प्रति उसके मन में हमेशा के लिए नफ़रत पैदा हो गयी। काल कोठरी में ही उसने अपने प्राण तोड़ दिये।

सिर्फ़ खूबसूरत फ़ारसी महिला नूरजहाँ थोड़े समय के लिए जहाँगीर को अपने क़ाबू में ले सकी। नूरजहाँ का पिता देश का प्रधान वज़ीर बन गया। नूरजहाँ को क्रूरता व मृत्युदंड से घृणा थी और वह जहाँगीर में अपने

दूसरे बेटे शाहजहाँ के प्रति प्रेम पैदा करने में सफल हुई। स्वयं नूरजहाँ उत्तराधिकारी के पालन में लग गयी। वह उसमें कला के प्रति प्रेम और हत्या के प्रति घृणा उत्पन्न करने की कोशिश करती थी। शायद इसी लिए जहाँगीर की मृत्यु के बाद तख़्त पर बैठने के बावजूद शाहजहाँ अपनी पालनकर्त्री का बड़ा आदर करता रहा, हालाँकि उसने पहले के लाड़-प्यार का त्यागकर कपट का पथ अपनाकर युवा बादशाह को मार डालने और देश की एक मात्र मलिका बनने का प्रयत्न किया था। षडयंत्र का पर्दाफ़ाश हो गया लेकिन उसके दोषियों को कोई सज़ा नहीं दी गयी। शाहजहाँ ने अपनी भूतपूर्व पालनकर्त्री से बदला नहीं लेना चाहा। वह पहले की तरह बादशाह के दरबार में रहती थी ,उसकी बड़ी इज़्ज़त की जाती, उसपर बड़ा ध्यान दिया जाता था। और वह १९ सालों तक देखती रही, कैसे शाहजहाँ मुग़ल बादशाहों के अधिकार क्षेत्रवाले उत्तरी भारत में महलों, समाधियों और मस्जिदों का निर्माण करवा रहा था।

शाहजहाँ का शासन काल भारत में मुसलमानों की कला और स्थापत्य का स्वर्ण युग था। ताजमहल उसके कार्यों का चरम बिंदु सिद्ध हुआ।

शाहजहाँ के जीवनकाल में ही ताजमहल को "संगमरमर में साकार कल्पना "कहा गया था।

ताज महल को खड़ा करके शाहजहाँ ने उस मुहब्बत का गुणगान किया जिसको उसके पिता ने पददलित और अनादृत किया था।

शाहजहाँ के मन में ख़ुसरो का प्यार जाग उठा और वह सफ़ेद ताजमहल में मूर्तिमान हुआ। आजकल वह लोग भी जो मुग़ल शासकों के नाम भूल चुके हैं, जिन्हें फ़तेहपुर और सिकंदरा के बारे में कुछ भी मालूम नहीं है, वे भी ताजमहल के बारे में अचंभे के साथ बोलते हैं, उसके बारे में अमर प्रेम के प्रतीक के रूप में गीत और कथाएँ रचते हैं। पृथ्वी के कोने-कोने से लोग उसका दर्शन करने आते हैं।

* * *

..."कैप्टन" तीव्र गति से चला जा रहा है। स्तेपी में रात आयी है। नैन्सी मौन है। ड्राइवर गुनगुना रहा है। वह इस रास्ते को बचपन से जानता है, उसका आदी हो चुका है। उसे वह प्रिय आगरा और भा-

रत माता की तरह पसन्द करता है। उसे इसके इतिहास पर गर्व है जैसा कि हर आदमी को अपनी मातृभूमि के इतिहास पर गर्व होता है। अचानक वह चुप हो गया। कार की हेड-लाइट की रोशनी में सड़क के किनारे पत्थर जैसी कोई काली चीज़ उसे दिखाई दी। यह वही भूखा साधु था, जिसे उन्होंने आज दिन में फ़तेहपुर जाते समय देखा था। अब भी वह पहले की मुद्रा में बैठा था।

"उसकी आंखें चमक रही हैं। बड़ा भयंकर है। तभी से अपनी जगह से उठा भी नहीं?" नैन्सी ने धीमी आवाज़ में पूछा।

"वह प्रतीक्षा कर रहा है, मिस," ड्राइवर ने धीरे से कहा। "वह भूखा है। कोई खाने को कुछ दे, इसी का इंतज़ार कर रहा है वह। खाना खाकर फिर बनारस की ओर आगे बढ़ेगा।"

"माय गॉड!" नैन्सी फुसफुसायी। "कब पहुँचेंगे हम? कल ही पैरिस रवाना होऊँगी। उधर मेरे पिता के एक परिचित रहते हैं। उनका नगर में एक भवन और जंगल में दूसरा भवन है। गरमी, ग़रीबों और इन खंडहरों से वहाँ आराम पाया जा सकता है। अगर अच्छा लगा तो वहाँ चार-छह महीने रहूँगी।"

"जल्दी ही पहुँच जायेंगे, मिस। आगरा तक बस कुछ ही मील बाक़ी हैं। देखिये, सामने रोशनी दिखाई दे रही है। चाँद भी ऊपर चढ़ने लगा है," ड्राइवर संयम से बोला।

क्रोध के मारे उसकी भौंहें चढ़ गयीं लेकिन अच्छे मेज़बान की भाँति वह अपनी युवा मेहमान की अशिष्टता पर ध्यान न देने की कोशिश कर रहा है।

अचानक भेड़ों का रेवड़ सामने आ गया। चारों तरफ़ धूल ही धूल थी। ड्राइवर ने गति कम कर दी और हॉर्न बजाया। मगर भेड़ें रास्ते से न हटीं, एक-दूसरे से लिपटकर वे हेड-लाइट के सामने इधर-उधर कर रही थीं। उनका मिमियाना कार के भोंपू की आवाज़ को दबा देता था।

अधनंगा लड़का जानवरों को रास्ते से हटाने की जी-जान से कोशिश कर रहा था, धूप से स्याह पड़े मुँह और लंबे बालोंवाला बूढ़ा हाथ जोड़े ड्राइवर और गोरे साहबों से विलंब के लिए माफ़ी माँग रहा था। आख़िर किसी तरह रेवड़ को रास्ते से हटा दिया गया। धूल उड़नी बन्द हो गयी। आगरा की बत्तियाँ बहुत क़रीब नज़र आने लगी थीं।

"चाँदनी में फ़तेहपुर जादू के नगर-सा लगता है। और ताजमहल बहुत ख़ूबसूरत है। क्या आप ताजमहल को चाँद की रोशनी में देखना चाहते हैं?" ड्राइवर ने प्रश्न किया। "आपके पास समय है। अगर आप थके नहीं तो हम बहुत जल्दी देख लेंगे। ठीक दस बजे होटल पहुँचेंगे।"

नैन्सी ने जोमार्त पर दृष्टि डाली।

"नहीं, सीधे होटल जायेंगे," जोमार्त ने जवाब दिया।

नैन्सी ने असंतुष्ट होकर मुँह फेर लिया। कल शाम "लॉरेंस" होटल के बाग़ में तालाब के पास हुई बातचीत के बाद उसने ऐसा ही किया था।

कल दोपहर के भोजन के बाद उन्होंने नहाने का निश्चय किया था।

तालाब के पास नैन्सी "टाइम्स ऑफ़ इंडिया" का नया अंक खोल पढ़ने लगी।

"ओह, देखिये, इसमें मरिना ओस्वाल्ड की कहानी छपी है। देखा है?"

समाचार-पत्र के पृष्ठ की आड़ से युवा महिला देख रही थी।

"इसमें आपके भूतपूर्व राष्ट्रपति के बारे में कुछ लिखा है?" जोमार्त ने यंत्रवत पूछा।

"उसने अपने भूतपूर्व पति ओस्वाल्ड ली के बारे में भी और हमारे भूतपूर्व राष्ट्रपति के बारे में भी कुछ नहीं लिखा। रूस के बारे में कुछ भी नहीं है। कितना लिखा भी जा सकता है केनेडी के बारे में? वह अच्छा पति ढूँढ़ रही है।"

"मगर ली और केनेडी आपके समाज के सदस्य थे, फिर भी राष्ट्रपति की हत्या के कारण अस्पष्ट हैं। या आपको इसके सारे ब्योरे मालूम हैं?"

"सो कैसे?" नैन्सी दिखावे के लिए हँस पड़ी और पोशाक उतारने लगी। "वह हमारे मंडल का आदमी नहीं। अगर जेक्लीन न होती तो उसे उच्चतम वर्ग में आने का अवसर न मिलता।"

"वह तो लखपती है।" जोमार्त ने आश्चर्य प्रकट किया।

"वह शुद्ध अमरीकन नहीं थे।" नैन्सी ने झुँझलाकर कहा। "उसके दादा कहीं से आकर अमरीका में बसे थे। संक्षेप में, वह ऊँचे प्रशासकीय पदों के योग्य नहीं। वह शुद्ध अमरीकन नहीं था।"

"तो आपके पूर्वज बाहर से नहीं आये थे क्या? वैसे तो रेड इंडियन ही अमरीका के मूल निवासी या जैसा आप कहती हैं, शुद्ध अमरीकावासी हैं। ठीक है न?"

लड़की के गाल क्रोध से लाल हो उठे।

गर्व के साथ वह बोली: "हम वाइकिंग में से हैं। रेड इंडियन और भारतवासी एक ही हैं। यहाँ सड़कों के किनारे-किनारे इनको काफ़ी संख्या में देखा आपने। वे प्रकृति से ही अयोग्य हैं।"

"प्रकृति से अयोग्य! इसके बारे में मैं सुन चुका हूँ। और अफ़सोस है कि यह बात मैंने आप ही जैसी एक युवा और धनी भारतीय लड़की के मुँह से भी सुनी थी। वह उस समाचार-पत्र की कर्मचारी है जो इस समय आप पढ़ रही हैं," जोमार्त ने गर्मजोशी के साथ कहा।

"मैंने उन्हीं से इस जाति की अयोग्यता के बारे में सुना है। मैं ख़ुद ग़लती कर सकती हूँ लेकिन वे तो अपनी बातों को प्रमाणित कर सकते हैं। आपकी इसपर क्या राय है?"

जोमार्त को मद्रास की पत्रकार के जवाब में कहे गये शब्द दोहराने की इच्छा नहीं हुई। उस समय भारतीय साहित्य के बारे में बात चली थी। रंगारंग साड़ी पहने हिंदुस्तानी कन्या कम प्रभाव के समाचार पत्रों के अपने सहकर्मियों की उपस्थिति में प्रेस सम्मेलन में एक घंटे तक तीन सोवियत लोगों पर आक्रमण करती रही:

"भारतवासी प्रकृति से अयोग्य होते हैं। मैं सोचती हूँ कि यहाँ महान साहित्य की रचना कभी नहीं की गयी थी और कभी होगी भी नहीं। इसका उल्लेख मैं कर रही हूँ, यहाँ की रहनेवाली। और आप भारतीय साहित्य की परंपराओं और महानता का वर्णन कर रहे हैं। इस का मतलब यह कि आप हमसे छेड़-छाड कर रहे हैं।

क्यों यह छेड़-छाड़ ही तो है," वह बोली और उसके सहकर्मी चुपचाप बैठे रहे।

जोमार्त ने "महाभारत" से उद्धरण पेश किये, गाँधी और नेहरू, वल्लतोल और टैगोर, प्रेमचंद और नारायण का ज़िक्र किया। स्वयं बोल रहा था और दुख के साथ सोच रहा था: क्यों इस देवी के पास बैठे नौजवान उसे अपनी जनता और संस्कृति को अपमानित करने दे रहे हैं? यह क्या है? यहां के लोगों के मन में गहरे पैठे "अहिंसा" के दार्शनिक

सिद्धांत का फल है या स्थानीय थैलीशाहों के प्रेस प्रतिनिधि का भय है? या तो काम से महरूम होने के डर के मारे वे चुप हैं? या तो यह उप-निवेशवादी शासन का फल है या विदेशी मेहमानों के रूप में जोमार्त और उसके सहकर्मियों की सरल और अनबुझ परीक्षा है?

इतने में भारतीय नौजवानों की आँखें चमक उठीं, मुँह पर ख़ुशी की झलक आयी, वे जोमार्त की ओर बढ़े, सिर हिलाने और मुस्कराने लगे। इस प्रकार वे अतिथि से अपनी पूरी सहमतता व्यक्त कर रहे थे।

युवा पत्रकार अमीर बाप की बेटी थी, वह अमरीका में रहती और पढ़ती थी। वैसे उसमें और नैन्सी में कोई फ़र्क नहीं। तो इस तुनुकमिज़ाज अमरीकन के लिए अपनी बात दोहराने की क्या ज़रूरत है?

"आप मौन हैं... मतलब आप मुझसे सहमत हैं," नैन्सी समाचार-पत्र को एक ओर फेंक, संगमरमर की सीढ़ी पर ज़ोर लगाकर तालाब में कूद पड़ी।

उसका लचकदार शरीर साफ़ नीले आसमानी पानी में मानो फ़िसल पड़ा। जोमार्त भी उसके पीछे पानी में कूद गया। जब वह ऊपर निकला, नैन्सी छोटे बच्चे की तरह चिल्लाते हुए दोनों हाथों से उसपर पानी के छींटे फेंकने लगी। तंग संगमरमर के किनारों पर पानी की धाराएँ बह चलीं।

"आप हार गये," लड़की ने हँसते हुए कहा।

"आपकी जीत का प्रमाण क्या है, नैन्सी?"

"आप मुझे अपनी बात का विश्वास न दिला सके।"

"नहीं, यह छोटी परी का आमोद-प्रमोद नहीं। उसे अपनी बात पर पूरा विश्वास है," जोमार्त ने सोचा।

"लेकिन आपने मेरी बात आख़िर तक सुनी नहीं," जोमार्त ने उत्तर देने का निश्चय किया। "मेरे एक दोस्त, बम्बई के भारतीय नौजवान ने जो पेशे से मनोवैज्ञानिक हैं और जिन्होंने नगर की यात्रा के समय मेरा साथ दिया था, एक बार कहा था कि अमरीका और यूरोप में अमाज़ोन्का के रेड-इंडियन लोगों और यहाँ के जंगलों में रहनेवाले क़बीलों और आम तौर से यहाँ के लोगों की प्राकृतिक अयोग्यता के बारे में बहुत लिखा जाता है। अपने विचारों को वे अलग-अलग तथ्यों के आधार पर प्रमाणित करने की कोशिश करते हैं। ख़ास तौर से वे कलकत्ता के भूखे रिक्शावाले और स्वीडेन के किसान को लेते हैं। दोनों की जानकारी की तुलना करते हैं।

लेकिन इस प्रकार तुलना करना कहाँ तक ठीक है? दो अलग-अलग परिवार के दो छोटे बच्चों को लें जो एक ही तबक़े के हों, उदाहरण के लिए आप के तबक़े के। अगर एक को ठीक से पढ़ने और विकसित होने की संभावना दें और दूसरे का लक्ष्य रोटी का एक टुकड़ा प्राप्त करना होगा, तो निश्चय ही इन दोनों की जानकारी एक समान नहीं होगी।

"इस प्रकार की तुलना क्रूरता है। और ऐसे तथ्यों के आधार पर मानव की बौद्धिक योग्यताओं, उसकी प्राकृतक अक्षमता का विचार करना बर्बरता है जो सबसे पहले स्वयं इन सिद्धांतकारों की अयोग्यता का प्रमाण है।"

"आपका मतलब मैं..." नैन्सी का रंग पीला पड़ गया था।

"मैंने आपके बारे में कुछ भी नहीं कहा। लेकिन मैं जानता हूँ कि आप इसका अनुभव भी नहीं कर सकतीं कि भूख क्या चीज़ होती है।"

"सभी को खिलाया नहीं जा सकता," चिड़चिड़ेपन से नैन्सी ने फिर अपना तकिया कलाम दोहरा दिया जिसे जोमार्त पहले भी कई बार सुन चुका था। "आपने मेरा मूड ख़राब कर दिया।"

तालाब के पास होटल के नौकर ने आकर पूछा:

"साहब कोका-कोला या व्हिस्की नहीं चाहते?"

तालाब से निकलकर नैन्सी बोली: "एक पेग व्हिस्की।"

कपड़े पहने बिना वे आराम कुरसी पर बैठ गये, जिनके ऊपर खास प्रकार की, दिन में रोशनी देनेवाली बत्तियाँ रखी गयी थीं। कहीं से संगीत की लहरें आ रही थीं। बाग़ की ओर से सुहावनी नरम हवा चल रही थी।

नैन्सी ने शांतिपूर्ण ढँग से कहा:

"मान लें कि आज हममें से कोई नहीं जीता।"

"और कोई नहीं हारा," जोमार्त ने मिलाया।

"लेकिन आपको तो औरतों पर ध्यान देना आता ही नहीं," नैन्सी मुस्करायी। "आइये पी लें।"

"किस चीज़ के लिए टोस्ट उठायेंगे?" जोमार्त ने उसी अन्दाज़ में पूछा।

"आप ही बताइये।"

"आइये एकता के पर्व के लिए पीएँ। यह पर्व कुछ ही दिनों में पहली मई को मनाया जायेगा," जोमार्त ने जाम उठाया।

"एकता, एकता! सर्वत्र चिल्लाते हैं: एकता! इसी एकता के हेतु लोग काम छोड़ते हैं, अधिक पैसे की माँग करते हैं, उनको अधिकाधिक पैसे की ज़रूरत है," नैन्सी ने गर्मजोशी के साथ कहा। "देखिये न, वे कहते हैं कि उनको कम पैसे मिलते हैं और ख़ुद मेरे पिता जी से भी ज़्यादा कमाते हैं।" और नैन्सी अचानक चुप हो जोमार्त की ओर सीधी नज़रों से घूरने लगी।

"ओ, यह बात है, इस परी के नाख़ून भी तो हैं," जोमार्त ने मन में सोचा।

"और आप कहाँ से आये हैं? आप कम्युनिस्ट हैं?" नैन्सी ने अपनी नज़र हटाये बिना सावधानी के साथ पूछा।

"आप सच्चाई के क़रीब हैं," जोमार्त मुस्कराया। "इस प्रकार मज़दूर आपके पिता से ज़्यादा कमाते हैं? आपने तो कहा था कि लखपती कैनेडी भी आपके पिता जी के नीचे हैं। तो वह कौन हैं?"

"मैंने कहा न आपको स्टाडुर्ट। अमरीका का इस्पात उद्योग उनके हाथों में है। और आप सचमुच रूस से आये कम्युनिस्ट हैं?" आश्चर्य के साथ नैन्सी ने पूछा।

वह तंग तैराकी की पोशाक पहने, जोमार्त के सामने पैर फैलाये खड़ी थी।

"ओ, तो आप अरबपति की बेटी हैं," आश्चर्य भरी हार्दिकता के साथ जोमार्त बोला: "मैं सोवियत संघ से आया हूँ। वहाँ के एक जनतंत्र क़ज़ाखस्तान से।"

"पता नहीं क्यों, लेकिन मैंने सोचा था कि आप इंडोनेशिया के हैं।" नैन्सी फिर आराम कुरसी में बैठ गयी। "मैं जीते-जागते कम्युनिस्ट, आम तौर पर रूस के आदमी को पहली बार देख रही हूँ। तो क्या उधर आपका सब कुछ सामाजिक है?" नैन्सी फिर सादी, आश्चर्यचकित और थोड़ी नखरेबाज़ लड़की दीख रही थी।

"हाँ, सामाजिक है।"

"रेस्तराँ भी?"

"हाँ, रेस्तराँ भी।"

"रेस्तराँ?.." अचंभे के साथ नैन्सी ने फिर पूछा।

"रेस्तराँ भी," जोमार्त ने हँसी मुश्किल से दबाते हुए कहा।

"यहाँ भी आप सामाजिक फंड के ख़र्चे पर आये हैं क्या?

"आपने ठीक कहा। यहाँ मैं खास मिशन पर आया हूँ। वैसे तो मैं अकसर अपने ख़र्चे पर, पर्यटक के रूप में यात्रा करता हूँ।"

"हो सकता है, बहुत-सी ऐसी चीज़ें हों जिन्हें मैं समझ नहीं पाती हूँ," नैन्सी अपने कपड़े पहनते हुए बड़बड़ायी।

अगले दिन दोपहर के बाद जब जोमार्त फतेहपुर जानेवाला ही था, वह चुपचाप कार के निकट आयी, फिर नमस्कार कहकर उसके पास बैठ गयी।

फ़तेहपुर जाते समय भी, उधर से वापस लौटते समय भी उन्होंने तालाब के पास हुई बहस की दुबारा कोई चर्चा नहीं की और अभी, जब उनकी नज़रें मिलीं, जोमार्त समझ गया, वह अब भी कल की शाम के बारे में सोच रही है।

"कल मैं वापस जा रही हूँ," नैन्सी ने किसी सोच में पड़कर कहा। "लगता है, मैं फ़तेहपुर और तालाब के पास की कल की बातचीत को नहीं भूल पाऊँगी।"

"हमारा नगर ख़ूबसूरत है पर बहुत पुराना," ड्राइवर ने बात शुरू की। "लेकिन अब वह धीरे-धीरे नवीन बनता जा रहा है। यहाँ नये राष्ट्रीय होटल भी हैं, फिलिंग स्टेशन भी। अब हम प्राचीन बाग़ के पास से गुज़र रहे हैं। अभी हाल ही में मैं दिल्ली के एक ब्राह्मण को वहाँ ले गया था। बहुत नेक आदमी था। बातें करना, मज़ाक उड़ाना पसंद करता था वह। उसका नाम भी मेरी तरह वर्मा था।"

"आप शायद पंजाबी हैं?" जोमार्त ने पूछा।

"हाँ, हम पंजाबी हैं," ड्राइवर ने उत्तर दिया। "नेक ब्राह्मण ने मुझे बताया था कि जब भगवान अभी एकदम नौजवान ही था, लोगों को पैदा करना उसके लिए बहुत कठिन हो गया था। उसने चूल्हे खड़े किये और सफ़ेद मिट्टी से मानव की शक्लें बनायीं। मगर उसे यह मालूम नहीं था कि इन शक्लों को कितनी देर तक चूल्हे में रखना चाहिए ताकि वे जी उठें। पहली शक्ल को रखते ही फ़ौरन निकाल लिया। उसे शक्ल के जल जाने का डर था। और जल्दी निकालने से वह शक्ल बिलकुल पीली

निकली। इस प्रकार पहला आदमी गोरा बन गया। दूसरी शक्ल रख दी चूल्हे में। बहुत देर तक बैठा रहा। जब निकाला, देखा, बिलकुल काली पड़ गयी थी। युवा भगवान ने देर तक शक्ल चूल्हे में रख दी थी। समय पर नहीं निकाला था। लेकिन तीसरी शक्ल उसने ठीक समय पर निकाली, इस लिए वह ख़ूबसूरत बन गयी थी। वह साँवले रंग की थी, आँखें ख़ुशमिज़ाज थीं। ब्राह्मण ने बताया कि हम भारतवासी, फ़ारसी लोग और लंकावासी इसी तीसरे मानव से उत्पन्न हुए।"

"इसका मतलब यह है कि हम सब एक ही चूल्हे के बने हैं," नैन्सी खिलखिला उठी।

"हम महात्मा गांधी सड़क पर जा रहे हैं। आगे कोने के पीछे मस्जिद है," ड्राइवर ने आगे कहा। "मगर उसमें रोशनी बहुत कम है।"

कार होटल के निकट पहुँचती जा रही थी।

"पता नहीं, ब्राह्मण की बात सही है या नहीं लेकिन सचमुच आपके भगवान बहुत हैं। बुद्ध, शिव, सरस्वती, बंदरों का अलग भगवान, गायों का भगवान, सौदागरों का भगवान आदि..." नैन्सी ने कहा। "मेरे ख़्याल में एक हो तो बेहतर होता। मुझे सिर्फ़ सुंदरता और ज्ञान की प्रतीक सरस्वती ही पसंद है। और आपको?" नैन्सी ने जोमार्त से पूछा।

"देखिए आस-पास के घर कितने पुराने हैं," शिष्टता के साथ ड्राइवर बोला। "आगरा दिल्ली जैसा बड़ा नहीं है, चंडीगढ़ जैसा नया भी नहीं है, यह बहुत पुराना है। इतना पुराना कि कोई इसकी स्थापना का समय तक नहीं जानता।"

उन्होंने होटल के अहाते में प्रवेश किया। पगडंडी की दोनों ओर फूल हैं। खुले बरामदे के किनारे-किनारे ताँबे के बने बड़े-बड़े देगों में भी जो प्राचीन भारतीय शैली में अलंकृत थे, फूल उगाये गये थे। उनके पास ही हरी घास का मैदान था, आगे बाग़ और फिर तालाब स्थित था। बरामदे में मेज़ें लगी थीं जिनके ऊपर काग़ज़ की लालटेनें लटक रही थीं। स्थानीय पदाधिकारी, रईस, व्यापारी और पर्यटक कॉफ़ी, सोडा वाटर के साथ व्हिस्की, रम, जिन, बियर और कोका-कोला पी रहे थे। पेड़ों की छाया में तरह-तरह की कारें खड़ी थीं। मेज़ों के पास बैठे लोग भिन्न भिन्न भाषाओं में बोल रहे थे और भारतीय संगीत के साथ-साथ यूरोपीय संगीत भी गूँज रहा था। मेज़ों के बीचोंबीच इधर-उधर चलनेवाले नौकर

राजाओं के से कपड़े पहने थे। फ़र्क़ यह था कि सोने के चौड़े कमरबंद की जगह उनकी कमर पर पुरानी पेटियाँ कसी थीं, सफ़ेद कश्मीरी कपड़ों से बनी ज़रीदार पगड़ी की जगह, उनके सिर पर कलफ़ लगी साधारण जाली की पगड़ी बँधी थी। संक्षेप में, ये थे नंगे पैरवाले, दस्तकारी के कुरते पहने हुए "राजा," जो रेस्तराँ के आगंतुकों और होटल में रहनेवालों की भीख पर जीवन व्यतीत करते थे।

पगडंडी पर चलते हुए जोमार्त सोच रहा था: यह सारा तमाशा किस लिए है? अनोखेपन के लिए क्या? या अतीत की आलोचना के लिए? मगर राजाओं और शेख़ों के पास अब भी बड़ी संपत्ति है और उनको काफ़ी अधिकार भी प्राप्त हैं। सिर्फ़ नेहरू जी ने ही उनका जोश थोड़ा दबा दिया। उनकी व्यक्तिगत सुरक्षा के लिए आवश्यक सैनिकों को छोड़कर, बाक़ी सेना छीन ली और उनकी भूमि का एक हिस्सा भी छीन लिया था। उन्होंने भिलाई और भाखड़ा-नंगल का निर्माण करवाया। प्रचंड कोर्ब्यूज़्य ने उनकी कार्रवाइयों से मंत्रमुग्ध होकर बूढ़े नेहरू जी की सहायता करते हुए, भारत के लिए चंडीगढ़ नगर की स्थापना की।

वर्मा और नैन्सी से विदा लेकर जोमार्त ने बाग़ की सैर करने और कल की यात्रा पर गौर कर लेने का निश्चय किया था। अभी उसे स्थानीय क़िले – मुग़ल बादशाहों के क़िले में भी जाना था। वह यह भी जानना चाहता था कि यहाँ मुग़ल कला का कोई संग्रहालय है या नहीं? चूँकि इन दिनों मुग़ल शासन काल के इतिहास में उसकी दिलचस्पी और बढ़ गयी थी।

बाग़ शांत था। पेड़ों की छायाएँ घास पर पड़ रही थीं। वे दाग़ की याद दिलाती थीं। कहीं से पानी का कल-कल सुनाई दे रहा था, जैसे कि ताज महल में हुआ था। दीवार के पीछे से कुल्हाड़े या हथौड़े की ठनठनाहट सुनाई दी। उसने उसे फ़तेहपुर में अज्ञात चिड़िया की अमंगल तालबद्ध रूप से गूँजनेवाली चिल्लाहट की याद दिलायी।

होटल का नौकर उसके पास आहिस्ता-आहिस्ता आया और दिल्ली से मिला पैकेट थमा गया।

"इसमें कल के भाषण के बारे वक़्त और स्थान की सूचना दी गयी होगी", जोमार्त ने सोचा और चिट्ठी जेब में डाल ली।

वह एक बड़े से चनार के नीचे खड़ा था और घास पर छायाओं की

चाल देख रहा था। नरम हवा उसके मुँह को छू गयी और उसे लगा कि फिर उसने फ़तेहपुर की वर्षों के दौरान हवा के प्रभाव से खुरदरा हो गयी दीवारों को महसूस किया हो। रास्ते भर में उसे पहियों की सरसराहट, इंजन की गड़गड़ाहट, भेड़ों के मिमियाने, ड्राइवर की बातों और संगीत की लहरों के साथ-साथ सीकरी की चकरा देनेवाली हँसी भी सुनाई देती रही थी।

सीकरी उसके सामने कभी फ़तेहपुर की दीवारों के पास नज़र आये बूढ़े की शक्ल में और कभी सड़क के किनारे पर काले पत्थर के टुकड़े की याद दिलानेवाले साधु के रूप में और कभी कुएँ के पास खड़े कुली के रूप में आता था जिसपर राख लगी हुई थी।

अगर सीकरी वास्तव में ज़िन्दा हो तो क्या? अब वह रात की ख़ामोशी में झुककर कहीं रेंग रहा होगा या तो पुरानी सुनसान सड़कों के चौराहे में बैठा होगा। उसकी सूख गयी छाती में पहले की तरह अब भी निन्दात्मक हँसी गूँज रही होगी। वह हँसता है चूँकि वह नेकी की जीत पर विश्वास करता है, वह हँसता है सूर्योदय का स्वागत करते हुए और सूर्यास्त से विदा लेते हुए। वह हँस-हँसकर थक गया लेकिन वह मर नहीं सकता, चूँकि बुराई अब भी मौजूद है। ज़िंदगी में नेकी जितनी अधिक बढ़ती है, उसका दिल उतना ही ज़्यादा कमज़ोर होता जाता है।

पहले सीकरी ने पूर्वजों और अकबर की हँसी उड़ायी थी, अब वह हमारी पीढ़ी, ख़ास तौर से जोमार्त पर, इतिहास को समझने की उसकी कोशिशों पर हँस रहा होगा। वह लोगों की क्रूरता और घमंड पर हँस रहा है, जिनसे हर क़दम पर भिड़न्त होती है।

नैन्सी ऊँचे हल्कों से अपने ताल्लुकात की बड़ी सावधानी से रक्षा करती है, ड्राइवर वर्मा को इस कथा पर विश्वास करना अच्छा लगता है कि उसकी जाति अन्य जातियों से श्रेष्ठ है। जोमार्त ने भी मध्य एशिया की प्राचीन सभ्यता पर भाषण देते हुए जिसके बाद भाषा पर बहस हुई, इस बात को प्रमाणित करने की कोशिश की कि दर्शन एवं विज्ञान के बीज बोनेवाले उसके पूर्वज, उसकी मातृभूमि के बेटे थे। क्या सब लोगों में एक समान घमंड होता है?

जोमार्त बेंच पर बैठा, यंत्रवत ओत्रार के सिक्के को चाकू से साफ़ करने लगा। फिर हलके से उसे एक जगह से काट डाला। ज़ंग के नीचे से

चाँदी चमक उठी। जोमार्त ने सोचा: बहुत पुराना है, हो सकता है यह अनुपम हो। इसकी ढलाई ओत्रार में चाँदी के संकट काल से पूर्व कहीं नौवीं या दसवीं सदी में की गयी होगी। यह अनुमान भी लगाया जा सकता है कि वह संकट काल में किसी और देश, किसी और राज्य से लाया गया हो। चाहे जो भी हो, सिक्का पुराना है, उसपर कुछ लिखा हुआ होगा, या कोई चिह्न तो होना ही चाहिए।

वह उसके ऊपरी हिस्से को चाकू की धार से आहिस्ता-आहिस्ता छीलने लगा। उसे कोई चित्र नज़र आता महसूस हुआ। किसी अज्ञात शासक का चिह्न? शायद इस सिक्के में एक महान रहस्य छुपा हुआ होगा, जिसकी कल्पना इतनी देर जोमार्त करता आया था।

जोमार्त उठ खड़ा हुआ, बत्ती के करीब आकर उसकी रोशनी में सिक्के पर उसने नज़र डाली... और इतने में पास ही किसी की साँस सुनकर वह चौंक उठा। एक बूढ़ा खड़ा था। वह ऊँचे क़द का, सुखट्टा सा था। उसकी खाकी रंग की दाढ़ी थी, बाल उलझे थे, सूरत गौरवशाली और दृष्टि तीव्र थी। वह मौन होकर सिक्के की ओर देख रहा था, मानो कृत्रिम निद्रा में हो। जोमार्त के ख़यालों का सीकरी ऐसा ही था।

लेकिन यह सब वास्तविकता है क्या?

उसके माथे पर पसीना आ गया। जोमार्त ने ख़ुद पर क़ाबू पाकर सिक्के को बूढ़े की आंखों के पास घुमाया। बूढ़ा सिक्के को हाथ में ले एकदम ग़ायब हो गया मानो कोई भूत हो।

सिक्का चला गया। ओत्रार का स्मृति-चिह्न खो गया।

जोमार्त पगडंडी पर चलता हुआ मैदान के केंद्र में रखी आराम कुर्सी पर थका-सा बैठ गया। वहाँ तेज़ रोशनी थी। बाग़ में हुई मुलाक़ात से वह अभी तक स्थिरचित्त नहीं हो पाया था। उसने रूमाल निकालने के लिए हाथ जेब में डाला। जेब से पैकेट गिर पड़े।

पैकेट में दो चिट्ठियाँ थीं। साथ ही एक छोटे से काग़ज़ पर लिखा था: "ये चिट्ठियाँ आपके दिल्ली से जाने के बाद मिलीं। इन्हीं को हम आप को भेज रहे हैं।" एक चिट्ठी गुलसरा की थी, दूसरी संस्थान की।

गुलसरा ने ख़बर दी थी कि वह मास्को जा रही है, जहाँ जोमार्त का स्वागत करनेवाली है।

संस्थान से मिले पत्र में लिखा था: "आपका ओत्रार का सुमाक सन-

सनीखेज़ निकला। वह दो हज़ार वर्ष पुराना है। वह अनुपम चीज़ साबित हुआ है। यह भी पता चला है कि आजकल के सबसे माहिर कँचेरों का क़बीला नाईजीरियाई शहर बीडा में रहता है। अपने को वे "मस्सागा" क़बीलेवाले कहते हैं। वे कहते हैं, उनके पूर्वज पूर्व से, कथाओं में वर्णित याक्सार्त से आये थे। हमारे अकादमीशियन को विश्वास है कि "मस्सागा" डेढ़-दो हज़ार वर्ष पहले याक्सार्त यानी अब की सिरदरिया के किनारे पर रहनेवाले मस्सागेतों का ही एक टुकड़ा है।" यह चिट्ठी जोमार्त को संस्थान के एक मित्र ने लिखी थी। ख़त को पूरा पढ़े बिना ही उसने मोड़ कर जेब में रख लिया।

उसने माथे पर पसीने की बूंदे पोंछ लीं। फिर कान लगाकर बरामदे से आते शोर को सुनने लगा। वहाँ बहुत-से लोग जुटे थे, रेस्तराँ के हॉल से आगंतुक खुली हवा लेने वहाँ आ गये थे।

भारतीय नौजवानों का एक दल पश्चिमी जर्मनी के इंजीनियरों को बीयर और जिन पिला रहा था (जोमार्त का ध्यान सुबह में भी उनपर गया था) युवा जर्मन थके-हारे थे। वे यहाँ के निर्माण-स्थलों में काम कर रहे होंगे। हो सकता है, उन्होंने सूती वस्त्र मिलों के निर्माण में मदद दी हो या तो सैनिक कारख़ाने के निर्माण में, अलबत्ता उन्हें अब अतीत के इतिहास के बारे में बात करने की कोई इच्छा नहीं।

अचानक जोमार्त के दिमाग़ में उसकी सभी बहसों और खोजों, खुदाई और मध्य एशिया की संस्कृति के बारे में उसके भाषणों की अनावश्यकता का विचार कौंध गया। वह भी गर्मी और सतत चिंतन के कारण थक गया था।

जोमार्त सोचने लगा: "मैं पुराने इतिहास के टुकड़ों को एकत्रित करने की कोशिशें क्यों कर रहा हूँ? पहले-सी स्पष्टता अब लौटायी नहीं जा सकती। इतिहास भी, ओत्रार के सिक्के की तरह जिसे अभी-अभी दरिद्र बूढ़ा सीकरी का प्रतिरूप ले गया जिसके हाथ में होगा, उसी की सेवा करेगा।"

जब कोई वैज्ञानिक, सेनापति या शासक ऐतिहासिक तथ्यों को अपनी धारणाओं, उपलब्धियों या घमंड की सफ़ाई देने के लिए ढालने लगता है और अपनी ही जनता और संस्कृति की महानता की दुहाई देने लगता है तो दूसरे वैज्ञानिक या शासक में भी अपने राष्ट्र की महानता के बारे में

अवश्य कहने की भावना पैदा होती है। वाद-विवाद शुरू होता है, भांति-भांति के सिद्धांत उभरकर सामने आते हैं। सबके सब तथ्यों को इच्छानुसार तोड़ मरोड़कर अपनी दलीलों के अनुरूप, अपने घमंड की सफ़ाई देने के लिए ढालता है। एक का घमंड बहुतों की कमज़ोरी या शक्ति में परिवर्तित होता है। और ख़ुदा न करे, कहीं वह अकबर जैसे शासनप्रिय या हुमायूं जैसे निरंकुश हत्यारे के हाथ पड़ जाये। तब नेक आवारा सीकरी ख़ूब हँसता रहेगा।

इस दुनिया में सब कुछ कितना सरल और साथ ही जटिल भी है। शायद ओक्स के किनारे या गंगा के किनारे अथवा पामीर या हिमालय पहाड़ों पर दो क़बीले रहते थे। एक बार वे बहस करने लगे: कौन अधिक शक्तिशाली है? कौन बेहतर है? इस बात का प्रमाण उन्होंने रणक्षेत्र में देने का निश्चय किया। विजेताओं को "आयराय" और पराजित लोगों को "तुराय" नाम दिया गया था। और इस प्रकार "आयराय" आर्य में, ईरान में और "तुराय" तूरान में परिवर्तित हो गया। तूरानी और ईरानी लोग हज़ारों वर्षों तक लड़ाई लड़ते रहे लेकिन इसका प्रमाण न दे सके कि कौन बेहतर है।

एक ज़माने में पूर्व के लोग हथेली खोलकर, हाथ आगे बढ़ाकर एक दूसरे का स्वागत करते थे (इसका मतलब यह था: देखो मैं शांति के साथ तुम्हारे पास आया हूँ। मेरे पास कोई अस्त्र नहीं है।) बीसवीं सदी के फ़ासिस्टों ने इस हरकत में "हेल!" शब्द मिलाया।

कभी प्राचीन चीन में पूछा गया था, बारूद होगा या नहीं? बाद में, हमारे काल में सवाल उठा, एटमी बम होगा या नहीं?

आज तो सारी पृथ्वी को उड़ा देने और सभी नगरों को राख में परिवर्तित करने के लिए बारूद और बम की कोई कमी ही नहीं।

चार अमरीकी नौजवान एक नगर पर बम फेंककर हत्यारे बने और इस "विशेष" कारनामे के लिए उनको पदकों से विभूषित किया गया था। हिरोशिमा जल गया और... बाद में उसका पुनर्निर्माण किया गया। आख़िर नेकी और दुष्टता की सीमा है कहाँ? पृथ्वी की इन पुरानी सड़कों पर सब कुछ घुल-मिल गया है।

जोमार्त मेज़ के पास बैठा सोडा-वाटर के साथ व्हिस्की मिला रहा था। तभी नैन्सी वहाँ आ पहुँची।

"यह हमारी अंतिम मुलाक़ात है," वह कपड़ा बदल आयी थी। "मैं आज रात को जा रही हूँ। आपके साथ जो समय बीता, वह अच्छा बीता। यहाँ की सड़कें भी, मक़बरे भी, नगर भी आश्चर्यजनक हैं..." थोड़ी देर चुपचाप सोचने के बाद वह फिर बोली। "हाँ, होटल में मेरा एक देशवासी भी आकर ठहरा है। वह जनरल है, एनोला गेय का भूतपूर्व कमाँडर। याद है हिरोशिमा? उन्हीं की कमान के नौजवानों ने बम फेंका था। मैं उससे मिलना नहीं चाहती हूँ। इसी लिए आज रात को ही वापस जा रही हूँ।"

जोमार्त ने नैन्सी से विदाई लेते हुए मन में सोचा: "सचमुच चमत्कार हो रहे हैं—सीकरी गया, हुमायूँ आ गया।"

१६६६

पाठकों से

प्रगति प्रकाशन इस पुस्तक के अनुवाद और डिज़ाइन सम्बन्धी आपके विचारों के लिए आपका अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त करके भी हमें बड़ी प्रसन्नता होगी। कृपया हमें इस पते पर लिखिये:

प्रगति प्रकाशन, नवाई स्ट्रीट, ३०,
ताशकन्द, उज़बेक जनतन्त्र, सोवियत संघ।

अनवर आलिमजानोव का जन्म तात्दि-कोर्गान प्रान्त के क़ार्लिंगाश नामक एक कज़ाख़ गांव में हुआ। उनका बचपन बोर्डिंग-स्कूल और अनाथालय में बीता। वह पानी ढोने और गड़ेरिये का काम करते रहे, फिर ट्रैक्टर चालक बने और समाचार-पत्रों के संवाददाता भी बने। आजकल अनवर आलिमजानोव क़ज़ाख़स्तान लेखक संघ के सचिव हैं।

अनवर आलिमजानोव की प्रस्तुत पुस्तक "नयी मंज़िल नयी राहें" में तीन लघु-उपन्यास शामिल हैं जिनके नायकों की नियतियाँ गहन रूप से अन्तस्सम्बन्धित हैं।